

**ANUBADH-CHANDRIKA**









श्री:

# साद-चद्रिका

OR

GUIDE TO

IN SCH

IRISHNA  
RY (REVISED)

DR. KRA DHAR 'HANS' M. A., M. O. L., (All India)  
M. A., (History, Lucknow)  
SHASTRI, HINDI PRABHAKARA, SANSKRIT MEDALIST.

Revised by

Pt. CHARUDEVA SHASTRI, M. A., M. O. L.,  
Professor of Sanskrit  
D. A. V. COLLEGE, LAHORE.

PUBLISHED BY

**MOTILAL BANARSIDASS**

Booksellers and Publishers,

P. B. 75, Chowk—BANARAS

7th Edition]

1949

[Price Rs. 2/4/-]

प्रकाशक :

मोतीलाल बनारसीदास,  
पुस्तक विक्रेता,  
चौक बनारस ।

अधिकार  
( सर्व हक प्रकाशक के स्वाधीन हैं )

मुद्रक :

शान्ति लाल जैन,  
नवभारत प्रेस,  
भदौनी-बनारस ।

---

मोतीलाल बनारसीदास

प्रकाशक तथा पुस्तकविक्रेता :—

बांकीपुर, पटना

चौक, बनारस

किनारी बाजार, दिल्ली



श्रीः

पाठशाला-महाविद्यालयोपयोगिनी

# अनुवाद-चन्द्रिका

गङ्गादेशवास्तव्य-हिन्दीप्रभाकर-श्रीचक्रधर 'हंस' नौटियाल-शास्त्रिणा  
(संस्कृत-) एम. ए. (प्रयाग-विश्वविद्यालय (इतिहास-)

एम. ए. (लखनऊ-विश्वविद्यालय)

एल. टी. बिरुदभाजा

विरचिता

(संशोधिता सम्प्रधिता च)

SHRI RAMAKRISHNA  
LIBRARY SHIVAGARH.  
Accession No. ...  
Date ... सा च

श्रीमद्द्यानन्द-ऐंग्लो-वैदिक-महाविद्यालय-संस्कृतप्रोफेसरेण  
श्रीनारुदेवशास्त्रिणा एम. ए, एम. ओ. एल.  
इत्याद्युपाधिविभूषितेन  
संशोधिता

प्रकाशक—

मोतीलाल बनारसीदास

हिन्दी-संस्कृत पुस्तक-विक्रेता,  
चौक, बनारस

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्रारम्भिक कर्त्रण	१	वर्तमान कालिक कृदन्त	९२
वृद्धोच्चारण (अजन्त)	१०	भूतकालिक कृदन्त	९६
कर्तृ कारक	१९	भविष्यत्कालिक कृदन्त	९८
कर्म कारक	२२	पूर्वकालिक कृदन्त	९९
करण कारक	२५	तुम् प्रत्यय	१०१
सम्प्रदान कारक	२८	कृत्यप्रत्यय	१०३
प्रपादान कारक	३०	तद्धितप्रकरण	१०४
सम्बन्ध कारक	३२	स्त्रीप्रत्ययप्रकरण	१०६
प्रधिकरण कारक	३४	समासप्रकरण	१०९
सम्बोधन कारक	३६	संज्ञावाचक शब्दों पर विचार	
क्रिया प्रकरण	३८	लिङ्ग प्रकरण	११५
कारक और विभक्तियाँ	४३	लेखोपयोगी चिह्न	११८
प्रशुद्धि संशोधन ४६ और	१०८	अनुवादाथ संस्कृत वाक्य	१२०
त्र-लेखन प्रकार	४६	मुहावरेदार प्रयोग	१२३
सर्वनाम शब्दों के रूप	४७	लोकोक्ति संग्रह	१२६
सर्वनाम शब्दों पर विचार	५०	व्यावहारिक शब्द-संग्रह	१४३
तन्धि-प्रकरण	५२	अनुवादार्थ श्लोक	१५५
वृद्धोच्चारण (हलन्त)	५८	अनुवादार्थ गद्य संग्रह	१५७
संख्यावाचक विशेषण	६५	(पंजाब) ए० परीक्षा प्रश्नपत्र	१६४
गुणवाचक विशेषण	७२	„ प्राज्ञ परीक्षा प्रश्नपत्र	१६८
विशेषणों की तुलना	७३	(पटना) मै० परीक्षा प्रश्नपत्र	१८६
सन्नत धातुएँ	७५	(संस्कृत अनुवाद के लिए आदर्श वाक्य)	१७८
प्रकृत धातुएँ	७६	(काशी) प्र० परीक्षा प्रश्नपत्र	१९३
प्रेरणार्थक क्रियाएँ	७७	(यू. पी.) हाई स्कूल बोर्ड परीक्षा प्रश्नपत्र	१९८
कर्मवाच्य और भाववाच्य	७९	(बनारस) अडमिशन परीक्षा प्रश्नपत्र	२०३
वाच्य-परिवर्तन	८०	टिप्पणियाँ Glossary	२०६
वाच्यान्तर रचना	८१		
सोपसर्ग धातु	८३		
कृदन्त प्रकरण	९०		



## Opinions of the Eminent Sanskrit Scholars

Dr. P. K. Acharya, I. E. S., Ph. D., D. Litt. Dean Faculty of the Arts, Head of the Department of Sanskrit, University of Allahabad writes :—

“The Anuvada-Chandrika by Pandit Chakra Dhara Hans in its enlarged form will be a suitable hand book for the students of both Matriculation and Intermediate classes. Pandit Hans is a practical student of Sanskrit and Hindi language and literature, having been trained under the old and modern lines, and he has passed the Shastr and Hindi Prabhakara Examinations of the Punjab University. Thus equipped he has taken all precautions to this little nice book helpful to those for whom it is meant. His depth of knowledge and skill is reflected in the selection of illustrative passages. Students will be able to learn both the necessary grammar and composition by carefully going through this book.

R. B. Dya Ram Sahni, M. A., Director General, Archaeological Survey India, writes :—

“I have looked through the Manuscript of Pandit Chakradhara's ‘Anuvada-Chandrika.’ The author has taken great pains over its preparations. I am sure the book will prove useful to students preparing their Sanskrit course for the Matriculation Examination.”

Prof. Gulbahar Singh, M.A., LL.B., Govt. College, Lahore, Fellow of the Punjab University, writes :—

“I have glanced through ‘Anuvada-Chandrika’ compiled by Pt. Chakra Dhara Shastri. His aim has been to try and help school students to learn how to translate from Hindi into Sanskrit, and I think the book is well suited to achieve that aim.”

Prof. Canpat Rai M. A. Central Training College Lahore, writes :—

“I have gone through the Anuvada-Chandrika” It supplies the long-felt want of students preparing for the Sanskrit Examination. The exercises given at the end of the book are useful. The author has taken pains to compile them methodically.”

Pandit Ganesh Datt Shastri Mahamahopadhyaya, Vidyalankar Vedanta-bhushan, Senior Prof. of Sanskrit and Theology. S. D. Collge., Lahore, writes :—

“I have carefully examined portions from Pandit Chakra Dhara Shastri's Anuvada-Chandrika and am of opinion that the edition can be a valuable addition to the Sanskrit texts for the secondary school with a view to increase the pupil's facility to get a clear insight into the fundamental rules of translating sentences into Sanskrit as it has been designed on a novel plan and gives a concise outline of the Sanskrit Grammar as well. The booklet leaves little to be desired in the matter



*Pro. M. K. Sarkar, M. A., D. A. V. College, Lahore, writes :—*

"I have had a look at Anuvada Chandrika by Pt. Chakra Dhara Shastri and I am very pleased to say that it is a nice little book perfectly suited to the needs of those for whom it is meant. It covers pretty wide ground and the most distinctive features of the book are the well-arranged exercises for translation and correction, proverbs with their translation and a glossary at the end.

Grammar and translation being two of the side to the study of language, I am sure that the students will be immensely benefitted by this book which gives a lot of them."

*Dr. Lakshman Sarup, M. A., D. Phil, Oriental College, Lahore, writes :—*

"I have looked through a few pages of Pt. Chakra Dhara's Anuvada Chandrika. It is intended to help school students for Sanskrit translation. The zeal of Pt. Chakra Dhara Shastri is admirable."

*Pandit Gaurishankar M. A., B. T., Lecturer in Sanskrit, Govt. College, Lahore, writes :—*

"The Anuvada Chandrika by Pt. Chakradhar Shastri, a treatise on translation from Hindi into Sanskrit and vice versa, provides for the long felt need of a suitable book on the subject for the advanced classes in Sanskrit in the Punjab Schools. The book in the hands of capable and efficient teachers is sure to win its way among students. It is undoubtedly, a guide to Sanskrit translation.

To mention some of the features of the book, Sanskrit Grammar and translation are treated by the author as complementary, and they are really so. The writer has tried to teach Grammar the knowledge of which is to be put to practice in the translation exercises appended to every Grammar lesson. Selections of easy pieces from ancient Sanskrit writers and a collection of Sanskrit idioms and proverbs are also commendable."

*Pandit Vanshidhara Shastri, Professor of F. C. College, Lahore, writes :—*

"I have gone through the 'Anuvada Chandrika' by Pandit Chakradhara Shastri. He has taken great pains in the preparation of this book which is composed in a new style. The book is very useful to the students of the high classes, and specially to the students of the fifth high class. The Sanskrit proverbs, and corrections of the Sanskrit sentences are given in this book in new method. I am very glad to see this book, which I think, will be appreciated by the Sanskrit Scholars and the students."

सरस्वती—दिसम्बर १९३५

अनुवादचन्द्रिका—लेखक—कविरत्न पं० चक्रधर नौटियाल एम. ए. एल. टी., शास्त्री, हिन्दी प्रभाकर हैं। पता—मोतीलाल बनारसीदास, बनारस।

यह पुस्तक हाई स्कूल तथा इंटरमीडियेट के परीक्षार्थियों को लक्ष्य में रख कर लिखी गई है। संस्कृत-अनुवाद पर अन्य भी अनेक लेखकों ने पुस्तकें लिखी हैं,

परन्तु जैसी सरल पद्धति तथा क्रम से अनुवाद के लिए आवश्यक विषयों का विवेचन इस पुस्तक में हुआ है, वैसा बहुत थोड़ी प्रचलित पुस्तकों में दृष्टिगोचर होता है। संस्कृत-व्याकरण तथा अनुवाद दोनों का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस बात का विचार रख कर ही शास्त्रीजी ने इस पुस्तक को लिखा है। पुस्तक के अन्त में अशुद्धि-संशोधन, लोकोक्ति-संग्रह, पंजाब तथा संयुक्त-प्रान्त की प्राज्ञ तथा हाई स्कूल, परीक्षाओं के प्रश्न-पत्र तथा शब्द-सूची नामक करणों से ग्रन्थ की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। पुस्तक परिश्रम से लिखी गई है और हाई स्कूल की श्रेणियों के लिए विशेष उपयोगी है।

“श्रीयुत चक्रधरशास्त्रिविनिर्मितामनुवादचन्द्रिकामहं साद्यन्तं पर्यालोचयम्  
एतत्पुस्तकपर्यालोचनेन मम दृढा मतिरुदपद्यत यदनेन प्रवेशिका—(Matriculation)  
प्राज्ञपरीक्षार्थिनां भूयान् उपकारो जनिष्यते। ग्रन्थकर्त्राऽनुवादप्रक्रियामधिजिगांसूनां  
विद्यार्थिनां कृते प्रायः सर्वेऽप्युपयोगिनो व्याकरणांशास्तथा क्रमेण सन्निवेशिता यथा  
कोमुद्याद्यवयवकलेशमन्तुभूयापि छात्रास्तान् सुखमवगन्तुमीश्वरन्। सरलसरससंस्कृत-  
लेखपाठवमुत्पादयितुमत्र बाणादिमहाकवीनां हृदयहाणिनां गद्यानि पद्यानि च शास्त्रि-  
महोदयेन निदर्शितानि। किं चाद्यत्वे पण्डितमूर्धन्या अपि भाषाप्रचरितलोकोक्तिनां  
यथाहमनुवादं कर्तुं न क्रमन्त इति ग्रन्थकर्त्राऽसंस्कृतग्रन्थान्तरेभ्यः सायासमन्वेपमन्वेपं  
भाषाप्रचरितलोकावतिसमानाभिप्राया संस्कृतलोकावतयः सन्निवेशिताः। अनुवादा-  
भ्यासार्थं हिन्दीवाक्यानि संस्कृतवाक्यानि च तारतम्येन प्रतिपाठं योजितानि।  
पत्रलेखनशैलीशिक्षणार्थं पत्रादर्शा अपि दर्शिताः। अपि चान्तेऽभ्यासवाक्येष्वागतानां  
हिन्दीशब्दानां समुचित—(appropriate) संस्कृतपर्याया अपि समावेशिताः। तद-  
नया चन्द्रिकया संस्कृताङ्गलोभयभाषाध्येतृणां मन्ये स्थेयान् लाभः समुत्पत्स्यत इति  
सम्मतुते—परमेश्वरानन्दशर्मा शास्त्री, विद्याभास्करः, साहित्योपाध्यायः, प्रधानाध्या-  
पकः लवपुरीयश्रीसनातनधर्म संस्कृतकालेजस्थः।

गीर्वाणवाणीसंवननवाक्यावलीप्रबन्धोपयिकाकाङ्क्षानान्तरीयकबोधोपयोगीपयिक-  
पठनपाठनप्रक्रियाप्रकारानुपवनपदसाधुताप्रदर्शनपुरःसरपदयोजनातुरोधिषयस्थापना-  
विशेषमार्ग—प्रदर्शनपरिचयमादधाना बालानुशासनशिक्षानुशीलितप्रकरणप्रकाराकारवि-  
चारप्रचारा सहृदयहृदयमनांसि चन्द्रिकेव ह्लादयन्ती अनुवादचन्द्रिकेयं नितान्तं प्रतान्तं  
विधान्तं संसेव्यतान्तरामिति परमादरयति—

साहित्यदर्शनाध्यापकः ओरियण्टलकालेजस्थः नृसिंहदेवशास्त्री।

मैंने पं० चक्रधरजी शास्त्री के पुस्तक ‘अनुवाद-चन्द्रिका’ को अनेक स्थलों से पढ़ कर देखा है। विद्यार्थियों को संस्कृत में अनुवाद करने का अभ्यास कराने के लिए यह पुस्तक बहुत उपादेय सिद्ध होगी। स्वयं भी इसको पढ़ कर छा अचछी योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। आशा है संस्कृत के प्रचार में यह ग्रन्थ सहायक होगा। शास्त्रीजी का परिश्रम मैं सफल समझता हूँ।

भगवद्दत्त बी. ए. रिसर्च स्कालर, डी. ए. बी. कालेज, लाहौर।



श्रीयुत पं० चक्रधरजी शास्त्री की 'अनुवाद-चन्द्रिका' को मँने पढ़ा मेरी सम्मति में यह पुस्तक बहुत उपयोगी है। इसमें लेखक ने अनुवाद का प्रचार और उसके लिए उपयोगी व्याकरण की प्रक्रिया ऐसी योग्यता से समझाई है कि विद्यार्थी थोड़े ही परिश्रम से संस्कृत में अनुवाद करने की अच्छी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। अनुवाद के अभ्यास के लिए हिन्दी और संस्कृत के वाक्य प्रत्येक पाठ के अन्त में लिखे गये हैं। हिन्दी शब्दों के समुचित संस्कृत पर्याय भी अलग अन्त में लिख दिये गये हैं। इस प्रकार पुस्तक को उपयोगी बनाने में कोई न्यूनता नहीं रखी गई है। आशा है मुण्ग्राही इसका आदर करेंगे।

रामचन्द्र कुशल शास्त्री.  
ओरियण्टल कालेज, लाहौर।

### FOREWORD

Translation of one language into another is no easy task. Indeed a correct and faithful reproduction of ideas couched in one language into another different from it in various respects, is a sure test of one's proficiency in linguistic studies. Provision is therefore made at schools to give to the students a grounding in translation at an early stage. For this purpose, a suitable little book written on most modern lines has long been a desideratum. This is now supplied by our learned pupil Pt. Chakradhar Shastri who has very capably written a work entitled the 'ANUVADA-CHANDRIKA' for the help and guidance of the students preparing for the Matriculation Examination. Herein the author has proceeded very methodically.

Beginning with simpler things he comes ultimately to treat those which set up a standard for the Matriculation. Of grammar only as much is given as is required by the students for purposes of translation. The author has used his best direction in the selection of the radical stem and the nominal base. There are also ample exercises and copious vocabulary. There is one salient feature of the book which marks it out from those already written on the subject. It is a discussion of common errors. Almost all those errors which the beginner is liable to commit are here put together for the first time and corrected. This has exceedingly enhanced the value of the book. The author has also after an assiduous search, succeeded in finding out and inserting here the Sanskrit parallels of pretty large number of well known Hindi maxims and proverbs. This will elicit admiration from the learned.

The book is written in easy Hindi and is fully adapted to the needs of the students of our High Schools. I compliment the author on the splendid success he has achieved and the meritorious service he has done to the cause of Sanskrit literature. I firmly hope that this book will receive the warm welcome of the student community which it so well deserves.

D. A. V. College,

Lahore.

2nd April, 1927.

CHARUDEVA SHASTRI,  
M. A., M. O. L.

## किञ्चित्प्रास्ताविकम्

अथ कोऽयमनुवादो नाम । न तावत्पूर्वमुपात्तस्याभिधेयस्याभिधानस्य वा प्रयोजन-  
वान्पुनरुपन्यासोऽत्र विवक्षितः । पश्चाद्वादोऽनुवादो द्वितीयकः प्रयोग इति सत्यपि  
योगलभ्येऽर्थोऽस्ति ह्यस्य शब्दस्यार्थान्तरे रुद्धिः । रुद्धिर्योगमपहरतीति न्यायात् । किमि-  
दमर्थान्तरमित्याकाङ्क्षायामुच्यते । प्रकृतिभूतस्य कस्यचिद्वाग्विन्यासस्य परत्र बोध-  
संक्रान्तये प्रवृत्ता भाषान्तरपदात्मिका, विम्बप्रतिविम्बभावमजहती व्यवहारमनुपतन्ती  
तद्गतार्थसाकल्यं समर्पयन्त्यनुकृतिरनुवादः । तेन प्रकृती यावान् यादृशश्चाथोऽभिधे-  
यादिर्यादृग्भिः पदैः प्रत्याप्यतेऽनुकृती यदि तावांस्तादृशस्तादृग्भिरेव पदैः प्रत्याप्यते  
तर्हि चार्तिनाथ्यमनुवादस्य नेतरथेति लक्षणागनेन विम्बप्रतिविम्बेत्यादिविशेषणेन  
द्योत्यते । तेनैव च सन्दर्भविशेषस्य यद् भाषान्तरव्याख्यानमात्रं तद् व्यवच्छिद्यते ।  
अनुवादे शिष्टव्यवहारोऽपि सम्यगवधेयः । स च व्यवहारो भाषासु नैकविधो यथायथ  
वेदनीयः । व्यवहारातिक्रमो हि दूषयति वाचम् । अव्यवहृता च वाग् इदमप्रथमतया  
प्रयुज्यमाना नाद्रियते लोक इत्यतोऽनीपत्करोऽनुवादो विशेषज्ञः किमुत साधारणः ।  
'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' इति कविभिणितिरवितथा स्यात् । प्रयोगचणानां भाषा-  
मर्मज्ञानामनुवाद एव परा परीक्षेत्यविसंवादी वादः । गुरवोऽप्यत्र साशङ्कं प्रवर्तन्ते का  
कया श्रावकाणाम् ।

मन्ये काचिदजिह्वा राजपद्धतिरत्र प्रस्तवनीया यया निर्वाधं प्रवृत्ताश्छात्रा अचि-  
रेणैव कालेनेप्सितं बोधमाप्नुयुरनुवादरहस्यञ्चाकलयेयुः इममेवार्थमनुसन्धाय कश्चि-  
दनुवादप्रणाल्यादयः काश्चिददकृषतेति नाविदितं विपश्चिताम् । परमेता विश्वस्तान्  
मुग्धान् सुकुमारधियः कुमारान्सम्मोहयितुमेव प्रभवन्ति न प्रबोधयितुमिति प्रतीमः ।  
दाषाढ्याः प्रमादप्रचुराश्चैताः कृतयो न कमप्युपयागं व्रजन्ति । ये हि स्वयं चक्षुर्विकलाः  
पथां भ्रष्टास्ते परेषा मार्गमादेष्टुर्माशीरन्निति नावकल्पयामः । तदिदं सर्वं सम्यगवधार्य  
श्रोतृचक्रवर्तशास्त्रिणोऽस्मच्चिद्व्यव्याख्यावहितप्रयोजिता महतीमेतां कार्यधुरां वोढुमुद-  
सहिषतेति तुष्यन्ति नोऽन्तरङ्गम् । एभिरेखानुवादचन्द्रिकाभिधेय पुस्तिका व्यरचि । अत्र  
हि सर्वत्र सरला सरणिश्रिता । विशिष्ट एव क्रमोपूर्वः कश्चिदास्थितः । यत्र तत्र  
भाषावैशद्यं सन्दर्भशुद्धिश्च नितान्तमपेक्षिते । अभ्यासवाक्यानि च समीचीनतमानि  
समाहृतानि । प्रतातान्येव नामानि धातवश्च प्रपञ्चितानि यानि च परिचीयमानानि  
महदुपकरिण्यन्ति च्छात्रवृन्दस्य । अत्र शब्दसाधुत्वाविचारेऽनन्यसाधारणः प्रकर्षः  
प्रदर्शितः । ये ये प्रायिका वाक्प्रमादानां गोचरास्ते तेऽत्र सगन्क्रान्तव्याख्याताः किमपि  
कामनीयकं पुण्यन्ति पुस्तिकायास्तत्कर्तृणा च प्रख्यापयन्ति वदातं यशः । नूनमत्राश्च-  
र्यकरी वैशारदी ग्रन्थकृद्भिः प्राकाशीति नन्दति नश्चेतः ।

अपेक्षितमाऽन्येप विषयः सविस्तरं ध्याकृतपूर्वो तास्माभिर्दृष्टचर इत्यभिनवत्व-  
मर्थवत्त्वमपोनरुक्त्यं च चन्द्रिकायाः । सा चाध्यतृणामुपकुर्वाणा तत्कृतमपि महिमानं  
प्रथयति । अपराऽपोहत्यः कश्चिद्विशेषो हृदि पद करोति । हिन्दीवाण्यां येषामाभाष-  
कानामात्रालं प्रात्यहिकः प्रयोगस्तेषां संस्कृतपर्याया अनल्पेन प्रयासेनान्विष्य तन्त्रान्त-  
रेभ्यः समुद्धृत्य सन्दृष्टाः । किं बहुना । वैशिष्ट्यमत्र रचनारीतिः, वैशद्यं विषयस्य,

हृजुत्वं हारित्व च पद्धतेरिति चन्द्रिकेयमनुवादविषयानन्यान् ग्रन्थान् गुणैरतिरिच्यत  
ति नात्र संदिह्यः । विद्यार्थिनां भूयिष्ठमुपकुर्वतीयं कौमुदीव विदुषां मन आवर्ज-  
यष्यतीति दृढो नः प्रत्ययः । एष खलु पूर्वा अपशब्दप्रायाः कृतिः प्रत्यादेक्ष्यति प्रचुरं  
प्रचरन्ती लोके समादरिष्यत इत्याशंसते ।

चारुदेवः शास्त्री पाणिनीयः

—:—:—

### Preface to the Second Edition

The first edition of this book was published in 1927 and exhausted in 1931. Since then the demand for the book has been constant and the book could not be published earlier due to many inevitable difficulties. The rapid sale of large edition in less than four years indicates that the book, in some measure, has met a felt need, and it is hoped that the students of Sanskrit will find this edition more useful and a better guide to Sanskrit translation than the first on account of the improvements effected now. The success achieved has probably been due chiefly to the fact that the book was written with thought, care and experience.

Some additions and alterations have been made both in matter and arrangement in this edition with a view to make an improvement. All the chapters have been revised in this edition. New topics have been added to some chapters on the Nouns, Verbs, idiomatic expressions and proverbs. U. P. High School Board Exam. Papers of Sanskrit translation from 1910 to 1934 have also been added to this edition at the end. These papers will serve the purpose of exercises suited to the requirements of the students of the Matriculation and the Intermediate classes. The effect of this and the like additions has been to increase a little the volume of the work which I hope will meet with approval from the student world. The new edition is thus not only mere revision but more complete than its predecessor.

I acknowledge sincerely and gratefully my indebtedness to those learned teachers and scholars whose encouragement and approval of my work is responsible for the success which I have achieved. Lastly I must thank the student community whose keenness and interest have provided a constant stimulus and have made every effort worth while.

akshmi Sadana, Lucknow

28th Dec., 1934.

C. D. Hans



॥ श्रीः ॥

## अनुवादचन्द्रिका ।



शङ्करं शङ्करं ध्यात्वा नत्वा देवीं सरस्वतीम् । करोमि बालबोधार्थमनुवादस्य चन्द्रिका  
रसनेत्रग्रहेलाब्दे श्री चक्रधर-शास्त्रिणा । श्रियते चन्द्रिका ह्येषा गङ्गवेशनिवासिना ।  
यच्चापि दृष्टमखिलं कठिनं तदस्ति, मन्ये प्रणीतमपि बुद्धिमतां वरिष्ठैः ।  
दुःखं तथातिसुकुमारधिपां विलोक्य, प्रारभ्यते किमपि, नव कदापि वर्पात् ॥

### प्रारम्भिक कथन

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को ठीक-ठीक और सरलता से एक दूसरे पर प्रकट करता है । भाषा का उपयोग बोलने और लिखने में होता है । भाषाएँ कई प्रकार की हैं, जैसे—संस्कृत भाषा, हिन्दी भाषा, अँगरेजी भाषा आदि ।

भाषा वाक्यों के समूह से बनती है । वाक्य छोटे और बड़े दोनों ही तरह के होते हैं । वाक्य शब्दों के समूह बनता है, और शब्द ध्वनियों के समूह से । उदाहरण के लिए—‘अशोक एक बड़ा धर्मात्मा राजा था’ इस वाक्य में छः शब्द हैं, और हर एक शब्द में अलग-अलग ध्वनियाँ हैं, जैसे—‘अशोक’ में ‘अ + श् + ओ + क् + अ’ पाँच ध्वनियाँ हैं । ‘एक’ में ‘ए + क् + अ’ तीन ध्वनियाँ हैं । यह लिपि, जिसमें अक्षर यहाँ लिखे गये हैं ‘देवनागरी’ लिपि कहलाती है । संस्कृत और हिन्दी भाषा प्रायः इसी लिपि में लिखी जाती है ।

ध्वनियों के दो भेद हैं—स्वर और व्यञ्जन । स्वर तीन तरह के होते हैं—ह्रस्व दीर्घ और मीश्रित । स्वरों और व्यञ्जनों में ध्वनि का भेद है । स्वरों के बोलने मुख-द्वार कम या ज्यादा किया जाता है, पर बिल्कुल बंद या इतना सकरा नहीं किया जाता कि हवा रगड़ खाकर बाहर निकले । व्यञ्जन बोलने में मुख-द्वार य तो सहसा खुलता है या इतना सकरा हो जाता है कि हवा रगड़ खाकर बाहर

१ कल्याणकारकम् । २ शिवम् । ३ रसाः षट् (६), नेत्रे द्वे (२) ग्रहाः नव (९) इला पृथ्वी (१) । ‘अङ्गानां वामतो गतिः’ इति नियमात् ‘१९२६ ई०’ ।

४ ध्वनि मनुष्य की बोली के उस छोटे से छोटे अंश को कहते हैं, जिस टुकड़े में न हो सकें । ध्वनि का जो रूप लिखा जाता है उसे वर्ण या अक्षर कहते हैं ।

निकलती है। इसी स्पर्श के कारण व्यञ्जन स्वरों से भिन्न हो जाते हैं। व्यञ्जन हल् अक्षर भी कहलाते हैं, जैसे क् च् ट् त् प् आदि। संस्कृत अथवा हिन्दी भाषाओं में जिन अक्षरों का उपयोग होता है वे ये हैं :—

स्वर	{	अ इ उ ऋ लृ	—	ह्रस्व	
		आ ई ऊ ऋ	--	दीर्घ	
		ए ऐ ओ औ	—	मिश्रित	
व्यञ्जन	{	(कु)	क ख ग घ ङ	—	कवर्ग
		(चु)	च छ ज झ ञ	—	चवर्ग
		(टु)	ट ठ ड ढ ण	—	टवर्ग
		(तु)	त थ द ध न	--	तवर्ग
		(पु)	प फ ब भ म	—	पवर्ग
			य र ल व	--	अन्तःस्थ
			श ष स ह	--	ऊष्म
				—	अनुसार
				—	अनुनासिक
				—	विसर्ग

क से लेकर म तक के अक्षर 'स्पर्श' कहलाते हैं। य र ल व 'अन्तःस्थ' हैं, अर्थात्

१ व्यञ्जनों के बोलने में मुख के किसी न किसी हिस्से का दूसरे हिस्से से कुछ न कुछ स्पर्श अवश्य होता है, जैसे 'च्' के बोलने में जीभ का ताल से, 'त्' के बोलने में जीभ का दाँतों से स्पर्श होता है।

२ ह्रस्व स्वर के बोलने में बहुत थोड़ा समय लगता है।

३ दीर्घ स्वर के बोलने में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा दोगुना समय लगता है।

४ मिश्रित स्वर विकृत हैं और दीर्घ हैं। (जैसे अ + इ = ए)।

५ व्यञ्जनों के शुद्ध रूप 'क्' 'ख्' आदि हैं, इनमें 'अ' उच्चारण मात्र के लिए मिलाया गया है। शुद्ध व्यञ्जन सूचक चिह्न ( ) है।

उच्चारण के विचार से वर्णों का स्थान—अ आः ह क् ख् ग् घ् ङ्—कण्ठ

इ ई य् श् च् छ् ज् झ् ञ्—तालु

ऋ ऌ र् ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्—मूर्धा

लृ ल् स् त् थ् द् ध् न्—दन्त

उ ऊ (प) फ् प् फ् ब् भ् म्—ओष्ठ

ए ऐ—कण्ठ तालु, ओ औ—कण्ठ, ओष्ठ

व—दन्त ओष्ठ, अनुस्वार—नासिका

ङ् आदि का स्थान कण्ठ नासिका आदि

स्वर और व्यञ्जन के बीच के अक्षर हैं। श ष स ह ऊ ऋ हैं अर्थात् इनको बोलने के लिए भीतर से कुछ ज्यादा जोर से श्वास लाना पड़ती है। पाँचों वर्गों के पहले और दूसरे अक्षर (क ख च छ आदि) तथा ऊँ अक्षरों को 'पुरुष व्यञ्जन' और बाकी अक्षरों को 'कामल व्यञ्जन' भी कहते हैं। व्यञ्जनों के दो और भेद हैं—अल्पप्राण और महाप्राण। पाँचों वर्गों के पहले और तीसरे अक्षर (क ग आदि) अल्पप्राण हैं और दूसरे और चौथे (ख घ आदि) महाप्राण हैं। वर्गों के पाँचवें (ङ ञ ण न् म्) अनुनासिक व्यञ्जन कहलाते हैं।

एक भाषा के शब्दार्थ को दूसरी भाषा के शब्दों में बदलने को अनुवाद कहते हैं। इस पुस्तक में हिन्दी भाषा और संस्कृत भाषा का एक दूसरी में अनुवाद करने का ढंग बताया गया है, इसलिए इसमें दोनों का ही वर्णन है।

'राम पुस्तक पढ़ता है।' इस वाक्य में पढ़ने वाला राम है। 'कृष्ण ने कंस को मारा' इस वाक्य में मारने वाला कृष्ण है। 'पढ़ना' और 'मारना' ये दो क्रियाएँ हैं। इन क्रियाओं के करने वाले 'राम' और 'कृष्ण' हैं। क्रिया के करने वाले को कर्ता कहते हैं, इसलिए इन दो वाक्यों में 'राम' और 'कृष्ण' कर्ता हैं।

पहले वाक्य में पढ़ने का विषय 'पुस्तक' है और दूसरे वाक्य में मारने का विषय 'कंस' है। पुस्तक और कंस के लिए ही कर्ताओं से क्रियाएँ हुईं, इसलिए खास तौर से जिस चीज के लिए कर्ता क्रिया को करता है उसको कर्म कहते हैं।

'अशोक ने अपने हाथ से निर्धनों को दान दिया' इस वाक्य में 'दान' क्रिया की पूर्ति हाथ से हुई, इसलिए 'हाथ' करण हुआ। इसी वाक्य में दान की क्रिया 'निर्धनों के लिए हुई', इसलिए 'निर्धन' सम्प्रदान हुआ।

'वाग के पेड़ों से जमीन पर फल गिरे' इस वाक्य में पेड़ों से फल अलग हुए, इसलिए 'पेड़' अपादान हुआ, फल जमीन पर गिरे, इसलिए जमीन अधिकरण हुई। वाग का सम्बन्ध पेड़ों से है, इसलिए 'वाग' सम्बन्ध हुआ।

ऊपर के चार वाक्यों में 'पढ़ना' 'मारना' 'देना' और 'गिरना' क्रियाओं को पूर्ण करने में जिन कर्ता, कर्म आदि शब्दों का उपयोग हुआ है उन्हें कारक कहते हैं। कारक वह वस्तु है जिसका क्रिया के सम्पादन में उपयोग हो। सम्बोधन भी कारक में गिना जाता है।

इन कारकों को जोड़ने लिए जो 'ने' 'को' आदि चिह्न काम में आते हैं उन्हें 'विभक्ति' (कारक-चिह्न) कहते हैं।

१ अनु=पीछे, वद्=वाद=कहना, एक बात को फिर से कहना अर्थात् एक बात को दूसरे शब्दों में बदल करके कहना। यद्यपि अनुवाद शब्द के इस योगिक अर्थ के अनुसार एक भाषा का अनुवाद उसी भाषा में भी हो सकता है तथापि 'अनुवाद' शब्द का अर्थ 'दूसरी भाषा में बदलना' यही फोक व्यवहार में प्रसिद्ध है। इसलिए हम 'अनुवाद' शब्द को योगरूढ़ शब्द कह सकते हैं।



विभक्ति case-sign	कारक Cases	अर्थ
प्रथमा	कर्त्ता Nominative	(वह वस्तु), ने
द्वितीया	कर्म Accusative	को
तृतीया	करण Instrumental	ने, से, के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान Dative	को, के लिए
पञ्चमी	अपादान Ablative	से
षष्ठी	सम्बन्ध Genitive	का, के की
सप्तमी	अधिकरण Locative	में, पर
सम्बोधन	सम्बोधन Vocative	हे, अये, भोः, इत्यादि ।

ऊपर कहा जा चुका है कि वाक्य शब्दों का समूह है, जैसे—

(वाक्य)---बालः सदा पुस्तकं पठति (लड़का हमेशा पुस्तक पढ़ता है) इस वाक्य में पाँच शब्द हैं। इसी वाक्य को और ढंगों से भी कह सकते हैं :—

बालः सदा पुस्तकानि पठति (लड़का हमेशा पुस्तकें पढ़ता है)

बालाः सदा पुस्तकानि पठन्ति (लड़के हमेशा पुस्तकें पढ़ते हैं)

इन तीनों वाक्यों को देखने से मालूम हुआ कि शब्दों में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके रूप हमेशा एक से रहते हैं, जैसे 'सदा' (हमेशा)। कोई-कोई शब्द ऐसे हैं जिनमें वाक्य के और शब्दों के असर परिवर्तन हो जाता है, जैसे बालः (लड़का), पुस्तकं (पुस्तक), पठति (पढ़ता है) के रूप में परिवर्तन हो गया। जिन शब्दों के रूप में कभी परिवर्तन या विकार नहीं होता वे अव्यय कहलाते हैं, जैसे—सदा (हमेशा), और जिनमें परिवर्तन हो जाता है वे विकारी शब्द कहलाते हैं।

विकारी शब्दों के कई भेद होते हैं, जैसे—गोविन्दः त्वत्तः शोभनां विद्याम् अपठत् (गोविन्द ने तुझ से अच्छी विद्या पढ़ी) इस वाक्य में गोविन्दः (गोविन्द) नाम या संज्ञा है, तः (ने, से) कारक-धित्व है, 'त्वत्' (तुझ) मनुष्य के स्थान पर आया है, इस लिए सर्वनाम है। विद्याम् (विद्या) की विशेषता बताता है, इसलिए विशेषण है, अपठत् (सीखा) एक काम है, इसलिए यह क्रिया है।

विकारी { १ संज्ञा—(वस्तु का नाम जैसे गोविन्द, नदी, सेना आदि)  
 २ सर्वनाम—(जो संज्ञा के स्थान पर आवे जैसे, वह, तू, मैं इत्यादि)  
 ३ विशेषण—(जो वस्तु की विशेषता बतावे, जैसे सुन्दर, अच्छा, तीन आदि)  
 ४ क्रिया—(किसी काम का करना या होना जैसे, पढ़ता है, खाता है) आदि  
 अविकारी ५ अव्यय—(जिसमें विकार न हो जैसे सदा, यद्यपि आदि)

ऊपर के वाक्य में 'गोविन्द' एक नाम आया है जिससे पुरुष जाति का ज्ञान होता है, इसलिए यह शब्द पुल्लिङ्ग में होता है।

१ जहाँ पर अलग होने, हटने आदि का बोध हो वहाँ पर अपादान (पञ्चमी) होती है। और जहाँ पर संज्ञा से क्रिया के साधन (जरिया) का बोध हो वहाँ पर करण (तृतीया) होती है।

‘विद्या’ शब्द से स्त्री—जाति का बोध होता है, इसलिए यह स्त्रीलिङ्ग में होता है। ‘पुस्तक’ शब्द से न तो पुरुष जाति का न स्त्री जाति का बोध होता है, इसलिए यह नपुंसक लिंग में होता है। हिन्दी भाषा में नपुंसक लिंग नहीं होता।

ऊपर के वाक्य में पुस्तकम् (पुस्तक) से एक सख्या का ज्ञान होता है, इसलिए यह एक वचन है, और ‘पुस्तकानि’ (पुस्तकें) से बहुत पुस्तकों का ज्ञान होता है, इसलिए यह बहुवचन है। हिन्दी में ये दो ही वचन होते हैं, परन्तु संस्कृत में द्विवचन भी होता है, जैसे—गोविन्दः पुस्तकं अपठत् (गोविन्द ने दो पुस्तकें पढ़ी) में ‘पुस्तकं’ द्विवचन है।

जब बात चीत की जाती है, तो एक बोलने वाला होता है, दूसरा वह होता है जिसके बात-चीत की जाती है और तीसरा वह (जड़ अथवा चेतन) पदार्थ होता है जिसके विषय में बात-चीत की जाती है। बोलने वाले को उत्तम पुरुष (First-Person), जिससे बात-चीत की जाती है, उसे मध्यम पुरुष (Second person), और जिसके विषय में बात-चीत की जाती है उसे अन्य पुरुष या प्रथम पुरुष (Third person) कहते हैं।

जैसे—

	एकवचन		द्विवचन		बहुवचन
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)		आवाम् (हम दो)		वयम् (हम)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तू)		युवाम् (तुम दो)		यूयम् (तुम)
प्रथम पुरुष	सः (पुं०)		तौ		ते
	सा (स्त्री)	(वह)	ते	(वे दो)	ताः (वे)
	तत् (नपुं)		ते		तानि

बालकः क्रीडति (लड़का खेलता है) बालिका क्रीडति (लड़की खेलती है) इन दो वाक्यों को देखने से मालूम हुआ कि संस्कृत में तिङन्त क्रिया का लिङ्ग नहीं होता है अर्थात् कर्ता के पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में होने पर भी क्रिया एक-सी रहती है, जैसे—रामः गच्छति सीता वा गच्छति। (राम अथवा सीता जाती है) रामोऽगच्छत्, सीता अगच्छत् (राम गया, सीता गई) पर हिन्दी में क्रियाओं के रूप कर्तृवाच्य में कर्ता के अनुसार, और कर्मवाच्य में कर्म के अनुसार पुल्लिङ्ग में और स्त्रीलिङ्ग में बदल जाते हैं।

शिशुः हसति (बच्चा हँसता है) बालिका पुष्पं पश्यति (लड़की फूल देखती है) इन दो वाक्यों में से पहले वाक्य की क्रिया (हसति) अकर्मक है क्योंकि उसे कर्म की जरूरत नहीं रहती और दूसरे वाक्य की क्रिया (पश्यति) सकर्मक है, क्योंकि उसे कर्म की जरूरत है।

ब्राह्मणः भोजनं पचते (ब्राह्मण भोजन पकाता है) सूदः भोजनं पचति (रसोइय

१ हिन्दी का यह नियम विधि क्रिया और संभावना क्रिया में लागू नहीं होता।

भोजन पकाता है) पहले वाक्य की क्रिया (पचते) आत्मनेपद में है क्योंकि आत्मनेपद का अर्थ है 'वह पद जो अपने लिए हो, ब्राह्मण अपने लिए भोजन पकाता है, क्रिया का फल उसे मिलता है। दूसरे वाक्य की क्रिया (पचति) परस्मैपद में है, परस्मैपद का अर्थ है 'वह पद जो दूसरे के लिए हो' रसोइया भोजन दूसरे के लिए बनाता है, इसलिए पकाने का फल कर्ता से भिन्न दूसरे को मिलता है। संस्कृत भाषा में धातुएँ या क्रियाएँ पदों के हिसाब से बँटी हैं, कुछ धातुएँ परस्मैपद में ही होती हैं, कुछ आत्मनेपद में और कुछ दोनों में। यह पद-विभाग का नियम केवल व्याकरणों में ही मिलता है, परन्तु संस्कृत के प्रायः सभी लेखकों ने इस नियम का उल्लंघन किया है।

अहं पुस्तकं पठामि (मैं पुस्तक पढ़ता हूँ) मया पुस्तकं पठ्यते (मुझ से पुस्तक पढ़ी जाती है) मया हस्यते (मुझ से हँसा जाता है) इन तीन वाक्यों में क्रियाएँ तीन वाच्यों में हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य में। पहले वाक्य की क्रिया (पठामि) कर्तृवाच्य में है, दूसरे वाक्य की क्रिया (पठ्यते) कर्मवाच्य में और तीसरे वाक्य की क्रिया (हस्यते) भाववाच्य में है। सकर्मक धातुओं की क्रियाएँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में होती हैं अकर्मक धातुओं की क्रियाएँ कर्तृवाच्य और भाववाच्य में।

संस्कृत में क्रिया के दस काल (वृत्तियाँ) होते हैं, जो इस प्रकार हैं :—

(१)	वर्तमानकाल—	लट्	Present tense
(२)	{ अनद्यतनभूत—	लङ्	Past imperfect tense
(३)		लुङ्	Aorist
(४)		लिट्	Past perfect tense
(५)		लृट्	Simple Future
(६)	{ अनद्यतनभविष्य—	लृट्	Future
(७)		लोट्	Imperative mood
(८)	विधि—	विधिलिङ्	Potential mood
(९)	आशीः—	आशीलिङ्	Benedicative
(१०)	क्रियातिपत्ति—	लृङ्	Conditional

वर्तमानकाल की क्रिया का प्रयोग वर्तमान समय में होने वाली चीज के विषय में किया जाता है, जैसे—गोपालः पाठशालां गच्छति (गोपाल स्कूल जाता है) अहं सत्यं वदामि (मैं सच बोलता हूँ)।

संस्कृत में भूतकाल की क्रिया के बताने के लिए तीन काल हैं—अनद्यतनभूत सामान्यभूत और परोक्षभूत। इसके प्रयोग में कुछ अन्तर है। अनद्यतनभूत का अर्थ है, वह भूतकाल जो आज न हुआ हो। इस काल का प्रयोग ऐसी दशा में होना चाहिए जब क्रिया आज खतम न हुई हो, कल या इसके पहले खतम हुई हो। 'राम अभी खेलने गया' इस वाक्य में 'गया' का अनुवाद अनद्यतनभूत की क्रिया (अगच्छत्) से न होगा बल्कि सामान्यभूत की क्रिया (अगमन्) से होगा। परोक्षभूत का अर्थ है



ऐसा भूतकाल जो आँखों के सामने न हुआ हो, जैसे—रामो राजा बभूव (राम राजा था) । तीसरे भूतकाल—सामान्यभूत का प्रयोग सब जगह किया जा सकता है चाहे किया आज खतम हुई हो या कई बरस पहले । परोक्षभूत को छोड़कर सामान्य-भूत या अनद्यतनभूत के प्रयोग में आजकल विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, जैसे—  
बालः सहसा अरुदत् ( बालक अचानक रो पड़ा ) ।

भविष्यकाल की क्रिया को बताने के लिए अनद्यतनभविष्य और सामान्यभविष्य प्रयुक्त होते हैं । आज ही होनेवाली क्रिया के लिए सामान्यभविष्य (लट्) का प्रयोग होता है, जैसे:—अद्यैव प्रयागं गमिष्यामि (मैं आज ही इलाहाबाद जाऊँगा) । सामान्यभविष्य का सब कहीं प्रयोग हो सकता है, परन्तु अनद्यतनभविष्य (लुट्) आज होनेवाली क्रिया के लिए प्रयुक्त नहीं हो सकता । यह दूरवर्ती भविष्य की क्रिया के लिए प्रयुक्त होता है, जैसे:—परश्वोऽहं काशीं गन्तास्मि (परसों में बनारस जाऊँगा) ।

आज्ञा (लोट्) का प्रयोग किसी को कुछ करने की आज्ञा देने के लिए होता है, जैसे:—गच्छतु भवान् पुनर्दर्शनाय (आप जाएँ फिर दर्शन दीजिए) गच्छ मह्यं जल-मानय (जा मेरे लिए पानी ले आ) ।

विधिलिङ् का प्रयोग किसी को आदेश देने के लिए होता है । लोट् (आज्ञा) का प्रयोग नरमी प्रकट करता है और विधिलिङ् का प्रयोग कुछ सख्ती प्रकट करता है, जैसे—कः जानाति किं भवेत् (कौन जानता है क्या हो ?) छात्रः पाठशालां गच्छेत् (विद्यार्थी को स्कूल जाना चाहिए) ।

आशीर्वाद देने के लिए आशीर्लिङ् का प्रयोग होता है, जैसे—त्वं चिरायुः भूयाः (तुम्हारी बड़ी उम्र हो) जीवेम शरदां शतम् (हम सौ बरस जीवें) ईश्वरस्त्वां धनिनं कुर्यात् (ईश्वर तुम्हें धनी बना दे) ।

क्रियातिपत्ति (लृङ्) का प्रयोग ऐसे समय पर होता है जब एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया पर निर्भर हो । जैसे—सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्ष्यमभविष्यत् (यदि अच्छी वर्षा होती तो अच्छी फसल होती) यदि गोपालः परिश्रममकरिष्यत् तदा नूनमुत्तीर्णाभविष्यत् (यदि गोपाल मेहनत करता तो अवश्य पास हो जाता) ।

परस्मैपदो असु—होना  
वर्तमान काल (लट् लकार)

एकवचन

प्रथम पुरुष अस्ति (वह है)

मध्यम पुरुष असि (तू है)

उत्तम पुरुष अस्मि (मैं है)

द्विवचन

स्तः (वे दो हैं)

स्थः (तुम दो हो)

स्वः (हम दो हैं)

बहुवचन

सन्ति (वे हैं)

स्थः (तुम हो)

स्मः (हम हैं)

१ परोक्षभूत का प्रयोग उत्तम पुरुष में नहीं होता क्योंकि स्वयं की हुई क्रिया परोक्ष (आँखों के सामने से दूर) नहीं हो सकती । किन्तु पागलपन की दशा में किया हुआ काम परोक्षभूत से भी बताया जा सकता है क्योंकि पागल मनुष्य के काम समक्ष नहीं कहे जा सकते ।

# अनुवादचन्द्रिका

## प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	ति	(ती) तः	(ते) अन्ति
म० पु० (त्वम्)	सि	(युवाम्) थः	(यूयम्) थ
उ० पु० (अहम्)	मि	(आवाम्) वः	(वयम्) मः

## भूतकाल (लङ् लकार)

एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु० आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वे दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु० आसीः (तु था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु० आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

## प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	त	(ती) ताम्	(ते) अन्
म० पु० (त्वम्)	:	(युवाम्) तम्	(यूयम्) त
उ० पु० (अहम्)	अम्	(आवाम्) व	(वयम्) म

## परस्मैपदी (भू) भव—होना

### वर्तमान—(लट् लकार)

प्र० पु०	भवति	भवतः	भवन्ति
म० पु०	भवसि	भवथः	भवथ
उ० पु०	भवामि	भवावः	भवामः

### अनद्यतनभूत (लङ् लकार)

प्र० पु०	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
म० पु०	अभवः	अभवतम्	अभवत
उ० पु०	अभवम्	अभवाव	अभवाम

### सामान्यभूत (लुङ् लकार)

प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

### परोक्षभूत (लिट् लकार)

प्र० पु०	वभूव	वभूवतुः	वभूवुः
म० पु०	वभूविथ	वभूवथुः	वभूव
उ० पु०	वभूव	वभूविथ	वभूविम

### सामान्य भविष्य (लृट् लकार)

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

अनद्यतन भविष्य (लुट् लकार)

प्र० पु०	भविता	भवितारी	भवितारः
म० पु०	भवितासि	भवितास्यः	भवितास्य
उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
म० पु०	भव	भवतम्	भवत
उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

आशीलिङ्

प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

क्रियातिपत्ति (लृङ् लकार)

प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

आत्मनेपदी जन्—पैदा होना

वर्तमान काल (लट् लकार)

प्र० पु०	जायते	जायेते	जायन्ते
म० पु०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उ० पु०	जाये	जायावहे	जायामहे

अनद्यतनभूत (लङ् लकार)

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

सामान्यभूत (लृङ् लकार)

प्र० पु०	अजनि, अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
म० पु०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्-द्व
उ० पु०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

परोक्षभूत (लिट् लकार)

प्र० पु०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिहे
----------	-------	---------	---------



म० पु०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिष्वे-ङ्वे
उ० पु०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
प्र० पु०	सामान्य भविष्य (लृट् लकार)		
म० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
उ० पु०	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे
प्र० पु०	अनद्यतनभविष्य (लृट् लकार)		
म० पु०	जनिता	जनितासौ	जनितारः
उ० पु०	जनितासे	जनितासाथे	जनिताध्वे
	जनिताहे	जनितास्वहे	जनितास्महे
प्र० पु०	आज्ञा (लोट् लकार)		
म० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
उ० पु०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
	जाये	जायावहे	जायामहे
प्र० पु०	विधिलिङ्		
म० पु०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
उ० पु०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
प्र० पु०	आशीलिङ्		
म० पु०	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्	जनिषीरन्
उ० पु०	जनिषीष्ठाः	जनिषीयास्थाम्	जनिषीध्वम्
	जनिषीय	जनिषीवहि	जनिषीमहि
प्र० पु०	क्रियातिपत्ति (लृङ् लकार)		
म० पु०	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्	अजनिष्यन्त
उ० पु०	अजनिष्यथाः	अजनिष्येथाम्	अजनिष्यध्वम्
	अजनिष्ये	अजनिष्यावहि	अजनिष्यामहि

## शब्दोच्चारण

## संस्कृत विभक्तियों के रूप

प्र०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
द्वि०	[॥]	[ओ]	[अः]
तृ०	[अम्]	[ओ]	[अः] <sup>१</sup>
	[एन्] <sup>२</sup>	[भ्याम्]	[भिः]

१ अ, इ, उ, और ऋकार अन्तवाले शब्दों को दीर्घ होकर अन्त में 'नृ' हो जाता है। २ इ, उ और ऋकार अन्त वाले शब्दों के अन्त में 'ना' होता है।

व०	[ए]¹	[भ्याम्]	[भ्यः]
प०	[आत्]²	[भ्याम्]	[भ्यः]
ष०	[स्य]	[ओः]	[आम्]
स०	[इ]³	[ओः]	[सु]

जसा कि पहले कहा गया है, विभक्तियाँ सात हैं, और सम्बोधन को मिलाकर आठ हो जाती हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। इन सात विभक्तियों से संख्या और कारकों का ज्ञान भी होता है। इन्हीं सात विभक्तियों को सुप् भी कहते हैं, सुप् का अर्थ है; ओ, अः आदि सात विभक्तियाँ। ति, तः, अन्ति आदि को तिङ् कहते हैं। जिन शब्दों के अन्त में सुप् और तिङ् हों उन्हें पद कहते हैं, अर्थात् बालः, बाली, बालाः आदि और पठति, पठतः, पठन्ति आदि पद हैं। आगे लिखे शब्द खूब रट लेना चाहिए।

### पुंलिङ्ग Masculine Gender

#### १—बाल (लड़का) अकारान्त

एक व०	द्वि० व०	बहु व०
प्र० बालः (लड़का)	बाली (दो लड़के)	बालाः (लड़के)
द्वि० बालम् (लड़के को)	बाली (दो लड़कों को)	बालान् (लड़कों को)
तृ० बालेन (लड़केसे)	बालाभ्याम् (दो लड़कों से)	बालैः (लड़कों से)
च० बालाय (लड़के के लिए)	बालाभ्याम् (दो लड़कों के लिए)	बालेभ्यः (लड़कों के लिए)
प० बालात् (लड़के से)	बालाभ्याम् (दो लड़कों से)	बालेभ्यः (लड़कों से)
ष० बालस्य (लड़के का, के, की)	बालयोः (दो लड़कों का)	बालानाम् (लड़कों, का)
स० बाले (लड़के पर, में)	बालयोः (दो लड़कों पर)	बालेषु (लड़कों पर)
सं० हे बाल (हे लड़के)	हे बाली (हे दो लड़को)	हे बालाः (हे लड़कों)

#### इसी प्रकार

देवः—देवता	नटः—नट	पिकः—कोयल	नृपः—राजा
खगः—पक्षी	अनलः—आग	वंशः—कुल	सर्पः—साँप
शुकः—तोता	अनिलः—हवा	अंशः—हिस्सा	करः—हाथ
वक्रः—बगला	वानरः—बंदर	नरः—मनुष्य	मयूरः—मोर
खलः—दुष्टः	गजः—हाथी	नक्रः—नाका	वृषभः—बैल

जिन अकारान्त शब्दों में ऋ, ॠ, ए, एम् से कोई अक्षर हो उनको तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन के नकार का णकार हो जाता है, जैसे—नृपेण, नृपाणाम्, नरेण, नराणाम्।

१ अकारान्त शब्द के अन्त में 'आय' होता है। २ इ, उ और अकारान्त शब्दों के पञ्चमी और षष्ठी के एकवचन में इ, उ, ऋ को गुण होकर स् का होता है। ३ इकारान्त तथा, उकारान्त के अन्त में 'औ' और आकारान्त के 'याम' हो जाता है। ४ अकारान्त शब्द के सम्बोधन के एकवचन में विसर्ग नहीं होता।

## २—कवि (कविता बनाने वाला) इकारान्त

प्र०	कविः	कवी	कवयः
द्वि०	कविम्	कवी	कवीन्
तृ०	कविना	कविभ्याम्	कविभिः
च०	कवये	कविभ्याम्	कविभ्यः
पं०	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः
ष०	कवेः	कव्योः	कवीनाम्
स०	कवी	कव्योः	कविषु
सं०	हे कवे	हे कवी	हे कवयः

## इसी प्रकारः—

विधिः—भाग्य	उदधिः—समुद्र	अरिः—दुश्मन	रविः—सूर्य
निधिः—खजाना	असिः—तलवार	नृपतिः, भूपति—राजा	कपिः—बन्दर
कलिः—झगडा	यतिः—योगी	अतिथिः—मेहमान	पाणिः—हाथ
ऋषिः, मुनिः, हरिः, अग्निः, गिरिः, मणिः, व्याधिः, रश्मिः, सारथिः, बलिः (बलि-दान), कृमिः (कीड़ा मकौड़ा) प्रभृतिः आदि ।			

जिन इकारान्त शब्दों में ऋ, ए, ष हों उनके तृतीया के एकवचन और षष्ठी के बहुवचन के न् का ण् हो जाता है, जैसे—ऋषिणा ऋषीणाम्; अरिणा, अरीणाम् ।

## ३—सुधी (विद्वान्) ईकारान्त

प्र०	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
द्वि०	सुधियम्	सुधियौ	सुधियः
तृ०	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
च०	सुधिये	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
पं०	सुधियः	सुधीभ्याम्	सुधीभ्यः
ष०	सुधियः	सुधियोः	सुधियाम्
स०	सुधिवि	सुधियोः	सुधीषु
सं०	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

## इसी प्रकारः—

सुश्रीः	— दिव्य	अपह्नीः	— निर्लज्ज
मन्दधीः	— मूर्ख	कुधीः	— दुष्ट

## ४—साधु (अच्छा आदमी) उकारान्त

प्र०	साधुः	साधू	साधवः
द्वि०	साधुम्	साधू	साधून्
तृ०	साधुना	साधुभ्याम्	साधुभिः
च०	साधवे	साधुभ्याम्	साधुभ्यः



प०	साधोः	साधुभ्याम्	साधुभ्यः
ष०	साधोः	साध्वोः	साधूनाम्
स०	साधौ	साध्वांः	साधुषु
सं०	हे साधो	हे साधू	हे साधवः

इसी प्रकार :—

विधुः	—	चन्द्रमा	वायुः	—	पवन	शिशुः	—	बालक
कृशानुः	—	अग्नि	गुरुः	—	आचार्य	मृत्युः	—	मौत
भानुः	—	सूर्य	शत्रुः	—	वैरी	प्रभुः	—	मालिक
इन्दुः	—	चन्द्रमा	बाहुः	—	भुजा	पाशुः	—	धूलि
तरुः	—	वृक्ष	विन्दुः	—	बंद	मृदुः	—	कमल
इषुः	—	बाण	शम्भुः	—	शिव			इत्यादि
पशुः	—	पशु	परशुः	—	कुल्हाड़ा			

५—श्रोतृ (सुनने वाला) ऋकारान्त

प्र०	श्रोतः	श्रोतारी	श्रोतारः
द्वि०	श्रोतारम्	श्रोतारी	श्रोतृन्
तृ०	श्रोत्रा	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभिः
च०	श्रोत्रे	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभ्यः
प०	श्रोतुः	श्रोतृभ्याम्	श्रोतृभ्यः
ष०	श्रोतुः	श्रोत्रोः	श्रोतृणाम्
स०	श्रोतरि	श्रोत्रोः	श्रोतृषु
सं०	हे श्रोतः	हे श्रोतारी	हे श्रोतारः

इसी तरह :—

वक्तृ	—	बोलने वाला	सवितृ	—	सूर्य	होतृ	—	हवन करने वाला
कर्तृ	—	करने वाला	अध्येतृ	—	पढ़ने वाला	जेतृ	—	जीतने वाला
भृतृ	—	स्वामी	गन्तृ	—	जाने वाला	रक्षितृ	—	रक्षक
तप्तृ	—	पौत्र	द्रष्टृ	—	देखने वाला			इत्यादि

६—पितृ (पिता)

प्र०	पिता	पितरी	पितरः
द्वि०	पितरम्	पितरी	पितृन्
तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
च०	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
प०	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
ष०	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
स०	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सं०	हे पितः	हे पितरी	हे पितरः

इसी तरह :—

भ्रातृ — भाई  
देव — देवर

नृ — आदमी  
जामातृ — जवाई

## स्त्रीलिङ्ग Feminine Gender

७—लता (बेल) आकारान्त

प्र०	लता	लते	लताः
द्वि०	लताम्	लते	लताः
तृ०	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
च०	लतयै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पं०	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
ष०	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
स०	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सं०	हे लते	हे लते	हे लताः

इसी तरह :—

कन्या — बालिका	निशा — रात्रि	व्यथा — कष्ट	शिला — पत्थर
कथा — कहानी	आज्ञा — हुक्म	जरा — बुढ़ापा	रथ्या — गली (सड़क)
प्रभा — रोशनी	कला — हुनर	भार्या — स्त्री	अजा — बकरी
क्रीडा — खेल	गङ्गा — गंगा नदी	ललना — स्त्री	
शाला — घर (स्थान)	चिन्ता — फिक्र	कान्ता — स्त्री	

क्षमा । माला । शोभा । लज्जा । प्रजा । छाया । विद्या । तृष्णा । इत्यादि

८—मति (बुद्धि) इकारान्त

प्र०	मतिः	मती	मतयः
द्वि०	मतिम्	मती	मतीः
तृ०	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
च०	मत्यै, मतये	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
पं०	मत्याः, मतेः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः
ष०	मत्याः, मतेः	मत्योः	मतीनाम्
स०	मत्याम्, मती	मत्योः	मतिषु
सं०	हे मते	हे मती	हे मतयः

इसी प्रकार :—

श्रुतिः—वेद; भूमिः, पंक्तिः, ओषधिः, व्रततिः—बेल; धूलिः, आलिः, बुद्धिः, गतिः, श्रेणिः, अङ्गुलिः, अवनिः—पृथ्वी ।

९--नदी (दरया) ईकारान्त

प्र०	नदी	नद्यी	नद्यः
द्वि०	नदीम्	नद्यी	नदीः
तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
च०	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पं०	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
स०	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सं०	हे नदि	हे नद्यी	हे नद्यः
जननी — माता	मही, पृथ्वी—भूमि	इन्द्राणी—इन्द्र की स्त्री	गोरी — पावंती
महिषी—पटरानी	वापी — बाउड़ी	कौमुदी—चाँदनी	रजनी — रात्रि
दासी — नौकरानी	नटी—नट की स्त्री	नारी — स्त्री	इत्यादि
सखी — सहेली	पुरी — शहर	पत्नी — भार्या	

१० धेनु (गाय) उकारान्त

प्र०	धेनुः	धेनू	धेनवः
द्वि०	धेनुम्	धेनू	धेनूः
तृ०	धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
च०	धेन्वै, धेनवे	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
पं०	धेन्वाः, धेनोः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः
ष०	धेन्वाः, धेनोः	धेन्वोः	धेनूनाम्
स०	धेन्वाम्, धेनौ	धेन्वोः	धेनूषु
सं०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः

इसी प्रकार :—

रेणुः=धूलि, तनुः=शरीर, चञ्चुः=चोंच, उडुः=तारा आदि ।

१०—वधू (पत्नी या पुत्र की पत्नी) ऊकारान्त

प्र०	वधूः	वध्वी	वधवः
द्वि०	वधूम्	वध्वी	वधूः
तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
च०	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
पं०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
ष०	वध्वाः	वध्वोः	वधूनाम्
स०	वध्वाम्	वध्वोः	वधूषु
सं०	हे वधू	हे वध्वी	हे वधवः



इसी प्रकार :—

चमूः=सेना, तनूः=शरीर, जम्बूः=जामुन का पेड़, श्वश्रूः=सास ।

११-मातृ (माँ) ऋकारान्त

प्र०  
द्वि०

माता

मातरौ

मातरः

मातरम्

मातरी

मातुः

शेष विभक्तियाँ पितृ शब्द की तरह होती हैं ।

इसी तरह :—

ननान्दु=ननद, दुहितृ=लड़की ।

नपुंसकलिङ्ग Neuter Gender

१२-फल (अकारान्त)

प्र०  
द्वि०  
तृ०  
च०  
पं०  
ष०  
स०  
सं०

फलम्

फले

फलानि

फलम्

फले

फलानि

फलेन

फलाभ्याम्

फलैः

फलाय

फलाभ्याम्

फलेभ्यः

फलात्

फलाभ्याम्

फलेभ्यः

फलस्य

फलयोः

फलानाम्

फले

फलयोः

फलेषु

हे फल

हे फले

हे फलानि

इसी प्रकार :—

रत्नम् — मणि  
विषम् — जहर  
वस्त्रम् — कपड़ा  
नगरम् — शहर  
तत्त्वम् — सचाईसुवर्णम् — सोना  
मांसम् — मांस  
नाखम् — नाखून  
जलजम् — कमल  
गृहम् — घरजलम् — पानी  
नेत्रम् — आँख  
मित्रम् — दोस्त  
हृदयम् — दिल  
कुसुमम् — फूलपुष्पम् — फूल  
उद्यानम् — बाग  
नयनम् — आँख

दुःखम्, सुखम्, मुखम्, पापम्, आकाशम्, भोजनम्, वचनम्, मोनम् (चुप) इत्यादि ।

१३-वारि (पानी) इकारान्त

प्र०  
द्वि०  
तृ०  
च०  
पं०  
ष०  
स०  
सं०

वारि

वारिणी

वारीणि

वारि

वारिणी

वारीणि

वारिणा

वारिभ्याम्

वारिभिः

वारिणे

वारिभ्याम्

वारिभ्यः

वारिणः

वारिभ्याम्

वारिभ्यः

वारिणः

वारिणोः

वारीणाम्

वारिणि

वारिणोः

वारिषु

हे वारि (वारे)

हे वारिणी

हे वारीणि

अनद्यतनभूतकाल (लङ्)

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० अपठत् (वह पढ़ा)	अपठताम् (वे दो पढ़े)	अपठन् (वे पढ़े)
म० पु० अपठः (तु पढ़ा)	अपठतम् (तुम दो पढ़े)	अपठत (तुम पढ़े)
उ० पु० अपठम् (मैं पढ़ा)	अपठाव (हम दो पढ़े)	अपठाम (हम पढ़े)

भूतकालिक तिङ् प्रत्यय

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० (सः) त् (तौ) ताम् (ते) अन्	म० पु० (त्वम्) स् (ः) * (युवाम्) तम् (यूयम्) त	उ० पु० (अहम्) म् (आवाम्) व (वयम्) म

भविष्यत् काल (लृट्)

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० पठिष्यति (वह पढ़ेगा)	पठिष्यतः (वे दो पढ़ेंगे)	पठिष्यन्ति (वे पढ़ेंगे)
म० पु० पठिष्यसि (तु पढ़ेगा)	पठिष्यथः (तुम दो पढ़ांगे)	पठिष्यथ (तुम पढ़ांगे)
उ० पु० पठिष्यामि (मैं पढ़ूंगा)	पठिष्यावः (हम दो पढ़ेंगे)	पठिष्यामः (हम पढ़ेंगे)

नियम—भविष्यत् काल (लृट्) बनाने का सुगम मार्ग यह है कि शुद्ध धातु पर (ह) लगा कर आगे 'ष्य' रखो। शेष 'ति' 'तः' 'अन्ति' आदि प्रत्यय वर्तमान की तरह होंगे।

कर्तृ-कारक (वह वस्तु, ने) प्रथमा

सर्वनाम शब्द

उत्तम पुरुष

पु० स्त्री० नपु०	एकव०	द्वि०	बहुव०
अस्मद्	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दो)	वयम् (हम)

मध्यम पुरुष

युष्मद्	त्वं (तु)	युवाम् (तुम दो)	यूयम् (तुम)
---------	-----------	-----------------	-------------

प्रथम पुरुष

तत् पु० सः } (वह)	तौ ते ते } (वे दो)	ते तानि } (वे)
इदम् पु० अयम् } (यह)	इमौ इमे इमे } (ये दो)	इमा इमानि } (ये)
किम् पु० कः } (कौन)	की के के } (कौन दो)	का कानि } (कौन सब)

\* भूतकाल में सिर्फ मध्यम पुरुष के एकवचन में विसर्ग (ः) होता है, वही नहीं। अतः अन्यत्र कहीं विसर्ग मत रखो। और 'हल्' अक्षरों का पाँच पर विशेष ध्यान रखो।

## अनुवाचचन्द्रिका

एकव०		द्विव०		बहुव०	
पुं०	यः	यौ	ये	ये	
स्त्री०	या	यै	यै	याः	(जो सब)
नपुं०	यत्	ये		यानि	
भवत् पुं०	भवान्	भवन्तौ		भवन्तः	
स्त्री०	भवती	भवत्यौ	(आप दो)	भवत्यः	(आप सब)
नपुं०	भवत्	भवती		भवन्ति	

### कर्तृवाच्य Active voice

कर्तृवाच्यप्रयोगे तु प्रथमा कर्तृकारके । द्वितीयान्तं भवेत् कर्म कर्त्रधीनं क्रियापदम् ॥  
कर्ता कर्म च करण संप्रदान तथैव च । अपादानाधिकरणे इत्याहुः कारकाणि षट् ॥

### अनुवाद की प्रणाली

(हरिकारिका)

संस्कृत के अनुवाद में कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया विभक्ति, और क्रियापद कर्ता के अधीन होता है, अर्थात् यदि कर्ता प्रथम पुरुष का हो तो क्रिया भी प्रथम पुरुष की, यदि कर्ता मध्यम पुरुष का हो तो क्रिया भी मध्यम पुरुष की, और यदि कर्ता उत्तम पुरुष का हो तो क्रिया भी उत्तम पुरुष की ही लगाई जाती है। कर्ता के एकवचन के साथ क्रिया भी एकवचन की, द्विवचन के साथ द्विवचन की, और बहुवचन के साथ क्रिया भी बहुवचन की ही लगाई जाती है।

जैसे—'सः पुस्तकं पठति' इस वाक्य में 'सः' कर्ता है जो कि प्रथमा विभक्ति में है। 'पुस्तकं' कर्म है, जो द्वितीया विभक्ति में है। और क्योंकि 'सः' तत् शब्द के प्रथम पुरुष का एकवचन है, इसलिए क्रिया 'पठति' भी प्रथम पुरुष के एकवचन में ही है। यदि कर्ता और क्रिया एक ही पुरुष के एक ही वचन में न रखी जाती तो वाक्य अशुद्ध हो जाता।

अंग्रेजी भाषा में पहिले कर्ता, फिर क्रिया और फिर कर्म लगाया जाता है क्योंकि उसमें विभक्तियों के चिह्न नहीं होते। परन्तु संस्कृत में विभक्तियों के चिह्न होने से कर्ता, कर्म और क्रिया आगे पीछे भी लग सकती है। यथा—'म वालकं पृच्छति' 'वालकं पृच्छति सः' 'पृच्छति स वालकम्' इत्यादि।

### संस्कृत बनाओ :—

(क) १—तू क्या पढ़ता है ? २—वे क्या पढ़ते हैं ? ३—राम अब नहीं पढ़ता है। ४—कला जरूर पढ़ती है। ५—दीवान जल्दी २ पढ़ता है। ६—मैं वैसे ही पढ़ता हूँ। ७—तुम कहाँ से पढ़ते हो। ८—वह हमेशा ऐसे ही पढ़ता है। ९—शान्ता क्यों नहीं पढ़ती है १०—हम दो जन्दी पढ़ते हैं। ११—आप दो हमेशा पढ़ते हो। १२—आप सब क्यों नहीं पढ़ते हो ? १३—क्या आप दो पढ़ती हो ? १४—आप हमेशा जन्दी पढ़ने हो। १५—आप दो क्या क्या पढ़ती हो ?

१ भवत् (आप) शब्द के साथ क्रिया प्रथम पुरुष की लगती है। जैसे—भवान् पठति (आप पढ़ने हो) भवन्तौ पठतः (आप दो पढ़ते हो) इत्यादि मध्यम पुरुष की क्रिया नहीं लगाई जाती, अतएव 'भवान् पठसि' यह वाक्य गलत है।



## कर्तृ-कारक

(ख) १—लड़कियां कब पढ़ें ? २—तुम क्यों नहीं पढ़ें ? ३—आज मैंने पढ़ा। ४—वे यहाँ नहीं पढ़ें। ५—तुम जल्दी जल्दी पढ़ें। ६—राम ने\* उस स नहीं पढ़ा। ७—तुम ने आज क्यों नहीं पढ़ा ? ८—गोविन्द ने दूसरे दिन क्या पढ़ा। ९—तुमने जो पढ़ा सो अच्छा पढ़ा। १०—मैंने कल सायंकाल नहीं पढ़ा।

(ग) १—वह कब पढ़ेगा ? २—मैं यहाँ ही पढ़ूंगा। ३—राम कदापि पढ़ेगा। ४—विद्यार्थी कब पढ़ेंगे ? ५—बालिकाएँ जरूर पढ़ेंगी। ६—तुम क पढ़ोगे ? ७—बालक आज ही पढ़ेंगे। ८—मैं अच्छी तरह पढ़ूंगा। ९—वे क पढ़ेंगे। १०—कृष्ण दिन में पढ़ेंगे। ११—हम अलग पढ़ेंगे। १२—तू क्या पढ़गी

### आज्ञा (लोट्)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र० पु० पठतु (वह पढ़ें)	पठताम् (वे दो पढ़ें)	पठन्तु (वे पढ़ें)
म० पु० पठ (तू पढ़)	पठतम् (तुम दो पढ़ो)	पठत (तुम पढ़ो)
उ० पु० पठानि (मैं पढ़ूँ)	पठाव (हम दो पढ़ें)	पठाम (हम पढ़ें)

### आज्ञार्थक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु० (सः)	तु	(तौ)	ताम्	(ते)	अन्तु
म० पु० (त्वम्)	अ	(युवाम्)	तम्	(यूयम्)	त
उ० पु० (अहम्)	आनि	(आवाम्)	आव	(वयम्)	आम

इसी प्रकार भ्वादिगणीय कुळ परस्मैपदी धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
गम्—जाना	गच्छति	अगच्छत्	गमिष्यति	गच्छतु
आगम्—आना	आगच्छति	आगच्छत्	आगमिष्यति	आगच्छतु
पा (पिब) —पीना	पिबति	अपिबत्	पास्यति	पिबतु
खाद्—खाना	खादति	अखादत्	खादिष्यति	खादतु
क्रीड्—खेलना	क्रीडति	अक्रीडत्	क्रीडिष्यति	क्रीडतु
वद्—बोलना	वदति	अवदत्	वदिष्यति	वदतु
रक्ष्—रक्षा करना	रक्षति	अरक्षत्	रक्षिष्यति	रक्षतु
वस्—रहना	वसति	अवसत्	वत्स्यति	वसतु
स्था (तिष्ठ) ठहरना	तिष्ठति	अतिष्ठत्	स्थास्यति	तिष्ठतु
दृश् (पश्य) देखना	पश्यति	अपश्यत्	द्रक्ष्यति	पश्यतु
भू (भव) —होना	भवति	अभवत्	भविष्यति	भवतु
हस्—हँसना	हसति	अहसत्	हसिष्यति	हसतु
पत्—गिरना	पतति	अपतत्	पतिष्यति	पततु
त्यज्—छोड़ना	त्यजति	अत्यजत्	त्यक्ष्यति	त्यजतु
धाव—दौड़ना	धावति	अधावत्	धाविष्यति	धावतु

\* कई विद्यार्थी "उसने पढ़ा" का अनुवाद "तेन अपठत्" कर देते हैं, यह सर्वथा अशुद्ध है। "उसने" का अनुवाद 'सः' होगा क्योंकि 'ने' प्रथमा का अर्थ भी है। इसलिए इसका अनुवाद "सः अपठत्" होगा।

## अभ्यास २

१—लड़के खेलते हैं। २—राजा रक्षा करता है। ३—तुम क्यों हँसते हो ?  
 ४—पत्ते गिरते हैं। ५—वहाँ लड़के क्यों खड़े हैं? ६—बंदर दौड़ते हैं। ७—यहाँ  
 कीन रहते हैं? ८—विद्यार्थी पढ़ते हैं। ९—तुम रक्षा करते हो। १०—मूर्ख बूधा  
 हैंसना है। ११—लड़का कब गया? १२—वह कल आया। १३—हमेशा न हँसी।  
 १४—गोपाल कल यहाँ आया। १५—हम खावें? १६—विद्यार्थियों को खेलना भी  
 चाहिये। १७—हमें झूठ न बोलना चाहिए। १८—मैं आज यहीं रहूँगा।  
 १९—क्या देखते हो, पढ़ो। २०—लड़कियाँ यहाँ अभी आईं।

## कर्मकारक (को) द्वितीया

## सर्वनाम शब्द

शब्द	पुं०	स्त्री०
अस्मद्	एकव० माम्	द्विव० आवाम्
युष्मद्	त्वाम्	युवाम्
तद्	तम्	ते
इदम्	इमम्	इमे
किम्	कम्	के
यद्	यम्	ये
भवत्	भवन्तम्	भवन्ती
	द्विव० आवाम्	द्विव० आवाम्
	युवाम्	युवाम्
	तान्	तान्
	इमान्	इमान्
	कान्	कान्
	यान्	यान्
	भवन्ती	भवन्ती

विशेष—(१) नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया विभक्तियाँ एक सी होती हैं। और तृतीया से सप्तमी तक सब विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं। (२) युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप नपुंसकलिङ्ग, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में एक ही समान होते हैं।

## भ्रातृहिण की आत्मनेपदी धातुएँ

सेव्—सेवा करना। वर्तमान काल (छट्)

प्र० पु०	एकव० सेवते	द्विव० सेवते	बहुव० नेवन्ते
प्र० पु०	(तुह सेवा करता है)	(वे दो सेवा करते हैं)	(वे सेवा करते हैं)
प्र० पु०	सेवसे	सेवथे	सेवध्वं
प्र० पु०	(तु सेवा करता है)	(तुम दो सेवा करते हो)	(तुम सेवा करते हो)
प्र० पु०	सेवे	सेवावां	सेवावहे
प्र० पु०	(मैं सेवा करता हूँ)	(हम दो सेवा करते हैं)	(हम सेवा करते हैं)

## वर्तमानकालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(तः)	ते	(तो)	इतो	(ते)	अन्ते
प्र० पु०	(चन्)	से	(यत्राम्)	इथे	(ययम्)	ध्वे
प्र० पु०	(अहम्)	ई	(आयाम्)	वहे	(वयम्)	महे

अनद्यतनभूत (लङ्)

प्र० पु०	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
म० पु०	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उ० पु०	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

भूतकालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	त	(ती)	इताम्	(ते)	अन्त
म० पु०	(त्वम्)	थाः	(युवाम्)	इथाम्	(यूयम्)	ध्वम्
उ० पु०	(अहम्)	इ	(आवाम्)	वहि	(वयम्)	महि

भविष्यत् काल (लुट्)

प्र० पु०	सेविष्यते	सेविष्यते	सेविष्यन्ते
म० पु०	सेविष्यसे	सेविष्यथे	सेविष्यध्वे
उ० पु०	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

भविष्यत्कालिक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	स्यते	(ती)	स्यते	(ते)	स्यन्ते
म० पु०	(त्वम्)	स्यसे	(युवाम्)	स्यथे	(यूयम्)	स्यध्वे
उ० पु०	(अहम्)	स्ये	(आवाम्)	स्यावहे	(वयम्)	स्यामहे

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उ० पु०	सेवै	सेवावहे	सेवामहे

आज्ञार्थक तिङ् प्रत्यय

प्र० पु०	(सः)	ताम्	(ती)	इताम्	(ते)	अन्ताम्
म० पु०	(त्वम्)	स्व	(युवाम्)	इथाम्	(यूयम्)	ध्वम्
उ० पु०	(अहम्)	ऐ	(आवाम्)	आवहे	(वयम्)	आमहे

इसी तरह अन्य आत्मनेपदी भ्वादिगणीय धातुएँ—

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
लभ्—पाना	लभते	अलभत	लप्स्यते	लभताम्
रुच्—चमकना या अच्छा लगना	रोचते	अरोचत	रोचिष्यते	रोचताम्
लज्ज्—शर्माना	लज्जते	अलज्जत	लज्जिष्यते	लज्जताम्
भाप्—कहना	भाषते	अभाषत	भाषिष्यते	भाषताम्
मुद्—प्रसन्न होना	मोदते	अमोदत	मोदिष्यते	मोदताम्
शिक्ष्—शिक्षा देना	शिक्षते	अशिक्षत	शिक्षिष्यते	शिक्षताम्
वन्द्—नमस्कार करना	वन्दते	अवन्दत	वन्दिष्यते	वन्दताम्
यत्—होशिया करना	यतते	अयतत	यतिष्यते	यतताम्
नी (नय्)—ले जाना	नयते	अनयत	नेष्यते	नयताम्
	(नयति)	(अनयत्)	(नेष्यति)	(नयतु)
आ+नी (नय्)—जाना	आनयते	आनयत	आनेष्यते	आनयताम्

कर्म—जिसके ऊपर क्रिया का असर (फल) पड़ता है उसे कर्म कारक कहते हैं।  
कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, जैसे :—

अहं चन्द्रं पश्यामि (मैं चाँद को देखता हूँ) यहाँ पर 'देखने' का असर 'चाँद' के ऊपर पड़ रहा है, इस लिए 'चाँद' कर्म कारक हुआ। कर्म कारक होने से 'चाँद' में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग हुआ। अत एव 'चाँद को' इसका अनुवाद 'चन्द्रम्' हुआ। इसी प्रकार :—

१—सः धर्मं वदति (वह धर्म की बात कहता है)

२—बालाः गृहम् अगच्छत् (लड़के घर गये)

३—अहम् पाठशालाम् गमिष्यामि (मैं स्कूल जाऊँगा)

४—सः मां रक्षति (वह मेरी रक्षा करता है)

५—गोपालः पारितोषिकम् अलभत (गोपाल ने इनाम पाया)

इसके अतिरिक्त विना, प्रति, अनु (पीछे) अन्तरा (बीच में) निकषा अथवा समया (समीप) अन्तरेण (विना) अभितः अथवा उभयतः (दोनों तरफ) परितः अथवा सर्वतः (चारों तरफ) धिक् (धक्कार) हा (अफ़सोस) के साथ द्वितीया विभक्ति का प्रयोग होता है। जैसे :—

† निम्न लिखित सोलह धातुएँ द्विकर्मक हैं :—

१—दुह् (दोहना) \* गोपः गां पयः दोग्धि (गवाला गाय से दूध दुहता है)

२—गात्र् (माँगना) दरिद्रः राजानं वस्त्रं याचते (दरिद्र राजा से कपड़ा माँगता है)

३—पच् (पकाना) सः तण्डुलान् ओदनं पचति (वह चावलों से भात पकाता है)

४—दण्ड् (सजा देना) राजा चोरं शतं दण्डयति (राजा चोर को सौ छपये

जुर्माना करता है)

५—रुध् (घेरना) व्रजमवरुणद्वि गाम् (गाय को व्रज में घेरता है)

६—पृच्छ् (पूछना) ब्राह्मणं मार्गं पृच्छति (ब्राह्मण से रास्ता पूछता है)

७—वि (बटोरना) वृक्षमवचिनोति फलानि (पेड़ से फल बटोरता है)

८—ब्रू (बोलना) माणवकं धर्मं ब्रूते (लड़के को धर्म की बात कहता है)

९—शास् (शासन करना) गुरुः शिष्यं धर्मं शास्ति (गुरु शिष्य को धर्म का उपदेश देता है)

१०—जि (जीतना) शत्रुं शतं जयति (दुश्मन से सौ जीतता है)

११—मन्य् (मथना) क्षीरसागरममृतं मन्यन्ति (क्षीरसागर से अमृत मथते हैं)

१२—मुष् (चोरना) चोरः राजानं सहस्रं मृष्णाति (चोर राजा के हजार छपये चोराता है)

१३-१४—नी, वह् (ले जाना) सः ग्राममजां नयति वहति वा (वह गाव को बकरी ले जाता है)

१५—ह् (चोराना) चारः कृपणं धनमहरत् (चोर कंजस का धन ले गया)

१६—कृष् (खोदना) नराः वसुधां रत्नानि कर्षन्ति (लोग जमीन से रत्न निकालते हैं)

\* ऊपर के उदाहरण—'गोपः, गां पयः दोग्धि' (गवाला गौ से दूध दोहता है) में 'गौ से' का अनुवाद पञ्चमी (गोः) न होकर 'गाम्' द्वितीया हुई। इसी प्रकार अन्य याच, पच् आदि धातुओं अथवा इन्हीं के अर्थ वाली धातुओं के दोनों कारकों में द्वितीया विभक्ति ही होती है।



(प्रति) दीनं प्रति दयां कुरु (दीन पर दया करो)

(विना, अन्तरेण) सत्यमन्तरेण विना वा नैव सुखम् (सत्य के विना सुख नहीं)

(अनु) स्वामिनमनुसेवकः गच्छति (मालिक के पीछे नौकर जाता है)

(अन्तरा) सुशीलां मालतीञ्चान्तरा सीताऽस्ति (सुशीला और मालती के बीच में सीता है)

(निकषा, समया) नगरं समया निकषा वा वाटिकास्ति (शहर के पास बाग है)

(अभितः, उभयतः) प्रयागमभितः उभयतः वा नद्यौ स्तः (प्रयाग के दोनों तरफ नदियाँ हैं)

(परितः, सर्वतः) ग्रामम् परितः सर्वतो वा वृक्षाः सन्ति (गाँव के चारों तरफ पेड़ हैं)

(धिक्) धिक् तं पापकारिणम् (उस पापी को धिक्कार)

(हा) हा नास्तिकं यः ईश्वरं न पश्यति (नास्तिक पर अफसोस ! जो ईश्वर को नहीं मानता)।

### संस्कृत बनाओ :—

१—गोपाल चिट्ठी (पत्र) लिखता है। २—रमा पुस्तक पढ़ती है। ३—बालक चन्द्रमा (चन्द्र) को देखता है। ४—हम गाँव (ग्राम) को जाते हैं। ५—तू आज स्कूल क्यों नहीं जाता? ६—कंजूस (कृपण) को धिक्कार है। ७—गाँव के दोनों तरफ नदी बहती है (वह)। ८—परिश्रम के बिना विद्या प्राप्त नहीं होती है। ९—ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है। १०—विद्यार्थी (छात्र) काशी गया। ११—क्या तुमने हाथी (गज) नहीं देखे? १२—तुम्हारे पिता प्रयाग कब गये? १३—मैं कल दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) जाऊँगा। १४—क्या आज इन्स्पेक्टर साहब (निरीक्षक) यहाँ आये थे? १५—मैं आज जरूर चिट्ठी लिखूँगा। १६—सूर्य अस्ताचल को जाएगा। १७—हमें सदा सत्य बोलना चाहिए। १८—हमें व्यर्थ (वृथा) नहीं हँसना चाहिए। १९—सदा सच बोलो, दीन की रक्षा करो और रोगी (रुग्ण) की सेवा करो। २०—निरक्षरों को पढ़ाओ, दीनो की रक्षा करो। २१—गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है। २२—नगर के पास एक बाग था। २३—छात्र गुरु के पीछे जाता है। २४—अधर्मी (धर्माभिमुख) पर अफसोस।

करण कारक (ने, से, द्वारा) तृतीया

सर्वनाम शब्द

पुँल्लिङ्ग

स्त्रीलिङ्ग

एकव०	द्विव०	बहुव०	एकव०	द्विव०	बहुव०
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
तेन	ताभ्याम्	तैः	तया	ताभ्याम्	ताभिः

अनेन	आभ्याम्	एभिः	अनया	आभ्याम्	आभिः
केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
येन	माभ्याम्	यैः	यया	माभ्याम्	याभिः
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	भवत्या	भवतीभ्याम्	भवतीभिः

## अदादिगणीय

परस्मैपदी अस (होना)

वर्तमानकाल (लट्)

एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु० अस्ति (वह है)	स्तः (वे दो हैं)	सन्ति (वे हैं)
म० पु० अस्ति (तू है)	स्थः (तुम दो हो)	स्थ (तुम हो)
उ० पु० अस्मि (मैं हूँ)	स्वः (हम दो हैं)	स्मः (हम हैं)

अनद्यतनभूत (लङ्)

प्र० पु० आसीत् (वह था)	आस्ताम् (वह दो थे)	आसन् (वे थे)
म० पु० आसीः (तू था)	आस्तम् (तुम दो थे)	आस्त (तुम थे)
उ० पु० आसम् (मैं था)	आस्व (हम दो थे)	आस्म (हम थे)

भविष्यत् काल—प्र० पु० भविष्यति, भविष्यतः इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)		
प्र० पु० अस्तु (वह हो)	स्ताम् (वे दो हैं)	सन्तु (वे हों)
म० पु० एधि (तू हो)	स्तम् (तुम दो होओ)	स्त (तुम होओ)
उ० पु० असानि (मैं होऊँ)	असाव (हम दो होवें)	असाम (हम होवें)

हन् (मारना)

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्ति	हथः	हथ
उ० पु०	हन्ति	हन्वः	हन्मः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहतम्	अहत
उ० पु०	अहन्म	अहन्व	अहन्म

भविष्यत् काल—प्र० पु० हन्तिष्यतः इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

## अदादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ:—

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
अद--खाना	अत्ति	आदत्	अत्स्यति	अत्तु
या--जाना	याति	अयात्	यास्यति	यातु
स्ना--न्हाना	स्नाति	अस्नात्	स्नास्यति	स्नातु
भा--चमकना	भाति	अभात्	भास्यति	भातु
रुद्--रोना	रोदिति	अरोदत्	रोदिष्यति	रोदितु
दुह्--दोहना	दोमिध	अधोक्	धोक्ष्यति	दोम्बु
शीङ्--सोना	शेते	अशेत	शयिष्यते	शेताम्
अधि+इ-पढ़ना	अधीते	अध्येत	अध्येष्यते	अधीताम्

**करण कारक**—जिसकी मदद से कर्ता अपना काम पूरा करता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—सः कलमेन लिखति (वह कलम से लिखता है) यहाँ पर लिखने वाला कलम की मदद से लिखने का काम पूरा करता है, इसलिए 'कलम' करण कारक हुआ, और उसमें तृतीया विभक्ति 'कलमेन' हुई। इसी प्रकार

- १-(क) सः खड्गेन शत्रुं हन्ति (वह तलवार से दुश्मन को मारता है)
- (ख) भृत्यः हस्ताभ्यां जलं पिबति (नौकर हाथों से पानी पीता है)
- (ग) राजपुरुषः यष्टिकया चौरं ताडयति (सिपाही डंडे से चोर को पीटता है)
- (घ) बालकाः कन्दुकैः क्रीडन्ति (लड़के गेंदों से खेलते हैं)
- (ङ) सर्वसम्पत्त्या स्वीकृतः प्रस्तावः (सब की राय से प्रस्ताव पास हुआ)
- (२) अगर शरीर का कोई अंग विकृत हो तो उस अंग के वाचक शब्द से तृतीया हो जाती है। यथा—

नेत्रेण काणः (आँख से अन्धा), कर्णम्यां बधिरः (कानों से बहिरा)

(३) किम्, कार्यम् अर्थः, प्रयोजनम् और अलम् के साथ प्रयुक्त शब्द में तृतीया और कर्तृवाचक शब्दों में षष्ठी आती है। यथा—  
नम्य धनेन किं यो दातुं न शक्नोति। तृणेन अपि कार्यं भवति। कोऽयं मूर्खेण पुत्रेण। मूर्खाणां पुत्रकैः किं प्रयोजनम्। अलं हस्तिनेन (मत हंसी)।

(४) जिस लक्षण (चिह्न) के द्वारा कोई व्यक्ति या वस्तु लक्षित (पाया) हो उस लक्षण बोधक शब्द में तृतीया विभक्ति हो जाती है। यथा—जटाभि तपसः (जटा के द्वारा तपस्वी मालम होता है)।

(५) हेतु अर्थ में तृतीया विभक्ति हो जाती है। यथा—  
विप्रया यशः भवति। सः अध्ययनेन वराति। इन वाक्यों में यश का हेतु विद्या, तथा वास का हेतु अध्ययन है।

(६) सह, साकम्, सार्धम् और समम् के मेल वाले शब्द में तृतीया हो जाती है। यथा—  
अहं मूर्खेण सह न गच्छामि। तौ केन साकं क्रीडतः? त्वं बानरैः सार्धम् गवसि।

स मित्रैः समम् चलति।

## संस्कृत बनाओ :-

१—मैं कलम से पत्र लिखता हूँ । २—तू साबुन (फेनिल) से नहाता है । ३—लड़के दोस्तों के साथ गेंद (कन्दुक) खेलते हैं । ४—शिकारी (मृगयु) ने बन्दक (नालीक) से बिड़िया मारी । ५—वीर ने तलवार (खड्ग) से दुश्मन को मारा । ६—गोपाल ने लाठी (लगुड़) से साँप को मार डाला । ७—हम मूर्खों के साथ नहीं खेलेंगे । ८—आज मैंने दोस्तों के साथ खाना खाया । ९—मैं आपके साथ प्रयाग न जाऊँगा । १०—छात्रों ने गुरुओं के साथ स्नान किया । ११—लड़कों ने लड़कियों के साथ पढ़ाई । १२—बढ़ा अध्ययन के कारण यहाँ रहते हैं । १३—लड़कों को दुष्टों के साथ पढ़ना चाहिये और न खेलना चाहिये । १४—मनुष्य मुख से खाते हैं, पैरों से चलते हैं और आँखों से देखते हैं । १५—हँसो मत । १६—विद्या से हीन मनुष्य शोचनीय नहीं पाता ।

सम्प्रदान कारक (को, के लिए) चतुर्थी  
सर्वनाम शब्द

एकव०	द्वि०	पुं०	बहुव०	एकव०	द्वि०	पुं०	बहुव०
मह्यम्	आवाभ्याम्		अस्मभ्यम्	मह्यम्	आवाभ्याम्		अस्मभ्यम्
तुभ्यम्	युवाभ्याम्		युष्मभ्यम्	तुभ्यम्	युवाभ्याम्		युष्मभ्यम्
तस्मै	ताभ्याम्		तेभ्यः	तस्यै	ताभ्याम्		तेभ्यः
अस्मै	आभ्याम्		एभ्यः	अस्यै	आभ्याम्		आभ्यः
कस्मै	काभ्याम्		केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्		काभ्यः
यस्मै	याभ्याम्		येभ्यः	यस्यै	याभ्याम्		याभ्यः
भवते	भवद्भ्याम्		भवद्भ्यः	भवत्वै	भवतीभ्याम्		भवतीभ्यः

## जुहोत्यादिगणीय

परस्मैपदो दा—देना

वर्तमान काल (लट्)

एकव०	द्वि०	बहुव०
प्र० पु० ददाति	दत्तः	ददति
म० पु० ददासि	दत्थः	दत्थ
उ० पु० ददामि	दद्वः	दद्यः

## भूतकाल (लङ्)

प्र० पु० अददात्	अदत्ताम्	अददुः
म० पु० अददाः	अदत्तम्	अदत्त
उ० पु० अददाम्	अदद्व	अदद्य

## भविष्यत् काल (लृट्)

प्र० पु० दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
म० पु० दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ
उ० पु० दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः



आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	ददातु	दत्ताम्	ददतु
म० पु०	देहि	दत्तम्	दत्त
उ० पु०	ददान	ददाथ	ददाम

अहोत्याविगण की कुछ अन्य धातुएँ

	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
धा-धारण करना	दधाति	अदधात्	धास्यति	दधातु
अभि-धा-कहना	अभिदधाति	अभ्यदधात्	अभिधास्यति	अभिदधातु
भी-डरना	बिभेति	अविभेत्	भेष्यति	बिभेतु
वि+धा-करना	विदधाति	व्यदधात्	विधास्यति	विदधातु
हा-छोड़ना	जहाति	अजहात्	हास्यति	जहातु

सम्प्रदान कारक—जिसे कोई चीज दी जाय, अथवा जिसके लिए कोई काम किया जाय, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। सम्प्रदानकारक में चतुर्थी विभक्ति होती है, जैसे—सः ब्राह्मणाय दक्षिणां ददाति (वह ब्राह्मण को दक्षिणा देता है) यहां पर 'ब्राह्मण' सम्प्रदान कारक हुआ। इसलिए ब्राह्मण शब्द में चतुर्थी विभक्ति (ब्राह्मणाय) हुई। इसी प्रकार—

१—दरिद्राय धनं यच्छति (दरिद्र को धन देता है)।

२—गुरुः शिष्याय विद्यां वितरति (गुरु शिष्य को विद्या देता है)।

३—श्रेष्ठी निर्धनेभ्यः छात्रेभ्यः पुस्तकानि ददाति (सेठ गरीब विद्यार्थियों को पुस्तक देता है)।

४—भवतः दर्शनाय आगच्छम् (आपके दर्शन को आया हूँ)।

५—अहं पित्रे पत्रं प्रेषयम् (मैंने पिता को पत्र भेजा)।

(१) जिसके निमित्त कोई क्रिया की जाय उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—सः अश्वाय घासम् आनयति। साधुः मुक्तये हरि भजति।

(२) हित और सुख शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। यथा—ब्राह्मणाय हितं सुखं वा भवेत् (ब्राह्मण का हित या सुख हो)।

(३) रोचते, कुप्यति, क्रुध्यति, नमः और स्वस्ति के योग में चतुर्थी हो जाती है। यथा—

१ मह्यं भक्तिः रोचते। २—शिक्षकः छात्राय कुप्यति। ३—सः कस्मै क्रुध्यति।

४—नमः परमात्मने। ५—नरपालाय स्वस्ति।

(४) धारयति, स्पृहयति और उपदिशति के योग में चतुर्थी हो जाती है। यथा—

१—त्वं मह्यं शतं धारयसि। २—वानराः कलेभ्यः स्पृहयन्ति। ३—शिक्षकः छात्रेभ्यः धर्ममुपदिशति।

१ चतुर्थी के अर्थ में "अर्थम्" या "कृते" भी प्रयुक्त होते हैं।

यथा—तदर्थम्, त्वदर्थम्, मदर्थम्, रामार्थम्, शिवार्थम्, तव कृते, रामस्य कृते, इत्यादि। (ये प्रयोग तीनों लिङ्गों में समान हैं)।

## अभ्यासः Exercise.

१—बलि वामन को पृथ्वी देता है । २—ईश्वर निर्धनों को धन देता है ।  
 ३—हम साधुओं को कपड़े देते हैं । ४—राजा ब्राह्मणों को गौएँ देता है । ५—वैद्य  
 बीमार को (रोगिणें) दवाई (अगद) देता है । ६—मैं राम को लड्डू (मोदक)  
 देता हूँ । ७—तू मुझे मोती (मौक्तिक) देता है । ८—वह मुझ पर क्रुद्ध होता है ।  
 ९—मुझे मिठाई (मिष्ठान्न) अच्छी लगती है । १०—मेरा आपके लिए नमस्कार  
 है । ११—मैं तुझे उपदेश देता हूँ ।

१—आचार्य ने शिष्य को उपदेश दिया । २—इन्स्पेक्टर (निरीक्षक) ने छात्र  
 को इनाम (पारितोषिक) दिया । ३—मुझे उपदेश अच्छा लगा । ४—बालकों को  
 भ्रमण अच्छा लगा । ५—अध्यापक ने तुम्हें क्या इनाम दिया ?

१—कल मैं वरिष्ठों को भोजन दूंगा । २—ईश्वर गरीबों को कपड़े देगा ।  
 ३—आचार्य मुझे उपदेश देंगे । ४—गुरुजी मुझ पर क्रोध करेंगे । ५—मैं धर्म पर  
 अपना शरीर दे दूंगा । ६—वह बालक के लिये पुस्तक लावेगा ।

१—गरीबों को भोजन दो । २—किसी को गाली (गाली) न दो । ३—दीन  
 को वस्त्र दो । ४—मेरे लिए पानी लाओ ।

## अपादान कारक (से) पञ्चमी ।

## सर्वनाम शब्द

पुं०

एकव०

मत्

त्वत्

तस्मात्

अस्मात्

कस्मात्

यस्मात्

भवतः

द्वि०

आवाभ्याम्

युवाभ्याम्

ताभ्याम्

आभ्याम्

काभ्याम्

याभ्याम्

भवद्भ्याम्

बहुव०

अस्मत्

युष्मत्

तेभ्यः

एभ्यः

केभ्यः

येभ्यः

भवद्भ्यः

स्त्री०

एकव०

मत्

त्वत्

तस्याः

अस्याः

कस्याः

यस्याः

भवत्याः

द्वि०

आवाभ्याम्

युवाभ्याम्

ताभ्याम्

आभ्याम्

काभ्याम्

याभ्याम्

भवतीभ्याम्

बहुव०

अस्मत्

युष्मत्

तेभ्यः

आभ्यः

काभ्यः

याभ्यः

भवतीभ्यः

## दिवादिगणीय ।

आत्मनेपदी जन्—पैदा होना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०

म० पु०

उ० पु०

जायते

जायसे

जाये

जायेते

जायेथे

जायावहे

जायन्ते

जायध्वे

जायामहे

१ पंचमी के अर्थ में 'तः' प्रत्यय भी लगाया जाता है । यथा—ततः, त्वत्तः, मत्तः,  
 अतः, सर्वतः, कुतः, यतः भवतः, रामतः, इत्यादि । (ये प्रयोग तीनों लिङ्गों में समान हैं) ।

भक्तकाल (लङ्)

प्र० पु०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
म० पु०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उ० पु०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

भविष्यत्काल (लट्)

प्र० पु०	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते इत्यादि ।
----------	----------	-----------	----------------------

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम् इत्यादि ।
----------	---------	----------	---------------------

दिवादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्

लङ्

लृट्

लोट्

विद्—होना	विद्यते	अविद्यत	वैत्स्यते	विद्यताम्
युध्—लड़ना	युध्यते	अयुध्यत	योत्स्यते	युध्यताम्
सिब्—सीना	सीव्यति	असीव्यत्	सेविष्यति	सीव्यतु
नश्—नाश होना	नश्यति	अनश्यत्	नशिष्यति	नश्यतु
नृत्—नाचना	नृत्यति	अनृत्यत्	नर्तिष्यति	नृत्यतु

अपादान कारक—जिससे कोई चीज अलग हो उसे अपादान कारक कहते हैं । अपादान कारक में पञ्चमी विभक्ति होती है, जैसे—वृक्षात् फलं पतति (पेड़ से फल गिरता है) यहां पर पेड़ से फल अलग हो रहा है इसलिए 'पेड़' अपादान कारक हुआ और उसमें पञ्चमी विभक्ति (वृक्षात्) हुई । इसी प्रकार—

१—शिशुः प्रासादात् अपतत् (बच्चा महल से गिर पड़ा) । २—मनुष्यः ग्रामात् आगच्छति (मनुष्य गांव से आता है) । ३—गङ्गा हिमालयात् उदगच्छति (गंगा हिमालय से निकलती है) । ४—छात्रः गुरोः अधीते (शिष्य गुरु से पढ़ता है) । ५—त्वम् अश्वात् कथम् अपतः (तू घोड़े से कैसे गिरा ?) ।

(१) जायते, विभेति, वारयति, प्रतियच्छति के योग में पञ्चमी होती है । यथा—बीजेभ्यः अङ्कुराः जायन्ते । बालकः वानरान् विभेति । सः सस्येभ्यः गां वारयति । तण्डुलेभ्यः प्रतियच्छति माषान् ।

(२) पृथक् और विना के योग में द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्तियाँ प्रयुक्त होती हैं । यथा—

घनम्, घनेन, धनात् वा विना नहि सुखम् ।

(३) दो या अधिक वस्तुओं में जहाँ एक का उल्कषण बताना हो वहाँ निकृष्ट वस्तु के आगे पञ्चमी विभक्ति हो जाती है । यथा—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी । (माता और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक मान्य हैं) ।

(४) बहिः, आरात् प्रभृति शब्दों के योग में पञ्चमी विभक्ति होती है । यथा—ग्रामात् बहिः (गांव से बाहर), आरात् वनात् (वन के पास या दूर) अश्वात् प्रभृति (बचपन से लेकर) ।

(५) ऋते के योग में पञ्चमी या द्वितीया विभक्तियाँ होती हैं ।

यथा—ऋते परिश्रमात्, परिश्रमं वा विद्या लभ्या न भवति । (बिना परिश्रम के विद्या प्राप्त नहीं होती) ।

(६) अतिरिक्त, भिन्न आदि शब्दों के योग में भी पञ्चमी होती है ।

यथा—बलवन्तात् अतिरिक्तः (भिन्नः, इतरः, अन्यः) कः दुष्टः (बलवन्त के सिवा कौन दुष्ट हो सकता है ?) ।

### संस्कृत बनाओ—

१—पेड़ से पत्ते गिरे । २—राजकुमार महल से गिरा । ३—वृक्ष पहाड़ से गिरते हैं । ४—फूल लताओं से गिरते हैं । ५—पुत्र से आनन्द होता है । ६—अधर्म से पाप होता है । ७—बनिया चावलों को (तण्डुलान्) गेहूँ से (गोधूमेभ्यः) बदलता है । ८—लोभ क्रोध से होता है । ९—में गाँव से अभी आया हूँ । १०—शेर से मृग को बचाओ । ११—पाप से बच । १२—बालक बानर से डरता है । १३—मौत न डरो । १४—श्याम से राम सुखी है (सुखितरः) । १५—गोविन्द क्याम से अधिक बुद्धिमान् (बुद्धिमत्तरः) है । १६—सब छात्र गुरु से पढ़ते हैं । १७—गोबर (गोमय) से विच्छू (वृश्चिक) पैदा होता है । १८—बहू ससुर (श्वसुर) से लज्जा करती है । १९—सत्सङ्गति पाप से हटाती है । २०—लड़कियाँ महल से बानरों को देखती हैं ।

### सम्बन्ध (का, के, की) षष्ठी

#### सर्वनाम

एकव०	द्विव०	बहु०	एकव०	द्विव०	बहु०
मम	आवयोः	अस्माकम्	मम	आवयोः	अस्माकम्
तव	युवयोः	युष्माकम्	तव	युवयोः	युष्माकम्
तस्य	तयोः	तेषाम्	तस्याः	तयोः	तासाम्
अस्य	अनयोः	एषाम्	अस्याः	अनयोः	आसाम्
कस्य	कयोः	केषाम्	कस्याः	कयोः	कासाम्
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्याः	ययोः	यासाम्
भवतः	भवतोः	भवताम्	भवत्याः	भवत्योः	भवतीनाम्

### परस्मैपदी श्रु—सुनना

#### वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति
म० पु०	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उ० पु०	शृणोमि	शृणुवः, शृण्वः	शृणुमः, शृण्वमः

#### भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
----------	---------	-----------	----------

१ यद्यपि श्रु धातु भ्वादिगणीय है, तथापि यह स्वादिगणीय धातुओं के साथ लिखा गया है क्योंकि इसके रूप स्वादिगणीय धातुओं के तुल्य हैं । लट् लोट्, लङ् और विधिलिङ् में श्रु के स्थान में 'शृ' हो जाता है ।



म० पु०	अश्रुणोः	अश्रुणूतम्	अश्रुणुत
उ० पु०	अश्रुण्वम्	अश्रुणुव, अश्रुण्व	अश्रुणुम, अश्रुण्वम
	भविष्यत्काल (लट्)		
प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यत	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः
	आज्ञा (लोट्)		
प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृण्वानि	शृणवाव	शृणवाम

स्वादिगण्य कुछ धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
शक्—सकना	शक्नोति	शक्यति	शक्नोतु
चिञ्—चुनना	चिन्ति	चेद्यति	चिन्तु
आप्—पाना	आप्नोति	आप्स्यति	आप्नोतु
धृञ्—काँपना	धृनोति	धृविष्यति	धृनोतु
क्षि—कम होना	क्षिणोति	क्षेप्यति	क्षिणोतु

सम्बन्ध कारक\*—दो या दो से अधिक सज्ञा शब्दों को मिलाने के लिए जो सम्बन्ध होता है, उसको दिखलाने के लिए पठ्ठी विभक्ति काम में लाई जाती है। जैसे—  
गङ्गाया जलं पवित्रम् अस्ति (गंगा जल पवित्र है) यहाँ पर 'गंगा' और 'जल' में सम्बन्ध है, इसलिए पठ्ठी विभक्ति (गङ्गायाः) हुई। इसी प्रकार—  
१—इदं कस्य पुस्तकम् अस्ति (यह किसकी पुस्तक है ?)  
२—छात्राणां मनः क्रीडायाम् अधिकं रमते (छात्रों का दिल खेलने में ज्यादा लगता है)

३—उद्यानस्य शोभां प्रेक्षध्वम् (वाग की शोभा देखो)

४—वाराणस्याः मधुराणि आम्राणि भवन्ति (वनारस के आम मीठे होते हैं)

५—वयं रामायणस्य कथां श्रोष्यामः (हम रामायण की कथा सुनेंगे)

(२) कृत् प्रत्ययों के योग में कर्ता और कर्म में पठ्ठी विभक्ति होती है। यथा—  
(कर्ता में)—शिशोः शयनम् (बच्चे का सोना)

अवस्य गतिः (घड़े की चाल)

(कर्म में)—अन्नस्य पाकः (अन्न का पकना)

सुखस्य भोगः (सुख का भोग)

(३) हेतु शब्द के प्रयोग होने से निमित्तबोधक शब्द में पठ्ठी होती। यथा—

अन्नस्य हेतोर्वसति (भोजन मिलन के कारण रहता है)

\* अनेक संस्कृत के आचार्यों ने सम्बन्ध को कारक नहीं माना, क्योंकि यह सम्बन्ध का साथ होता है, क्रिया के साथ नहीं।

## संस्कृत बनाओ :—

- १—तुम्हारा भाई प्रयाग कब जायगा ? २—यह उसकी पुस्तक है । ३—आपका घर कहां है ? ४—आज मैंने देव के घर खाना खाया । ५—तुम्हारा विवाह कब होगा ? ६—गोपाल का भाई बीमार (रुग्ग) है । ७—परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा (मेलिष्यति) । ८—आज मेरा दोग्न (मित्रम्) मेरे घर आयगा । ९—गुरु की निन्दा पाप है । १०—तुम्हारा विवाह कब होगा । ११—लड़के के हाथ में (हस्ते) लड्डू (मोदक) है । १२—अभ्यागतों की सेवा करना हमारा धर्म है । १३—अध्यापक की आज्ञा माना । १४—दशहरे का उत्सव कब होगा ? १५—अध्यापक ने मुझ से गणित का मन्त्राल (प्रश्न) पूछा ।

अधिकरणकारक (मे, पर) सप्तमी  
सर्वनाम शब्द

पु०	स्त्री०
एकव०	एकव०
द्विव०	द्विव०
वहुव०	वहुव०
मयि	मयि
त्वयि	त्वयि
तस्मिन्	तस्याम्
अस्मिन्	अस्याम्
कस्मिन्	कस्याम्
यस्मिन्	यस्याम्
भवति	भवत्याम्
आवयोः	आवयोः
युवयोः	युवयोः
तयोः	तयोः
अनयोः	अनयोः
कयोः	कयोः
ययोः	ययोः
भवतोः	भवत्योः

## तुदादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्	लिट्	लृट्	लोट्
मिल्—मिलना	मिलति	अमिलत्	मेलिष्यति
मुञ्च्—छोड़ना	मुञ्चति	अमुञ्चत्	मोक्ष्यति
सिञ्च्—सींचना	सिञ्चति	असिञ्चत्	सेक्ष्यति
तृप्—तृप्त होना	तृपति	अतृपत्	तृपिष्यति
विश्—प्रवेश करना	विशति	अविशत्	वेक्ष्यति
प्रच्छ्—पूछना	पृच्छति	अपृच्छत्	प्रक्ष्यति

## रुधादिगणीय धातुएँ

आत्मनेपदी भुज्—भोजन करना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	भुञ्जते	भुञ्जाते	भुञ्जते
म० पु०	भुञ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्क्षे
उ० पु०	भुञ्जे	भुञ्जहे	भुञ्जहे
प्र० प०	अभुञ्जते	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जते

भूतकाल (लङ्)

म० पु०	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जथायाम्	अभुङ्क्ध्वम्
उ० पु०	अभुञ्जिज	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

भविष्यत्काल (लृट्)

प्र० पु०	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
म० पु०	भोक्ष्यसे	भोक्ष्यथे	भोक्ष्यध्वे
उ० पु०	भोक्ष्ये	भोक्ष्यावहे	भोक्ष्यामहे

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	भुङ्क्षताम्	भुञ्जताम्	भुञ्जताम्
म० पु०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्क्ध्वम्
उ० पु०	भुनजै	भुनजावहे	भुनजामहे

मध्—रोकना	लट्	लङ्	लृट्	लोट्
भिद्—फाड़ना	रुणद्धि	अरुणत्	रोत्स्यति	रुणद्धु
छिद्—काटना	भिनन्ति	अभिनत्	भेत्स्यति	भिनत्तु
	छिनन्ति	अच्छिनत्	छेत्स्यति	छिनत्तु

क अधिकरणकारक—जिस स्थान पर कोई काम होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं, अधिकरण कारक बताने के लिए सप्तमी विभक्ति काम में लाई जाती है, जैसे—छात्रः पाठशालायाम् पुस्तक पठति (विद्यार्थी स्कूल में पुस्तक पढ़ता है) यहाँ पर पढ़ने का काम 'पाठशाला' में हो रहा है, इसलिए 'पाठशाला' अधिकरण कारक हुआ और उसके लिए सप्तमी विभक्ति (पाठशालायाम्) काम में लाई गई। इसी प्रकार—

१—बालाः क्रीडाक्षेत्रे क्रीडन्ति (लड़के मैदान में खेलते हैं)

२—रविवासरे पाठशालायाम् अवकाशः भवति (रविवार को स्कूल में छुट्टी रहती है)

३—शरदि मयूराः वने नृत्यन्ति (शरद् ऋतु में वन में मोर नाचते हैं)

४—राजमार्गे अश्वाः धावन्ति (सड़क पर घोड़े दौड़ रहे हैं)

५—नगरे बहवः मनुष्याः वसन्ति (शहर में बहुत से आदमी रहते हैं)

संस्कृत बनाओ :—

१—स्कूल में छात्र पढ़ रहे हैं। २—सिंह पहाड़ की गुफा में रहता है। ३—पेड़ों पर चारों तरफ फल लगे हैं। ४—उसके गले (कण्ठ) में माला है। ५—तुझ पर मेरा विश्वास है। ६—वह मूँछे गस्ते में मिला। ७—मेरा घर सड़क पर है। ८—हमारी कोठी (भवनम्) गोमती क तट पर है। ९—सिपाही (रक्षापुरुष) फाटक (गोपुर) पर रहता है। १०—नजदीक उस गाँव में कुएँ (कुप) है। ११—हम चारपाई (खट्वा) पर सोते हैं। १२—आप आसन पर बैठिए। १३—मेरे काम में लगा हूँ (लग्नः)। १४—बग शहर से एक कोस (कोश) पर है। १५—घड़े (घट) में जल है।

सम्बोधन कारक हे, अयि, भाः प्रथमा  
सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता ।

तनादिगणीय परस्मैपदो कृ--करना  
वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

भविष्यत्काल (लृट्)

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

क्रयादिगणीय ग्रह--ग्रहण करना

वर्तमानकाल (लट्)

प्र० पु०	गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति
म० पु०	गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ
उ० पु०	गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः

भूतकाल (लङ्)

प्र० पु०	अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्
म० पु०	अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत
उ० पु०	अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम

भविष्यत्काल--ग्रहीष्यति

ग्रहीष्यतः इत्यादि ।

आज्ञा (लोट्)

प्र० पु०	गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु
म० पु०	गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत
उ० पु०	गृह्णानि	गृह्णीव	गृह्णीम



कचादिगणीय कुछ अन्य धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
क्री-खरीदना	अक्रीणात्-णीन	क्रेष्यति-ते	क्रीणानु-णीताम्
प्री-खुश करना	अप्रीणात्-णीन	प्रेष्यति-ते	प्रीणानु-णीताम्
पू-पवित्र करना	अपुनात्-नीन	पविष्यति-ते	पुनानु-नीताम्
वृ-वर छांटना	अवृणात्-णांन	वरिष्यति-ते	वृणानु-णीताम्
धू-काँपना	अधुनात्-नीन	धविष्यति-ते	धुनानु-नीताम्
अश्-खाना	अश्नाति	अशिष्यति	अश्नानु
मुष्-चोराना	मुष्णाति	मुषिष्यति	मुष्णानु
वध्-बांधना	वध्नाति	भत्स्यति	वध्नानु
ज्ञा-जानना	जानाति	ज्ञास्यति	ज्ञानानु

चुरादिगणीय कुछ धातुएँ

लट्	लङ्	लृट्	लोट्
चुर-चोराना	चोरयति-ते	अचोरयत्-त	चोरयतु-ताम्
गण-गिनना	गणयति	अगणयत्	गणयतु
कथ्-कहना	कथयति	अकथयत्	कथयतु
भक्ष्-खाना	भक्षयति	अभक्षयत्	भक्षयतु
ताड्-पीटना	ताडयति	अताडयत्	ताडयतु
रच्-बनाना	रचयति	अरचयत्	रचयतु
तुल्-तौलना	तौलयति	अतौलयत्	तौलयतु
पूज-पूजा करना	पूजयति	अपूजयत्	पूजयतु
अर्च-पूजा करना	अर्चयति	आर्चयत्	अर्चयतु
आह्लाद्-खुश करना	आह्लादयति	आह्लादयत्	आह्लादयतु
चिन्त्-सोचना	चिन्तयति	अचिन्तयत्	चिन्तयतु
क्षल्-धाना	क्षालयति	अक्षालयत्	क्षालयतु
वण्ट्-बांटना	वण्टयति	अवण्टयत्	वण्टयतु
घोष्-ढिढोरा पीटना	घोषयति	अघोषयत्	घोषयतु
प्री-खुश करना	प्रीणयति	अप्रीणयत्	प्रीणयतु
स्पृह्-इच्छा करना	स्पृश्यति	अस्पृश्यत्	स्पृश्यतु
मार्ग-ढूँढ़ना	मार्गयति	अमार्गयत्	मार्गयतु
भूष्-राजाना	भूषयति	अभूषयत्	भूषयतु
वर्ण-वर्णन करना	वर्णयति	अवर्णयत्	वर्णयतु
लोक-देखना	लोकयति	अलोकयत्	लोकयतु
सान्त्व-शान्त करना	सान्त्वयति	असान्त्वयत्	सान्त्वयतु
बुक्क-कुत्ते का-भौकना	बुक्कयति	अबुक्कयत्	बुक्कयतु

१कचादिगणीय धातुओं में परे लट्, लृट्, लङ् और विधिलिङ् में श्ना (ना) का आगम हो जाता है और धातु के इ, उ, ऊ, का गुण नहीं होता ।

**सम्बोधन**—किसी को पुकार कर अपनी तरफ आकृष्ट (मुखातिव) करने का सम्बोधन कहते हैं। सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है। तथा सम्बोधन वाचक शब्द के पूर्व है, भां, अयि, रे आदि चिह्न लगते हैं। सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता और अकारान्त शब्दों के एकवचन में विसर्ग नहीं होता। यथा—

१—हे जगदीश! देहि मे मुक्तिम् । २—भा. सखे! वव गच्छसि इदानीम् ? ३—अयि सत्य ! सदा सत्य वद, धर्म चर । ४—हे महात्मन् ! कि वाञ्छसि ? ५—रे चञ्चललोचन ! कि विलांकयसि ?

### संस्कृत बनाओ :—

१—गुरुजी ! मैं अपना पाठ ध्यान से पढ़ रहा हूँ । २—हे मित्र ! इस वक्त क्या काम करते हो ? ३—हे महाराज ! आपके राज्य में अत्यन्त सुख है । ४—हे बालक ! तेरा घर कहाँ है ? ५—लड़को ! तुम आज स्कूल क्यों नहीं गये ? ६—हे ईश्वर ! केवल आप ही हमारे रक्षक हैं । ७—महागय ! क्या आप कल मुझे दर्शन देंगे ? ८—अरे चोर ! चोरी करने का (चौर्यस्थ) यही फल है । ९—मित्र ! आपके पितृ सकुशल तो हैं (अपि कुशल) । १०—बालका ! गुरु की सेवा करो, जरूर फल मिलेगा । ११—छात्रा ! साधुओं का उपदेश गृहण करो और उस पर चलो । १२—चिन्ता छोड़ो, परिश्रम करो तुम जरूर सफल होंगे । १३—प्रातः उठो, हाथ पैर धोओ और पढ़ो । १४—बड़ों की (वृद्धानाम्) आज्ञा मानो, चीजे आपस में (मित्रः) बांटो और खाओ । १५—राजा (नगनि) ढिंढोरा पिटावाया है कि शहर में जो चोरों को ढूँढेगा उसे इनाम मिलेगा ।

### क्रियापकरण

**भूतकाल**—लिट्, लुङ् तथा लङ्

‘वह गया’ ‘वह जा रहा था’ इत्यादि का अनुवाद करने के लिए संस्कृत में लिट्, लुङ् और लङ् लकार काम में लाये जाते हैं। लङ् लकार का प्रयोग पिछले पाठों में दिखाया जा चुका है। लिट् लकार का ‘परोक्ष’ अर्थ में प्रयोग होता है, अर्थात् जो आँख के सामने न हुआ हो, जैसे, ‘रामः वनं जगाम’ (राम वन गया) यहाँ पर राम को वन को जाना आँख के सामने नहीं हुआ। साधारण भूत अर्थ में ‘लुङ्’ लकार का प्रयोग होता है, जैसे ‘गोपालः अयं प्रयागमगमत्’ (गोपाल आज ही इलाहाबाद गया) यहाँ पर जाना आज ही हुआ। अनद्यतन (आज से पहले) अर्थ में लङ् का प्रयोग होता है, जैसे ‘आसीद् राजा नलो नाम’ (नल नामक एक राजा हुआ) साधारण भूत के अर्थ में भी लङ् का प्रयोग होता है।

**परस्मैपदी गम्—जाना**

**लिट्**

प्र० पु०	(सः)	जगाम	(तौ)	जग्मतुः	(ते)	जग्मुः
म० पु०	(त्रं)	जगमिथ, जगन्थ	(युवां)	जग्मथुः	(यूयं)	जग्म
उ० पु०	(अहं)	जगाम, जगम	(आधां)	जग्मिथ	(वयं)	जग्मिम

और धातु के ह्रस्व इकार उकार के स्थानों में गुण हो जाता है। चुरादिगणोय धातु

आत्मनेपदी शुभ्—चमकना

लिट्

प्र० पु०	(सः)	शुशुभे	(तौ)	शुशुभाने	(ते)	शुशुभिर
म० पु०	(त्वं)	शुशुभिषे	(युवां)	शुशुभाथे	(यूयं)	शुशुभिध्वे
उ० पु०	(अहं)	शुशुभे	(आवां)	शुशुभिवहे	(वयं)	शुशुभिमहे

परस्मैपदी शुभ्—जाना

लुङ्

प्र० पु०	(सः)	अगमत्	(तौ)	अगमताम्	(ते)	अगमन्
म० पु०	(त्वं)	अगमः	(युवां)	अगमतम्	(यूयम्)	अगमत
उ० पु०	(अहम्)	अगमम्	(आवां)	अगमाव	(वयम्)	अगमाम

आत्मनेपदी शुभ्—चमकना

लुङ्

प्र० पु०	(सः)	अशोभिषट्	(तौ)	अशोभिपाताम्	(ते)	अशोभिषत्
म० पु०	(त्वं)	अशोभिषटाः	(युवां)	अशोभिपाथाम्	(यूयं)	अशोभिष्वम्
उ० पु०	(अहं)	अशोभिषि	(आवां)	अशोभिषाहि	(वयं)	अशोभिषमहि

इसी प्रकार :—

	लिट्	लुङ्	लङ्
पठ्—पढ़ना	पपाठ	अपाठीत्	अपठत्
भू—होना	बभूव	अभूत्	अभवत्
कृ—करना	चकार	अकषीत्	अकरोत्
हन्—मारना	अघान	अवधीत्	अहन्
खाद्—खाना	चखाद	अखादीत्	अखादत्
हृ—हरण करना	जहार	अहर्षीत्	अहरत्
ग्रह्—लेना	अग्राह	अग्रहीत्	अगृह्णीत्
दृश्—देखना	ददर्श	अद्राक्षीत्	अपश्यत्
(नी) नय्—ले जाना	निनाय	अनैषीत्	अनयत्
स्था—ठहरना	तस्थी	अस्थात्	अतिष्ठत्
पत्—गिरना	पपात	अपातीत्	अपतन्
त्यज्—छोड़ना	तत्याज	अत्याक्षीत्	अत्यजत्
वस्—रहना	उवास	अवासीत्	अवसत्
हस्—हँसना	जहास	अहासीत्	अहसत्

संस्कृत वनाश्रो :—

१—राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वन को गया । २—रावण ने पञ्चवट के सीता को चुराया । ३—लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा । ४—राम ने चौदह व (चतुर्दशवर्षाणि) वन में वास किया । ५—प्राचीन भारत में अशोक एक राज हुआ । ६—द्रौपदी दुर्योधन को सुखता पर हँसी । ७—राजा नल ने दमयन्ती को ब

में छोड़ा । ८—सब राजपुत्र एक साथ द्रोणाचार्य से युद्धविद्या सीखते थे ।  
९—राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ गये । १०—उस वन में मुनि रहते थे ।

भविष्यत्काल (लृट् और लृट् लकार) गा, मे, गो

भविष्यत्काल का बांध कराने के लिए संस्कृत में लृट् और लृट् लकारों का प्रयोग होता है । दोनों लकारों में भेद यह है कि दूरवर्ती भविष्यत् के लिए लृट् का प्रयोग होता है और समीपवर्ती भविष्यत् के लिए लृट् का । यथा—‘मम भ्राता पञ्चवर्षहोमिः प्रयागं गन्ता’ (मेरा भाई पाँच छः दिन में प्रयाग जायगा) परन्तु आज के या समीप ही के भविष्यत् के लिए लृट् का प्रयोग होता है, जैसे—‘न जाने कुद्धः गुरुः किं विधास्यति’ (न मालूम क्रोधो गुरु क्या करेंगे) लृट् लकार के प्रयोग हम पिछले पाठों में देख चुके हैं ।

परस्मैपदी गम्—जाना

लृट्

प्र० पु०	(सः)	गन्ता	(तौ)	गन्तारी	(ते)	गन्तारः
म० पु०	(त्वं)	गन्तासि	(युवां)	गन्तास्थः	(यूयं)	गन्तास्थः
उ० पु०	(अहं)	गन्तास्मि	(आवां)	गन्तास्वः	(वयं)	गन्तास्मः

आत्मनेपदी शुभ—चमकना

लृट्

प्र० पु०	(सः)	शोभिता	(ती)	शोभितारो	(ते)	शोभितारः
म० पु०	(त्वं)	शोभितामे	(युवां)	शोभिनासाथे	(यूयं)	शोभिताध्वे
० पु०	(अहं)	शोभिताहं	(आवां)	शोभितास्वहे	(वयं)	शोभितास्महे

क्रियातिपत्ति (लृङ्)

‘यदि ऐसा होना तो ऐसा होना’ इस प्रकार के जन वाले वाक्यों के अनुवाद के लिए संस्कृत में लृङ् लकार का प्रयोग होता है । जैसे—‘यदि वायुः अवलिप्यन् तदा तापः न्यूनताम् अगमिष्यत्’ (अगर हवा चलती तो गर्मी कम हो जाती) ‘यदि रोगिणः सेवा अभविष्यत् तदा सः नामरिप्यत्’ (यदि रोगी की सेवा होती तो वह न भरता) ।

परस्मैपदी गम्—जाना

लृङ्

प्र० पु०	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्
म० पु०	अगमिष्य	अगमिष्यताम्	अगमिष्यत
उ० पु०	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम

आत्मनेपदी शुभ—चमकना

लृङ्

प्र० पु०	अशोभिष्यन्	अशोभिष्यताम्	अशोभिष्यन्त
म० पु०	अशोभिष्यथाः	अशोभिष्येथाम्	अशोभिष्यध्वम्
उ० पु०	अशोभिष्ये	अशोभिष्यावहि	अशोभिष्यामहि



इसी प्रकार :—

लुङ्

लृट्

लृङ्

पठ—पढ़ना  
भू—होना  
कृ—करना  
हन्—मारना  
खाद्—खाना  
हृ—चुराना  
ग्रह्—ग्रहण करना  
दृश्—देखना  
(नी) नय्—लेजाना  
स्था—ठहरना  
पत्—गिरना  
त्यज्—छोड़ना  
घम्—रहना  
हस्—हंसना

पठिष्या  
भविता  
कर्ता  
हन्ता  
खादिता  
हता  
ग्रहीता  
द्रष्टा  
नेता  
स्थाता  
पतिता  
त्यक्ता  
उषिता  
हसिता

पठिष्यति  
भविष्यति  
करिष्यति  
हनिष्यति  
खादिष्यति  
हरिष्यति  
ग्रहीष्यति  
द्रक्ष्यति  
नेष्यति  
स्थास्यति  
पतिष्यति  
त्यक्ष्यति  
वत्स्यति  
हसिष्यति

अपठिष्यत्  
अभविष्यत्  
अकरिष्यत्  
अहनिष्यत्  
अखादिष्यत्  
अहरिष्यत्  
अग्रहीष्यत्  
अद्रक्ष्यत्  
अनेष्यत्  
अस्थास्यत्  
अपतिष्यत्  
अत्यक्ष्यत्  
अवत्स्यत्  
अहसिष्यत्

संस्कृत बनाओ :—

लृट्—१—क्या आप परसों (परश्वः) काशी जायेंगे ? २—मैं पांच छः दिन में प्रयाग जाऊंगा । ३—मेरे पिता कल अयोध्या से आयेंगे । ४—कल्कि अवतार न जाने कब होगा । ५—क्या तुम इस पुस्तक को कल पढ़ोगे ?

लृट्—१—वृष्टि कब होगी, आज या कल ? २—आज मेरी वहिन (भगिनी) ससुराल (श्चसुरगृह) जायगी । ३—कहिए, आज आप क्या करेंगे ? ४—यदि तुम कहोगे तो वह जायगा । ५—यदि मेहनत (परिश्रम) न करोगे तो फेल (अनुत्तीर्ण) हो जाओगे ।

लृङ्—१—यदि रामदेव मेहनत करता तो फेल न होता ।

२—अगर तू घी (घृत) खाता तो बीमार न होता । ३—अगर रावण सीता को न चुराता तो न मारा जाता । ४—यदि वह गुरु की सेवा करता तो विद्वान् हो जाता । ५—अगर मैं व्यायाम करता तो बलवान् हो जाता ।

संभाव्यभविष्यत् और प्रवर्तना (लिङ्, लोट्)

संभाव्यभविष्यत् अर्थात् संभावना, प्रश्न, आशङ्क्य, शङ्क्य और इच्छा आदि अर्थों में विधिलिङ् और लोट् का प्रयोग होता है, और प्रवर्तना अर्थात् प्रत्यक्ष विधान, उपदेश, प्रार्थना, अनुमति, अनुरोध और आज्ञा आदि अर्थों में विधिलिङ् और लोट् का प्रयोग होता है और आशङ्कीय के लिए आशीर्लिङ् और लोट् का प्रयोग होता है ।

१ लृङ् लकार क्रिया की अनिष्पत्ति अर्थात् घटित न होने पर ही होता है । जैसे—‘सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् तदा सुभिक्ष्यमभविष्यत्’ (यदि अच्छी वर्षा होती तो सुकाल होता) यहाँ पर वर्षा के न हाने पर ही ‘लृङ्’ लकार का प्रयोग हुआ ।

जैसे—संभावना—संभाव्यते अद्य गुरुः आगच्छेत् (शायद आज गुरुजी आजायें)  
कदाचिन्मम भ्राता स्वः प्रयागं गच्छेत् (शायद मेरे भाई कल इलाहाबाद जायें)  
प्रश्न—किमहं वेदमवीचीय उत स्मृतिम् (क्या मैं वेद पढ़ूं या स्मृति) ?  
ओचित्य—तथा कुरु यथा निन्दा न भवेत् (ऐसा करो जिसमें निन्दा न हो) त्वं साधूनां  
सेवां कुर्याः इत्येवोचिन्म (तुम साधुओं की सेवा करो यही उचित है)  
शपथ—यः मां पिशाच इति कथयति तस्य पुत्राः अग्नयेरन् (अग्नयन्ताम्) (जो मुझे  
पिशाच कहता है उसके पुत्र गर जायें)  
इच्छा—इच्छामि भवान् शीघ्रं नीरोगः भवेत् (भवतु)  
(मैं चाहता हूँ आप जल्दी आराम हो जायें)  
विधान—सन्ध्यां मनसा ध्यायेत् (सन्ध्या का मन से ध्यान करे)  
नान्यस्यापराधेन अन्यस्य दण्डमाचरेत्  
(दूसरे के कसूर से दूसरे को सजा न दे) ।  
उपदेश—सहसां कार्यं न कुर्यात् (बिना विचारें काम न करे)  
सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् (सच बोले मोठा बोले)  
प्रार्थना—भवन्तः अद्य इह भुञ्जीरन् (भुञ्जताम्) (आज आप यहीं भोजन करें)  
दीने मयि दया कुरु (मुझ दोन पर दया कीजिए)  
अनुमति—छात्राः गृहं गच्छन्तुः (गच्छन्तु) किम् (क्या विद्यार्थी घर जायें) उपदिशतु  
भवान् कथं न प्रसादयेयम् (आप ही बताएँ उसे कैसे खुश करूँ)  
अनुरोध—इह आसीत (आस्ताम्) तावत् भवान् (आप तब तक यहाँ बैठिए)  
आज्ञा—छात्राः आगच्छन्तु, स्वपाठ पठत । (विद्यार्थियो! यहाँ आओ, अपना सबक पढ़ो)  
भृत्य, गच्छ मद्यां जलमानय (नीकर जाओ मेरे लिये पानी लाओ)  
आशीर्वाद—वत्स, दीर्घायुः भूयाः (भव) (बेटा तेरी बड़ी उम्र हो)  
आत्मानुरूपं पुत्रं लभस्व (अपने ही जैसा पुत्र पाओ)  
ईश्वरः भद्रं क्रियात् (करोतु) (ईश्वर कल्याण करे)

परस्मैपदी भू--(होना) आशीर्लिङ्

	एकव०	द्विव०	बहुव०
प्र० पु०	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म० पु०	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ० पु०	भूयासम	भूयास्व	भूयास्म

परस्मैपदी लिख्--लिखना विधिलिङ्

प्र० पु०	लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः
म० पु०	लिखेः	लिखेतम्	लिखेत्
उ० पु०	लिखेयम्	लिखेव	लिखेम

परस्मैपदी कृ--(करना)

प्र० पु०	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात्
उ० पु०	कुर्याम	कुर्याव	कुर्याम

आत्मनेपदी मन्—(मानना)

अतमनेपदी धातुएं (नामाना)

प्र० पु०	मन्थेत	मन्थेयाताम्	मन्थेरन्
म० पु०	मन्थेथाः	मन्थेयाथाम्	मन्थेध्वम्
उ० पु०	मन्थेय	मन्थेवहि	मन्थेमहि
परस्मैपदी धातुएं			
भू			
गम्	(होना)	भवेत्	शिक्ष (सीखना)
जि	(जाना)	गच्छेत्	(लड़ना)
कथ्	(जीतना)	जयेत्	(देखना)
दृश्	(कहना)	कथयेत्	(मरना)
श्रु	(देखना)	पश्येत्	(नमस्कार करना)
पा	(सुनना)	शृणुयात्	(सहन करना)
नी (नय)	(पीना)	पिबेत्	(अच्छा लगना)
स्मृ	(ले जाना)	नयेत्	(हर्षित होना)
धाव्	(याद करना)	स्मरेत्	(यत्न करना)
ज्ञा	(दौड़ना)	धावेत्	(शंका करना)
म्या	(जानना)	जानीयात्	(प्रशंसा करना)
पच्	(ठहरना)	निष्ठेत्	(शोभित होना)
रव्	(पकाना)	पचेत्	(कांपना)
क्रीड्	(बनाना)	रचयेत्	(शोभित होना)
त्यज्	(खेलना)	क्रीडेत्	(सेवा करना)
	(छोड़ना)	त्यजेत्	(प्राप्त करना)
अतमनेपदी धातुएं			
सीखना			
युध्येत			
ईक्षेत			
म्रियेत			
वन्देत्			
सहेत्			
रोचेत्			
मोदेत्			
यतेत्			
शकेत्			
श्लाघेत्			
द्योतेत्			
कम्पेत्			
शीभेत्			
सेवेत्			
लभेत्			

संस्कृत बनाओ :—

आशीर्वादः—१—बालक चिरंजीवी होवे । २—तुम इम्तिहान में सफल होंगे ।  
 ३—तुम्हारी कामनाएँ पूर्ण हों । ४—हमारे महाराज दीर्घायु हो ।  
 विधिलिङ् ( लाट् ) १—कभी झूठ न बोले और चोरी न करे । २—छात्र को हमेशा गुरु से सविनय प्रश्न पूछना चाहिए । ३—छात्र को हमेशा समय पर पढ़ना चाहिए, और समय पर खेलना चाहिए । ४—सब कामों में गुरु का अनुसरण करे ।  
 ५—किसी को कभी मत छोड़ो । ६—आचार्य से धर्म का उपदेश सुने । ७—परायण धन का लोभ कभी न करे । ८—गरीब के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए । ९—शायद आज हमारे स्कूल में राष्ट्रपति आवें । १०—बिना विचारे कभी काम न करे । ११—मेरी इच्छा है कि आप शीघ्र आराम हो जायें । १२—ऐसा काम कभी न करना चाहिए जिससे निन्दा हो ।

कारक और विभक्तियाँ

प्रथमा—१—कर्ता में—बालः पाठशालां गच्छति ।

२—कर्मवाच्य के कर्म में—वटुभिः पठ्यते वेदः, पशुभिः पीयते जलम् ।

३—संबोधन में—हे जगदीश, क्षमस्व ।

४—अव्यय के साथ—अशोक इति विख्यातः राजा सर्वजनप्रियः

५—नाम मात्र में—असीद् राजा नलो नाम ।

तोया-१—कर्म—प्रजा संरक्षति नृपः स वर्द्धयति पार्थिवम् ।

२—ऋते, अन्तरेण, विना के साथ—धनमन्तरेण, विना, ऋते वा नैव सुखम् ।

३—एनप् के साथ—तत्रागार धनपतिगृहान्तरेणास्मदीयम् ।

४—अभितः, —अभितो भुवनं वाटिका ।

५—परितः, सर्वतः, के साथ—सन्ति परितः (सर्वतः) ग्रामं वृक्षाः ।

६—उभयतः सर्वतः के साथ—यमुनामुभयतस्तरयः सन्ति ।

७—अन्तरा (बीच में) रामं कृष्णं चान्तरा गोपालः ।

८—समया, निकषा (समीप) के साथ—ग्रामं समया निकषा वानदी ।

९—व्याप्ति के अर्थ में—मासद्वयमधीति, स चत्वारि वर्षाणि न्यायमध्यष्ट ।

१०—अनु के साथ—आचार्यमनु शिष्यो गच्छेत् ।

११—प्रति, —हीनं प्रति दयां कुरु ।

१२—यिक्, —यिक् त्वां पापिनम् (पिशुन वा) ।

१३—अधि शीङ् के साथ—चन्द्रापीडमुक्ताशिलापट्टमधिशिष्ये ।

१४—अधिस्था, —इयामः गृहमधितिष्ठति (अथवा इयामः गृहे-तिष्ठति) ।

१५—अधि आम् के साथ—नृपः सिंहासनमध्यास्ते (नृपः सिंहासने आस्ते) ।

१६—अनु, उप पूर्वक वस् के साथ—हरिः देकुण्ठमुपवसति, अनुवसति वा ।

१७—आवस्, अधिवस् के साथ—अधिवसतु काशीं विश्वनाथः ।—भवतः देवमन्दिरम् आवसति ।

१८—क्रिया विशेषण में—सत्त्वरं धावति मृगः ।

तोया-१—करण में—सः जलेन मुखं प्रक्षालयति ।

२—कर्मवाच्य कर्ता में—कृष्णेन कंसः हतः ।

३—स्वभाव आवि अर्थों में—रामः प्रकृत्या साधुः नाम्ना गोपालोऽयम् ।

४—सह के साथ—शशिना सह याति कीमुदी ।

५—सदृश के अर्थ में—धर्मेण सदृशो नास्ति कश्चुरन्ध्रो महीतले ।

६—हेतु, —विद्यया वर्धते बुद्धिः, श्रमेण प्राप्यते धनम् ।

७—हीन, —विद्यया हि विहीनस्य किं वृथा जीवितेन ते ।

८—विना, —श्रमेण हि विना विद्या लभ्यते न कथंचन ।

९—अलं, —अलं महीपाल तव श्रमेण ।

१०—प्रयोजन के अर्थ में—धनेन किं यो न ददाति नाश्रुते ।

११—लक्षण बोध में—जटाभिः ऋक्षमाणाभिस्तापसोऽयं प्रतीयते ।

१२—फल प्राप्ति के अर्थ में—मासेन व्याकरणमधीतम्, पञ्चभिर्दिनैः नीरोगः जातः ।

१३—खराबी वाले अङ्ग में—मानवश्चक्षुषा काणः कर्णाभ्यां वधिरश्च सः ।  
पादेन खञ्जः वृद्धोऽसौ कुब्जा पृष्ठेन मन्थरा ।

तुर्थी-१—निमित्त के अर्थ में—धनं सुखाय, विद्या ज्ञानाय भवति ।



- २--रुचि ,, --शिशवे क्रीडनकः रोचते ।  
 ३--सम्प्रदान में--नृपः दरिद्राय वस्त्रं ददाति ।  
 ४--नमः, स्वस्ति के योग में--गुरुवे नमः, नृपाय स्वस्ति भवतु ।  
 ५--अलं के योग में--मल्लोऽल मल्लाय ।  
 ६--तुम् के अर्थ में--ब्राह्मणः स्नानाय (स्नातुं) याति ।  
 ७--कृध् अर्थ वाले धातु के प्रयोग में--गुरुः शिष्याय कृधति ।  
 ८--द्रुह ,, ,, --मूर्खः पण्डिताय द्रुहति ।  
 ९--असूया (निन्दा) ,, ,, --दुर्जनः सज्जनाय असूयति ।

### पञ्चमी--

- १--अलग होने पर--वृक्षात् फलानि पतन्ति, स ग्रामाद् आगच्छति ।  
 २--भय ,, --असज्जनात् कस्य भयं न जायते ।  
 ३--ग्रहण अर्थ में--कृपात् जलं गुह्णाति ।  
 ४--पूर्वादि के योग में--स्नानात् पूर्वं न खादेत्, न धावेत् भोजनात् परम् ।  
 ५--अन्यार्थ के योग में--ईश्वरादयः कः रक्षितुं समर्थः ।  
 ६--उत्कर्ष में--जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।  
 ७--विना, ऋते के योग में--परिश्रमाद् विना (ऋते) विद्या न भवति ।  
 ८--आरात् (दूर या समीप) के योग में--ग्रामाद् आरात् सुन्दरमुपवचम् ।  
 ९--प्रभृति के योग में--शैशवात् प्रभृति सोऽतीव चतुरः ।  
 १०--आञ्ज के ,, --आमूलात् रहस्यमिदं श्रोतुमिच्छामि ।  
 ११--विरामार्थक शब्दों के साथ--न नवः प्रभुराफलोदयात् स्थिरकर्म  
 विरराम कर्मणः ।  
 १२--काल की अवधि में--विवाहात् नवमे दिने ।  
 १३--मार्ग की ,, --वाराणस्याः पञ्चाशत् कोशाः ।  
 १४--जायते आदि के अर्थ में--बीजेभ्यः अङ्कुरा जायन्ते ।  
 १५--जिससे कोई हटाया जाय--मित्रं पापात् निवारयति ।  
 १६--जिससे कोई विद्या सीखी जाय--छात्रोऽध्यापकात् अधीते ।

### षष्ठी--

- १--संबन्ध में--सूर्यस्य बहवो दोषाः, सतां च बहवो गुणाः ।  
 २--कृदन्त कर्ता में--शिशोः शयनम्, फलस्य पतनम् ।  
 ३--कृदन्त कर्म में--अन्नस्य पाकः, धनस्य दानम् ।  
 ४--अनादर में--उदतः शिशोः सा ययी ।  
 ५--हेतु शब्द के प्रयोग में--अन्नस्य हेतोर्वसति ।  
 ६--निर्धारण में--कवीनां (कविषु वा) कालीदासः श्रेष्ठः ।

### सप्तमी--

- १--अधिकरण में--गृहे तिष्ठति बालः, आसने शोभते गुरुः ।  
 २--भाव में--यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ।  
 ३--अनादर में--उदति शिशो गता माता ।  
 ४--निर्धारण में--जीवेषु मानवाः श्रेष्ठाः मानवेषु च पण्डिताः ।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो :—

- १—रामस्य विना अयोध्या शून्या जाता । २—स नगरे गच्छति । ३—रामः मह्यम् अभिकुप्यति । ४—गोपालः गोः पयो दोग्धि । ५—तव साकं नाहं गच्छामि । ६—विद्यायाः होनस्य नरस्य किं प्रयोजनम् जीवनस्य । ७—अहं लेखन्याः लिखामि । ८—स रजकाय वस्त्रं ददाति ९—मोदकः बालकं रोचते । १०—स माम् कुप्यति । ११—अहं तव शतं वास्यामि । १२—स यवानां गां निवारयति । १३—विद्यायां बुद्धिरुत्तमा । १४—नगरस्य बहिः शिवालयां वर्तते । १५—स जलस्य पातुम् इच्छति । १६—स मित्राय स्मरति । १७—शिव दर्शनं पुण्यम् अस्ति । १८—देवस्य नमः । १९—स वनस्य प्रति यावति । २०—पर्वतेभ्यः हिमालयः अत्युच्चः अस्ति । २१—श्रियै लोका अनुरज्यन्ति । २२—सन्निमित्ते वरं त्यागो विनाशो नियते सति । २३—ते कन्याः तानि बालकाश्च कस्य सह कीडन्ति ? २४—इयं मम पुस्तकम् अस्ति । २५—देवो विजयतेतराम् ।

पत्रलेखनप्रकारः

१—पित्रे स्ववृत्तान्तस्य प्रेषणम्—

लवपुरतः,

१२, प्रविष्टे, '८४

श्रीमत्पु माननीयेषु पितृपादेषु प्रणमयः सन्तुतराम् ।

भगवन् ! बहुदिनादारभ्य नाद्यावधि भवान् पत्रमलिखत, इति मे चेतश्चिन्ता-कुलं वर्तते । इदानीमस्माकं परीक्षा नानिदूरं विद्यते । अध्ययने च नितरां परिश्रमं करोमि । केवलं गणितविषये वृष्टिरस्ति । मन्ये तामपि वीक्ष्यमपनेष्यामि । झटिति गृहस्य वृत्तं लेख्यम् । मातरं प्रति मे प्रणामः । अनुजानाञ्च कृते प्रमाञ्जलयः सन्तु ।

भावकः प्रियसुतः,

प्यारेलालः पञ्चमकक्षास्थः ।

२—प्रधानाध्यापकाय अवकाशविषयकं पत्रम्—

श्रीमदारममाननीयेषु पूज्यपादेषु प्रधानाध्यापकेषु— मे नमस्काराञ्जलयः सन्तु ।

भगवन् ! सेवायां मधिनयमिदमात्रेद्यने-यन्मम ज्येष्ठभ्रातुः जगदीशस्य नवमकक्षा-पथस्य वैशाखमासे शुक्लाष्टम्या त्रितीया विवाहः निश्चितोऽस्ति । वरयात्रा च देवप्रयागं

१ शुद्धप्रयोग—१—रामं विना । २—नगरम् । ३—माम् । ४—गाम् । ५—त्वया साकम् । ६—विद्यायां होनस्य नरस्य किं प्रयोजनं जीवनेन । ७—लेखन्या । ८—रजकस्य । ९—बालकाय । १०—मह्यम् । ११—तुभ्यम् । १२—यवेभ्यः । १३—विद्यायां बुद्धिरुत्तमा । १४—नगरात् बहिः । १५—जलं पातुम् । १६—स मित्रस्य, मित्रं वा स्मरति । १७—शिवस्य । १८—देवाय । १९—वत् प्रति । २०—पर्वतेषु । २१—श्रियाम् । २२—विनाशे । २३—ताः कन्याः, ते बालकाश्च केन सह कीडन्ति ? २४—इदम् । २५—देवो विजयतेतराम् ।

गमिष्यति । ततो ममापि तत्र गमनमावश्यकम् । अतोऽहमष्टानां दित्रसामामवकाशं  
याचे । आशामे, अवश्यमेव मम निवेदनं स्वीकृतं भविष्यतीति— प्रार्थयते,  
१५ प्रविष्टे, ८४ ] विद्यादत्तः सप्तमकक्षास्थः ।

३—मित्राय भ्रमणविषयकं पत्रम्—

श्रीनगरतः

२० तारके नवाम्बरे, २६ ।

प्रियवर ! नमस्तेऽस्तु !

अहं जगदीशस्य कृपया सकुशलोऽस्मि । तत्रापि कुशलं वाञ्छामि । अस्माकं त्रैमा-  
सिकी परीक्षाऽभवत्, पत्राणि चाहं सुन्दरमलिखम् । अथना उष्णकालावकाशेषु भवान्  
क्व गन्तुमिच्छति ? रोचते भवने काश्मीरगमनम् ? तत्र खलु गिरिभ्यो जलप्रवाहाः,  
निर्झराश्च निस्सरन्ति । एलाजम्बीर-मेव-द्राक्षा-तारङ्ग-अशोढकानाञ्च तत्र बाहुल्यं  
वर्तते । तस्योदीच्यां दिशि पर्वतराजः हिमालयः तिष्ठति, यस्य शिखराणि हिमाच्छादि-  
तानि विद्यन्ते । गैलोऽयम् उत्तरप्रदेशालङ्कारभूतः सन् भारतवर्षस्य मेखलेव पूर्वापर-  
जलनिधयोऽलपयन्तं विस्तीर्णः तिष्ठति । तत्रोपधयः, प्रस्तराः, उत्तमकाष्ठादीनि च  
बहून्पयोगीनि वस्तून्पुलभ्यन्ते । किं बहुना । ततोऽस्माकं महाललाभो भविष्यति ।  
स्वास्थ्यं च तत्रोपित्वा शोभनं भविष्यति । स्वपरीक्षाविषये तथा भ्रमणविषये च  
स्वरितमुत्तरं देयम् ।

अभिन्नहृदयः,

रामप्रसादः दशमकक्षास्थः ।

## सर्वनाम शब्दों के रूप

अस्मद्

अहम्	(मैं)	आवाम्	(हम दो)	वयम्	(हम सब)
माम्	(मझको)	आवाम्	(हम दो को)	अस्मान्	(हम को)
मया	(मैंने)	आवाभ्याम्	(हम दो ने)	अस्माभिः	(हम ने)
मह्यम्	(मेरे लिए)	आवाभ्याम्	(हमदोकेलिए)	अस्मभ्यम्	(हमारे लिए)
मत्	(मुझसे)	आवाभ्याम्	(हम दो से)	अस्मत्	(हम से)
मम	(मेरा)	आवयोः	(हम दो का)	अस्माकम्	(हमारा)
मयि	(मुझ पर)	आवयोः	(हम दो पर)	अस्मासु	(हम पर)

युष्मद्

वम्	(तु)	युवाम्	(तुम दो)	यूयम्	(तुम सब)
त्वाम्	(तुझको)	युवाम्	(तुम दो को)	युष्मान्	(तुम को)
त्वया	(तु ने)	युवाभ्याम्	(तुम दो ने)	युष्माभिः	(तुम ने)
तुभ्यम्	(तेरे लिए)	युवाभ्याम्	(तुम दोके लिए)	युष्मभ्यम्	(तुम्हारे लिए)
त्वं	(तुझसे)	युवाभ्याम्	(तुम दो से)	युष्मत्	(तुम से)
तव	(तेरा)	युवयोः	(तुम दो का)	युष्माकम्	(तुम्हारा)
त्वयि	(तुझ पर)	युवयोः	(तुम दो पर)	युष्मासु	(तुम पर)

१ अस्मद् और युष्मद् के रूप पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में एक ही तरह के होते हैं ।

## तत् (वह) पुल्लिङ्ग

सः	(वह)	तौ	(वे दो)	तै	(वे)
तम्	(उसको)	तौ	(उन दो को)	तान्	(उनको)
तेन	(उसने)	ताभ्याम्	(उन दो ने)	तैः	(उन्होंने)
तस्मै	(उसके लिए)	ताभ्याम्	(उन दो के लिए)	तैभ्यः	(उनके लिए)
तस्मात्	(उससे)	ताभ्याम्	(उन दो से)	तैभ्यः	(उनसे)
तस्य	(उसका)	तयोः	(उन दो का)	तेषाम्	(उनका)
तस्मिन्	(उस पर)	तयोः	(उन दो पर)	तेषु	(उन पर)

## तत् (वह)

## नपुंसकलिङ्ग

एकव०	द्विव०	बहुव०
तत्	ते	तानि
तत्	ते	तानि
तेन	ताभ्याम्	तैः
तस्मै	ताभ्याम्	तैभ्यः
तस्मात्	ताभ्याम्	तैभ्यः
तस्य	तयोः	तेषाम्
तस्मिन्	तयोः	तेषु

## स्त्रीलिङ्ग

एकव०	द्विव०	बहुव०
सा	तै	ताः
ताम्	तै	ताः
तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
तस्याः	तयोः	तासाम्
तस्याम्	तयोः	तासु

## इदम् (यह)

## पु०

एकव०	द्वि०	बहु०
अयम्	इमौ	इमे
इमम्	इमी	इमान्
अनेन	आभ्याम्	एभिः
अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
अस्य	अनयोः	एषाम्
अस्मिन्	अनयोः	एषु

## स्त्री०

एकव०	द्वि०	बहु०
इयम्	इमे	इमाः
इमाम्	इमे	इमाः
अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
अस्याः	अनयोः	आसाम्
अस्याम्	अनयोः	आसु

## एतत् (यह)

## पुल्लिङ्ग

एषः	एतौ	एते
एतम्	एतौ	एतान्

## स्त्रीलिङ्ग

एषा	एते	एताः
एताम्	एते	एताः

१ नपुंसकलिङ्ग में प्र०, द्वि०--इदम्, इमे, इमानि (शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं) ।

२ नपुंसकलिङ्ग में एतत् शब्द की प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में एतत्, एते, एतानि, और शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।



एतेन	एताभ्याम्	एतैः	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
एतस्य	एतयोः	एतेषाम्	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

अवत् (वह)

असौ	अम्	अमी	असौ	अम्	अम्
अमुम्	अम्	अमून्	अमुम्	अम्	अम्
अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः	अमुया	अमूभ्याम्	अमीभिः
अमुस्मै	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुयै	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अमुष्मात्	अमूभ्याम्	अमीभ्यः	अमुष्याः	अमूभ्याम्	अमूभ्यः
अमुस्य	अमूयोः	अमीषाम्	अमुष्याः	अमूयोः	अमूषाम्
अमुस्मिन्	अमूयोः	अमीषु	अमुष्याम्	अमूयोः	अमूषु

यत् (जो)

यः	यौ	ये	या	ये	याः
यम्	यौ	यान्	याम्	ये	याः
येन	याभ्याम्	यैः	यया	याभ्याम्	याभिः
यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
यस्य	ययोः	येषाम्	यस्याः	ययोः	यासाम्
यस्मिन्	ययोः	येषु	यस्याम्	ययोः	यासु

किम् (कौन)

कः	कौः	के	का	के	काः
कम्	कौ	कान्	काम्	के	काः
केन	काभ्याम्	कैः	कया	काभ्याम्	काभिः
कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
कस्य	कयोः	केषाम्	कस्याः	कयोः	कासाम्
कस्मिन्	कयोः	केषु	कस्याम्	कयोः	कासु

स्त्री०

- १ नपुंसकलिङ्ग में अदस् शब्द की प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में अदः, अम्, अमून्, शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।
- २ नपुंसकलिङ्ग में यत् शब्द की प्र० द्वि० विभक्तियों में यत्, ये, यानि शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।
- ३ नपुंसकलिङ्ग प्र०, द्वि०-किम्, के, कानि और शेष विभक्तियाँ पुल्लिङ्ग की तरह होती हैं ।

## सर्वनाम शब्दों पर विचार

इदमादि में इदम् (यह) अदम् (वह) युष्मद् (तु, तुम) अस्मद् (मे, हम) और भवान् (आप) इन सभी के रूप निम्नलिखित अर्थों में प्रयुक्त होते हैं।

इदमस्तु सन्निकृष्टे समीपतरवति चैतदो रूपम्

अदमस्तु विप्रकृष्टे तदिति परोक्षे विजानीयात् ॥

१—पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए इदम् शब्द, अधिक पास की वस्तु या व्यक्ति के लिए एतद् शब्द, सामने के दूरवर्ती पदार्थ या व्यक्ति के सम्बन्ध में अदम् और परोक्ष (जो वक्ता के सामने न हो) पदार्थ या व्यक्ति के बताने के लिए तद् शब्द को व्यवहार में लाया जाना है।

२—पुनर्वचनबाध होने से अर्थात् जिस व्यक्ति या वस्तु के सम्बन्ध में एक बार कुछ कह कर फिर उसके विषय में कुछ कहना हो तो द्वितीया विभक्ति में तृतीया विभक्ति के एकवचन में, और षष्ठी तथा सप्तमी विभक्तियों के द्विवचन में इदम् शब्द के स्थान में 'एत' आदेश होता है। जैसे—अनेन व्याकरणमधीतम्, एनं छन्दो-ध्यापय (इसने व्याकरण पढ़ लिया है अब इसे छन्द पढ़ाइए)। अनयोः पवित्रं कुलम्, एनयोः प्रभूतं स्वम् (इनका पवित्र कुल है, इनके पास बहुत धन है)।

३—युष्मद् और अस्मद् शब्दों के द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठी के एकवचन में क्रमशः 'त्वा, ते, तै, मा, मे, मे' द्विवचन में क्रमशः 'वाम्, नौ' और बहुवचन में क्रमशः 'वः, नः, आदेश होते हैं। इनको प्रयोग में लाने के नियम ये हैं:—

ये सब आदेश वाक्य या श्लोक के वरण के आरम्भ में 'च, वा, हा, अह, एव' इन पाँच अव्ययों के योग में और सम्बोधन के परे नहीं होते। जैसे, वाक्यारम्भ में—मम गृहं यच्छ (मेरे घर जाओ) इसमें 'मम' का 'मे' नहीं हुआ। पाँच अव्ययों के योग से त्वां मां च जानानि (वह तुझे और मुझे जानता है)। इदं पुस्तकं त्वं वास्ति (यह पुस्तक तेरी ही है)। हा मम मन्दभाग्यम् (हाय मेरा दौभाग्य)। इनमें क्रमशः त्वा, मा, ते, मे आदेश नहीं हुए। सम्बोधन के ठीक परे—बन्धो, मम ग्राममागच्छ (भाई मेरे गाँव को चलो) यहां 'मम' के स्थान पर 'मे' नहीं हुआ।

४—यदि 'च' आदि अव्ययों का युष्मद्, अस्मद् के 'त्वा, ते, मा, मे' आदि संक्षिप्त रूप से कोई सम्बन्ध न हो तो ये आदेश हो सकते हैं। जैसे—शिवः, रामश्च मे इष्ट देवौ (शिव और राम मेरे इष्टदेव हैं)। यहां 'मे' का सम्बन्ध इष्टदेव से है और 'च' शिव और राम को एक वाक्य के साथ मिलाता है।

५—यदि सम्बोधन के साथ कोई विशेषण हो तो युष्मद् और अस्मद् को आदेश हो सकते हैं। जैसे—दूरे दयालो नः पाहि (हे दयालु हरि, हमारी रक्षा करो)।

६—सम्मान के अर्थ में युष्मद् के स्थान में भवता शब्द का प्रयोग होता है जैसे, रक्तमुखेन स प्रोक्तः—भा भवान् अभ्यागत अतिथिः तद् भक्षयतु (भवान्) मया दत्तानि जम्बूकलानि (रक्तमुख ने उससे कहा—सुनिए, आप अभ्यागत और अतिथि हैं, इसलिए आप मेरे दिए हुए जामुन के फल खाइयें)।

† भवत् शब्द यद्यपि मध्यम पुरुष के स्थान में प्रयुक्त होता है तथापि यह सदा प्रथम पुरुष ही रहता है।

७—सम्मान न भी बोध हो तो युष्मद् के स्थान में भवत् शब्द का प्रयोग होता है। जैसे—अहमपि भवन्तं किमपि पृच्छामि (मैं भी आपसे कुछ पछता हूँ)

८—सम्मान बोध होने से कभी कभी 'भवत्' शब्द के पहले 'अत्र' और 'तत्र' का प्रयोग किया जाता है। सम्मान का पात्र यदि उपस्थित हो तो 'अत्रभवत्' और उपस्थित न हो तो 'तत्रभवत्' का प्रयोग किया जाता है। जैसे—अत्रभवन्तः विदाङ्-कुर्वन्तु, अस्ति तत्रभवान् भवभूतिः नाम काश्यपः (आप लोग यह जाने कि श्रीपूज्य-पाद काश्यप गोत्र में भवभूति हैं)। अत्रभवान् वसिष्ठ आज्ञापयति (पूज्यपाद वसिष्ठ जी आज्ञा देते हैं) अपि कुशली तत्रभवान् कण्वः—(पूजनीय कण्व जी कुशल से तो हैं?) अत्र भवान् प्रयागायविश्वविद्यालयकुलपतिः (आप इलाहाबाद यूनी-वर्सिटी के वाइसचांसलर हैं)।

९—भवत् शब्द के पूर्व 'एपः' और 'सः' का भी प्रयोग होता है। जैसे—एपभवान् अत्र वर्तते (आप यहीं हैं) स भवान् मामेतदुक्तवान् (श्रीमान् ने मुझे ऐसा कहा है)।

इन सर्वनामों के अतिरिक्त त्वत्, त्व, त्यद् आदि कई और सर्वनाम हैं जो कम प्रयुक्त होते हैं।

युष्मद्, अस्मद् और भवत् शब्दों को छोड़ कर सब सर्वनाम विशेष्य और विशेष-पण दोनों हो सकते हैं। जैसे—सर्वस्य हि परीक्ष्यन्ते स्वभावा नैतरे गुणाः (सब के स्वभाव ही की परीक्षा होती है अन्य गुणों की नहीं)। अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते (क्योंकि सब गुणों के ऊपर स्वभाव ही रहता है)। इसमें 'सर्वस्य' विशेष्य और 'सर्वान्' विशेषण है।

सर्वनाम शब्दों के आगे सम्बन्धार्थ में 'इय' आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे मदीय, मामक, मामकीन (मेरे) आस्माकीन, अस्मदीय (हमारा) त्वदीय, तावक, तावकीन (तेरा) यौष्माक, यौष्माकीण, भवदीय (तुम्हारा) स्वीय, स्वकीय (अपना) परकीय (दूसरे का) तदीय (उसका)।

कुछ और सादृश्यवाचक विशेषण—मादृशः, गतसमः (मुझसा) अस्मादृशः अस्म-त्समः (हम सा) त्वादृशः, त्वत्समः, (तुझ सा) युष्मादृशः युष्मत्समः (तुम सा) भवादृशः, भवत्समः (आप सा) ईदृशः (ऐसा) कीदृशः (कैसा)।

१०—प्रश्नार्थक और आश्चर्यार्थक 'क्या' का अनुवाद 'किम्' 'अपि' और 'ननु' से किया जाता है। जैसे—

किमिदमापतितम् = अरे ! यह क्या आ पड़ा ?

किं गतः अध्यापकः = क्या प्रोफेसर साहब चले गये ?

ननु जलधानं गतम् = क्या जहाज चला गया ?

११ —'यत्' शब्द के साथ 'तत्' शब्द का सम्बन्ध होता है। 'यत्तदोर्नित्यसम्बन्धः' किन्तु जहाँ 'यत्' शब्द उत्तर के वाक्य में आता है वहाँ पूर्व के वाक्य में 'तत्' शब्द रखना जरूरी नहीं। जैसे—

यत् वदसि तत् शृणोमि—जो कहते हो सो सुनता हूँ।

किन्तु-शृणोमि यत् वदसि=सुनता हूँ जो कहते हो।

१२—संस्कृत भाषा में 'यह' ऐसा का अनुवाद 'यत्' शब्द से होता है किन्तु कहीं पर 'इति' शब्द से भी होता है।

ममेति निश्चयो यदहं पठिष्यामि—मेरा यह निश्चय है कि मैं पढ़ूंगा।

जर्मन-सम्राजः कैंसरस्यैषा दशा भविष्यति इति को जानाति स्म—यह कोन जानता था कि जर्मन सम्राट् कैंसर की यह दशा होगी।

संस्कृत बन्ताओः—

१—तुम कहां गये थे ? २—यह मेरी साइकिल (द्विचक्रिका) है। ३—हम लोग इतना तो अवश्य समझते हैं। ४—गुरु जी, मेरा अपराध क्षमा कीजिए। ५—महाराज क्या तुझे बुला रहे हैं ? ६—कहिए, यह दास क्या करे ? ७—गोपाल, तुम किस जगह से आ रहे हो। ८—बेटा, कहो, तुम क्या चाहते हो ? ९—मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप हमारे रिश्तेदार (सम्बन्धी) हैं। १०—आप दोनों की मित्रता कब से (कदा प्रभृति) है ? ११—नहीं, मैंने आपको नहीं बुलाया। १२—कहिए क्या यह आप का कमर नहीं है ? १३—तुम स्वयं यहां चले आना। १४—हे परमेश्वर, आप हमारी रक्षा करें। १५—क्या गाड़ी (वाहयानम्) चली गई ? १६—लड़कों, तुम क्या पूछना चाहते हो ? १७—वे तुम्हारे कोन होते हैं ? १८—यह हाथी किसका है ? १९—लीजिए, यह आपकी चिट्ठी है। २०—उस सभा में कोन कोन आये थे ?

### सन्धिप्रकरण

पीछे कहा गया है कि वाक्य में कई शब्द रहते हैं। संस्कृत के हर एक शब्द के अन्त में कोई स्वर, व्यञ्जन, अनुस्वार, अथवा विसर्ग अवश्य होता है। दो शब्दों के समीप होने से उनमें मेल होकर जो परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं। इस परिवर्तन से कहीं पर (१) दो अक्षरों के स्थान पर एक नया अक्षर हो जाता है जैसे—उमा+ईशः=उमेशः (२) कहीं पर एक अक्षर का लोप हो जाता है, जैसे—गच्छन्ति=वाला गच्छन्ति, (३) कहीं पर दो के बीच में एक नया अक्षर आ जाता है जैसे—धावन्+अश्वः=धावन्नश्वः। सन्धि तीन प्रकार की है—स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि।

### स्वरसन्धि

एक स्वर के साथ दूसरे स्वर के मेल होने से जो परिवर्तन होता है, उसे स्वरसन्धि कहते हैं।

### १—दीर्घसन्धि

(अकः सवर्णो दीर्घः) जब ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर के बाद ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर आवे तो दोनों के स्थान में दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे—रत्न+आकरः=रत्नाकरः।

यहाँ पर 'रत्न' में जो ह्रस्व अकार है उसके बाद 'आकार' का दीर्घ 'आ' आता है, इसलिए ऊपर के नियम के अनुसार दोनों के (ह्रस्व 'अ' और दीर्घ 'आ' के) स्थान में दीर्घ 'आ' हो गया। इसी प्रकार—



शश + अङ्क = शशाङ्कः

अद्य + आगतः = अद्यागतः

दया + अर्णवः = दयार्णवः

विद्या + आलयः = विद्यालयः

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

लघु + उमिः = लघूमिः

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः

क्षिति + ईशः = क्षितीशः

सुधी + इन्द्रः = सुधीन्द्रः

श्री + ईशः = श्रीशः

वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

पितृ + ऋणम् = पितृणम् इत्यादि

## २—गुणसन्धि

(अदेङ्गुणः, आद्गुणः) यदि अ अथवा आ के बाद ह्रस्व इ या दीर्घ ई आवे तो दोनों के स्थान में 'ए' हो जाता है, यदि ह्रस्व उ या दीर्घ ऊ आवे तो दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाता है, यदि ह्रस्व ऋ या दीर्घ ॠ आवे तो दोनों के स्थान में 'अर्' हो जाता है, और यदि लृ आवे तो दोनों के स्थान में 'अल्' गुण हो जाता है। जैसे—

सुर + इन्द्रः = सुरेन्द्रः

यहाँ पर सुर के 'र' में जो 'अ' है उसके बाद इन्द्र की 'इ' आती है, इसलिए ऊपर के नियम के अनुसार दोनों (सुर के अ और 'इन्द्र' की 'इ') के स्थान में 'ए' हो गया। इसी प्रकार—

गण + ईशः = गणेशः

तथा + इति = तथेति

उमा + ईशः = उमेशः

हित + उपदेशः = हितोपदेशः

गङ्गा + उदकम् = गङ्गोदकम्

पीन + उरः = पीनोरः

देव + ऋषिः = देवर्षिः

महा + ऋषिः = महर्षिः इत्यादि

## ३—वृद्धिसन्धि

(वृद्धिरादेच, —वृद्धिरेचि) जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ए' या 'ऐ' आवे तो दोनों के स्थान में 'ऐ', और जब 'ओ' या 'औ' आवे तो दोनों के स्थान में 'औ' वृद्धि हो जाती है। जैसे—

अद्य + एव = अद्यैव

तथा + एव = तथैव

जल + ओघः = जलौघः

महा + ओषधिः = महौषधिः

महा + औषधम् = महौषधम्

इत्यादि।

## ४—यणसन्धि

(इको यणचि) १—जब ह्रस्व इ या दीर्घ ई के बाद इ ई को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो 'इ' के स्थान में 'य्' हो जाता है।

२—जब उ या ऊ के बाद उ ऊ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो 'उ' के स्थान में 'व्' हो जाता है।

३—जब ऋ या ॠ के बाद ऋ ॠ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो ऋ के स्थान में 'रृ' हो जाता है। जैसे—

१—यदि + अपि = यद्यपि

नदी + उदकम् = नद्युदकम्

इति + आह = इत्याह

२—अन + अग्रः = अन्वयः

गुरु + आदेशः = गुरुदेशः

वधू + आदेशः = वध्वादेशः

प्रति + एकम् = प्रत्येकम्  
 प्रति + उपकारः = प्रत्युपकारः

३—पितृ + उपदेशः = पितृपदेशः  
 मातृ + अनुमतिः = मातृनुमतिः  
 इत्यादि ।

#### ५—अयादि चतुष्टय

(एचोयवायावः) ए, ऐ, ओ, औ के बाद जब कोई स्वर आता है तो 'ए' के स्थान में 'अय्' 'ओ' के 'अव्' 'ऐ' के 'आय्' और 'औ' के स्थान में 'आव्' हो जाता है, जैसे—

{ शे + अनम् = शयनम्  
 ने + अनम् = नयनम्  
 नी + अकः = नायकः

भौ + अति = भवति  
 वटो + ऋक्षः = वटवृक्षः  
 पी + अकः = पावकः इत्यादि ।

#### ६—पूर्वरूप

(एङः पदान्तादति) जब किसी पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' आवे और उसके बाद ह्रस्व 'अ' आवे तो 'अ' का पूर्व हो जाता है, और केवल पूर्वरूपसूचक चिह्न (ऽ) लगाया जाता है, जैसे—

गजे + अस्मिन् = गजेऽस्मिन्  
 बालो + अव = बालोऽव

गुरो + अव = गुरोऽव

इत्यादि ।

#### ७—प्रकृतिभाव

ई, ऊ, ए से अन्त होने वाले द्विवचन के बाद जब कोई स्वर आता है तो ई, ऊ, ए ज्यों के त्यों रहते हैं, जैसे—

मुनी + इति = मुनी इति ।

साधू + आगच्छतः = साधू आगच्छतः,

लते + अव = लते अव  
 (लतेऽव नहीं होता)

#### हल्सन्धि

(अलां जशोऽन्ते) जब कोई स्वर, या वर्ग के तीसरे चौथे अक्षर अथवा ध्रुव आगे आवे तो पद के अन्त वाले क् च् ट् त् प् के स्थान में क्रमशः ग् ज् ड् ब् हो जाते हैं । जैसे—

{ वाक् + दानम् = वाग्दानम्  
 दिक् + अम्बरः = दिग्गम्बरः  
 अच् + अन्तः = अजन्तः  
 पट् + दर्शनम् = पड्दर्शनम्  
 अप् + जम् = अजम्

{ जगत् + ईशः = जगदीशः  
 सत् + आचारः = सदाचारः  
 तत् + धनम् = तद्धनम्  
 जगत् + बन्धुः = जगद्बन्धुः

इत्यादि ।

(झयो होऽन्यतरस्याम्) यदि अनुनासिक अक्षरों को छोड़कर वर्ग के किसी अक्षर के आगे ह् आवे तो उस अक्षर के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा अक्षर (ग् ज् ड् ब्) और ह् के स्थान में क्रमशः उसी वर्ग का चौथा अक्षर (घ् ङ् ट् ध् भ्) हो जाते हैं । जैसे—

वाक् + हरिः = वाग्हरिः

अच् + ह्रस्वः = अज्जह्रस्वः

पट् + ह्रस्वः = पड्जह्रस्वः

तत् + हितः = तद्धितः

अप् + हरणम् = अवभरणम्

इत्यादि ।

(स्तोः श्चुना श्चुः) जब म् या तवर्ग (त् थ् द् ध् न्) के आगे या पीछे श् या चवर्ग (च् छ् ज् झ् ञ्) आते हैं तो स् के स्थान में श् और तवर्ग के स्थान में क्रमशः चवर्ग हो जाता है। जैसे—

बालस् + शेते = बालश्शेते  
कस् + चित् = कश्चित्  
सत् + चरितम् = सच्चरितम्  
शत्रून् + जयति = शत्रूञ्जयति

तत् + छविः = तच्छविः  
एतत् + जलम् = एतज्जलम्  
बृहत् + जरः = बृहज्जरः  
याच् + ना = याच्ना इत्यादि।

(स्तोः ष्टुना ष्टुः) जब स् या तवर्ग के आगे या पीछे प् या टवर्ग आते हैं तो स् के स्थान में प् और तवर्ग के स्थान में टवर्ग हो जाता है। जैसे—

देवस् + षष्ठः = देवष्षष्ठः  
तत् + टीका = तट्टीका  
उत् + डयनम् = उड्डयनम्

इप् = तः = इष्टः  
आकृप् + तः = आकृष्टः

इत्यादि।

(तोलिलः) जब त् द् और न् के बाद 'ल्' आवे तो उनके स्थान में ल् हो जाता है न् के स्थान में अनुनासिक (ँ) भी हो जाता है। जैसे—

उत् + लेखः = उल्लेखः

महान् + लाभः = महाँल्लाभः

कश्चित् + लभते = कश्चिल्लभते

इत्यादि।

(यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) यदि पद के अन्त में वर्गों के प्रथम वर्ण (क् च् ट् त् थ् प्) के आगे न् या म् आवे तो वर्ग के पहले अक्षर के स्थान में उसी वर्ग का तीसरा या पाँचवाँ अक्षर हो जाता है, यदि प्रत्यय आगे हो तो पाँचवाँ ही अक्षर होता है। जैसे—

दिक् + नागः = दिस्नागः दिङ्नागः

जगत् + नाथः = जगद्नाथ, जगन्नाथः

वेगात् + नयति = वेगाद् नयति, वेगान्नयति

(प्रत्यय) वाक् + मयम् = वाङ्मयम्

(मोऽनुस्वारः) यदि पद के अन्त में 'म' रहे और उसके बाद व्यञ्जन आवे तो 'म' के स्थान में अनुस्वार करना या न करना अपनी इच्छा पर निर्भर है। जैसे—

गृहम् + चलति = गृहँचलति गृहञ्चलति

हरिम् + वन्दे = हरि वन्दे

मृत्युम् + जयः = मृत्युजयः मृत्युञ्जयः

मधुरम् + हसति = मधुरं हसति

सम् + गमः = संगमः, सङ्गमः

स्वर परे रहने पर म् स्वर के साथ मिल जाता है, जैसे—

सम् + आचारः = समाचारः।

(नश्छव्यप्रशान्) जब पद के अन्त में 'न्' आवे और उसके बाद च् छ् ट् ठ् त् थ् आवें तो 'न्' के स्थान में अनुस्वार और च् छ् ट् ठ् त् थ् के स्थान में क्रमशः श् च् छ् ष् ट् स् थ् हो जाते हैं। जैसे—

कस्मिन् + चित् = कस्मिश्चित्

महान् + ठवकुरः = महाँष्ठवकुरः

महान् + छेदः = महाँश्छेदः

पतम् + तहः = पतस्तहः

चलन् + टिट्ठिमः = चलण्टिट्ठिमः

क्षिगन् + थूत्कारः = क्षिपंस्थूत्कारः

(शश्छाटि) जब पद के अन्तवाले 'त्' 'न्' के बाद 'श्' आवे तो 'त्' के स्थान में 'च्' 'न्' के स्थान में 'ञ्' और श् के स्थान में छ् हो जाता है। जैसे—

तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा, तच् श्रुत्वा

धावन् + शशः = धावञ्छशः, धावञ् शशः इत्यादि।

(इमो ह्रस्वाच्चि इमुण् निरप्यम्) यदि ह्रस्व स्वर के बाद इ ण् न आवें और उनके बाद कोई स्वर हो तो एक-एक इ ण् न् के स्थान में दो-दो इ ण् न् हो जाते हैं । जैसे—

प्रत्यङ् + आत्मा = प्रत्यङ् आत्मा

सुगण् + ईशः = सुगण्णीशः

धावन् + अश्वः = धावन्तश्वः

इत्यादि ।

(छे च, पदान्ताद्वा) यदि ह्रस्व स्वर के बाद छ् आवे तो छ् के साथ एक च् अधिक मिल जाता है और दीर्घ स्वर के बाद च् मिलता भी है और नहीं भी मिलता । जैसे—

वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया । लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया

### विसर्गसन्धि

(विसर्जनोपस्य सः) यदि विसर्ग के बाद च् छ् आवें तो विसर्ग के स्थान में श्, यदि उसके बाद त् थ् और स् आवे तो विसर्ग के स्थान में स्, और यदि विसर्ग के बाद ट् ठ् आवें तो विसर्ग के स्थान में प् हो जाता है । जैसे

बालः + चलति = बालश्चलति

निः + छलः = निश्छलः

देवः + तिष्ठति = देवस्तिष्ठति

धनुः + टंकारः = धनुष्टंकारः

निः + सारः = निस्सारः

इत्यादि ।

(अतोऽति हशि च विसर्गस्य सः) विसर्ग के पूर्व यदि ह्रस्व अ आवे और बाद को ह्रस्व अ या वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है । (पद के अन्त में) ओ के बाद अ का लोप और लोप-सूचक चिह्न (s) लगा दिया जाता है । जैसे—

यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी

देवः + अपि = देवोऽपि

कः + अवदत् = कोऽवदत्

मनः + गतः = मनोगतः

यशः + दा = यशोदा

मनः + भावः = मनोभावः

बालः + वदति = बालो वदति

मनः + हरम् = मनोहरम्

(अतोऽन्यच्चि विसर्गस्य लोपः) अ के बाद विसर्ग का लोप हो जाता है । यदि विसर्ग के बाद अ के अलावा कोई और स्वर आवे तो उसके साथ कोई दूसरी सन्धि नहीं होती । जैसे—

बालः + आगच्छति = बाल आगच्छति

यशः + इच्छा = यश इच्छा

अतः + एव = अत एव

पुष्पेभ्यः + उद्यानम् = पुष्पेभ्य उद्यानम्

(आतोऽशि विसर्गस्य लोपः) यदि आ के बाद विसर्ग आवे और उसके बाद कोई स्वर अथवा वर्ग के प्रथम, द्वितीय अक्षरों को छोड़कर कोई अक्षर या य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग का लोप हो जाता है :—

बालाः + अपि = बाला अपि

नराः + इच्छन्ति = नरा इच्छन्ति

गुणाः + एव = गुणा एव

गजाः + गच्छन्ति = गजा गच्छन्ति

नराः + हसन्ति = नरा हसन्ति

इत्यादि ।

(इचोऽशि विसर्गस्य रः) यदि विसर्ग के पहले अ आ को छोड़ कर कोई दूसरा



स्वर हो और विसर्ग के बाद स्वर अक्षर, या वर्ग के तीसरे चौथे, पाँचवें अक्षर अथवा य् र् ल् व् ह् आवें तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है । जैसे—

निः + धनः = निर्धनः

निः + आधारः = निराधारः

बहिः + देशः = बहिर्देशः

भानुः + उदेति = भानुरुदेति

मानोः + मयूखाः = भानोर्मयूखाः

इत्यादि ।

अ के बाद विसर्ग यदि र् में बना हो तो र् हो जाता है । जैसे—

पुनः + अपि = पुनरपि

भ्रातः + आगच्छ = भ्रातरागच्छ

प्रातः + एव = प्रातरेव

मातः + देहि = मातर्देहि

स्वः + गतः = स्वर्गतः

इत्यादि ।

(रोरि लोपः पूर्वस्याणो दीर्घश्च) यदि र् के बाद र आवे तो एर् का लोप हो जाता है और उसके पूर्व स्वर को दीर्घ हो जाता है । जैसे—

पुनर् + रचना = पुनारचना

भानुर् + राजते = भानुराजते

निर् + रोगः = नीरोगः

साधोर् + रुचिः = साधोरुचिः

निर् + रसः = नीरसः

इत्यादि ।

(एतत्तदोः प्रथमाविसर्गस्य लोपोऽनव्यलि) 'सः' और 'एषः' के विसर्ग का लोप हो जाता है यदि उसके बाद अ के अलावा कोई अक्षर आवे । जैसे—

सः + गच्छति = स गच्छति

एषः + आगच्छति = एष आगच्छति

सः + उवाच = स उवाच

एषः + कथयति = एष कथयति

णत्वविधान (न् का ण् में बदलना)

ऋ ऋ र् और मूर्धन्य ष् इन चार वर्णों से परे दन्त्य न् का ण् होता है । जैसे—

नृणाम्, नृणाम्, चतसृणाम्, भ्रानृणाम्, चतुर्णाम्, विस्तीर्णम्, दोष्णाम्, पुष्णाति आदि ।

यदि स्वर वर्ण, कवर्ण, पवर्ण, य्, व्, ह् और अनुस्वार से व्यवधान अर्थात् ये सब बीच में भी पड़ जायें तो भी न् का ण् होता है । जैसे कराणाम्, करिणा, गुरुणा, मृगेण, मूर्खेण, दपेण, रयेण, गर्वेण, ग्रहाणाम् इत्यादि ।

पद के अन्तवाले न् का मूर्धन्य ण् नहीं होता । जैसे—रामान्, हरीन्, गुरून्, वृक्षान्, भ्रातृन् इत्यादि ।

षत्वविधान (स् का ष् में बदलना)

अ, आ भिन्न स्वर से अथवा र् से परे आदेश और प्रत्यय के स् का ष् होता है । जैसे मुनिष्, वधष्, भ्रातृष्, देवेषु, अनपीत, दिक्षु, चतुर्षु, हल्षु इत्यादि ।

अनुस्वार, विसर्ग, श्, ष्, स, का व्यवधान होने पर अर्थात् इनके बीच में रहने पर भी स् का ष् होता है । जैसे हवीषि, धनूषि, आशीःषु, आयुःषु, चक्षुःषु आदि, किन्तु पुंसु में नहीं होता ।

१ इनके अतिरिक्त अक्षरों के मध्यस्थित होने पर ण् नहीं होता । जैसे—अर्चना, किरौटेन, अर्थेन, स्पर्शेन, रसेन, दृढानाम्, अर्जनम् इत्यादि ।

२ सात् प्रत्यय के स् का ष् नहीं होता । जैसे नदीसात्, वायुसात्, भ्रातृसात्, वह्निसात् इत्यादि ।

निम्नलिखित संस्कृत वाक्यों का हिन्दी भाषा में अनुवाद करो और सन्धि तोड़ कर सन्धि नियम भी बताओ :—

१—उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये । २—तिष्ठत्येकां निशा चन्द्रः श्रीमान् सम्पूर्णमण्डलः । ३—प्राणव्ययाय शूराणां जायते हि रणोत्सवः ।

४—अहं स ते परं मित्रमुपकारवशीकृतः ।

५—यद्भवान्मधुरं वक्ति तन्मह्यं नाद्य रोचते । ६—हरितं नाम सोऽपश्यन्कुललोहिताननम् । ७—मुखाच्च यो याति नरो दरिद्रतां धृतः शरीरेण मृतः स जीवति ।

८—को नाम लोके स्वयमात्मदोषमुद्धाटयेन्नष्टघृणः सभासु । ९—को मूको, यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति । १०—यास्यत्यद्य शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुजायताम् ।

संस्कृत बनाओ :—

१—आज मेरे भाई का विवाह होगा । २—उस गांव के पास ऋषि का आश्रम था । ३—मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ । ४—नदी के किनारे पर वृक्ष की छाया में एक मृग पड़ा था । ५—साधु ने जब यह सुना तो वह चले पड़ा । ६—बालको ! बाग में जाओ, और वहाँ खेलो । ७—शिकारी ने एक ही वाण से उस मृग को मार डाला । ८—वे दोनों भक्त दर्शन के लिए मन्दिर में गये । ९—भगीरथ तपस्या के बल से गङ्गा को पृथ्वी पर ले आया । १०—पिता के घर में वह सुलक्षण बालक दिन-दिन बढ़ने लगा ।

— : ० : —

## द्वितीयोऽध्यायः

शब्दोच्चारण (हलन्त) पुल्लिङ्ग

राजन् (राजा)

एकव०

द्विव०

बहुव०

प्र० राजा

राजानौ

राजानः

द्वि० राजानम्

राजानी

राज्ञः

तृ० राजा

राजभ्याम्

राजभिः

च० राजे

राजभ्याम्

राजभ्यः

पं० राज्ञः

राजभ्याम्

राजभ्यः

ष० राज्ञः

राज्ञोः

राज्ञाम्

स० राज्ञि, राजनि

राज्ञोः

राजसु

सं० हे राजन्

हे राजानौ

हे राजानः

महत् (बड़ा)

प्र० महान्

महान्तौ

महान्तः

द्वि० महान्तम्

महान्तौ

महतः

तृ० महता

महद्भ्याम्

महद्भिः

च० महते

महद्भ्याम्

महद्भ्यः

प० महतः	महद्भ्याम्	महद्भ्यः
ष० महतः	महतां	महताम्
स० महति	महतोः	महत्सु
सं० हे महन्	हे महान्ती	हे महान्तः

स्त्रीलिङ्ग में महती, महती, महत्यः इत्यादि रूप नदी शब्द की तरह होते हैं और नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा और द्वितीया में महत्, महती, महान्ति रूप होते हैं और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं ।

### भवत् (आप)

प्र० भवान्	भवन्ती	भवन्तः
द्वि० भवन्तम्	भवन्ती	भवतः
तृ० भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
च० भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
प० भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
ष० भवतः	भवतोः	भवताम्
स० भवति	भवतोः	भवत्सु
सं० हे भवन्	हे भवन्ती	हे भवन्तः

इसी प्रकार भगवत्, श्रीमत्, बुद्धिमत्, बलवत्, विद्यावत्, धनुष्मत्, सानुमत् (पहाड़), भास्वत् (सूर्य), मधवत् (इन्द्र), सरस्वत् (समुद्र), ज्ञानवन्, गतवत् आदि ।

स्त्रीलिङ्ग में भवती, भवती, भवत्यः इत्यादि रूप नदी शब्द की तरह और नपुं० लिङ्ग में प्र० द्वि० में भवन्, भवन्ती, भवन्ति और शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं ।

### पठत् (पढ़ता हुआ)

प्र० पठन्	पठन्ती	पठन्तः
द्वि० पठन्तम्	पठन्ती	पठतः
तृ० पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
च० पठते	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
प० पठतः	पठद्भ्याम्	पठद्भ्यः
ष० पठतः	पठतोः	पठताम्
स० पठति	पठतोः	पठत्सु
सं० हे पठन्	हे पठन्ती	हे पठन्तः

स्त्रीलिङ्ग में पठन्ती, पठन्ती, पठन्त्यः इत्यादि रूप नदी की तरह और नपुं० लिङ्ग की प्र० द्वि० में पठत्, पठती, पठन्ति और शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग की तरह होते हैं । इसी तरह—पश्यत् (देखता हुआ) गच्छत् (जाता हुआ) वसत् (वास करता हुआ) पिबत् (पीता हुआ) पृच्छत् (पूछता हुआ) खादत् (खाता हुआ) चोरयत् (चोरी करता हुआ) आदि शतृप्रत्ययान्त शब्द ।

## पुं० धीमत् (अकलमंद)

प्र० धीमान्	धीमन्तो	धीमन्तः
द्वि० धीमन्तम्	धीमन्तो	धीमतः
तृ० धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः

शेष विभक्तियाँ महत् शब्द की तरह ।

इसी तरह—मतिमत्—बुद्धिमान्, धनवत्—धनवान्, भगवत्—विष्णु इत्यादि ।

## पुं० आत्मन् (आत्मा)

प्र० आत्मा	आत्मानो	आत्मानः
द्वि० आत्मानम्	आत्मानो	आत्मनः
तृ० आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः
च० आत्मने	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
पं० आत्मनः	आत्मभ्याम्	आत्मभ्यः
प० आत्मनः	आत्मनोः	आत्मनाम्
स० आत्मनि	आत्मनोः	आत्मसु
सं० हे आत्मन्	हे आत्मानो	हे आत्मानः

## पुं० युवन् (जवान आवसी)

प्र० युवा	युवानो	युवानः
द्वि० युवानम्	युवानो	यूनः
तृ० यूना	युवभ्याम्	युवभिः
च० यूने	युवभ्याम्	युवभ्यः
पं० यूनः	युवभ्याम्	युवभ्यः
प० यूनः	यूनोः	यूनाम्
स० यूनि	यूनोः	युवसु
सं० हे युवन्	हे युवातो	हे युवानः

## पुं० पथिन् (रास्ता)

प्र० पन्थाः	पन्थानो	पन्थानः
द्वि० पन्थानम्	पन्थानो	पथः
तृ० पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
च० पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
पं० पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
प० पथः	पथोः	पथाम्
स० पथि	पथोः	पथिषु
सं० हे पन्थाः	हे पन्थानो	हे पन्थानः

## पुं० विद्वम् (विद्वान्)

प्र० विद्वान्	विद्वानो	विद्वान्सः
द्वि० विद्वान्सम्	विद्वानो	विदुषः

यवन् (कुत्ता) और मघवन् (इन्द्र) की विभक्तियाँ यवन् की तरह होती हैं ।

तृ० विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
च० विदुषे	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
पं० विदुषः	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भ्यः
ष० विदुषः	विदुषोः	विदुषाम्
स० विदुषि	विदुषोः	विद्वत्सु
सं० हे विद्वन्	हे विद्वंसी	हे विद्वंसः
इसी तरह—श्रेयम् (अच्छा) । कनीयम् (छोटा) ज्यायम् (बड़ा) ।		
प्रेयस् (प्यारा) ।		

पुं० चन्द्रमस् (चन्द्रमा)

प्र० चन्द्रमाः	चन्द्रमसी	चन्द्रमसः
द्वि० चन्द्रमसम्	चन्द्रमसी	चन्द्रमसः
तृ० चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
च० चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
पं० चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
ष० चन्द्रमसः	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
स० चन्द्रमसि	चन्द्रमसोः	चन्द्रमस्सु-मःसु
सं० हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसी	हे चन्द्रमसः
इसी तरह—वनौकस्—वनवासी । वेधस्—ब्रह्मा । विवीकस्—देवता । दुर्वासस्—		
दुर्वास नामक ऋषि ।		

पुं०-गुणिन् (गुणवाला पुरुष)

प्र० गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
द्वि० गुणिनम्	गुणिनी	गुणिनः
तृ० गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
च० गुणिने	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
पं० गुणिनः	गुणिभ्याम्	गुणिभ्यः
ष० गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
स० गुणिनि	गुणिनोः	गुणिषु
सं० हे गुणिन्	हे गुणिनौ	हे गुणिनः

इसी प्रकार—शशिन्—चन्द्रमा । दण्डिन्—दण्डधारी । कुशलिन्—सुखी । पक्षिन्—पक्षी । स्वामिन्—मालिक । शिखरिन्—पर्वत । करिन्—हाथी । मन्त्रिन्—मन्त्री (वजीर) ।

पुं० तादृक् (उसके जैसा)

प्र० तादृक्	तादृशी	तादृशः
द्वि० तादृशम्	तादृशी	तादृशः
तृ० तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भिः
च० तादृशे	तादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः



प० तादृशः	नादृग्भ्याम्	तादृग्भ्यः
प० तादृशः	तादृशोः	तादृशाम्
स० तादृशि	तादृशोः	तादृक्षु
सं० हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृशः
इसी प्रकार—ईदृश् (ऐसा) कीदृश् (कैसा) यादृश् (जैसा) त्वादृश् (तुझ जैसा) भवादृश् (आप जैसा) मादृश् (मूझ जैसा) इत्यादि ।		

## पुं० पुंस् (पुरुष)

प्र० पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
द्वि० पुमांसम्	पुमांसौ	पुंसः
तृ० पुसा	पुम्भ्याम्	पुम्भिः
च० पुसे	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
पं० पुसः	पुम्भ्याम्	पुम्भ्यः
प० पुसः	पुंसौ	पुंसाम्
स० पुसि	पुंसोः	पुंसु
सं० हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः

## स्त्रीलिङ्ग शब्द

## वाक् (वाणी)

प्र० वाक्	वाची	वाचः
द्वि० वाचम्	वाची	वाचः
तृ० वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
च० वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पं० वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
प० वाचः	वाचोः	वाचाम्
स० वाचि	वाचोः	वाक्षु
सं० हे वाक्	हे वाची	हे वाचः

इसी प्रकार शुच (शोक) त्वच् (छाल) रुच् (कान्ति) इत्यादि ।

## सरित् (नदी)

प्र० सरित्	सरित्ती	सरितः
द्वि० सरितम्	सरित्ती	सरितः
तृ० सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
च० सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पं० सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
प० सरितः	सरिताः	सरिताम्
स० सरिति	सरितोः	सरित्सु
सं० हे सरित्	हे सरित्ती	हे सरितः

इसी प्रकार—हरित् (दिशा) योषित् (स्त्री) तडित् (बिजली) ।

स्त्रीलिङ्ग—विपद् (विपत्ति)

प्र० विपत्	विपदौ	विपदः
द्वि० विपदम्	विपदौ	विपदः
तृ० विपदा	विपद्भ्याम्	विपद्भिः
च० विपदे	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
पं० विपदः	विपद्भ्याम्	विपद्भ्यः
ष० विपदः	विपदोः	विपदाम्
स० विपदि	विपदोः	विपत्सु
सं० हे विपत्	हे विपदौ	हे विपदः

इसी प्रकार—संपत् शब्द (ऋतु, वर्ष) परिपत्त (सभा) इत्यादि ।

स्त्रीलिङ्ग—गिर (वाणी)

प्र० गीः	गिरी	गिरः
द्वि० गिरम्	गिरी	गिरः
तृ० गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः
च० गिरे	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
पं० गिरः	गीर्भ्याम्	गीर्भ्यः
ष० गिरः	गीरोः	गिराम्
स० गिरि	—गिरोः	गीर्षु
सं० हे गीः	हे गिरी	हे गिरः

इसी प्रकार—पुर—(नगर) । धुर—(धुरा) । द्वार—(द्वार) ।

दिश (दिशा)

प्र० दिक्	दिशौ	दिशः
द्वि० दिशम्	दिशौ	दिशः
तृ० दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
च० दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पं० दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
ष० दिशः	दिशोः	दिशाम्
स० दिशि	दिशोः	दिक्षु
सं० हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः

पुर (नगर)

प्र० पूः	पुरौ	पुरः
द्वि० पुरम्	पुरौ	पुरः
तृ० पुरा	पूर्य्याम्	पूर्य्यभिः
च० पुरे	पूर्य्याम्	पूर्य्यः
पं० पुरः	पूर्य्याम्	पूर्य्यः
ष० पुरः	पुरोः	पुराम्
स० पुरि	पुरोः	पूरुषु
सं० हे पूः	हे पुरौ	हे पुरः

अप् (जल) केवल बहुवचन में

प्र०	आपः	पं०	अद्भ्यः
द्वि०	अपः	प०	अपाम्
तृ०	अद्भिः	स०	अप्सु
च०	अद्भ्यः	सं०	हे आपः

नपुंसकलिङ्ग

वर्म (कवच)

प्र०	वर्म	वर्मणी	वर्माणि
द्वि०	वर्म	वर्मणी	वर्माणि
तृ०	वर्मणा	वर्मभ्याम्	वर्मभिः
च०	वर्मणे	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
पं०	वर्मणः	वर्मभ्याम्	वर्मभ्यः
प०	वर्मणः	वर्मणोः	वर्मणाम्
स०	वर्मणि	वर्मणोः	वर्मसु
सं०	हे वमन्, हे वमं	हे वर्मणी	हे वर्माणि

इसी प्रकार—कर्मन् (काम) शर्मन् (कल्याण) भर्मन् (पालन) ।

(नपुंसकलिङ्ग) नामन् (नाम)

प्र०	नाम	नामनी-नाम्नी	नामानि
द्वि०	नाम	नामनी-नाम्नी	नामानि
तृ०	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
च०	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पं०	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
प०	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
स०	नामनि, नाम्नि	नाम्नोः	नामसु
सं०	हे नाम	हे नामनी, नाम्नी	हे नामानि

इमी प्रकार—हेमन्—सुवर्ण (सोना) । दामन्—रस्ती । प्रेमन्—प्यार ।  
लोमन्—रोम । धामन्—घर, तेज इत्यादि ।

नपुंसकलिङ्ग—मनस् (मन)

प्र०	मनः	मनसी	मनांसि
द्वि०	मनः	मनसी	मनांसि
तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
च०	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
पं०	मनसः	मनोभ्याम्	मनोभ्यः
प०	मनसः	मनसोः	मनसाम्
स०	मनसि	मनसोः	मनस्सु-नःसु
सं०	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

इसी प्रकार—पयस्—पानी या दूध । धनुष्—धनुष् । तमस्—अन्धकार ।  
 तेजस्—दीप्ति । चक्षुष्—नेत्र । तपस्—तप । रजस्—धूलि । वचस्—वचन ।  
 वयस्—उम्र । शिरस्—सिर । वासस्—कपड़ा । सरस्—तालाब । नभस्—  
 आसमान । यशस्—कीर्ति । रक्षस्—राक्षस । इत्यादि ।

हविस्—(हवन करने की सामग्री विशेष)

प्र०	हविः	हविषी	हवीषि
द्वि०	हविः	हविषी	हवीषि
तृ०	हविषा	हविभ्याम्	हविभिः
च०	हविषं	हविभ्याम्	हविभ्यः
पं०	हविषः	हविभ्याम्	हविभ्यः
ष०	हविषः	हविषोः	हविषाम्
स०	हविषि	हविषोः	हविषुः
सं०	हे हविः	हे हविषी	हे हवीषि

इसी प्रकार—सपिस्—घी । ज्यातिष्—रोशनी । रोचिस्—रोशनी ।

तादृश्—(उसके जैसा)

प्र०	तादृक्	तादृशी	तादृशि
द्वि०	तादृक्	तादृशी	तादृशि, शेष पुंल्लिङ्ग की तरह ।
			महत् (बड़ा)

प्र०	महत्	महती	महान्ति
द्वि०	महत्	महती	महान्ति, शेष पुंल्लिङ्ग की तरह ।

मनोहारिन् (सुंदर)

प्र०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि
द्वि०	मनोहारि	मनोहारिणी	मनोहारीणि, शेष पुंल्लिङ्ग की तरह ।

संख्यावाचकविशेषण

१—निविचत संख्यावाचक

	एक (एक)	न०	पुं०	स्त्री०	न०
प्र०	एकः	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	एकम्	एकम्	द्वौ	द्वे	द्वे
तृ०	एकेन	एकेन	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	एकस्मै	एकस्मै	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पं०	एकस्मात्	एकस्मात्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
ष०	एकस्य	एकस्य	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
स०	एकस्मिन्	एकस्मिन्	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

## त्रि (तीन)

पुं०	स्त्री०
प्र० त्रयः	तिस्रः
द्वि० त्रीन्	तिस्रः
तृ० त्रिभिः	तिसृभिः
च० त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
पं० त्रिभ्यः	तिसृभ्यः
ष० त्रयाणाम्	तिसृणाम्
स० त्रिषु	तिसृषु

न०	पुं०
त्रीणि	चत्वारः
त्रीणि	चतुरः
त्रिभिः	चतुभिः
त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः
त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः
त्रयाणाम्	चतुर्णाम्
त्रिषु	चतुर्षु

## चतुर (चार)

न०	पुं०
चत्वारि	चतस्रः
चत्वारि	चतस्रः
चतुभिः	चतसृभिः
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः
चतुर्णाम्	चतसृणाम्
चतुर्षु	चतसृषु

नोट—एक शब्द का उच्चारण केवल एकवचन में, द्वि शब्द का केवल द्विवचन में, और त्रि और चतुर शब्दों का उच्चारण केवल बहुवचन में ही होता है ।

पञ्चन् (पांच)	पप् (छः)	सप्तन् (सात)	अष्टन् (आठ)	नवन् (नौ)	दशन् (दस)
प्र० पञ्च	षट्-इ	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश
द्वि० पञ्च	षट्-इ	सप्त	अष्टौ-अष्ट	नव	दश
तृ० पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः	अष्टाभिः-अष्टभिः	नवभिः	दशभिः
च० पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः-अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पं० पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
ष० पञ्चानाम्	पणाम्	सप्तानाम्	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
स० पञ्चसु	पट्सु-त्सु	सप्तसु	अष्टासु-अष्टसु	नवसु	दशसु
११ एकादश		२७ सप्तविंशतिः		४२ द्विचत्वारिंशत्	
१२ द्वादश		२८ अष्टाविंशतिः		४३ त्रिचत्वारिंशत्	
१३ त्रयोदश		२९ नवविंशतिः		४४ त्रयश्चत्वारिंशत्	
१४ चतुर्दश		एकादशविंशत्		४५ चतुश्चत्वारिंशत्	
१५ पञ्चदश		३० त्रिंशत्		४६ पञ्चचत्वारिंशत्	
१६ षोडश		३१ एकत्रिंशत्		४७ षट्चत्वारिंशत्	
१७ सप्तदश		३२ द्वात्रिंशत्		४८ सप्तचत्वारिंशत्	
१८ अष्टादश		३३ त्रयस्त्रिंशत्		४९ अष्टचत्वारिंशत्	
१९ नवदश		३४ चतुस्त्रिंशत्		अष्टाचत्वारिंशत्	
एकादशविंशतिः		३५ पञ्चत्रिंशत्			
२० विंशतिः		३६ षट्त्रिंशत्			
२१ एकविंशतिः		३७ सप्तत्रिंशत्		४९ नवचत्वारिंशत्	
२२ द्वाविंशतिः		३८ अष्टात्रिंशत्		एकादशचत्वारिंशत्	
२३ त्रयोविंशतिः		३९ नवत्रिंशत्		५० पञ्चाशत्	
२४ चतुर्विंशतिः		एकादशचत्वारिंशत्		५१ एकपञ्चाशत्	
२५ पञ्चविंशतिः		४० चत्वारिंशत्		५२ द्विपञ्चाशत्	
२६ षड्विंशतिः		४१ एकचत्वारिंशत्		द्वापञ्चाशत्	



५३ त्रिपञ्चाशत् त्रयःपञ्चाशत्	७० सप्ततिः	८८ अष्टाशीतिः
५४ चतुःपञ्चाशत्	७१ एकसप्ततिः	८९ नवाशीतिः
५५ पञ्चपञ्चाशत्	७२ द्विसप्ततिः द्वासप्ततिः	९० नवतिः एकाननवतिः
५६ षट्पञ्चाशत्	७३ त्रिसप्ततिः	९१ नवतिः
५७ सप्तपञ्चाशत्	७४ त्रयःसप्ततिः	९२ एकनवतिः
५८ अष्टापञ्चाशत् अष्टपञ्चाशत्	७५ चतुःसप्ततिः	९३ द्विनवतिः, द्वानवतिः
५९ नवपञ्चाशत् एकोनषष्टिः	७६ पञ्चसप्ततिः	९४ त्रिनवतिः त्रयःनवतिः
६० षष्टिः	७७ षट्सप्ततिः	९५ चतुर्नवतिः
६१ एकषष्टिः	७८ सप्तसप्ततिः	९६ पञ्चनवतिः
६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः	७९ अष्टसप्ततिः अष्टासप्ततिः	९७ षण्णवतिः सप्तनवतिः
६३ त्रिषष्टिः त्रयःषष्टिः	८० नवसप्ततिः एकोनाशीतिः	९८ अष्टनवतिः अष्टानवतिः
६४ चतुःषष्टिः	८१ अशीतिः	९९ नवनवतिः
६५ पञ्चषष्टिः	८२ एकाशीतिः	१०० शतम् (एकं शतम्)
६६ षट्षष्टिः	८३ द्व्यशीतिः	१०१ एकशतम्
६७ सप्तषष्टिः	८४ चतुरशीतिः	१०२ द्विशतम्
६८ अष्टषष्टिः अष्टापष्टिः	८५ पञ्चाशीतिः	१०३ द्वादशशतम्
६९ नवषष्टिः एकोनसप्ततिः	८६ षडशीतिः	१०४ चत्वारिंशच्छतम्
	८७ सप्ताशीतिः	१०५ नवनवतिशतम्

२००=शते (द्विशती, शतद्वयम् शतद्वयी) । ३००=त्रिशती (शतत्रयम् शतत्रयी) ।

४००=चतुःशती (शतचतुष्टयम् शतचतुष्टयी) । ५००=पञ्चशती (शतपञ्चकम्) ।

६००=षट्शती (शतषट्कम्) । ७००=सप्तशती (शतसप्तकम्) । ८००=अष्टशती (शताष्टकम्) ।

९००=नवशती (शतनवकम्) । १०००=सहस्रम् । १००००=

अयुतम् । १०००००=लक्षम् । १००००००=नियुतम् । १०००००००=कोटिः ।

अरब=अर्वम्, खरब=खर्वम् ।

एकोनविंशति से लेकर नवनवति तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिङ्ग हैं । शत, सहस्रम्, अयुतं, लक्षं, नियुतम् आदि शब्द नित्य एकवचनान्त नपुंसक ह ।

## २—क्रमवाचकविशेषण

संस्कृत

पुं० स्त्री० न०  
प्रथमः—मा—मम् (आद्यः,  
आदिमः)

हिन्दी

पुं० न० स्त्री०

पहला—ली

दूसरा—री

तीसरा—री

चौथा—थी

पाँचवाँ—वीं

छठा—ठी

सातवाँ—वीं

आठवाँ—वीं

नीवाँ—वीं

दसवाँ—वीं

ग्यारहवाँ—वीं

बारहवाँ—वीं

तेरहवाँ—वीं

चौदहवाँ—वीं

पन्द्रहवाँ—वीं

सोलहवाँ—वीं

संस्कृत

पुं० स्त्री० न०

सप्तदशः—शी—शम्

अष्टादशः—शी—शम्

एकोनविंशतितमः—मी—मम्

विंशतितमः—मी—मम् (विंशः)

एकविंशतितमः—मी—मम्

(एकविंशः)

द्वाविंशतितमः—मी—मम्

त्रयोविंशतितमः—मी—मम्

चतुर्विंशतितमः—मी—मम्

पञ्चविंशतितमः—मी—मम्

षड्विंशतितमः—मी—मम्

सप्तविंशतितमः—मी—मम्

अष्टाविंशतितमः—मी—मम्

नवविंशतितमः—मी—मम्

एकोनविंशतितमः—मी—मम्

विंशतितमः—मी—मम्

हिन्दी

पुं० न० स्त्री०

सत्तरहवाँ—वीं

अठारहवाँ—वीं

उन्तीसवाँ—वीं

बीसवाँ—वीं

इक्कीसवाँ—वीं

बाईसवाँ—वीं

तेईसवाँ—वीं

चैं बीसवाँ—वीं

पच्चीसवाँ—वीं

छबीसवाँ—वीं

सत्ताईसवाँ—वीं

अठाईसवाँ—वीं

उनतीसवाँ—वीं

,,

,,

तीसवाँ—वीं

चत्वारिंशः, चत्वारिंशतितमः (४० वाँ) पञ्चाशत्तमः (५०वाँ) षष्टितमः (६०वाँ)  
सप्ततितमः (७० वाँ) अशीतितमः (८०वाँ) नवतितमः (९०वाँ) शततमः (१००वाँ)  
सहस्रतमः (१०००वाँ) ।

## हिन्दी में अनुवाद करोः—

१—अस्माकं पाठशालायां त्रयः अध्यापकाः अध्यापयन्ति । २—इदानीं मम पाश्वे  
त्रिशत् रूप्यकाणि सन्ति ? ३—कति पुरुषाः स्नानार्थं नदीं गमिष्यन्ति ? ४—एकादश्या  
तिथौ लोकाः उपवासं कुर्वन्ति । ५—अस्यां रथ्यायां मम गृहं त्रयोविंशतितममस्ति ।  
६—अधुना त्रिशत्तमः छात्रः अत्रागच्छतु । ७—अस्यां नामावल्यां सुशीला एकोनविं-  
शतितमा । ८—अस्माकं पाठशालायाः अयं द्वितीयः वाषिकोत्सवः ।

## संस्कृत में अनुवाद करोः—

१—कल मेरे डाक द्वारा ५० रुपये आवेंगे । २—लाहौर में दिवानचन्द को २०  
रुपये इनाम मिले । ३—हमारे स्कूल में ८५ विद्यार्थी पढ़ते हैं । ४—मित्र, क्या  
आपके पाँच सहोदर भाई हैं ? ५—इस कक्षा में प्रथम छात्र कौन है ? ६—शायद  
वह यहाँ पाँचवें दिन आयगा । ७—प्यारेलाल अपनी जमान में दूसरा रहा है । ८—  
मनुस्मृति के अनुसार ब्राह्मण का आठवें, क्षत्रिय का ग्यारहवाँ, और वैश्य का बारहवाँ  
वर्ष यज्ञोपवीत संस्कार होना चाहिए ।

### ३—आवृत्तिवाचकविशेषण

‘द्विगुना’ ‘त्रिगुना’ आदि आवृत्तिसूचक शब्दों के अनुवाद के लिए संस्कृत में संख्य शब्दों के आगे ‘गुण’ या ‘गुणिन’ शब्दों को जोड़कर अनुवाद लिया जाता है। परन्तु आवृत्ति वाचक शब्दों पर ‘आवृत्त’ या ‘आवृत्ति’ भी जोड़ दिया जाता है। जैसे—

(१) सः व्यापारे द्विगुणं धनं लेने (उसे व्यापार में दूता धन मिला)  
(२) अस्थ भवनस्थ उच्चना नस्मात् त्रिगुणा (इस भवन की ऊँचाई उससे त्रिगुनी है)।

(३) चत्वारिंशद्गुणाः अधिकाः बालका जाताः (चालीसगुने ज्यादा लड़के हो गए)

(४) अस्थ मार्गस्य दीर्घना शतगुणा (इस रास्ते की लम्बाई सौगुनी है)

(५) स धनं नात्र त्वत् सहस्रगुणं, लक्षगुणं कोटिगुणं वा अधिकम् अर्जय परं कर्तिम् (वह तुझ से हजारगुना, लाखगुना या करोड़गुना धन कमा ले पयका नहीं कमा सकता)।

(६) ब्रह्मचारिणः त्रिगुणां मौञ्जी मेखलां धारयन्ति (ब्रह्मचारी तिहरी मौञ्जी की तड़ागी बाँधते हैं)।

(७) इयन् अजा द्विगुणया (द्विरावृत्तया) रज्ज्वा बद्धा (यह बकरी बुहरी रस्से से बंधी है)।

(८) मा बाला त्रिरावृत्तं (त्रिरावृत्तितं, त्रिगुणं, त्रिगुणितं वा) दाम धारयति (वह लड़की तिहरी माला पहने है)।

### ४—समुदायबोधक विशेषण

जहाँ पर ‘दोनों’, ‘तीनों’, ‘चारों’, ‘तीनों’, ‘पचासों’ आदि समुदायवाचक शब्द होते उनका अनुवाद संस्कृत में संख्यावाचक शब्द के आगे ‘अपि’ जोड़ने से किया जाता है। जैसे—

(१) किं द्वावपि बाली गती (क्या दोनों लड़के गए ?)

(२) अस्मिन् प्रकोष्ठे पञ्चत्रिंशदपि बालकाः पठनाय शक्नुवन्ति (इस कमरे में पैंतीस बालक पढ़ सकते हैं)।

(३) पञ्चाशदपि सैनिकाः युद्धे हताः (पचासों सिपाही युद्ध में मारे गए)।

(४) किं त्वया षोडशापि आणकाः व्ययिताः (क्या तूने सोलहों आने खर्च कर दिए)।

(५) अष्टावपि चोराः पलायिताः (आठों चोर भाग गये)।

### ५—विभागबोधकविशेषण

‘हर एक’ ‘सत्र’ आदि शब्दों का अनुवाद संस्कृत में ‘सर्व’ या ‘सकल’ आदि शब्दों द्वारा किया जाता है। जैसे—

अस्याः कक्षायाः सर्वे बालाः पटवः सन्ति (इस दर्जे के सब लड़के होशियार हैं)

(२) अस्याः वाटिकायाः सर्वाणि आम्नाणि मिष्टानि सन्ति (इस बाग के सब आम मीठे हैं) ।

(३) सर्वे ब्राह्मणाः आहूयन्ताम् (हर एक ब्राह्मण को बुलाओ) ।

(४) प्रतिबालकं (सर्वेभ्यः बालेभ्यः) पारितोषिकं देहि (हर लड़के को इनाम दो) ।

(५) प्रतिदिनं (दिने दिने) पठितुं पाठशालामागच्छ (हर रोज पढ़ने के लिए स्कूल आया करो) ।

(६) प्रतिब्राह्मणं पञ्चरूप्यकाणि देहि }  
सर्वेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः पञ्चरूप्यकाणि देहि } (हर एक ब्राह्मण को पांच रुपये दो)

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

एक शब्द द्वारा—एकः संन्यासी न्यवसत् ।

एका नदी आसीत् ।

एकस्मिन् वने एकः सिंहः न्यवसत् ।

किम् चित् शब्दों द्वारा—कश्चिन् संन्यासी न्यवसत् ।

काचित् नदी आसीत् ।

कस्मिंश्चिद् वने एकः सिंहः न्यवसत् ।

एक और अपर शब्दों द्वारा—एकः उत्तीर्णः अपरोऽनुत्तीर्णः ।

एके मृताः अपरे पलायिताः ।

एक और अन्य शब्दों द्वारा—एकः हसति अन्यो रोदति ।

परस्पर, अन्योन्य शब्दों द्वारा—

दुष्टाः बालाः परस्परं (अन्योन्यं) कलहायन्ते ।

असज्जनाः परस्परं (अन्योन्यम्, इतरेतरम्) गालीः ददति ।

सर्व, समस्त आदि शब्दों के द्वारा—सर्वे बालाः अस्यां श्रेण्यामुत्तीर्णाः ।

सर्वाणि पुष्पाणि व्यकसन् ।

सर्वः स्वार्थ समीहते ।

बहु, प्रभूत आदि शब्दों के द्वारा—

बहवः (बह्वचः) बालिकाः सीवनं शिथन्ते ।

एतत्कार्यसाधनाय बहवः उपायाः सन्ति ॥

देशे अनेकशः रोगाः विद्यन्ते ।

कतिपय या किम् चित् (चन) शब्दों द्वारा—

कतिपयाः (कतिचित्) छात्राः उत्तीर्णाः ।

कतिपयानि (कानिचन) पुष्पाणि विकसितानि ।

कतिपयाः (काश्चन) स्त्रियः विदुष्यः ।

परिमाणवाचक विशेषण

तौल (तुल्यमान) के शब्द—

रक्ति का, गुञ्जा = रत्नो

मापकः = माशा

तालकः = तौला

पट्टकः = छटाक

पादः = पाव

मूल्यवाचक शब्द

वराटकः, वराटिका = कोडो

पादिका = पाई

पणः (पणकः) = पैसा

आणः (आणकः) = आना

द्वयाणी (द्वयाणकी) = दुभली

चतुराणी (चतुराणकी) = चबली

अष्टाणी (अष्टाणकी) = अठली

रूप्यकम् (रूप्यकम्) = रुपया

निष्कः (दीनारः) = सोन की मोहर

माप—

अङ्गुलम् = अंगुल

वितस्तिः = बालिस्त

पादः = फुट

हस्तः = हाथ

समयबोधक—

पलम् = पल

क्षणः = छिन

प्रहरः (यामः) = पहर

विकला = सेकण्ड

कल = मिनट

घण्टा (होरा) = घंटा

अहोरात्रः = दिन रात

सप्ताहः = हफ्ता

पक्षः = पाख

मासः = महीना

वर्षम् (वत्सरः, शब्दः, शरत्) = बरस

सेर, मन (मण), गज, मील आदि के लिए संस्कृत में शब्द नहीं मिलते, इसलिए अनुवाद में इन्हीं का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

१—चतुर्मणपरिमिताः ब्रीहयः।

२—वार्जरस्य त्रीन् सेरान् आनय।

३—सप्तगजपरिमितं वस्त्रं दीनाय देहि।

४—शतमीलपरिमितोऽयं पन्थाः।

५—सुवर्णस्य चत्वारः तालकाः अलं भूषणाय।

६—सरः तण्डुलः (तण्डुलाः)।

७—चत्वारः माषकाः सुवर्णम्।

८—रूप्यस्य चतुर्दश पट्टङ्काः धृतम्।

९—त्रीणि औंसानि टिंवर-आषाढानम्।

संस्कृत बनाओ :—

१—उस मकान की ऊंचाई उस मकान से चौगुनी है। २—यह रास्ता उस रास्ते से दोगुना है। ३—रोहरी रस्सी से पुलिस के सिपाहियों (राजपुर्खों) ने चोर को बाँधा है। ४—आठवें दर्जे में इस वर्ष कौन लड़ता पहला रत्ना? ५—मैंने गणित के पर्व में सी में से साठ नम्बर पाये। ६—इजरायेली मन गेहूँ भारत से विदेश को जाना है। ७—ताजमहल के बनाने में करोड़ों रुपए खर्च हुए। ८—वह तो उसका सीवाँ हिस्सा भी नहीं है। ९—कुछ लोग स्वभाव से आलसी होते



हैं। १०—विद्यालय यहां से पाँच मील है। ११—बीमार के लिए तीन औंस दवाई मील लो। १२—मैं रात को दस बजे सोऊँगा। १३—इस बर्तन में पाँच सेर घी आ सकता है। १४—निरीक्षक ने हुक्म दिया कि एक एक दर्जे में ३५ से ज्यादा लड़के न बैठें। १५—आजकल रुपए के कितने सेर चावल मिलते हैं?

### गुणवाचकविशेषण

गुण के वाचक शब्द को विशेषण कहते हैं। गुण शब्द से शुभ या अशुभ दोनों प्रकार के गुणों का ग्रहण है। हिन्दी भाषा में विशेषण का लिङ्ग कहीं बदलता है और कहीं नहीं बदलता, यथा—सीता बुद्धिमती है। यह सरला बालिका है। बन्दर की प्रकृति चञ्चल है। तेरी बुद्धि प्रखर है। किन्तु संस्कृत में यह नियम है—

यल्लिङ्गं यद्वचनं या च विभक्तिविशेष्यस्य ।

तल्लिङ्गं तद्वचनं सैव विभक्तिविशेषणस्यापि ॥

जो लिङ्ग, जो वचन और जो विभक्ति विशेष्य की होती है, वही लिङ्ग, वही वचन और वहि विभक्ति विशेषण की भी होती है।

शब्द	अर्थ	पुं०	स्त्री०	न०
रक्त	(लाल)	रक्तः	रक्ता	रक्तम्
पीत	(पीला)	पीतः	पीता	पीतम्
हरित	(हरा)	हरितः	हरिता	हरितम्
श्वेत	(सफेद)	श्वेतः	श्वेता	श्वेतम्
कृष्ण	(काला)	कृष्णः	कृष्णा	कृष्णम्
मधुर	(मीठा)	मधुरः	मधुरा	मधुरम्
कटु	(फड़्फड़ा)	कटुः	कट्वी	कटुम्
अम्ल	(खट्टा)	अम्लः	अम्ला	अम्लम्
शीतल	(ठंडा)	शीतलः	शीतला	शीतलम्
उष्ण	(गर्म)	उष्णः	उष्णा	उष्णम्
विशाल	(चोड़ा)	विशालः	विशाला	विशालम्
शोभन	(सुन्दर)	शोभनः	शोभना	शोभनम्
स्थूल	(मोटा)	स्थूलः	स्थूला	स्थूलम्
कृश	(दुबला)	कृशः	कृशा	कृशम्
कोमल	(कोमल)	कोमलः	कोमला	कोमलम्
मनोहर	(सुन्दर)	मनोहरः	मनोहरा	मनोहरम्
बुद्धिमत्	(होशियार)	बुद्धिमान्	बुद्धिमती	बुद्धिमत्
लघु	(छोटा)	लघुः	लघ्वी	लघम्
साधु	(अच्छा)	साधुः	साध्वी	साधुम्

(दोष में) प्रथमा

पुं० काश्चिद् दुष्टः नरः, कौचिद् दुष्टो नरो, केचिद् दुष्टाः नराः ।

स्त्री० काश्चिद् दुष्टा, केचिद् दुष्टे स्त्रियौ, काश्चिद् दुष्टाः स्त्रियः ।

न० किञ्चिद् दुष्टं जलम्, केचिद् दुष्टे जले, कानिचिद् दुष्टानि जलानि ।

(गुण में) प्रथमा

पुं० अयं शोभनः नरः । इमी शोभनौ नरौ । इमे शोभनाः नराः ।  
स्त्री० इयं शोभना स्त्री । इमे शोभने स्त्रियौ । इमाः शोभनाः स्त्रियः ।  
न० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभने पुष्पे, इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

द्वितीया

पुं० इमं शोभनं नरम् । इमी शोभनी नरौ । इमान् शोभनान् नरान् ।  
स्त्री० इमां शोभनां स्त्रियम् । इमे शोभने स्त्रियौ । इमाः शोभनाः स्त्रीः ।  
न० इदं शोभनं पुष्पम् । इमे शोभने पुष्पे । इमानि शोभनानि पुष्पाणि ।

तृतीया

पुं० अनेन शोभनेन नरेण । आभ्यां शोभनाभ्यां नराभ्याम् । एभिः शोभनैः नरैः ।  
स्त्री० अनया शोभनया स्त्रिया । आभ्यां शोभनाभ्यां स्त्रीभ्याम् । आभिः शोभनाभिः स्त्रीभिः ।

न० अनेन शोभनेन पुष्पे । आभ्यां शोभनाभ्यां पुष्पाभ्याम् । एभिः शोभनैः पुष्पैः ।  
इसी प्रकार शेष विभक्तियाँ समझनी चाहिए ।

संस्कृत वनाश्रोः—

१—हमारे बगीचे के मोठे फल हैं । २—अच्छे बालक परिश्रम करते हैं । ३—  
ईश्वर की कुदरत क्या ही विचित्र है । ४—किसी निर्धन जन को वस्त्र दा । ५—  
खट्टी छाँछ छोड़ कर गर्म दूध पीओ । ६—ग्यारेलाल की साइकिल अच्छी है ।  
७—इस वृक्ष के खट्टे और मोठे फल हैं । ८—लाल घाँड़े दौड़ रहे हैं । ९—यह चंचल-  
नयन बालिका है । १०—तेरा हृदय कोमल नहीं है । ११—यह तालाब अतिमुन्दर  
है । १२—तपस्वी ब्राह्मणों के लिए ऐसा न कहो । १३—किसी पेड़ पर एक बानर  
और एक कबूतर रहने थे । १४—किसी जंगल की एक कन्दरा में एक सिंह रहता  
था । १५—नोले जलवाली यमुना के किनारे श्रीकृष्ण ने बिहार किया ।

विशेषणों की तुलना

वाक्य में विशेषणों का प्रयोग तीन प्रकार से होता है या तो विशेषण सामान्य होता है, या तुलनात्मक या अतिशयवाचक । जब विशेषण साधारण रीति से उत्कर्ष या अपकर्ष का बोधक हो तो वह सामान्य विशेषण कहलाता है । १ सामान्य विशेषण जैसे—

१—अयं बालकः पटुः (उत्कर्ष)

२—अयं नरः दुष्टः (अपकर्ष)

२—तुलनात्मक विशेषण—जब दो की तुलना करके उनमें से एक की अधिकता या न्यूनता, दिखाई जाती है तो विशेषण 'तुलनात्मक' कहलाता है और विशेषण के आगे 'तर' या 'इयम्' प्रत्यय लगाया जाता है । जैसे—

१ माया २ तत्कम् ३ द्विचक्रिका ।

४ तड़ागः ५ कपोतः ।

१—गोपालः श्यामात् पटुतरः (उत्कर्ष)

२—नरः देवात् निकृष्टतरः (अपकर्ष)

३—आचार्यः पितुः महीयान् (महतरः) (उत्कर्ष)

३—अतिशयवाचक विशेषण—जब शी से अधिक पदार्थों का तुलना करके उन सबसे

एक को अधिक या न्यून बताया जाता है तो विशेषण 'अतिशयवाचक' कहलाता है और विशेषण के आगे 'तम' या 'इष्ट' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—

१—हिमालयः सर्वेषां पर्वतानां (सर्वेषु पर्वतेषु) उन्नततमः (उत्कर्ष)

२—वदरोक्तं सर्वत्र फलानां (सर्वेषु फलेषु) निकृष्टतमम् (अपकर्ष)

३—श्यामः सर्वत्र भ्रातृणां (सर्वेषु भ्रातृषु) कनिष्ठः (अपकर्ष)

सामान्य विशेषण

तुलनात्मक

अतिशयवाचक

महान्

महतरः

महत्तमः

शुक्लः

शुक्लतरः

शुक्लतमः

साधुः

साधुतरः

साधुतमः

धीरः

धीरतरः

धीरतमः

पटुः

पटुतरः पटीयान्

पटुतमः, पटिष्ठः

प्रियः

प्रियतरः, प्रेयान्

प्रियतमः, प्रेष्ठः

गुरुः

गुरुतरः, गरीयान्

गुरुतमः, गरिष्ठः

लघुः

लघुतरः, लघीयान्

लघुतमः, लघिष्ठः

दीर्घः

दीर्घतरः, द्राघीयान्

दीर्घतमः, द्राधिष्ठः

वृद्धः

वर्णीयान्, ज्यायान्

वर्णिष्ठः, ज्येष्ठः

अल्पः

अल्पीयान्, कनीयान्

अलिष्ठः, कनिष्ठः

बहुः

बहुतरः, भूयान्

बहुतमः, भूयिष्ठः

दृढः

दृढतरः, द्रढीयान्

दृढतमः, द्रढिष्ठः

मृदुः

मृदुतरः, अरीयान्

मृदुतमः, अरिष्ठः

क्रूरः

क्रूरतरः, क्रुरीयान्

क्रूरतमः, क्रुरिष्ठः

प्रशस्यः

श्रेयान्, ज्यायान्

श्रेष्ठः, ज्येष्ठः

युवा

कनीयान् ; यरीयान्

कनिष्ठः, यविष्ठः

उरुः

उरुतरः, वरीयान्

उरुतमः, वरिष्ठः

स्थूलः

स्थूलतरः, स्थूरीयान्

स्थूलतमः, स्थूविष्ठः

दूरः

दूरतरः, दूरीयान्

दूरतमः, दूविष्ठः

क्षुद्रः

क्षुद्रतरः, क्षोरीयान्

क्षुद्रतमः, क्षोदिष्ठः

क्षिप्रः

क्षपीयान्

क्षिपिष्ठः

बहुलः

बहुीयान्

बहिष्ठः

स्थिरः

स्थेयान्

स्थेष्ठः

पृथुः

प्रथीयान्

पथिष्ठः

पापी

पापीयान्

पापिष्ठः

हृष्यः

हृपीयान्

हृसिष्ठः

ब्राह्मः

सावीयान्

साविष्ठः

बलवान्

बलीयान्

बलिष्ठः

अन्तिकः

नेदीयान्

नेदिष्ठः

अतिशय के अर्थ में क्रियाओं और अव्ययों के आगे भी 'तर' और 'तन' आम् के साथ (तराम्, तमाम्) लगाये जाते हैं। जैसे—

क्रिया से—सुशीला हसति तराम् (सुशीला जोर से हँसती है)।

रमेशः हसति तमाम् (रमेश अत्यन्त हँसता है)।

अव्यय से—रमा उच्चैस्तरा हसति (रमा अधिक हँसती है)।

गोपालः उच्चैस्तमां हसति (गोपाल बहुत ऊँचे हँसता है)।

रमेशः उच्चैस्तमाम् आकाशति पर न कोऽपि शृणोति

(रमेश ऊँचे चिल्ला रहा है पर कोई नहीं सुनता)।

### अभ्यास

१—राम और गोपाल में गोपाल लम्बा है। २—कालिदास भारत में अन्य कवियों में श्रेष्ठ है और शेक्सपीयर इंग्लिश साहित्य में सर्वोत्तम नाटककार और कवि है। ३—तुम दोनों में कौन बड़ा है? ४—वह न ऊँचे मत हँसो। ५—मोहन और गोपाल में कौन अधिक होशियार है? ६—दिल्ली से आगरा की अपेक्षा इलाहाबाद दूर है। ७—हिमालय विन्ध्याचल से ऊँचा है। ८—पंसार भर में कौन पहाड़ सब पहाड़ों में ऊँचा है? ९—मेरी पुस्तक सब पुस्तकों से अच्छा है। १०—गंगा नदी पंसार भर की नदियों में पवित्र है। ११—वेद की पुस्तकों अन्य पुस्तकों में पवित्र हैं। १२—मनोरमा सब लकड़ियों में सुन्दर है। १३—राम अपने अन्य सब भाईयों में बड़े थे। १४—सहदेव सब पांडवों में छोटा भाई था। १५—बुद्ध भारी से भारी वाज़ उठा सकता है। १६—मैं बहुत ऊँचे चिल्ला रहा हूँ पर कोई नहीं सुनता। १७—पचास मीठे मीठे आम मेरे लिए भेज देना। १८—हाथी सब जानवरों में मोटा है। १९—अशोक अन्य सब आर्य राजाओं में बड़ा था। २०—इन्दुपती का शरीर फूल से भी कोमल था।

### सन्नन्त धातुर्

इच्छा के अर्थ में धातु के आगे 'सन्' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—पठितुम् इच्छति—पिपठिषति। यह 'सन्' प्रत्यय अपनी इच्छा पर ही होता है, दूसरे की इच्छा पर नहीं। जैसे—गोपालः रागस्य पठनम् इच्छति। यहाँ पर सन् प्रत्यय नहीं होता। सन्नन्त धातु के आगे 'आ' प्रत्यय लगाने से विशेष्य बन जाता है। जैसे—

शास्त्रस्य जिज्ञासा, जलस्य पिपामा; 'उ' प्रत्यय लगाने से विशेष्य बन जाता है। जैसे—शास्त्रं जिज्ञासुः, जलं पिपासुः। सन्नन्त धातु के लट्, लोट् आदि परस्मैपद लकारों में पठति ही तरह और आत्मनेपद में जायने की तरह रूपा होते हैं।

(श्रु) श्रुष्यते=सुनने की इच्छा करता है | (वि+जि) विजिगीषते=जागने की इच्छा करना है

(श्रु) श्रुष्यति=

(जा) जिज्ञासते=जाने की

(ग्रह्) ग्रह्यति=ग्रहण करने की

(दा) दत्ति=देने की

(लभ्) लिप्सते=पाने की

(ब्रू, वच्) ब्रूयति=बोलने की

(हर्ह) हर्हयति=रोने की इच्छा करता है

(गम्) जिगीषति=जाने की

(ग्रच्छ्) पिपृच्छति=पूछने की

(पच्) पिप्यति=पकाने की

(कृ) विहीयति=हरने की

(हन्) जिघांसति=मारने की इच्छा करता है	(वि + धा) विवित्सति=करने की इच्छा करता है
(दृश्) दिदृक्षते=देखने की	(दह्) दिधक्षति=जलाने की
(की) विकीषति=खरीदने की	(स्था) तिष्ठासति=ठहरने की
(वृश्) वृभृत्सते=जानने की	(भृज्) वृभृक्षते=खाने की
(लिख्) लिलेखिषति=लिखने की इच्छा करता है	(जीव्) जिजृषिषति=जीने की
(अधि + इ) अधिजिघांसते=अध्ययन की इच्छा करता है	(शी) शिशयिषते=माने की
	(स्वप्) सुषुप्सति=सोने की
	(मृ) मुमूर्षति=मरने की

### संस्कृत वनाश्रः—

१—कोन मनुष्य मरने की इच्छा करता है । २—में पत्र लिखने की इच्छा करता हूँ । ३—वह पढ़ने की इच्छा नहीं रखता है, उसके पिता ने उसे व्यर्थ ही स्कूल भेजा है । ४—सभी प्राणी जीने की इच्छा रखते हैं, मरने की इच्छा कोन रखता है ? ५—अपराधी न्यायालय में ठहरने की इच्छा कैसे रख सकता है ? ६—कृष्ण कंस को मारने की इच्छा रखता है । ७—बालिकाएँ नाचने की इच्छा रखती हैं । ८—भक्त कथा सुनने की इच्छा रखता है । ९—जर्मन नेता हिटलर विश्व को जीतने की इच्छा रखता था । १०—में वेदों को सुनने की इच्छा रखता हूँ ।

### यङन्त धातुएँ

फिर-फिर या अतिशय अर्थ को 'ि' धातु के लिए धातु के आगे 'यङ्' प्रत्यय लगाया जाता है । यथा—पुनः पुनः पिबति पेयीयते । यङन्त धातुओं के लट्, लोट् आदि लकारों में 'जायते' की भांति रूप होते हैं ।

(तप्) तप्तय्यते=अत्यन्त तपता है	(जि) जेजीयते=बार बार जीतता है
(घ्रा) जेघ्रीयते=बार बार सूँघता है	(दग्) दन्दश्यते=अत्यन्त दंशता है
(दह्) दन्दह्यते=अत्यन्त जलाता है	(गं) जेगीयते=बार बार गाता है
(पच्) पापच्यते=बार बार पकाता है	(स्म) सास्मर्यते= „ याद करता है
(नी) नेनीयते=बार बार ले जाता है	(शी) शाशय्यते= „ सोता है
(कृ) चेकीयते=बार बार करता है	(चल्) चञ्चल्यते=इधर उधर चलता है
(हृद्) रामह्यते=बार बार रोना है	(कृप्) चरोकृष्यते=बार बार खेती करता है
(नत्) नरोन्यते=बार बार नाचता है	(वृश्) वरीवध्यते=बार बार बढ़ता है
(दृश्) दरोदृश्यते=बार बार देखना है	(हन्) जह्वन्यते=फिर फिर मारता है
(दा) देदीयते=बार बार देता है	(जप्) जञ्जप्यते=बार बार जपता है
(सिच्) सेसिच्यते=बार बार सींचता है	(गम्) जङ्गम्यते=ढेढ़ा भेड़ा चलता है

### अभ्यास

१—वह हरिश्चन्द्र की तरह बार-बार दान देता है । २—बन जाते समय सीता बार-बार रोती है । ३—कृष्ण बार बार हल जीतता है । ४—वह मुन्दरी बार-



बार नाचती है और लोग बार-बार उसे देखते हैं । ५--मुझे अपने घर की बार बार याद आती है । ६--बिच्छू (वृश्चिक) अत्यन्त काटता है । ७--शाकानल उसे बार-बार जलाती है । ८--मन्दिर में भक्त बार-बार ईश्वर गान गाता है और मौनी बार-बार माला जपता है । ९--फूल को तू बार-बार क्यों सूँघता है । १०--उस वीर राजा ने शत्रु को बार-बार जीता और क्षमा कर दिया ।

### प्रेरणार्थक क्रियाएँ

जब किसी धातु में प्रेरणा का अर्थ लाना होता है तो धातु के साथ 'णिच्' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है । जिस प्रकार हिन्दी भाषा में 'पढ़ना' से 'पढ़ाना' 'करना' से 'कराना' 'सोना' से 'सुलाना' प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं उसी प्रकार संस्कृत भाषा में भी 'णिच्' प्रत्यय जाड़कर 'पठति' से 'पाठयति', 'करोति' से 'कारयति' 'शेते' से 'शाययति' आदि प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनाई जाती हैं । मूल धातु में जो कर्ता रहता है वह प्रेरणार्थक धातु में स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से कार्य कराता है । और 'णिच्' प्रत्यय जोड़ने से कभी कभी अकर्मक धातुएँ भी सकर्मक हो जाती हैं । जैसे—(अणिजन्त) बालः शेते, (णिजन्त) माता बालं शाययति ।

णिजन्त धातुओं के रूप चुरादिगणीय धातुओं के समान होते हैं । धातु और निष्ठ प्रत्ययों के बीच में 'अय' जोड़ दिया जाता है । णिजन्त धातुएँ प्रायः उभयपदी होती हैं । यथा—लट्—पाठयति, पाठयते, लङ्—अपाठयत्—त, लृट्—पाठयिष्यति—ते, लोट्—पाठयतु—ताम् ।

अणिजन्त क्रिया का कर्ता णिजन्त क्रिया के साथ प्रायः तृतीया विभक्ति में होता है । यथा—

- १—देवदत्तः दोषं त्यजति, गुरुः देवदत्तेन दोषं त्याजयति ।
- २—रामः मारीचं हन्ति, सीता रामेण मारीचं घातयति ।
- ३—नृपः धनं ददाति, मन्त्री नृपेण धनं दापयति ।
- ४—पिता क्रीडनकं क्रीणाति, बालः पित्रा क्रीडनकं क्रीपयति ।
- ५—सुमन्त्रः रामं वनं नयति, राजा सुमन्त्रेण रामं वनं नाययति ।

निम्नलिखित १२ धातुओं के प्रयोग में अणिजन्त क्रिया के कर्ता में द्वितीया विभक्ति होती है और हू तथा कृ के साथ तृतीया अथवा द्विन या विभक्ति होती है । यथा—

- (१) गमन—पाण्डवाः वनं गच्छन्ति—कौरवाः पाण्डवान् वनं गमयन्ति ।
- (२) दर्शन—बालः चन्द्रं पश्यति—माता बालं चन्द्रं दर्शयति ।
- (३) श्रवण—नृपः गानं शृणोति—सा नृपं गानं श्रावयति ।
- (४) प्रवेश—ब्रह्मचारी गृहं प्रविशति—आचार्यः ब्रह्मचारिणं गृहं प्रवेशयति ।
- (५) आरोहण—सः वृक्षम् आरोहति—कृष्णः तं वृक्षम् आरोहयति ।
- (६) तरण—नाविकः गङ्गामुत्तरति—सः नाविकं गङ्गामुत्तारयति ।
- (७) प्रदण—निधनः भोजनं गृह्णाति—भवतः निधनं भोजनं ग्रहयति ।
- (८) प्राप्ति—बालः नगरं प्राप्नोति—पिता बालं नगरं प्रापयति ।
- (९) ज्ञान—सः शास्त्रं जानाति—गुरुः तं शास्त्रं ज्ञापयति ।

- (१०) 'पठ्' आदि अर्थों वाली—छात्रः शास्त्रम् अधीते—गुरुः छात्रं शास्त्रमध्यापयति ।  
 (११) पान्—शिशुः दुग्धं पिबति—माता शिशुं दुग्धं पाययति ।  
 (१२) भोजन—(अद् खाद् भक्ष् को छोड़ कर) कृष्णः अन्नं भुङ्क्ते—यशोदा कृष्णमन्नं भोजयति ।

हृ—भृत्यः भारं ग्रामं हरति—सः भृत्यं (भृत्येन) भारं ग्रामं हारयति ।  
 कृ—सेवकः कार्यं करोति—स्वामी सेवकेन (सेवक) कार्यं कारयति ।

विभिन्न अर्थों में—

- { सिंहः शिशुं भीषयते (शेर बच्चे को डरता है) ।  
 { यदुः दण्डेन शिशुं भाययति (यदु दण्ड से बच्चे को डराता है) ।  
 { विष्णुः वाणेन मधुं विस्माययति (विष्णु तीर से मधु को विस्मित करता है) ।  
 { सीता जनान् विस्मापयते स्म (सीता लोगों को विस्मित करती थी) ।  
 { व्याधः मृगान् रजयति (शिकारी मृगों को मारता है) ।  
 { तपस्वी तूणेन मृगान् रञ्जयति (तपस्वी तूण से मृग को तृप्त करता है) ।  
 { यदुः खग रञ्जयति (यदु चिड़ियों को मारता है) ।

स्था—स्थापयति	बुध्—बोधयति	ह्री—हंपयति
स्मृ—स्मारयति	ब्रू—वाचयति	ह्व—ह्वययति
घ्रा—घ्रायति	भा—भापयते	हा—हापयति
जन्—जनयति	रम्—रमयति	भू—भावयति
पच्—पाचयति	रह्—रोहयति	
पाल—पालयति	स्ना—स्नापयति	

संस्कृत वनाश्रयो :—

- १—मन्त्री राजा से प्रजा का शासन करवाता है । २—सेठजी ने आज लडको को मिठाई खिलाई । ३—तुमने कल राम को कहाँ भेजा था ? ४—उसने मुझ से गुरु जी का प्रणाम करवाया । ५—मैं ने अपने लडके को चित्र दिखलाया । ६—मारथी घोंडो से रथ चलवाता है । ७—आचार्य अपने विद्याथियों को वेद पढ़ाता है । ८—रामचन्द्र जी ने हनुमान् से राक्षसों को मरवाया । ९—सिंह की गर्जना ने मेरे हृदय को कंपा दिया । १०—गुरुजी ने आज हम से ईश्वर की पूजा करवाई । ११—कल धर्मत्मा हमें रामायण की कथा सुनायेंगे । १२—माता पुत्र को अपने हाथ से पानी पिलाती हैं । १३—तुम मेरे लिए भोजन वब पकवाओगे ? १४—उम धर्मत्मा ने गरीबों को वस्त्र दिलाये । १५—भगवन् ! क्या आप मेरे

१ जल्प् भाव, फिलप्, आलप् और दृश् के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया होती है ।

यथा—'देवो रामं मृत्युं जल्पयति' ।

२ 'अद्' और 'खाद्' के प्रयोज्य कर्ता में भी तृतीया ही होती है । यथा—  
 माता शिशुना मिष्टान्नं आदयति, आदयति वा ।

३ 'नी' और 'वह्' धातु के प्रयोज्य कर्ता में द्वितीया न होकर तृतीया ही होती है । यथा—मृत्यो भारं नयति, वहति वा, (स भृत्येन भारं नाययति वाहयति वा) ।

लिए अपने पिता जी से प्रशंसापत्र लिखवा देंगे ? १६—मैंने पंडित से पूजा करवाई । १७—भक्त ग्रामवासियों का कथा सुनाता है । १८—दुष्ट स्वयं दुःख भोगता है और दूसरों को भा भोगाता है । १९—राजा सिपाहियों से (योधः) दुश्मन का मरवाता है । २०—वे फूल लेकर अपने दोस्तों को सुघाते हैं ।

### कर्मवाच्य और भाववाच्य

संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य । धातुओं के कर्तृवाच्य के रूप दसों गणों के लट् आदि लकारों में पीछे दिखाये जा चुके हैं, सकर्मक धातुओं के रूप कर्मवाच्य में और अकर्मक धातुओं के रूप भाववाच्य में होते हैं । धातु चाहे जिस पद की हो, इन दो वाच्यों के रूप केवल आत्मनेपद में होते हैं । और लट्, लोट्, लृङ् और विधिलिङ् में 'य' का आगम होता है ।

कर्मवाच्य की क्रिया के रूप पुरुष और वचन में कर्म के अनुसार होते हैं । भाववाच्य से क्रिया का केवल होना मात्र दिखाया जाता है । अतएव भाववाच्य सदा प्रथमपुरुष एकवचन में होता है । कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है ।

जैसे—भाववाच्य में—तेन भूयते, ताभ्यां भूयते, तैः भूयते । त्वया भूयते, युवाभ्यां भूयते, युष्माभिः भूयते । मया भूयते, आवाभ्यां भूयते, अस्माभिः भूयते ।

कर्मवाच्य में—तेन बालः दृश्यते, तेन बाली दृश्यते, तेन बालाः दृश्यन्ते । तैः बालः दृश्यते, अस्माभिः बाली दृश्यते ।

### कर्मवाच्य गम् (लट्)

प्रथमपुरुष	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
मध्यम पुरुष	गम्यसे	गम्यथे	गम्यध्वे
उत्तम पुरुष	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे
	लङ्		
प्र० पु०	अगम्यत	अगम्येताम्	अगम्यन्त
म० पु०	अगम्यथाः	अगम्येशाम्	अगम्यध्वम्
उ० पु०	अगम्ये	अगम्यावहि	अगम्यामहि
	लृट्		
प्र० पु०	गमिष्यते	गमिष्येने	गमिष्यन्ते
म० पु०	गमिष्यसे	गमिष्यथे	गमिष्यध्वे
उ० पु०	गमिष्ये	गमिष्यावहे	गमिष्यामहे
	लोट्		
प्र० पु०	गम्यताम्	गम्येताम्	गम्यन्ताम्
म० पु०	गम्यस्व	गम्येथ्वम्	गम्यध्वम्
उ० पु०	गम्ये	गम्यावहे	गम्यामहे

क्रिया दो प्रकार की होती है, एक सकर्मक और दूसरी अकर्मक। जिन क्रियाओं के कर्म हों उन्हें सकर्मक और जिन के कर्म न हों उन्हें अकर्मक कहते हैं। जिन क्रियाओं में व्यापार और फल अलग अलग रहें उन्हें सकर्मक और जिन में व्यापार और फल एक ही में रहें उन्हें अकर्मक कहते हैं। जैसे सकर्मक—'वालः चन्द्र पश्यति' इस वाक्य में 'पश्यति' क्रिया का व्यापार 'वाल' में है और 'पश्यति', क्रिया का फल 'चन्द्र' में। अकर्मक—'शिशुः सोते'। इस वाक्य में सोने का काम और सोना दोनों 'शिशु' में है।

निम्नलिखित दो पद्यों में सकर्मक और अकर्मक क्रियाएँ दी गई हैं:—

दर्शन, पठन, भोजन, गमन भव वन्धनों से मुक्त हो,  
चिन्तन विमोचन के अनन्तर ब्रह्म पूजन युक्त हो,  
इस भाँति ज्ञान-प्राप्ति से जिनके सकर्मक योग हैं,  
'हंस' में वे लौन जग आदर्श योगी लोग हैं ॥  
संसार में होना तथा मरना उमी का वन्ध है,  
जागते, मोते तथा जीते जिसे प्रिय अन्य है,  
स्थिति, वृद्धि, क्षय, भय, दीप्ति, लज्जा है किम रुचिकर नहीं,  
पर 'हंस' की क्रीड़ा अकर्मक वक दिखा सकता कही ?

कर्मवाच्य की कुछ क्रियाएँ

भाववाच्य की कुछ क्रियाएँ

ग्रह—(लेना)—ग्रह्यते  
प्रच्छ—(पूछना)—पृच्छ्यते  
वच्—(कहना)—उच्यते  
पृ—(भरना)—पूर्यते  
पठ—(पढ़ना)—पठ्यते  
श्रु—(सुनना)—श्रूयते  
कथ्—(कहना)—कथ्यते  
पा—(पीना)—पीयते  
नी—(लेजाना)—नीयते

अम्—(होना)—भूयते  
जागृ—(उठना)—जागृत्यते  
शी—(सोना)—शय्यते  
वस्—(रहना)—उष्यते  
मस्ज्—(डूबना)—मज्ज्यते  
स्मृ—(याद करना)—स्मर्यते  
हस्—(हँसना)—हस्यते  
स्था—(ठहरना)—स्थायते  
भी—(डरना)—भीयते

संस्कृत बनाओ (भाव तथा कर्मवाच्य)

१—तु उससे देखा गया। २—ईश्वर से संसार बनाया गया। ३—तुझ से क्यों हँसा जाता है ? ४—मेरी बान मान ली गई। ५—बिल्ली चूहे का पीछा करती है। ६—पण्डित सब से आदर पाते हैं। ७—काम किम से किया जाता है ? ८—मुझ से नहीं ठहरा जाता ९—तुम क्यों हँसते हो ? १०—वह क्या जानता है ? ११—ऐसा सुना जाता है। १२—लोभ से क्रोध पैदा होना है। १३—उससे पुस्तकें क्यों नहीं पढ़ी जाती ? १४—तुमने क्या सुना ? १५—साधू अपने से बड़ा की सेवा करते हैं।

वाच्यपरिवर्तन

कर्तृवाच्य क्रिया यदि सम्भक्त हो तो कर्मवाच्य में, और यदि अकर्मक हो तो भाववाच्य में बदल दी जाती है, तथा कर्म अथवा भाववाच्य की क्रियाएँ कर्तृवाच्य में

बदली जा सकती हैं। जैसे—स ग्रामं गच्छति (कर्तृ०) तेन ग्रामः गम्यते (कर्म०)। स रोदति (कर्तृ०) तेन रुद्यते (भाव०) इसी प्रकार कर्म या भाववाच्य के वाच्य उलटने से कर्तृवाच्य में हो जायेंगे।

वाच्यपरिवर्तन करते समय क्रिया, उसका कर्ता, कर्ता के विशेषण कर्म और कर्म के विशेषण, इन सभी में परिवर्तन होता है। जैसे—सुशील बालः स्वकीयं पाठ पठति (कर्तृ०) सुशीलेन बालेन स्वकीयः पाठः पठ्यते (कर्म०)—(सुशील बालक अपना पाठ पढ़ता है।) इस वाक्य में कर्ता, कर्म, उनके विशेषण और क्रिया में परिवर्तन हुआ है।

वाच्यपरिवर्तन करते समय इन बातों पर ध्यान देना चाहिए—

- १—पहले कर्ता, कर्म और क्रिया ढूँढो।
- २—फिर कर्ता और कर्म के विशेषणों को देखो।
- ३—फिर देखो कि क्रिया किस वाच्य की है।
- ४—क्रिया देख कर वाच्य स्थिर करो।

यथा—कृत्य प्रत्ययान्त (तव्य, अनीय, यत्) की क्रिया कर्तृवाच्य में कभी नहीं होती।

नोट—जहाँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में क्रिया का एक ही प्रकार का रूप होता है—जैसे, 'स ग्रामं गतः' (कर्तृ०) 'तेन ग्रामः गतः' (कर्म०) इत्यादि, वहाँ कर्ता और कर्म को देख कर वाच्य स्थिर करना चाहिए।

५—यदि कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा हो तो समझो कि क्रिया कर्मवाच्य या भाववाच्य की है और यदि कर्ता में प्रथमा और कर्म में द्वितीया देखो तो समझो कि क्रिया कर्तृवाच्य की है।

६—क्रिया जिस काल या जिस लकार की होगी वाच्यान्तर में भी वह उसी काल और उसी लकार की होगी। जैसे—स उक्तवान् (कर्तृ०) तेन उक्तम् (कर्म०)। स गच्छति (कर्तृ०) तेन गम्यते (कर्म०)।

७—कर्ता या कर्म का जो विशेषण होगा उसमें वही विभक्ति और वचन होंगे जो कर्ता और कर्म में होंगे। जैसे—शयानाः भुञ्जते मूर्खाः (कर्तृ०) शयानैः मूर्खैः भुज्यते (मूर्ख सोये सोये खाते हैं) इत्यादि।

### वाच्यान्तररचना

कर्मवाच्य बनाने में प्रथमान्त कर्ता को तृतीयान्त और द्वितीयान्त कर्म को प्रथमान्त कर देना पड़ता है। और कर्तृवाच्य में जो क्रिया कर्ता के अनुसार होती है वह कर्म के अनुसार बना देना पड़ती है। जैसे, अहं सूर्यं पश्यामि (कर्तृ०) मया सूर्यः दृश्यते (कर्म०)—मैं सूर्य को देखता हूँ।

कभी कभी कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य का प्रत्यय द्वारा भी बनाते हैं। जैसे—स चन्द्रम् अपश्यत् (कर्तृ०) तेन चन्द्रः दृष्टः (कर्म०)।

कृत प्रत्ययान्त क्रियापद विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। उनसे कर्ता और कर्म में जो लिङ्ग, वचन और कारक होते हैं वे ही उन में भी होते हैं। जैसे—सा उवाचती, तेन ग्रन्थः पठितः, मया ग्रामो गन्तव्यः, इत्यादि।



कर्तृवाच्य क्तवत् प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य या भाववाच्य में क्त प्रत्ययान्त कर देते हैं। जैसे—रामो वनं गतवान् (कर्तृ०) रामेण वनं गतम् (कर्म०)—राम वन गये। अहं प्रस्थितवान् (कर्तृ०) मया प्रस्थितम् (कर्म०) मैंने यात्रा की। कर्तृवाच्य क्त प्रत्ययान्त क्रिया को कर्मवाच्य, या भाववाच्य बनाने में केवल विभक्ति बदलनी पड़ती है अर्थात् कर्ता में प्रथमा के स्थान पर तृतीया और कर्म में द्वितीया के स्थान पर कर्म के अनुसार प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार होती है। जैसे—अहं काशीं गतः (कर्तृ०)। मया काशीं गता (कर्म०)

### द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

गौणे कर्मणि दुह्यादेः—द्विकर्मक धातु से कर्मवाच्य बनाने में दुह्, याच्, पच्, दण्ड, प्रच्छ, चि, ब्रू, शास्, जि, भूय्, मुष्, धातुओं के गौण कर्म (Indirect object) में प्रथमा विभक्ति होती है और क्रिया उसी कर्म के अनुसार होती है; मुख्य कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे—गोपः गां दुग्धं दोग्धि (कर्तृ०) गोपेन गीः दुग्धं दुह्यते (कर्म०)। छात्रः गुरुं धर्मं पृच्छति (कर्तृ०) छात्रेण गुरुः धर्मं पृच्छ्यते (कर्म०)।

प्रधाने नोहकृष्वहाम्—द्विकर्मक नी, ह, कृप् और वह धातुओं के मुख्य कर्म (Direct object) में प्रथमा विभक्ति होती है, गौण कर्म ज्यों का त्यों रहता है। जैसे, भूयः भारान् गृहं वक्ष्यति। (कर्तृ०) भूयेन भाराः गृहं वक्ष्यन्ते (कर्म०)—नौकर बोझ घर ले जायगा।

### णिजन्त द्विकर्मक धातु का वाच्यान्तर

बुद्धिभक्षार्थयोः शब्दकर्मकाणां निजेच्छया—बुद्ध्यर्थक, भक्षार्थक और शब्दकर्मक धातुओं के दोनों कर्मों में से जिस में इच्छा हो उस में प्रथमा विभक्ति होती है, जैसे—गुरुः छात्रं धर्मं बोधयति (कर्तृ०) गुरुणा छात्रः धर्मं (छात्रं धर्मः) बोध्यते (कर्म०)।

अन्य णिजन्त द्विकर्मक धातुओं के कर्मवाच्य बनाने में प्रयोज्य कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—श्यामः रामं ग्रामं गमयति (कर्तृ०) श्यामेन रामः ग्रामं गम्यते (कर्म०) (श्याम राम को गांव में भेज रहा है)।

कर्तृवाच्य में जिन धातुओं के प्रयोज्य कर्ता में तृतीया विभक्ति होती है। कर्मवाच्य में उनके अणिजन्त अवस्था के कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है। जैसे—सुग्रीवः रामेण वालिनं घातयति—सुग्रीव वालि को राम से मरवाता है (कर्तृ०) सुग्रीवेण रामेण वाली घात्यते (कर्म०) सुग्रीव द्वारा राम से वालि मरवाया जाता है।

नीचे लिखे वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद और वाच्य परिवर्तन करो—

- (१) सिंहो वनं गच्छते। २ जलानि सा नीरनिखानयन्। वहत्ययोध्यामनू-राजधानीम्। (३) मास्वन्ति रत्नानि महं पथीश्व। (४) भ्राता ब्रूते स्म विह्वलः। (५) शोकं चित्तमवारुहत्। (६) तौ दम्पती स्वां प्रति राजधानीं प्रस्थापयामासु वशी वसिष्ठः। (७) किं तथा क्रियते चेन्वा या न सूते न दुग्धदा। (८) न पाव-

पोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोन्वये मूर्छति मास्तस्य । (९) भूषणाद्युपचारेण प्रभुर्भवति न प्रभुः । (१०) स बाल आसीद्वपुषा चतुर्भुजः । (११) प्रजा संरक्षति नृपः सा वर्द्धयति पार्थिवम् । (१२) पूर्वस्मादन्यवद्भाति भावाद्वाशरथि स्तुवन् । (१३) स साधुः सद्भिर्दृश्यते । (१४) सा सीतामङ्कमारोप्य भर्तृप्रणिहितेक्षणाम् । मामेति व्याहरत्येव तस्मिन्पातालमभ्यगात् । (१५) वयांसि किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा रवोदरपूरणम् ।

उपसर्गों के योग से धातुओं के अनेक अर्थ

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते ।

प्रहाराहार-संहार-विहार-परिहारवत् ॥

उपसर्ग से धातु का अर्थ बलपूर्वक दूसरे अर्थ की ओर खींचा जाता है । विचार कीजिए कि 'हृ' धातु का अर्थ 'चुराना' है कन्तु उपसर्गों के योग से उसके कितने अर्थ हो गये हैं । प्र-हृ प्रहार=मारना, आ-हृ-आहार=भोजन करना, सम्-हृ-संहार=नाश करना, वि-हृ-विहार=घूमना, परि-हृ-परिहार=छोड़ देना इत्यादि ।

उपसर्गों के लगाने से धातुओं के अर्थों में एक ओर विलक्षणता यह आ जाती है कि कहीं कहीं अकर्मक धातु भी सकर्मक हो जाते हैं । यथा—अकर्मक 'भू' का अर्थ (होना) है मगर 'अनु' उपसर्ग लगाने से इसका अर्थ 'अनुभव करना' सकर्मक हो जाता है । जैसे—पापी दुःखमनुभवति (पापी दुःख भोगता है) ।

अय् (जाना) परा+अय् (भागना) चीरः पलायते ।

अर्थ (मांगना) प्र+अर्थ (प्रार्थना करना) स्वर्गतिं प्रार्थयते (भ० गीतायाम्) ।

अभि+अर्थ (इच्छा करना) यदि सा तापसकन्यका अभ्यर्थनीया (शकुन्तलायाम्) ।

अभि+अर्थ (प्रार्थना करना) माम् अनभ्यर्थनः यमभ्यर्थयते (मालविकाग्निमित्रे) ।

अस (फेंकना)—अभि+अस् (रटना) छात्रः पाठमभ्यस्यति ।

निर्+अस् (हटाना) सः धूर्त निरस्यति ।

आप् (पाना)—

वि+आप् (फैलना) रजः आकाशं व्याप्नोति ।

सम्+आप् (पूरा होना) यावत्तेषां समाप्येरन् यज्ञाः पर्याप्तदक्षिणाः (रघुवंशे) ।

आस् (बैठना)—

अधि+आस् (अधिकार करना) स राजसिंहासनमध्यास्ते ।

उप+आस् (पूजा करना) भक्ताः शिवमुपास्ते ।

अनु+आस् (सेवा करना) सखीभ्यामन्वास्यते (शकुन्तलायाम्) ।

इ (जाना)—

अव । इ (जानना) अवेहि मां किङ्करमष्टमूर्तेः (रघुवंशे) ।

प्रति+इ (विश्वास करना) सः मयि न प्रत्येति ।

उत्+इ (उगना) उदेति सचित्र नाम्नः नाम्न एवास्तमेति च ।

उग्र+इ (प्राप्त करना) उग्रगिरिं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः (पञ्चतन्त्रे) ।

अभि+इ (सामने आना) सः स्वामिनमभ्येति ।

अनु+इ (पीछे आना) सः शब्दार्थं इव तमन्वेति ।

अप+इ (दूर होना) सूर्योदये अन्धकारः अपेति ।

ईक्ष (देखना) — (प्रतीक्षा करना) किमपेक्ष्य फलं पयोधरान्धवनतः  
अप+ईक्ष (प्रार्थयते मृगाविपः (किराताजुनीये) ।

उप+ईक्ष (ह्याल न करना) अलसः कर्तव्यमुपेक्षते ।  
परि+ईक्ष (इम्तिहान लेना) अग्नौ परोक्षयते स्वर्णं काव्य सदसि तद्विदाम् ।  
प्रति+ईक्ष (इन्तजार करना) क्षणं प्रतीक्षस्व ।  
निः+ईक्ष (देखना) सः साग्रहं त्वां निरैक्षत ।  
अव+ईक्ष (रक्षा करना) इलाध्यां दुहितरमवेक्षस्वजानकीम् (उत्तररामच०) ।  
अव+ईक्ष (आदर करना) त्रिदिवात्सुक्याप्यवेक्ष माम् (रघुवंशे) ।  
अव+ईक्ष (जांच करना) स कदाचिदवेक्षितप्रजः (रघुवंशे)

कृ (करना) —

अनु+कृ (नकल करना) काकः कोकिलमनुकरोति ।  
अधि+कृ (अधिकार करना) अचिरात् शत्रुः राजधानीमधिकरोति ।  
अप+कृ (बुराई करना) अथवा सैनिकाः केचिदपकुर्युर्धुधिष्ठिरम् (महाभारते) ।  
निरस्+कृ (अनादर करना) किमयं तिरस्करापि माम् ?  
नमस्+कृ (नमस्कार करना) देवदेवं नमस्कुरु ।  
प्रति+कृ (इलाज करना) आगतं तु भयं वीक्ष्य प्रतिकुर्यात् यथांचितम् ।  
उप+कृ (उपकार करना) किते भूयः प्रियमुपकरोतु पाकशासनः ?  
(विक्रमोर्वशीये) ।

परि+कृ (सजाना) रथां हेमपरिष्कृतः (महाभारते) ।  
अलम्+कृ (शोभा बढ़ाना) रामचन्द्रः वनमिदं पुनरलङ्कुरिष्यति ?  
आविः+कृ (ढूँढना) वायुयानमिदं केन वीमताऽऽविष्कृतं भुवि !  
निर+आ+कृ (हटाना) सः निराकरोति दोषान् ।

चित्रप्रत्ययान्त कृ —

१—अङ्गीकृतं मुकृतिनः परिपालयन्ति ।  
२—वीरवरः देव्यं स्वपुत्रं उपहारीकरोति ।  
३—सफलीकृतं त्वया मम जीवनं शुभागमनेन ।  
४—स्थिरीकरोमि ते वामस्थानम् ।  
५—कदा रामचन्द्रः वनमिदं सनायीकरिष्यति ?  
६—विरहकया आकुलीकरोति मे हृदयम् ।

गम् (जाना) —

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति वीमताम् (हितोपदेशे) ।  
अनु+गम् (पीछा करना) वत्स मामनुगच्छ ।  
अव+गम् (जानना) नावगच्छामि ते मतिम् ।  
अधि+गम् (प्राप्त करना) अधिगच्छति महिमानं चन्द्राऽपि निशापरिगृहीतः  
(मालविकाग्निमित्रे) ।  
आ+गम् (जाना) स्नानार्थं सः नदीमागच्छत् ।

प्रति + गम् (लौटना) कदा सा प्रतिगमिष्यति ?

प्रति + आ + गम् (लौटना) माणवकः कुटीरं प्रत्यागच्छति ।

निर् + गम् (बाहर जाना) सः गृहान्निर्गतः ।

सम् + गम् (मिलना) मित्रेण संगच्छते साधुः ।

उत् + गम् (उड़ना) पक्षी आकाशमुदगच्छत् ।

ग्रह् (लेना) —

अनु + ग्रह् (कृपा करना) गुरो मामनुगृहाण ।

नि + ग्रह् (बँड देना) शीघ्रमयं दुष्टवर्णिकं निगृह्यताम् ।

वि + ग्रह् (लड़ाई करना) विगृह्य चक्रे नमुचिद्रिषा बली य इत्यमस्वास्थ्यमहर्दिव  
दिवः (शिशुपालवधे) ।

चर् (चलना) —

आ + चर् (व्यवहार करना) प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत् ।

अनु + चर् (पीछा करना) सत्यमागमनुचरेत् ।

उत् + चर् (कहना) सः धर्मोपदेशं नोच्चरते ।

परि + चर् (सेवा करना) भृत्याः स्वामिनं परिचरन्ति ।

सम् + चर् (घूमना) वने व्याघ्राः सञ्चरन्ति ।

चि (चुनना) —

उप + चि (बढ़ाना) अधोऽधः पश्यतः कस्यमहिमा नोपचीयते (हितोपदेशे) ।

अप + चि (घटना) राजहंस इव सैव शुभ्रताचीयते न च नचापचीयते  
(काव्यप्रकाशे) ।

सम् + चि (इकट्ठा करना) रक्षायोगादयमपि तपः प्रत्यहं सचिनोति  
(शकुन्तलायाम्) ।

ज्ञा (जानना) —

अनु + ज्ञा (आज्ञा देना) तत् अनुजानीहि मां गमनाय । (उत्तररामचरिते)

प्रति + ज्ञा (प्रतिज्ञा करना) कथं वृथा प्रतिजानीषे ।

अव + ज्ञा (अनादर करना) दरिद्रं नावजानीयात् ।

अप + ज्ञा (झुठाना) अतमपजानीते ।

तृ (तैरना) —

अव + तृ (उतरना) अवतरति आकाशात् वायुयानम् ।

उत् + तृ (तैरना) सः अनायासं गङ्गामुदतरत् ।

वि + तृ (देना) वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्याम् (उत्तररामच०) ।

सम् + तृ (तैरना) स हि घटिकाप्रायं नद्यां सन्तरेत् ।

दिश् (देना) —

आ + दिश् (आज्ञा देना) गुरुः शिष्यान् आदिशति ।

उप + दिश् (उपदेश देना) उपदिशन्तु मां धर्मशास्त्रम् ।

सम् + दिश् (संदेश देना) किं यदिशन्तु स्वामी ।

निर् + दिश् (बताना) यथाभिलषितं स्थानं निर्दिशेत् ।

धा (धारण करना) —

अभि+धा (कहना) सत्यमभिधेहि ।

अपि+धा (ढकना) कर्णो अपिदधाति ।

अव+धा (ध्यान देना) गोपालः पठने नावधत्ते ।

सम्+धा (मेल करना) शत्रुणा न हि संदध्यात् ।

वि+धा (करना) सहसा विदधीत न क्रियाम् (किराते) ।

परि+धा (पहनना) उत्सवे नरः नवं वस्त्रं परिदधाति ।

नि+धा (विश्वास से रखना) निदधे विजयाशसां चापे सीतां च लक्ष्मणे (रघुवंशे)

नि+धा (नीचे बठाना) सलिलैर्निहितं रजःक्षितौ (घटकारिकाव्ये) ।

नि+धा (रखना) कृपणः भूमी मुद्राः निदधाति ।

ती (ले जाना) —

अनु+ती (मनाना) अनुनय मित्रं कुपितम् ।

आभ+ती (अभिनय करना) गोपालः सीतायाः पाठमभिनयेत् ।

आ+ती (लाना) आनय जलं पूजार्थम् ।

उप+ती (लाना) उपनयति मुनिकुमारकेभ्यः फलानि (कादम्बर्याम्) ।

उप+ती (यज्ञोपवीत देना) गुरुः शिष्यमुपनयत् ।

परि+ती (व्याह करना) नलः दमयन्तीं परिणयान् स्म ।

प्र+ती (बनाना) चान्मीकिः रामायणं प्रणिनाय ।

अप+ती (हटाना) अपनेष्यामि ते दपम् ।

निर्+ती (निर्णय करना) कलहस्य मूलं निर्णयति ।

पत् (गिरना) —

आ+पत् (आपड़ना) अहो, कण्टमापतितम् ।

उत्+पत् (उड़ना) प्रभाते पक्षिणः उत्पतन्ति ।

प्र+नि+पत् (प्रणाम करना) प्राणिपतामि गुरुम् ।

नि+पत् (गिरना) फलानि भूमी निपतन्ति ।

पद् (जाना) —

प्र+पद् (भजना) ये यथा मा प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् (गीतायाम्) ।

उत्+पद् (उत्पन्न होना) दुग्धात् नवनीतम् उत्पद्यते ।

वि+पद् (विपद् में पड़ना) मः विद्यते (विपन्नो भवति) ।

उप+पद् (योग्य होना) नेतृ त्वय्युपपद्यते (गीतायाम्) ।

भू (होना) —

अनु+भू (अनुभव करना) नन्तः सुखम् अनुभवन्ति ।

आवृ+भू (पेदा होना) आविर्भते शशिनो तमो विलीयते ।

अभि+भू (तिरस्कार करना) कस्त्वामभिभवितुमिच्छति बलात् ।

परा+भू (हराना) बलवान् दुर्बलान् पराभवति ।

प्रादु+भू (पेदा होना) प्रादुर्भवति भगवान् विपदि ।

परि+भू (तिरस्कार करना) रावणः विभीषणं परिबभूव ।



प्र+भू (समर्थ होना) प्रभवति शुचिविम्बोद्ग्राहे मणिः ।

कुसुमान्यपि गात्रसंगमात् प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।

न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः ॥ (कुमारसंभवे) ।

सम्+भू (पैदा होना) सम्भवामि युगे युगे (गीतायाम्) ।

अनु+भू (मालूम करना) अनुभवामि एतन् ।

चिप्रत्ययान्त भू के प्रयोग :—

१—भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ।

२—दृढीभवति शरीरं व्यायामेन ।

३—भवतां शुभागमनेन पवित्रीभूतं मे गृहम् ।

४—तपसा भगवान् प्रत्यक्षीभवति ।

विश् (प्रवेश करना) —

अभि+नि+विश् (शामिल होना) छात्रः पाठम् अभिनिविशते ।

उप+विश् (बैठना) आसने उपविशतु भवान् ।

प्र+विश् (प्रवेश करना) संन्यासी वनान्तरं प्राविशत् ।

मन् (सोचना) —

अव+मन् (अनादर करना) नावमन्येत निर्धनम् ।

अनु+मन् (आज्ञा या सलाह देना) राजन्यान्स्वपुरनिवृत्तयेऽनुमेने (रघुवंशे) ।

सम्+मन् (आदर करना) कच्चिदग्निमिवानाथ्यं काले संमन्यसेऽतिथिम् ।

(भट्टिकाव्ये) ।

मन्त्र् (सलाह करना) —

अभि+मन्त्र् (संस्कार करना) जलम् अभिमन्त्र्य ददी ।

आ+मन्त्र् (विदा होना) तात, लताभगिनीं वनज्योत्स्ना तावदामन्त्रये ।

(शकुन्तलायाम्) ।

आ+मन्त्र् (बुलाना) आमन्त्रयध्वं राष्ट्रेषु ब्राह्मणान् (महाभारते) ।

नि+मन्त्र् (न्योता देना) ब्राह्मणान् निमन्त्रयस्व ।

रम् (फ्रीडा करना) —

वि+रम् (हटाना) विरम विरम पापात् ।

उप+रम् (मरना) सः शोकेन उपरतः ।

उप+रम् (लगना) यत्रोपरमते चित्तम् (भगवद्गीतायाम्) ।

वद् (कहना) —

अप+वद् (बुरे वचन कहना) दुर्जनः सज्जनमपवदति ।

वि+वद् (झगडा करना) कुषकाः क्षेत्रे विवदन्ते ।

अनु+वद् (अनुवाद करना) सः विद्वान् वेदमनुवदति ।

प्रति+वद् (जवाब देना) तान् प्रत्यवादीदथ राघवोऽपि ।

लप् (बोलना) —

अप+लप् (छिपाना) दुष्टः सत्यमपलपति ।

आ+लप् (घातचीत करना) माधुः साधूना महं आल्लग्य ।

प्र + लप् (बकवाद करना) उन्मत्ताः सदा प्रलपन्ति ।

वि + लप् (रोना) विललाप स बाष्पगद्गदम् सहजामप्यपहाय धीरताम् (रघुवंशे) ।

सम् + लप् (बातचीत करना) संलापितानां मधुरैः वचोभिः ।

वह् (ले जाना) —

उद् + वह् (व्याह करना) रामः सीताम् उदवहत् ।

अति + वह् (विताना) किं वा मयापि न दिनान्यतिहितानि (मालती माधवे) ।

आ + वह् (पंदा करना) महदपि राज्यं सुखं नावहति ।

आ + वह् = (पहनना) मण्डनमावहन्तीम् (चौरपञ्चासिकायाम्) ।

आ + वह् = (धारण करना) मा रोदीर्घ्यमा वह (मार्कण्डेयपुराणे) ।

निः + वह् (चलाना) सः कार्यमेतत् निर्वहति ।

प्र + वह् (वहना) अनेन मार्गेण गङ्गा प्रावहत् ।

वृत् (होना) —

अनु + वृत् (अनुसरण करना) साधवः साधुमनुवर्तन्ते ।

नि + वृत् (रुकना) प्रसमीक्ष्य निवर्तते सर्वमासस्य भक्षणात् (मनुस्मृतौ) ।

नि + वृत् (लौटना) न च निम्नादिव सलिलं निवर्तते मे ततो हृदयम्  
(शकुन्तलायाम्) ।

यदगत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम (गीतायाम्) ।

प्रति + आ + वृत् (लौटना) अचिरं सः प्रत्यावर्तिष्यते ।

प्र + वृत् (लगाना) प्रवर्तना प्रकृतिहिताय पार्थिवः ।

अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्तसे (कुमारसंभवे) ।

प्र + वृत् (शुरू होना) नतः प्रववृते युद्धम् ।

परि + वृत् (घूमना) चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च ।

वस् (रहना) —

अधि + वस् (रहना) रामः अयोध्यामध्यवसत् ।

उप + वस् (उपवास करना) स एकादश्यामुपवसति ।

” ” (समीप रहना) ब्राह्मणः ग्रामम् उपवसति ।

नि + वस् (रहना) सः कुत्र निवसति ?

प्र + वस् (परदेश में रहना) प्रवसति मे पतिः ।

सद् (जाना) —

अव + सद् (थकना) श्रमेण अवसीदति मे चेतः ।

उत् + सद् (नाश होना) गृहं तस्य उत्सीदति स्म ।

आ + सद् (पाना) पान्थः कूपमकमासीमाद ।

प्र + सद् (प्रसन्न होना) प्रसीद विश्वेऽवरि पाटि विश्वम् (सप्तशत्याम्) ।

वि + सद् (दुःखी होना) यूयं मा विपीदत ।

नि + सद् (बैठना) इतो निपीद ।

सृ (जाना) —

अप + सृ (हटाना) इतो दूग्धमपसर ।

निः+सृ (निकलना) क्षतात् रक्तं निःसरति ।  
 अनु+सृ (पीछा करना) वनं यावदनुसरति ।  
 प्र+सृ (फैलना) प्रमसार यशस्तव ।  
 अभि+सृ (पति के पास जाना) सा अभिसरति ।

स्था (उहरना) —

अधि+स्था (रहना) साधवः साधुतामधितिष्ठन्ति ।  
 अनु+स्था (करना) मनसापि पापकार्यं नानुतिष्ठेत् ।  
 अव+स्था (उहरना) भगवन् ! नावतिष्ठतामत्र ।  
 उत्+स्था (उठना) उत्तिष्ठत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगन्पते ।  
 प्र+स्था (रवाना होना) प्रीतः प्रतस्थे मुनिराश्रमाय ।  
 उप+स्था (पूजा करना) द्विजा देवमुपतिष्ठते ।

हृ (चुराना ले, जाना) —

अप+हृ (चुराना) चौरः धनमपहरति ।  
 अप्+हृ = (दूर करना) अपह्रिये खलु परिश्रमजनितया निद्रया (उत्तरारामचरिते)  
 आ+हृ (इकट्ठा करना) निर्धनो धनमाहरति ।  
 उत्+हृ (उद्धार करना) मा तावदुद्धर शुचो दयिताप्रवृत्त्या (विक्रमोर्वशीये) ।  
 उदा+हृ = (उदाहरण देना) त्वां कामिना मदन्तूतिमूढाहरन्ति (विक्रमो०) ।  
 अभ्यव+हृ = (खाना) सवतन् पिव धानाः खादेत्यभ्यवहरति (पा० अष्टाध्यायी) ।  
 परि+हृ (उपेक्षा करना) स्त्रीसन्निकर्षं परिहर्तुमिच्छन्तदंधे भूतपतिः स भूतः  
 (कुमारसम्भवे) ।

उप+हृ (भेट देना) देवेभ्यः बलिमुपहरेत् ।

प्र+हृ (मारना) कृष्णः कंसं शिरसि प्राहरत् ।

वि+हृ (विहार करना) विहरति हरिरिह सरसवसन्ते ।

सम्+हृ = (पीछे हटाना) न हि संहरते ज्योत्स्ना चन्द्रश्चाण्डालवेष्टमनि  
 (हितोपदेशे) ।

सं+हृ (रोकना) क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे महतां चरन्ति ।

तावत्स बह्निर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार । (कुमारसंभवे)

कम् (चलना) —

अति+कम् (गुजरना) यथा यथा यौवनमतिचक्राम (काव्यभार्याम्) ।

(उल्लंघन करना) कथमतिक्रान्तमगस्त्याश्चमपदम् (महावीरचरिते) ।

अप+कम् (दूर हटाना) नगरादपक्रान्तः (मुद्राराक्षसे) ।

आ+कम् (आक्रमण करना) पौरस्थानेवमाक्रमस्तास्ताञ्जनपदाञ्जयी (रघुवशे)

निस्+कम् (निकलना) इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।

उप+कम् (आरंभ करना) राजस्तस्याज्ञया देवी वसिष्ठमुपचक्रमे (भट्टिकाव्ये)

परा+कम् (पराक्रम विखाना) स पराक्रमते ।

परि+कम् (परिक्रमा करना) स परिक्रामति ।

वि+कम् (विक्रम विखाना) विष्णुश्चेष्टा विक्रमे ।

सम्+क्रम् (संक्रमण करना) कालो ह्ययं संक्रमितुं द्वितीयं सर्वोपकारक्षममाश्रमं ते (रघुवंशे) ।

द्रु (पिघलना) —

द्रवति च हिमरश्नावुदगते चन्द्रकान्तः (भालतीमाधवे) ।

उप+द्रु (आक्रमण करना) प्राग्ज्योतिषमुपाद्रवत् (महाभारते) ।

वि+द्रु (भागना) जलसंघात इवासि विद्रुतः (कुमार सम्भवे) ।

क्षिप् (फेंकना) —

किं कूर्मस्य भारव्ययान न वपुषि क्षमां न क्षिपत्येषयत् (मुद्राराक्षसे) ।

अव+क्षिप् (निन्दा करना) मदलेखामवक्षिप्य (कादम्बर्याम्) ।

आ+क्षिप् (अपमान करना) अरेरे राधागर्भभारभूतं किमेवमाक्षिपसि (वेणीसंहारे) ।

उन्+क्षिप् (ऊपर फेंकना) वालमाकाश उत्क्षिपेत् (मनुस्मृतौ) ।

सम्+क्षिप् (संक्षिप्त करना) संक्षिप्येत क्षण इव कथं दीर्घशामा - त्रियामा (मेघदूते) ।

बन्ध् (बांधना, पहनना) —

न हि चूडामणिः पादे प्रमथामांनि बध्यते (पञ्चतन्त्रे) ।

उत्+बन्ध् (बांधना) पादपे आत्मानमुद्वध्य व्यापादयामि (रत्नावल्याम्) ।

निर्+बन्ध् (जोरदार मांग करना) निर्वन्धपृष्ठः सजगाद सर्वम् (रघुवंशे) ।

सम्+बन्ध् (मेल होना) सम्बन्धमाभाषणपूर्वमाहुः (रघुवंशे) ।

रुधिर (झंझना) —

अनु+रुध् (आज्ञा मानना) अनुरुध्यस्व भगवतो वसिष्ठस्यादेशम् (उत्तररामचरिते)

वि+रुध् (विरोध करना) विपरीतार्थधीर्यस्मात् विरुद्धमतिक्रान्तम् ।

संस्कृत वनाश्रयो :—

१—बालक स्कूल से घर आया । २—माली बाग से फल लाया । ३—धर्म-शास्त्रों को देख कर पण्डितों ने प्रायश्चित्त का निर्णय किया । ४—दुष्यन्त ने देखा कि शकुन्तला अपनी सखियों के साथ विहार कर रही है । ५—श्रीरामचन्द्र जी ने रापी रावण का संहार किया । ६—आचार्य शिष्य को यज्ञोपवीत देता है । ७—लुटेरे (दस्यु) मार्ग में मुसाफिरो से धन छीनते हैं । ८—मोहन ने भरी सभा में रुक्मिणी का अभिनय किया । ९—सज्जन अपकार करने पर भी उपकार करते हैं । १०—उत्सव के अवसर पर स्त्रियाँ वस्त्र तथा गहनों से अपने शरीर को सजाती हैं । ११—दूसरे की निन्दा न करो । १२—चौदह वर्ष के बाद राम अयोध्या को वापस लौटे । १३—गंगा प्रयाग में यमुना से मिली है । १४—छात्रों को आपस में झगड़ा न करना चाहिए । १५—राजकर्मचारी अपने अपने मातहतों (अधीन) को जांच पड़ताल करते हैं ।

कृदन्तप्रकरण

कर्तृवाचक और भाववाचक कृदन्त

‘करने वाला’, ‘जाने वाला’ आदि कर्तृवाचक कृदन्त शब्दों के लिए ‘वृञ्’ (वृ)

आदि निम्नलिखित प्रत्ययों से बने हुए शब्द प्रयोग में लाने चाहिए। इन कर्तृवाचक कृदन्तों के कर्म का इनके साथ समास भी हो जाता है। जैसे —

(असमस्त) शास्त्राणां ज्ञातारः क्व निवसन्ति (शास्त्रों के जाननेवाले कहां रहते हैं?)

अथवा—

(समस्त) शास्त्रज्ञातारः क्व निवसन्ति (शास्त्रों के जानने वाले कहां रहते हैं?)

(ष्वल् और तृच्) कर्तृवाच्य में धातुओं से तृच् (तृ) और ष्वल् (अक) ये दो प्रत्यय होने हैं। जैसे—कृ—कर्ता, युध्=योद्धा, भू=भविता, नी=नेता, विद्=वेत्ता, सेव्=सेविता, गम्=गन्ता इत्यादि। ष्वल् (अक) पच्=पाचकः, पाठकः, नायकः, गायकः, पालकः, दायकः, सेवकः, जनकः, रोषकः, इत्यादि। ष्वल् (अक) और 'तृच्' (तृ) प्रत्ययान्त शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं।

(अण्) कर्मवाचक पद के उत्तरवर्ती धातु के उत्तर कर्तृवाच्य में अण् होता है। जैसे—कुम्भं करोति इति कुम्भकारः, सूत्रधारः, तन्तुवायः, वारिवाहः, भाष्यकारः इत्यादि।

(क) कर्तृवाच्य में धातुओं से 'क' प्रत्यय भी होता है। जैसे—फलं प्रददाति इति=फलप्रदः, अभिजानाति इति=अभिज्ञः। 'अ' प्रत्यय—पच्=पचः, दिव्=देवः, चल्=चलः, धृ=धरः।

सुबन्त पद के परवर्ती भिन्न भिन्न धातुओं के उत्तर भिन्न भिन्न अर्थों में भी 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—शोकहरः, पूजार्हः, धनदः, सर्वज्ञः, मधुपः, प्रकृतिस्थः, पङ्कजम्, पारगः, पतङ्गः, शोकापहः, प्रभाकरः हितकरः, अग्रसरः, रात्रिचरः, मित्रघ्नः इत्यादि।

(णिन्) कर्तृवाच्य में णिन् (इन्) प्रत्यय भी होता है। जैसे—प्रवसति इति=प्रवासी, विद्रोही, अधिकारी, अभिलाषी, स्थायी द्वेषी, सञ्चारी इत्यादि। सुबन्तपद के उत्तरवर्ती धातुओं से भिन्न-भिन्न अर्थों में भी 'इन्' प्रत्यय होता है। जैसे—उष्णं भोक्तुं शीलं यस्य सः=उष्णभोजी (गरम खाने की इच्छा वाला) मनोहारी, अग्रयायी, मिथ्यावादी, मित्रघाती इत्यादि।

(स्त्रियां क्तिन्) भाववाच्य में क्तिन् प्रत्यय होता है। 'क्ति' का केवल 'ति' शेष रहता है। जैसे—मतिः, वृद्धिः, नीतिः, दृष्टिः, जातिः, गतिः, प्रीतिः इत्यादि। क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

(अकर्तरि च कारके षञ्) भाववाच्य और कर्तृभिन्न कारक वाच्य में षञ् प्रत्यय होता है। जैसे—पाकः, भागः, त्यागः, नाशः, इत्यादि। षञ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग ही होते हैं।

भाववाच्य में धातुओं से 'अ' प्रत्यय भी होता है। जैसे—भवः, कोपः, तोषः, हर्षः, जपः, मदः, इत्यादि।

भावकरणाधिकरणेषु ल्युट्—भाववाच्य में धातुओं से ल्युट् (अन्) होता है। जैसे—गमनम्, शयनम्, भोजनम् इत्यादि। करण और अधिकरण अर्थ में भी 'अन्' होता है। जैसे—करणम् (जिस से किया जाय) शयनम् (जिस पर सोया जाय)। अन प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं।



सु, दुर् और ईषत् परवर्ती धातुओं से कर्म और भाववाच्य में खल् प्रत्यय होता है। जैसे—सुकरः, दुष्करः, ईषत्करः, सुवहः, दुर्लभः, दुःशासनः इत्यादि।

सन्नन्त, आशंसु और भिक्षु धातु से 'उ' होता है। जैसे—लिप्सुः, पिपासुः, आशंसुः, भिक्षुः इत्यादि।

उपमानवाचक तद्, यद्, एतद्, भवत्, युष्मद्, अस्मद्, इदम्, अदस्, किम्, अन्य और समान शब्दों के आगे दृश् धातु से क्विप् और षड् प्रत्यय होते हैं। इनके निम्न-लिखित रूप होते हैं। जैसे—तादृक्, तादृशः—(उनके ऐसा) त्वादृशः—(तुम्हारे ऐसा) सदृक्, सदृशः—(तुल्य दिखाई पड़ने वाला) तादृक्, तादृशः। यादृक्, यादृशः। भवादृक्, भवादृशः। युष्मादृक्, युष्मादृशः। अस्मादृक्, अस्मादृशः। कीदृक्, कीदृशः। ईदृक्, ईदृशः। एतादृक्, एतादृशः।

### संस्कृत वनाश्रो :—

१—पढ़ना आसान नहीं। २—गोपाल बड़ा तैराक (तैरने वाला) है। ३—यह बड़ी आनन्द देने वाली गाथा है। ४—मारने वाले से बचाने वाला बड़ा है। ५—काम करने वाला मनुष्य हूँ, पर कर्म का फल देने वाला ईश्वर है। ६—यह उपदेश शोक को नाश करने वाला है। ७—झूठ बोलने वाले का कोई विश्वास नहीं करता। ८—इस गांव के कुम्हार बड़े चतुर हैं। ९—नाश होने वाला शरीर का क्या विश्वास! १०—क्या इस घर में सभी खाने वाले हैं, कमाने वाला कोई नहीं? ११—यह पकाने वाला बड़ा चतुर है। १२—क्या इस शहर में कोई बड़ा गवैया नहीं? १३—वेद का पढ़ना पापों का नाश करने वाला है। १४—इस शहर के प्रायः सभी बनिये बड़े लुटेरे हैं। १५—कल मीने मन को हरने वाला एक राग सुना।

### वर्तमान-कालिक कृदन्त

पढ़ता हुआ (पढ़ती हुई) लिखता हुआ (लिखती हुई) आदि वर्तमान-कालिक कृदन्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद शतृ और शानच् प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाना है। परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अत्) और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्-मान) प्रत्यय आने हैं और शतृ, शानच् प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं। जैसे—

१—कदापि नरः खादन् न पठेत् (मनुष्य खाता हुआ कभी न पढ़े)।

२—सः हसन् अवदत्।

३—रुदन्ती बाला प्राह।

४—लज्जमाना धधूः आगच्छति।

५—जलं पिबन् न हसेत्।

६—शयानं शिशुं मा प्रबोधय।

७—विलपन्तीं मीमां दृष्ट्वा लक्ष्मणः विषण्णः मञ्जातः।

परस्मैपदी धातुओं में शतृप्रत्ययान्त शब्द

धानु	नपुसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
भृ (होना)	भवत्	भवन्	भवन्ती
अद (खाना)	अदत्	अदन्	अदती
दो (देना)	ददत्	ददन्	ददती
दीव्य (खेलना)	दीव्यत्	दीव्यन्	दीव्यन्ती
शृ (सुनना)	शृण्वत्	शृण्वन्	शृण्वती
तुद (कष्ट देना)	तुदत्	तुदन्	तुदन्ती, तुदती
छिन्द (काटना)	छिन्दत्	छिन्दन्	छिन्दन्ती
कु (करना)	कुर्वत्	कुर्वन्	कुर्वती
क्री (खरीदना)	क्रीणत्	क्रीणन्	क्रीणती
चिन्त (सोचना)	चिन्तयत्	चिन्तयन्	चिन्तयती
अम् (होना)	सत्	सन्	सती
आप् (प्राप्त करना)	आप्नुवत्	आप्नुवन्	आप्नुवती
इप् (इच्छा करना)	इच्छत्	इच्छन्	इच्छती, इच्छन्ती
अनु + इप् (बुझना)	अन्विष्यत्	अन्विष्यन्	अन्विष्यन्ती
कथ (कहना)	कथयत्	कथयन्	कथयन्ती
कुप् (नाराज होना)	कुप्यत्	कुप्यन्	कुप्यन्ती
कूज (कूजना)	कूजत्	कूजन्	कूजन्ती
कृत् (काटना)	कृन्तत्	कृन्तन्	कृन्तन्ती-न्ती
क्रुध (नाराज होना)	क्रुध्यत्	क्रुध्यन्	क्रुध्यन्ती
क्रीड (खेलना)	क्रीडत्	क्रीडन्	क्रीडन्ती
गण (गिनना)	गणयत्	गणयन्	गणयन्ती
गर्ज (गर्जना)	गर्जत्	गर्जन्	गर्जन्ती
गुञ्ज (गुंजना)	गुञ्जत्	गुञ्जन्	गुञ्जन्ती
गं (गाना)	गायत्	गायन्	गायन्ती

१ शतृ (अतृ) प्रत्ययान्त शब्दों के स्त्रीलिङ्ग के रूप बनाने के लिए 'अन्ति' प्रत्ययान्त पद के आगे 'ई' जोड़ देते हैं। जैसे—'गच्छति, गच्छतः, गच्छन्ति' इत्यादि रूपों में गच्छन्ति + ई = गच्छन्ती। इसी प्रकार—कूजन्ति + ई = कूजन्ती, पूजयन्ति + ई = पूजयन्ती, जिगमिषन्ति + ई = जिगमिषन्ती, हसन्ति + ई = हसन्ती, वदन्ति + ई = वदन्ती।

अदादिगणीय (अदती, रुदती आदि) स्वादिगणीय (चिन्वती, शृण्वती आदि) कथादिगणीय (क्रीणती, प्रीणती आदि), तनादिगणीय (कुर्वती, तन्वती आदि) और जुहोत्यादिगणीय (वदती, जहती आदि) धातुओं में 'ई' जोड़कर 'न' हटाने से स्त्रीलिङ्ग रूप बनते हैं।

अदादिगणीय (भान्ती, भाती आदि) और तुदादिगणीय (तुदती, तुदन्ती आदि) में विकल्प से न का लोप होता है। ये स्त्रीलिङ्ग शब्द नदी की भाँति होते हैं।

धातु	नप्सकलिङ्ग	पुल्लिङ्ग	मर्वाल्लिङ्ग
ग्रन्थ्	(गुंथना)	ग्रथन्त्	ग्रथन्ती
घ्रा	(संघना)	जिघ्रत्	जिघ्रन्ती
चल्	(चलना)	चलत्	चलन्ती
चर्	(चलना)	चरत्	चरन्ती
जागृ	(उठना)	जाग्रत्	जाग्रती
जीव्	(जीना)	जीवत्	जीवन्ती
तुष्	(खुश होना)	तुष्यत्	तुष्यन्ती
तृ	(तंरना)	तरत्	तरन्ती
दश्	(दशना)	दशत्	दशन्ती
दह्	(जलाना)	दहत्	दहन्ती
वृश्	(देखना)	पश्यत्	पश्यन्ती
निन्द्	(निंदा करना)	निन्दत्	निन्दन्ती
नृत्	(नाचना)	नृत्यत्	नृत्यन्ती
पठ्	(पढ़ना)	पठत्	पठन्ती
पत्	(गिरना)	पतत्	पतन्ती
पा	(पीना)	पिबत्	पिबन्ती
पूज	(पूजा करना)	पूजयत्	पूजयन्ती
प्रच्छ्	(पूछना)	पृच्छत्	पृच्छन्ती
बन्ध्	(बाँधना)	बध्नात्	बध्नाती
मथ्	(मथन करना)	मन्यत्	मन्यती
मज्ज्	(ढूँढना)	मज्जत्	मज्जन्ती
रच्	(बनाना)	रचयत्	रचयन्ती
आ+रह्	(चढ़ना)	आरोहत्	आरोहन्ती
लप्	(कहना)	लपत्	लपन्ती
लिख्	(लिखना)	लिखत्	लिखन्ती
वस्	(रहना)	वसत्	वसन्ती
शक्	(सकना)	शक्नुवत्	शक्नुवती
शास्	(सिखाना)	शासत्	शासती
सृज्	(पैदा करना)	सृजत्	सृजन्ती
स्था	(ठहरना)	तिष्ठत्	तिष्ठन्ती
स्पृश्	(छूना)	स्पृशत्	स्पृशन्ती
स्वप्	(सोना)	स्वपत्	स्वपती
स्मर्	(याद करना)	स्मरत्	स्मरन्ती
हृ	(ले जाना)	हरत्	हरन्ती
आ+हृ	(बुलाना)	आह्वयत्	आह्वयन्ती

आत्मनेपदी धातुओं से शानच् प्रत्ययान्त शब्द

धातु	नपुसकलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
ईक्ष् (देखना)	ईक्षमाणम्	ईक्षमाणः	ईक्षमाणा
कम्प् (कांपना)	कम्पमानम्	कम्पमानः	कम्पमाना
जन् (पैदा होना)	जायमानम्	जायमानः	जायमाना
त्वर (जल्दी करना)	त्वरमाणम्	त्वरमाणः	त्वरमाणा
त्रै (रक्षा करना)	त्रायमाणम्	त्रायमाणः	त्रायमाणा
दय् (दया करना)	दयमानम्	दयमानः	दयमाना
दीप् (चमकना)	दीप्यमानम्	दीप्यमानः	दीप्यमाना
वन्द (प्रशंसा करना)	वन्दमानम्	वन्दमानः	वन्दमाना
वृत् (होना)	वर्तमानम्	वर्तमानः	वर्तमाना
वृध् (बढ़ना)	वर्धमानम्	वर्धमानः	वर्धमाना
व्यथ् (दुखित होना)	व्यथमानम्	व्यथमानः	व्यथमाना
मन् (मानना)	मन्यमानम्	मन्यमानः	मन्यमाना
यत् (घटन करना)	यतमानम्	यतमानः	यतमाना
युध् (लड़ाई करना)	युध्यमानम्	युध्यमानः	युध्यमाना
लभ् (पाना)	लभमानम्	लभमानः	लभमाना
मेव् (सेवाकरना)	सेवमानम्	सेवमानः	सेवमाना
मह् (सहना)	सहमानम्	सहमानः	सहमाना

उभयपदी धातुओं से शतृ और शानच्

	(करना)	कुर्वत्	(कुर्वाणः)	कुर्वन्	कुर्वती
छिद्	(काटना)	छिन्दत्	(छिन्दानः)	छिन्दन्	छिन्दती
ज्ञा	(जानना)	जानत्	(जानानः)	जानन्	जानती
धाव्	(दौड़ना)	धावत्	(धावमानः)	धावन्	धावन्ती
नी	(ले जाना)	नयत्	(नयमानः)	नयन्	नयन्ती
पच्	(पकाना)	पचत्	(पचमानः)	पचन्	पचन्ती
ब्रू	(कहना)	ब्रुवत्	(ब्रवाणः)	ब्रुवन्	ब्रुवती
लिह्	(चाटना)	लिहत्	(लिहानः)	लिहन्	लिहती
ग्रह्	(ले जाना)	ग्रहत्	(ग्रहमानः)	ग्रहन्	ग्रहन्ती
दुह्	(दोहना)	दुहत्	(दुहानः)	दुहन्	दुहती
तन्	(फँलना)	तन्वत्	(तन्वानः)	तन्वन्	तन्वती
धा	(रखना)	दधत्	(दधानः)	दधन्	दधती

संस्कृत बनाओ :-

- १—वह दीड़ता आता है । २—यह कहते कहते सीता का गला भर गया ।
- ३—वह बहादुरी से लड़ता हुआ क्षेत्र में गिर पड़ा । ४—दयालु राजा ने एक कांपती हुई रमणी को देखा । ५—कुत्ते को भौंकते सुनकर चोर भाग गये । ६—

परस्पर झगड़ते हुए वे राजा के पास गये। ७—वह लोगों को देखता हुआ लिख रहा है। ८—जल पीते हुए बँल को गोविन्द ने लाठी से पीटा। ९—राम मागता हुआ मेरी ओर आ रहा है। १०—वह बालक रात में सोता हुआ भयभीत हो गया। ११—वह हंसता हुआ काम करता है। १२—वे बालक पढ़ते हुए कहीं जा रहे हैं। १३—सत्य जानता हुआ भी असत्य बोलता है। १४—चोर अन्धेरे को देखता हुआ चोरी करता है। १५—पापी धर्म को देखते हुए भी पाप करते हैं। १६—रावण ने रामचन्द्रजी को ईश्वर जानने हुए भी सीता नहीं दी। १७—नरेन्द्र हंसता हुआ आचार्य से क्या पूछता है? १८—गांव को जाते हुए मैंने एक साँप को मार डाला।

### भूतकालिककृदन्त

गया (गई) पड़ा (पड़ी) आदि भूतकालिक कृदन्त शब्दों का संस्कृत में अनुवाद क्त (त) और क्तवतु (तवन्) प्रत्ययान्त कृदन्त शब्दों से किया जाता है। जैसे—

(क्त) तेन जल पीतम् (उसने जल पिया)

(क्तवतु) सः जलं पीतवान् (उसने जल पिया)

भक्त (त) प्रत्यय सकर्मक धातुओं से कर्म में होता है। इसमें कर्त्ता तृतीया विभक्ति में रक्खा जाता है और कर्म प्रथमा विभक्ति में। 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द के लिङ्ग वचन के अनुसार होते हैं। जैसे—मया फलं भुक्तम्, मया द्वे फले भुक्ते इत्यादि। अकर्मक धातुओं से 'क्त' प्रत्यय कर्त्ता और भाव दोनों में होता है। जब 'क्त' प्रत्यय कर्त्ता में होता है तो क्तान्त शब्द कर्त्ता के अनुसार प्रथमा विभक्ति में होता है। जैसे—गोपालः गतः और क्त प्रत्यय जब भाव में होता है तो कर्त्ता में तृतीया विभक्ति और 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में आता है। जैसे—गोपालेन गतम्, इसी प्रकार—रामः हसितः, रामेण हसितम्।

क्तवतु (तवन्) प्रत्यय सकर्मक और अकर्मक सब धातुओं से 'कर्त्ता' में ही होता है। इसमें कर्त्ता और उसके अनुसार क्तवत्त्वन्त शब्द 'प्रथमा' विभक्ति में और कर्म द्वितीया विभक्ति में आता है। जैसे—

सः जलं पीतवान् (उसने पानी पीया)।

रामलक्ष्मणौ राक्षसान् हनवन्तौ (राम और लक्ष्मण ने राक्षस मारे)।

गोपालः गतवान्। (गोपाल गया)।

श्यामः हसितवान् (श्याम हँसा) इत्यादि।

इच्छार्थक, पूजार्थक, वृद्धयर्थक धातुओं से वर्तमान अर्थ में भी 'क्त' प्रत्यय होता है, उसमें कर्त्ता षष्ठी विभक्ति में और कर्म प्रथमा में होता है। जैसे—प्रजानां रामः इष्टः, मतः, पूजितः (प्रजा के लोग राम को चाहते हैं, मानते हैं, पूजते हैं)।

द्विकर्मक धातुओं से क्त प्रत्यय गाण कर्म में, नी, हु, कृप् और वह से मुख्य कर्म में और णिजन्त धातुओं से क्त प्रत्यय ष्योञ्ज्य कर्त्ता के अनुसार होता है। यथा—

शिष्यैः गुरुः शब्दार्थः पूष्ट (शिष्यों ने गुरु से शब्द का अर्थ पूछा)। देवेन छागः ग्रामं नातः (देव बकरे को गांव ले गया)। अध्यापकेन छात्रः शास्त्रम् बोधितः—(गुरु ने छात्र को शास्त्र समझाया) अकर्मक या सकर्मक धातुओं से कर्म



को विवक्षा न रहने पर 'क्त' प्रत्यय मात्र में होता है। यथा—मया शयितम् (मैं सोया) स्वया कथितम्—(तूने कहा) ।

धातु	क्त	क्तवतु	धातु	क्त	क्तवतु
अच	अचितः	अचितवान्	त्यञ्	त्यक्तः	त्यक्तवान्
अधि । ट	अधीतः	अधीतवान्	च	भानः	भानवान्
छिद्	छिन्नः	छिन्नवान्	दञ्	दष्टः	दष्टवान्
जन्	जानः	जातवान्	दा	दत्तः	दत्तवान्
इप्	इष्टः	इष्टवान्	धा	हितः	हितवान्
कथ्	कथितः	कथितवान्	ह्वे	हृतः	हृतवान्
कृ	कृतः	कृतवान्	लिह्	लीढः	लीढवान्
कृ	कीर्णः	कीर्णवान्	शम्	शान्तः	शान्तवान्
क्षि	क्षीणः	क्षीणवान्	निन्द्	निन्दितः	निन्दितवान्
क्षिप्	क्षिप्तः	क्षिप्तवान्	नी	नीतः	नीतवान्
क्रम्	क्रान्तः	क्रान्तवान्	पत्	पतितः	पतितवान्
की	कीतः	कीतवान्	पी	पीतः	पीतवान्
खन्	खातः	खातवान्	शास्	शिष्टः	शिष्टवान्
गम्	गतः	गतवान्	चेष्ट्	चेष्टितः	चेष्टितवान्
गृ	गीर्णः	गीर्णवान्	श्रु	श्रुतः	श्रुतवान्
गी	गीतः	गीतवान्	सह्	सोढः	सोढवान्
ग्रह्	गृहीतः	गृहीतवान्	स्पृश्	स्पृष्टः	स्पृष्टवान्
घ्रा	घ्राणः, घ्रातः	घ्रातवान्	मृज्	सृष्टः	सृष्टवान्
चि	चितः	चितवान्	स्मि	स्मितः	स्मितवान्
पूज्	पूजितः	पूजितवान्	स्मृ	स्मृतः	स्मृतवान्
प्रच्छ्	पृष्टः	पृष्टवान्	मन्	मतः	मतवान्
बन्ध्	बद्धः	बद्धवान्	रभ्	रब्धः	रब्धवान्
बुध्	बुद्धः	बुद्धवान्	वस्	उपितः	उपितवान्
वद्	उदितः	उदितवान्	लभ्	लब्धः	लब्धवान्
व्यन्	उक्तः	उक्तवान्	शी	शयितः	शयितवान्
विद्	विदितः	विदितवान्	हन्	हतः	हतवान्
भिद्	भिन्नः	भिन्नवान्	हा	हीनः	हीनवान्
जि	जितः	जितवान्	हृ	हृतः	हृतवान्
जू	जीर्णः	जीर्णवान्	वह्	ऊढः	ऊढवान्
तृ	तीर्णः	तीर्णवान्	कम्	कान्तः	कान्तवान्

संस्कृत बनाओ—

१—अर्जुन ने जयद्रथ को मारा । २—राजा ने अपराधियों को दण्ड दिया ।  
३—राम ने रावण को बाण से मारा । ४—गधा जङ्गल में छोड़ा गया । ५—बिल्ली  
ने चूहे को पकड़ा । ६—कल रात मैं जल्दी सो गया । ७—अङ्गद और बाली का

युद्ध हुआ। ८—मैंने जङ्गल में एक मित्र देखा। ९—आज प्यारेलाख वादिका में नहीं आया। १०—उस साधु को देखकर बालक बहुत डरा। ११—बालक बिस्तरे पर सो गया। १२—बाल्मीकि जी ने वड मधुर छन्दों में रामायण लिखी। १३—सब ने दिल से दीवानचन्द की प्रशंसा की। १४—ईश्वर ने जगत् बनाया। १५—रामचन्द्र जी ने लंका का राज्य विभीषण को दिया। १६—आज उस बालक ने क्या ही सुन्दर गाया? १७—हवा ने पत्तों को कोंपा दिया। १८—मृग पानी पीने के लिए तालाब में गया। १९—रान पड़ने ही चोर घर में घुसा और बहुत-सा धन चुरा ले गया। २०—छात्र ने गुरु की सेवा की। २१—सूर्य के उदय होने पर गोविन्द ने प्रयाग को प्रस्थान किया।

### भविष्यत्कालिककृदन्त

'करने वाला' 'लिखने वाला' 'सुनने वाला' आदि शब्दों का संस्कृत में अनुवाद भविष्यत्कालवाचक 'शन्, शानच्' प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है। भविष्यत्कालवाचक गतृ शानच् प्रत्ययों के रूप क्रम से 'स्यत्' और 'स्यमान' होते हैं। जैसे—

१—हिमालयजिखरमारोक्ष्यन्तः साहसिनो वीराः पाञ्चात्यदेशीयाः।

(हिमालय की चोटी पर चढ़ने वाले साहसी वीर पञ्चात्य देशीय हैं।)

२—मासिकवेतनं प्राप्स्यन् किङ्करः अनीव प्रसन्नः दृश्यते।

(मासिक तनखाह पाने वाला नौकर बहुत खुश दीखता है।)

३—विदेशं गमिष्यन् सुतः पितरौ प्रणमेत्।

(विदेश जाने वाला पुत्र अपने माता पिता को प्रणाम करे।)

४—पादकन्दुकेन क्रीडिष्यन्तः बालाः क्रीडाक्षेत्रं गच्छन्ति।

(फुटबॉल खेलने वाले लड़के खेल के मैदान में जा रहे हैं।)

५—परस्व. योत्स्यमानाः सैनिकाः सम्बन्धिनः आपच्छन्ति।

(परसों लड़ने वाले सिपाही अपने सम्बन्धियों से विदा ले रहे हैं।)

परस्मैपदी (स्यत्)

आत्मनेपदी (स्यमान)

सू—भविष्यत्

जन्—जनिष्यमाण

गम्—गमिष्यत्

सह्—सहिष्यमाण

स्था—स्थास्यत्

व्यथ्—व्यथयिष्यमाण

दर्शि—दर्शयिष्यत्

प्र—स्था—प्रस्थास्यमान

मृ—मरिष्यत्

युच्—योत्स्यमान

हन्—हनिष्यत्

लभ्—लप्स्यमान

### उभयपदी (स्यत्, स्यमान)

कृ—करिष्यत्—करिष्यमाण

ग्रह्—ग्रहीष्यत्—ग्रहीष्यमाण

दा—दास्यत्—दास्यमाण इत्यादि।

कर्मवाच्य में भविष्यत् अर्थ में धातुओं से 'स्यमान' प्रत्यय होता है और 'स्यमान' प्रत्ययान्त पद कर्म के विशेषण हो जाते हैं। जैसे—

रामेण मेविध्यमाणः दिश्वामित्रः ।

मीतया सेविष्यमाणा अस्त्वती ।

अस्माभिः भोक्ष्यमाणानि फलानि ।

‘स्वनृ’ और ‘स्पमान’ प्रत्ययों से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं, इसलिए विशेष्य के अनुसार उनमें लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं । यथा—वक्ष्यमाणं वचनम्, वक्ष्यमाणेन वचनेन, वक्ष्यमाणे वचने । इत्यादि ।

## पूर्वकालिककृदन्त

### क्त्वा और ल्यप्

पढ़कर ‘लिखकर’ ‘खाकर’ ‘पीकर’ आदि पूर्वकालिक कृदन्तों का अनुवाद संस्कृत में ‘क्त्वा’ ( त्वा ) प्रत्ययान्त शब्दों से किया जाता है । यदि धातु के पूर्व कोई उपसर्ग लगा हो तो ‘क्त्वा’ के स्थान में ‘ल्यप्’ ( य ) प्रत्यय होता है । यदि यह ‘य’ ह्रस्व स्वर के बाद आता है तो इसके पूर्व ‘त्’ लगकर इसका रूप ‘त्य’ हो जाता है ( सं+चि+य=संचित्य ) यथा—

१—वशम्पायनी मुहूर्तमिव ध्यात्वा सादरमब्रवीत् ( कादम्बर्याम् )

( वंशम्पायन ने क्षण भर सोचकर विनयपूर्वक कहा )

२—इत्युक्त्वा सोऽतीव चीत्कारं कृतवान् ।

( यह कहकर वह बड़े जोर से चिल्लाया )

३—यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्गाम परमं मम । ( गीतायान् )

( जहाँ से लौटते नहीं वहीं मेरा उत्तम स्थान है )

४—प्रातः आरभ्य स यं यावत् त्वमत्रैव तिष्ठ ।

( सुबह से लेकर शाम तक तुम यहीं ठहरो )

५—उत्थाय हृदि लीयन्ते दरिद्राणां मनोरथाः ।

( निर्धनों की इच्छाएँ चित्त में उठकर लीन हो जाती हैं )

६—स वेदानधीत्य विद्वान् अभवत् ।

( वेदों को पढ़कर वह विद्वान् हो गया )

उपसर्ग और चि्व प्रत्यय युक्त धातु से पूर्वकालिक कृदन्त के ‘त्वा’ के स्थान पर ल्यप् ( य ) होता है पर नञ् समास में नहीं । ल्यप् प्रत्यय होने पर नीचे लिखे बदलाव होते हैं ।

अ, ई, ऊ=ल्यप्+य । इ, उ, ऋ+ल्यप्=त्य । ॠ=ल्यप्=इय ।

जैसे—आकारान्त—उत्—स्था+यप्=उत्थाय, आ—टा+यप्=आवाय; ईका-रान्त—आ—नी+यप्=आनीय, वि—त्री+यप्=वित्रीय । ऊकारान्त—अनु—भू+यप्=अनुभूय; प्र—सू+यप्=प्रसूय । चि्वप्रत्ययान्त—मलिनी+भू+यप्=मलिनीभूय । स्थिरी+भू+यप्=स्थिरीभूय । इकारान्त—वि—जि+यप्=विजित्य; अधि—इ+यप्=अधीत्य । उकारान्त—प्र—स्तु+यप्=प्रस्तुत्य । प्रति—श्रु+यप्=प्रतिश्रुत्य । ऋकारान्त—अधि—कृ+यप्=अधिकृत्य; अन्—सृ+यप्=अनुसृत्य । ॠकारान्त—अव—तृ+यप्=अवतीर्य । वि—कृ+यप्=विकीर्य इत्यादि ।

वच्, वद्, वम्, वह्, स्वप्, धातुओं के 'व' के स्थान में 'उ' हो जाता है।  
 शी के स्थान में म गय, ह्वे, ह्वे, ग्रह—गृह्, प्रच्छ, पृच्छ। जैसे—प्र—वच् + यप् =  
 प्रोच्य; अनु—वद् + यप् = अनुद्य; अवि—वस् + यप् = अविध्य; सम्—ग्रह + यप् =  
 संगृह्य; आ—ह्वे + यप् = आह्वय; सम्—शी + यप् = मशय। णिजन्त धातुओं के  
 इकार का साधारणतया लोप हो जाता है और रच् प्रभृति धातुओं के इकार के  
 स्थान में 'अय' हो जाता है। सम् + चिन्ति = सचिन्त्य; —प्र + दशि = प्रदश्य;  
 सम् + स्थायि = मस्थाप्य। वि + रचि = विरच्य। इत्यादि।

धातु	वत्वा	त्यप्	धातु	वत्वा	त्यप्
आप्	आप्त्वा	[प्राप्य। समाप्य।	पा	पीत्वा	निपीय।
इ	इत्वा	अधीत्य।	पूज्	पूजयित्वा	प्रपूज्य।
ईक्ष्	ईक्षित्वा	[निरीक्ष्य। परीक्ष्य।	प्रच्छ्	पृच्छत्वा	संपृच्छ्य।
कृ	कृत्वा	अनुकृत्य।	वद्	उदित्वा	अनूद्य
क्री	क्रीत्वा	विक्रीय।	वन्ध्	बद्धत्वा	उद्ध्वय
क्षिप्	क्षिप्त्वा	निसिप्य	बुध्	बुद्धत्वा	प्रबुद्ध्य
गण्	गणयित्वा	विगणय्य।	भञ्ज्	भङ्गत्वा	विभज्य
कृ	कोर्त्वा	विकीर्य	भिद्	भित्त्वा	विभिद्य
दह्	दध्त्वा	मदह्य।	हा	हित्वा	विहाय
दा	दत्त्वा	आदाय।	ह्वे	हृत्वा	आहूय
दृश्	दृष्टत्वा	संदृश्य।	चिन्ति	चिन्तयित्वा	सचिन्त्य
धा	हित्वा	विधाय	छिद्	छित्त्वा	विच्छिद्य
धृ	धृत्वा	विधृत्य	जि	जित्वा	निजित्य
नम्	नेत्वा	[प्रणत्य। प्रणम्य।	ज्ञा	ज्ञात्वा	[विज्ञाय प्रतिज्ञाय
नी	नीत्वा	आनीय।	तृ	तीर्त्वा	संतीर्थ
पच्	पक्त्वा	विपच्य।	त्यज्	त्यक्त्वा	परित्यज्य
गम्	गत्वा	[आगत्य। आगम्य।	दश्	दष्ट्वा	संदश्य
ग	गीत्वा	निगाय।	रुह्	रुद्ध्वा	आरुह्य
ग्रन्थ	ग्रन्थित्वा	संग्रथ्य	भुज्	भुक्त्वा	संभुज्य
ग्रह्	गृहीत्वा	[संगृह्य। अनुगृह्य।	भू	भूत्वा	संभूय
घ्रा	घ्रात्वा	समाघ्राय।	भ्रम्	भ्रमित्वा	विभ्रम्य
चि	चित्वा	मंचित्य।	मन्	मत्वा	अवमन्य
चिन्त	चिन्तयित्वा	मंचिन्त्य।	मन्थ्	मथित्वा	संमथ्य
पत्	पतित्वा	निपत्य।	मुच्	मुक्त्वा	प्रमुच्य
			याच्	याचित्वा	प्रयच्य
			रुद्	रुदित्वा	प्ररुद्य।
			रुध्	रुद्ध्वा	अवरुध्य

धातु	वत्वा	त्यप्	धातु	क्त्वा	त्यप्
लभ्	लब्ध्वा	उपलभ्य ।	सिच्	सिक्त्वा	निषिच्य
लिख्	लिखित्वा	विलिख्य ।	सृज्	सृष्ट्वा	विसृज्य
वस्	उषित्वा	अध्युष्य ।	स्था	स्थित्वा	उत्थाय
शम्	शमित्वा	निशम्य	स्पृश्	स्पृष्ट्वा	उपस्पृश्य
इवस्	इवसित्वा	विश्वस्य ।	स्मृ	स्मृत्वा	विस्मृत्य
शास्	शासित्वा	अनुशिष्य	हन्	हत्वा	निहत्य
शी	शयित्वा	अधिशय्य	हस्	हसित्वा	विहस्य
श्रि	श्रित्वा	आश्रित्य ।	हृ	हृत्वा	सहृत्य
लप्	लप्त्वा	विलप्य ।	विश्	विष्ट्वा	प्रविश्य
सह्	सहित्वा	संसह्य			इत्यादि

### संस्कृत बनाओ :—

१—व्याध तरकस से बाण को लेकर मृग को मारता है । २—हे बालक ! तू सिंह को देखकर क्यों रोता है । ३—माता पिता को प्रणाम कर पुत्र चला गया । ४—पहाड़ पर चढ़कर हम बहुत सुन्दर दृश्य देखते हैं । ५—मैं कपड़े पहन कर अभी आपके साथ चलूंगा । ६—व्याध चावलों को बिखेर कर कबूतरों को मारेगा । ७—मैं प्रतिज्ञा करके कहता हूँ कि सत्य बोलूंगा । ८—महाराज दशरथ राम के लिए विलाप करके मर गये । ९—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पढ़ कर इन्स्पेक्टर हो गये । १०—उस ब्रह्मचारी ने अपने अध्ययन को समाप्त कर व्याह किया । ११—रावण को मार कर श्रीराम ने लङ्का का राज्य विभीषण को दिया । १२—चौर घर में घुस कर माल के साथ भाग गये । १३—दानी दरिद्रों को धन देकर अक्षय यश कमा कर स्वर्ग को जाते हैं । १४—श्रीराम लङ्का को जीत कर सीता के साथ घर लौटे । १५—वह धन इकट्ठा करके उसे दूसरों के लिए छोड़कर सन्यासी हुआ । १६—मैं पुस्तक लेकर आपके सामने पढ़ूंगा ।

### तुम् प्रत्यय

‘खाने को’ ‘खाने के लिए’ ‘पीने को’ ‘पीने के लिए’ आदि निमित्त अर्थ को प्रकट करने के लिए ‘तुमुन्’ (तुम्) प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे—

१. स्वेदसलिलस्नाताग्नि पुनः स्नानुम् (स्नानाय) अवातरन् । (कादम्बर्याम्)

(पसीने से नहाई हुई भी नहाने के लिए उतरी ।)

२. इच्छार्थक क्रिया के निमित्त में—

पिनाकपाणि पतिमाप्नुमिच्छति (शिवजी को वरना चाहती है) ।

३—समय शब्द के योग से—

रामयः खलु स्नानभोजन सेवितुम् (स्नान और भोजन का यह वक्त है)

४—शक्, जा, क्रम् आदि धातुओं के साथ—

न शक्नोति शिरोवरां धारयितुम् (कादम्बर्याम्)

(यह आदमी गरदन को नहीं उठा सकता) ।



१—समर्थद्योतक 'अलं' के योग में—

प्रासादास्त्वां नुलयितुमलम् (मेघदूते)

(महल तुम्हारा मुकाबिला करने का समय है) ।

२—हाम और मनस् के साथ तुम् (म् का लोप) ।

द्रष्टुमनाः जननी मेऽत्र समागता ।

(मेरी माता मुझे देखने यहाँ आई) ।

पुनरपि वक्नुकाम इव आर्यो लक्ष्यते (शकुन्तलायाम्) ।

(आप और कुछ कहने की इच्छा रखते हैं) ।

धातु

तुम्

धातु

तुम्

अच् (पूजा करना) अचितुम्

अर्ज् (कमाना) अर्जितुम्

अधि+इ (पढ़ना) अधितुम्

ईत् (देखना) ईदितुम् ।

कप् (कहना) कयितुम् ।

कृ (करना) कर्तुम् ।

क्री (खरीदना) क्रीतुम्

गै (गाना) गातुम्

त्यज् (छोड़ना) त्यक्तुम् ।

त्र (रक्षा करना) त्रितुम्

वृश् (वशना) वृष्टुम् ।

दृश् (देखना) दृष्टुम् ।

धाव् (दौड़ना) धावितुम् ।

प्र-णम् (अरुना) प्रणतुम् ।

नी (जैजाना) नेतुम् ।

नृत् (नाचना) नृतितुम् ।

पक् (पकाना) पकृतुम् ।

पा (पीना) पातुम् ।

प्रच्छ् (पूछना) प्रच्छुम् ।

पूजि (पूजा करना) पूजयितुम्

वक् (कहना) वक्तुम्

भञि (खाना) भञ्जितुम् ।

भिद् (तोड़ना) भिदुम्

भुज् (खाना) भुञ्जितुम् ।

भ्रस्ज् (भूतना) भ्रष्टुम्

भू (होना) भवितुम् ।

मुच् (छोड़ना) मुक्तुम् ।

मृ (भरना) मर्तुम् ।

यज् (यज्ञ करना) यष्टुम्

या (जाना) यातुम् ।

रप् (रमना) रन्तुम्

ग्रह् (पकड़ना) ग्रहीतुम् ।

चि (चुनना) चेतुम् ।

चिन्ति (सोचना) चिन्तयितुम् ।

छिद् (काटना) छेतुम् ।

जि (जोतना) जेतुम् ।

जा (जानना) जातुम् ।

जापि (सूचित करना) जापयितुम्

तृ (तैरना) तरितुम्, तरीतुम्

रुद् (रोना) रोदितुम् ।

आ-रुह् (चढ़ना) आरोढुम् ।

रुपि (स्थिर करना) रूपयितुम्

लम् (पाना) लब्धुम् ।

लिह् (चाटना) लोढुम्

वह (लेजाना) वोढुम् ।

वर् (बोना) वस्तुम्

गम् (शान्त करना) गमितुम्

गो (सीना) शयितुम् ।

शच् (पछताना) शोचितुम् ।

श्र् (सुनना) श्रोतुम् ।

सह् (सहना) सहितुम्, सोढुम्

सृज् (पैदा करना) स्रष्टुम् ।

स्वप् (सोना) स्वप्नुम् ।

मेव् (सेवा करना) सेवितुम् ।

धातु तुम्  
स्तु (स्तुतिकरना) स्तोतुम् ।  
स्था (हरना) स्थातुम् ।  
स्ना (स्नाना) स्नातुम् ।  
स्पृश् (छना) स्पृष्टुम् ।

धातु तुम्  
स्मृ (याद करना) स्मर्तुम् ।  
हृन् (मारना) हन्तुम् ।  
हृस् (हसना) हसितुम् ।  
हृ (चुराना) हर्तुम् ।

### संस्कृत बनाओ

१—माली फूल लेने के लिए बगीचे में जाता है । २—क्या तुम नई पुस्तक को पढ़ना चाहते हो ? ३—स्नान का यह समय है । ४—वह अपने शत्रुओं को मारना चाहता है । ५—मैं आज काशी जाना चाहता हूँ । ६—भरत श्रीरामजी को देखने लिए चित्रकूट गये थे । ७—वीर अभिमन्यु शत्रुओं से लड़ने को उद्यत हुआ । ८—कल तुम्हारा नीकर काम करने नहीं आया । ९—श्रीराम रावण को दण्ड देने के लिए लंका गये थे । १०—तुम गाने के लिए कहाँ जाओगे ? ११—इस भार को उठाने के लिए कौन आवेगा ? १२—आज मैं पुस्तकें खरीदने को जाऊंगा । १३—गोपाल ने हमें यहाँ पर भोजन खाने के लिए निमन्त्रण दिया । १४—उपदेश देने में सभी समर्थ हैं किन्तु उपदेश ग्रहण करने के लिये सभी विमुख हैं । १५—अध्यापक छात्रों को उपदेश देना चाहते हैं । १६—उसका तप समय लोगों को भस्म करने के लिए समर्थ था ।

### कृत्यप्रत्यय

‘जाना चाहिए’ ‘खाना चाहिए’ ‘पढ़ना चाहिए’ आदि अर्थ को बोध करने के लिए ‘संस्कृत में ‘तव्य’ ‘अनीय’ और ‘य’ प्रत्यय प्रयोग में आते हैं । ये प्रत्यय धातुओं में कर्म और भाववाच्य में होते हैं और कृत्य प्रत्यय कहलाते हैं । यथा—

(भाव में) मया अवश्यमेव गन्तव्यम् (मुझे अवश्य जाना चाहिए)

(कर्म में) आश्रममूर्गोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः (शकुन्तलायाम्)

(यह आश्रम का मृग है इसे नहीं मारना चाहिए नहीं मारना चाहिए)

धातुम् उचितम् —धातव्यम् —दानीयम्—देयम्

श्रातु योग्यम् —श्रातव्यम्—श्रवणीयम्—श्रव्यम्

स्थातुमर्चनम्—स्थातव्यम्—स्थानीयम्—स्थेयम्

धातु	तव्य	अनीय	धातु	तव्य	अनीय
आप्	आप्तव्य	आपनीय	गम्	गन्तव्य	गमनीय
इ	एतव्य	अयनीय	ग्रह	ग्रहीतव्य	ग्रहणीय
अधि + इ	अध्येतव्य	अध्ययनीय	जि	जेतव्य	जयनीय
ईक्ष्	ईक्षितव्य	ईक्षणीय	जि	जेतव्य	जयनीय
वन्द्	वन्दितव्य	वन्दनीय	जीव्	जीवितव्य	जीवनीय
कृ	कर्तव्य	करणीय	त्यज्	न्यक्तव्य	न्यजनीय
की	कृतव्य	क्रयणीय	दा	दानव्य	दानीय
अम्	क्षन्तव्य	क्षमणीय	पा	पानव्य	पानीय

धातु	तव्य	अनीय	धातु	तव्य	अनीय
दृश्	द्रष्टव्य	दर्शनीय	वह्	वाङ्मय	वहनीय
पठ्	पठितव्य	पठनीय	शी	शयितव्य	शयनीय
ज्ञा	ज्ञातव्य	ज्ञाननीय	सृज्	स्रष्टव्य	सर्जनीय
पत्	पतितव्य	पतनीय	सिक्	सेवितव्य	सेवनीय
वन्द्	वन्दितव्य	वन्दनीय	स्था	स्थातव्य	स्थानीय
भिद्	भेत्तव्य	भेदनीय	स्मृ	स्मर्तव्य	स्मरणीय
भृ	भर्तव्य	भरणीय	हन्	हन्तव्य	हननीय
याच्	याचितव्य	याचनीय	श्रु	श्रोतव्य	श्रवणीय

### संस्कृत बनाओ :-

१—प्रातःकाल उठकर ईश्वर की वन्दना करनी चाहिए । २—स्वच्छ भोजन और साफ पानी पीना चाहिए । ३—हमको अपना इतिहास और भूगोल जानना चाहिए । ४—सब को अपना कर्तव्य पालन करना चाहिए । ५—योग्य पुरुष को ही उपदेश देना चाहिए । ६—दुर्जन के साथ न ठहरना और न जाना ही चाहिए । ७—विद्याधियों को अपने अपने गुरुओं से सन्देह निवृत्त करना चाहिए । ८—सदा वही काम करना चाहिए जो कि करने के योग्य हो । ९—नीच पुरुष से भी उपदेश ग्रहण करना चाहिए । १०—मेरी बात पर आप को थोड़ा भी सन्देह नहीं करना चाहिए । ११—निर्धन मनुष्यों को देखकर नहीं हँसना चाहिए । १२—मृत्यु को देखकर हमें जरा भी नहीं डरना चाहिए । १३—हमें अब जल्दी अपना अध्ययन समाप्त करना चाहिए । १४—सदैव हमें दुष्टों का संग छोड़ना चाहिए । १५—सब को अपने माता पिता की सेवा करनी चाहिए ।

### तद्धितप्रकरण

शब्दों के परे जिन प्रत्ययों के लगाने से फिर शब्द बनते हैं उनको तद्धित कहते हैं और जो शब्द बनते हैं वे तद्धितान्त शब्द कहलाते हैं । तद्धित प्रत्यय बहुत हैं । उनमें से हम उन प्रत्ययों को लिखते हैं जो अधिकतर प्रयुक्त होते हैं ।

षण्—पृथायाः अपत्यं पार्थः, शिव-शैवः, पुत्र-पौत्रः-पाण्डुः, पाण्डवः रघु-राघव इत्यादि ।

ध्वण्—गर्गस्थापत्यं गार्ग्यः, चाणक्यः, दिति—दैत्यः, अदिति—आदित्यः, माधवः-माधव्यः ।

षायनण्—वदरस्यापत्यं वादरायणः, नर-नारायणः, दक्षः-दाक्षायणः, अश्वलायनः ।

षिण्—रशरथस्यापत्यं दाशरथिः, मुमिना—मोमिनिः, द्रोण-द्रोणिः, शूर-शौरिः ।

घेयण्—गंगायाः अपत्यं गाङ्गेयः, विनता—वैननेयः, राधा राधेयः, भगिनी भगिनेयः ।

तदधीते तद्वेद—(उसको पढ़ता है या जानता है) नक्षत्रधीन वेनि वा ताकिकः, ऐतिहासिक, पीराणिक, नैयायिक, वैदिक, (षिण्) वैयाकरणः (षण्) ।  
तेन प्रोक्तम्—(उसने कहा है) ऋणिणा प्रोक्तम्-आर्ष, मानवं (घण्) मानवीयं, पाणिनीयं, वाल्मीकीयं (घेयण्) ।

तत्र साधु.—(उस में अच्छा है) सभायां साधुः सभ्यः, ब्रह्मण्यः (व्यण्) सामाजिकः, सग्रहः—सांग्राहिकः (विकण्) आतियेयः (व्यण्) ।

स्वार्थे—(अपने अर्थ में) बन्धुरेव बान्धवः, रक्ष एव राक्षसः, प्रज्ञ एव प्राज्ञः (षण्) कष्टणा एव काष्ठर्ण्य, सैन्यं, सौख्यं, सामोप्यम् (व्यण्) ।

तस्य भावस्त्रतली—भावार्थ में त्व और तल् प्रत्यय होते हैं । जैसे—प्रभोभावः प्रभुत्वं, प्रभुता; गुरुत्वं गुरुता; लघुत्वं, लघुता ।

अस्त्यर्थे मनुप्—अस्ति (है) अर्थ में शब्दों के परे मनुप् (मत् या वत्) प्रत्यय होता है—जैसे मतिरस्यास्तीति मतिमान्, श्रीमान्, बुद्धिमान्, अशुमान् इत्यादि ।

धाच् संख्यायां विधार्थे—विधार्थ (प्रकार) बोध होने से शब्द के उत्तर में धाच् प्रत्यय होता है । जैसे—एका विधा एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा, षड्धा और षोढा ।

थाल् प्रकारे तृतीयायाः—प्रकार अर्थ में सर्वनाम के परे तृतीया विभक्ति में थाल् प्रत्यय होता है । जैसे—सर्वे प्रकारैः सर्वथा, येन प्रकारेण यथा तथा, उभयथा, अन्यथा इत्यादि ।

पञ्चमीसप्तम्योः तसिल् वा—पञ्चमी और सप्तमी विभक्ति के स्थान में तसिल् प्रत्यय होता है । यथा—गृहात् वा गृहे—गृहतः । तस्मात् वा तस्मिन्—ततः यतः, अतः, कुतः, इतः, अस्मत्तः, सर्वतः, अग्रतः, पूर्वतः इत्यादि ।

सप्तम्याश्चल् वा सर्वनाम्नः—युष्मदस्मद् शब्द भिन्न सर्वनाम और बहुशब्द की सप्तमी विभक्ति में चल् प्रत्यय होता है । जैसे—सर्वस्मिन् सर्वत्र, कुत्र, अत्र, यत्र, बहुत्र इत्यादि । अन्यत्र पञ्चमी विभक्ति होती है, जैसे—इदम्—इतः, (पंचमी) इह (सप्तमी)

सर्वैकान्यकियत्तदां काले दा—काल बोध होने से सर्व, एक, अन्य, किम्, यद् और तद् शब्द की सप्तमी विभक्ति में विकल्प से दा प्रत्यय होता है । जैसे—एकदा, सर्वदा (सदा) अन्यदा, किम् आदि के परे 'हि' भी होता है । कदा (कहि) यदा (यहि) तदा (तहि, तदानीम्) । इदम् से 'इदानीम्' होता है ।

किमः चिञ्चनौ विभक्त्यन्तात्—अनिश्चय अर्थ बोध होने से विभक्तियुक्त किम् शब्द से परे चित् और चन प्रत्यय होते हैं । जैसे—कश्चित्, कञ्चित्, केनचित्, किञ्चित्, केचन, कस्मैचित्, कुत्रचित्, कुतश्चन, कदाचित् इत्यादि ।

भवे कालाव्ययेभ्यः तनष्—उत्पत्ति अर्थ बोध होने से कालवाचक अव्यय के परे तनप् (तन) प्रत्यय होता है । जैसे, अद्यभवम्—अद्यतनं, प्रातस्तनं, सायन्तनं, चिरन्तनं, पुरातनं, इदानीतनम् इत्यादि ।

नोट—उत्पन्न अर्थ में तल् आदि प्रत्ययान्त शब्दों के परे त्व प्रत्यय होता है । जैसे—कुत्र भवः कुत्रत्व, तत्रत्य, अत्रत्यः ।

एद्युस् पूर्वादि रहन्ति—दिन बोध होने से पूर्वं आदि शब्दों के उत्तर एद्युस् प्रत्यय होता है । जैसे—पूर्वस्मिन्नहनि पूर्वेषु, परेषु, अन्येषु, अपरेषु, उभयेषु ।

प्रमाणे मात्रच्—परिमाण अर्थ में शब्द के उत्तर में मात्रच् प्रत्यय होता है । जैसे—हस्तः प्रमाणमस्य हस्तमात्रं, तालमात्रं, जानुमात्रम् आदि ।

## संस्कृत बनाओ :—

१—पृथा के पुत्र ने जयद्रथकी मारने के लिए भीषण प्रतिज्ञा की। २—लव और कुश दशरथ जी के पुत्र के पुत्र थे। ३—दिति और अदिति के पुत्रों में घोर संग्राम हुआ। ४—जब दशरथ के पुत्र राम बन जाने लगे तो सुमित्रा के पुत्र बड़े व्याकुल हुए कि कहीं राम मुझे घर ही न छोड़ जायें। ५—समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए। ६—तुम कहीं से आ रहे हो और कहा जा रहे हो? ७—मैं इस कार्य को उस समय न कर सका पर इस समय कर दूंगा। ८—जहाँ भी देखिए सब जगह आनन्द छाया है। ९—उसने पाँच वर्ष तक पाणिनीय के व्याकरण को पढ़ा और अब स्वयं भी व्याकरण को जानने वाला है। १०—पुराने जमाने में लोग बड़े सत्यवादी होते थे।

## स्त्रीप्रत्ययप्रकरण

पुल्लिङ्ग शब्दों को स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं। जैसे—टाप् (आ) डीप् (ई)। इस प्रकरण के सभी कार्य स्त्रीलिङ्ग में समझने चाहिए।

१—अकारान्त शब्दों के आगे स्त्रीलिङ्ग में टाप् (आ) होता है। जैसे, अनल—अचला, कृपण—कृपणा, सरल—सरला, प्रथम—प्रथमा, अनुकूल—अनुकूला, पूर्व—पूर्वा, निपुण—निपुणा, अज—अजा (यकूरी), काकिला, अश्वा, चटका, मूषिका, बाला, वत्सा, ज्येष्ठा, पुत्रिका, वैश्या, क्षत्रिया, शूद्रा इत्यादि।

२—अक भागान्त शब्दों के उत्तर 'आ' प्रत्यय होने में ककार के पूर्व अकार का हकार होता है। जैसे, पाचक—पाचिका, माधक—माधिका, गायक—गायिका, बोधक—बोधिका इत्यादि।

३—गौर प्रभृति शब्दों के परे स्त्रीलिङ्ग में ईप् प्रत्यय होता है।

ईप् प्रत्यय होने में पूर्व के आकार का लोप हो जाता है। जैसे, गौर-गौरी, किशोरी, कुमारी, तरुणी, सुन्दरी, पिनामही, मातामही, नदी, स्थली, तटी, कदली, इत्यादि।

४—जाति बोध होने में जातिवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे, मिह—सिही, मृगी, व्याघ्री, भल्लुकी, हरिणी, मान्सी, ब्राह्मणी, गोपी, महिषी, शूकरी, गर्दभी, शृगाली, विडाली, घोटकी, हमी, सारसी इत्यादि।

५—ऋकारान्त शब्दों के उत्तर ईप् प्रत्यय होता है। जैसे, कर्तृ-कर्त्री, दात्री, जनयित्री, शिक्षयित्री इत्यादि।

नोट—स्वम आदि शब्दों के उत्तर 'ईप्' प्रत्यय नहीं होता है। जैसे—स्वसा, माना, दुहिता, ननान्दा, तिस्व चन्म।

६—नकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में 'पि' प्रत्यय होता है। जैसे, मालिन्—मालिनी, मानिनी, कामिनी, गृणिनी, मनोहारिणी, नपस्विनी, अधिवारिणी इत्यादि।

नोट—स्त्रीलिङ्ग में संख्यावाचक नान्त शब्दों और धन् भागान्त शब्दों के उत्तर ईप् प्रत्यय नहीं होता। जैसे—पञ्च, षष्ठ, अष्ट, नव, दश, नवा मीमा, पामा, सुदामा, अहिमा इत्यादि।



७—जिन में से उकार और ऋकार का लोप होता है उन प्रत्ययों (मनुप्, वनुप्, इयुप्, तवतु, शतु) से बने हुए शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में ईकार होता है। जैसे उकार लोप—भवत्—भवती, श्रामत्—श्रीमती, बुद्धिमत्—बुद्धिमती, लज्जावत्—लज्जावती। ऋकार लोप—रुदन्—रुदती, जानत्—जानती, गृह्णत्—गृह्णीती इत्यादि।

८—स्वादि, दिवादि, और चुरादिगणोय धातुओं से तथा णिजन्त से शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं उन शब्दों से 'ई' प्रत्यय करने पर 'त्' के पूर्व न् लग जाता है। जैसे—गच्छत्—गच्छन्ती, वदत्—वदन्ती, दीव्यत्—दीव्यन्ती, नृत्यत्—नृत्यन्ती, चिन्तयत्—चिन्तयन्ती, भक्षयत्—भक्षयन्ती, दर्शयत्—दर्शयन्ती, कारयत्—कारयन्ती इत्यादि।

९—तुदादिगणोय धातुओं से और अदादिगणोय आकारान्त धातुओं से शतृ प्रत्यय करने पर जो शब्द बनते हैं उनके आगे स्त्रीलिङ्ग में 'ई' प्रत्यय करने से विकल्प से त् के पूर्व न् लगता है। जैसे—इच्छत्—इच्छन्ती, इच्छती। पृच्छत्—पृच्छन्ती, पृच्छती। स्पृशत्—स्पृशन्ती, स्पृशती। यात्—यान्ती, याती। भात्—भान्ती, भाती।

१०—ट्कारेत् और प्कारेत् प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के परे स्त्रीलिङ्ग में 'ई' होता है। जैसे—टित्—गान—गानी (ल्युट्) कर्मकर—कर्मकरी, अर्थकरी, निशाचरी, भयङ्करी (अट्) द्वयी, त्रयी, चतुष्टयी, दयामयी (तयट् आदि) धित्—वापिक—वापिकी, लौकिक—लौकिकी (षिकृण्) मानवी, मैथिली, पार्वती, पोत्री (षण्) कोदूशी, एतादृशी, तादृशी (षड्) भागनयी (षियण्) इत्यादि।

११—बहुव्रीहि समास में अवयवाचक अकारान्त शब्दों के उत्तर स्त्रीलिङ्ग में विकल्प से 'ई' होता है। जैसे—चन्द्रमुखी, चन्द्रमूला। सुकेली, सुकेशा। कुशाङ्गी, कुशाङ्गा। विम्बोष्ठी, विम्बोष्ठा इत्यादि।

१२—जाया (स्त्री) अर्थ में जातिवाचक अकारान्त शब्दों के आगे 'ई' होता है। जैसे—ब्राह्मणस्य जाया ब्राह्मणी, शूद्री, गोपी इत्यादि। पालक शब्द आगे होने में नहीं होता। जैसे—गौरालिका, पशुपालिका इत्यादि।

१३—जाया अर्थ में इन्द्र, षरुण, भव, शर्व, रुद्र, मृड और ब्राह्मन् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में आनीप् प्रत्यय आता है। जैसे—इन्द्रस्य जाया इन्द्राणी, षरुणानी, भवानी, शर्वाणी, रुद्राणी, मृडानी और ब्राह्मणी। (ब्राह्मन्—शब्द के 'न्' का लोप हो जाता है)।

१४—कृत् के ह्रस्व इकारान्त शब्द में परे विकल्प से 'ई' प्रत्यय होता है जैसे—रात्रिः, रात्री। श्रेणिः, श्रेणी। राजिः, राजी। भूमिः, भूमी, इत्यादि किन् प्रत्ययान्त में नहीं होता। जैसे—मतिः, गतिः, स्थितिः इत्यादि।

१५—गुणवाचक उदन्त शब्द से परे विकल्प से 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे मृष्टी, मृदुः। पट्वी, पटुः। साध्वी, साधुः। गुर्वी, गुरुः इत्यादि।

कुछ जानने योग्य स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गवय	गवयी	मातुल	मातुलानी मातुली
हय	हयी		
मत्स्य	मत्सी		

मनुष्य	मनुषी		
शूद्र (जाति)	शूद्रा	क्षत्रिय (जाति)	{ क्षत्रिया
„ (पत्नी)	शूद्री		{ क्षत्रियाणी
राजन्	राज्ञी	„ (पत्नी)	क्षत्रियी
		उपाध्याय (पत्नी)	{ उपाध्यायानी
युवन्	{ युवती	„ (अध्यापिका)	{ उपाध्यायी
„	{ युवतिः	आचार्य (पाठिका)	{ उपाध्याया
„	{ यूनी	आचार्य (पत्नी)	{ आचार्या
श्वन्	{ शुनी	हिमम्	{ हिमानी
		अरण्यम्	{ अरण्यानी
मघवन्	{ मघोनी	सखि	{ सखी
	{ मघवती	कुरु	{ कुरुः
प्राच (पूर्व)	प्राची	श्वशुर	{ श्वशूः
प्रत्यच् (पच्छिम)	प्रतीची	अर्य (वैश्य)	{ अर्याणी
अवाच् (दक्खिन)	अवाची	„ (जाति)	{ अर्या
तस्थिवस्	तस्थुषी	अर्य (पत्नी)	{ अर्यी
विद्वस्	विद्वुषी	पति.	{ पत्नी
सूर्य	सूरी		
चातुर्य	चातुरी		

## संस्कृत वनाओः—

१—उस आवसी की स्त्री अच्छे लक्षणो वाली है। २—धनवाली वनियो की स्त्री गरीबों को कपड़े दे रही है। ३—उम नाचने वाली स्त्री ने अपने चातुर्य से जनता को प्रसन्न कर दिया। ४—उम बकरी को देख कर शेर उस पर झपटा। ५—उस पकाने वाली स्त्री ने अच्छा खाना बनाया। ६—आचार्य की स्त्री छात्राओं को वीर पति को ही चाहती है। ७—वह कुम्हार की स्त्री घड़े बेच रही है। ८—रामचन्द्र जी का विवाह चन्द्र के सवश मुख वाली सीता के साथ हुआ। ९—कुम्हार की आंख ऐसी आंख वाली स्त्री अपने पति के वियोग के कारण निरन्तर रो रही है। १०—निशाचर की स्त्री छोटे बच्चों को खा डालती है। ११—महाराज की स्त्री रथ में बैठ कर घूमने जा रही है। १२—ऐसी पतली कमरवाली स्त्री मैंने पहले कभी नहीं देखी। १३—कम उम्र वाली लड़की खेल रही है। १४—उस तप करने वाली पार्वती ने ऐसा घोर तप किया कि शिवजी की समाधि भंग हो गई। १५—उस बुद्धि वाली, लज्जाशील लड़की ने दो पारितोषिक पाये। १६—मेरी बहिन की लड़की की उम्र अब सात साल की है। १७—उस ग्वाले की स्त्री ने पाँच गायें दुही। १८—उस वन में पति के वियोग से विलाप करती हुई दमयन्ती ने एक अजगर देखा।

### समासप्रकरण

कारक प्रकरण में विभक्तियों का प्रयोग बनाया गया है, पर कभी कभी शब्दों की विभक्तियों को हटा करके शब्द छोटे कर दिये जाते हैं और एक या दो से अधिक विभक्ति रहित शब्द एक साथ जोड़ दिये जाते हैं। इस एक साथ जोड़ने को ही समास कहते हैं।

समास का अर्थ है 'संक्षेप' या 'घटाना' अर्थात् दो या अधिक शब्दों को इस प्रकार साथ रख देना कि उनके आकार में कुछ कमी भी हो जाय और अर्थ पूरा पूरा निकल जाय। जैसे—

नराणां पतिः नरपतिः

यहाँ नरपति का वही अर्थ जो 'नराणां पतिः' का, परन्तु दोनों शब्दों को साथ कर देने से 'नराणाम्' शब्द के विभक्तिसूचक प्रत्यय (आणाम्) का लोप हो गया और 'नरपतिः' शब्द 'नराणां पति' से छोटा हो गया।

जब समास वाले शब्द को तोड़ कर पहले का रूप दिया जाता है तो उसे विग्रह कहते हैं। विग्रह का अर्थ है 'टुकड़े टुकड़े करना', जैसे—'सभापतिः' का विग्रह है 'सभायाः पतिः'।

समास के लिए संस्कृत के व्याकरणों ने नियम बना दिए हैं। ऐसा नहीं कि जिस शब्द को चाहा दूसरे शब्द के साथ जोड़ दिया।

समास के छः भेद हैं:—

- १—अव्ययीभाव
- २—तत्पुरुष
- ३—कर्मधारय (तत्पुरुष का भेद)
- ४—द्विगु (तत्पुरुष का भेद)
- ५—बहुव्रीहि
- ६—द्वन्द्व

### अव्ययीभावसमास

अव्ययीभाव समास में पहला शब्द अव्यय रहता है और दूसरा शब्द संज्ञा, दोनों मिलाकर अव्यय हो जाते हैं। अव्ययीभाव समास वाले शब्द के रूप नहीं चलते। अव्ययीभाव समास के अन्तिम शब्द का वही रूप होता है जो नपुंसकलिङ्ग के एक वचन में। इस समास में प्रायः पूर्व पदार्थ प्रधान रहता है।

शक्तिमन्तिक्रम्य = यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), कृष्णस्य समीपे = उपकृष्णम् (कृष्ण के पास), निर्विघ्नम् (विघ्न का अभाव), अनुरथम् (रथ के पीछे), सहरिः (हरि की तरह), आसमुद्रम् (समुद्र तक), अधिगृहम् (घर में), परोक्षम् (आँख से परे), ग्रामाद् बहिः = बहिर्ग्रामम् (गाँव से बाहर), उपशरदम् (शरत् ऋतु के पास), उपनिरम् (घाणी के पास) इत्यादि।

### तत्पुरुषसमास

जिन दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी विभक्तियाँ छिपी रहती हैं उनमें तत्पुरुष समास होता है।

जिस समास में उत्तरपद प्रधान हो उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा:—'राजः पुरुषः'—'राजपुरुषः' इस में पुरुष पद प्रधान है।

द्वितीया—यथा, दुःख-श्रितः=दुःखश्रितः। विस्मयम्-आपन्नः=विस्मयापन्नः। शिवम्-आश्रितः=शिवाश्रितः। शरण-प्राप्तः=शरणप्राप्तः इत्यादि।

तृतीया—सुखेन-युक्तः=सुखयुक्तः। खड्गेन-हतः=खड्गहतः। अग्निना-दग्धः=अग्निदग्धः। मदेन-शून्यः=मदशून्यः। विद्या-हीनः=विद्याहीनः इत्यादि।

चतुर्थी—धनाय-लोभः=धनलोभः। भूनाय-बलिः=भूतबलिः। गवे-हितम्=गोहितम् इत्यादि।

पंचमी—चोरात्-भयम्=चौरभयम्। वृक्षात्-पतितः=वृक्षपतितः। रोगात्-मुक्तः=रोगमुक्तः इत्यादि।

षष्ठी—राज्ञः-पुरुषः=राजपुरुषः। रजतस्य-पत्रम्=रजतपत्रम्। देवस्य-पूजा=देवपूजा। सुखस्य-भोगः=सुखभोगः। देवस्य-मन्दिरम्=देवमन्दिरम् इत्यादि।

सप्तमी—युद्धे-निपुणः=युद्धनिपुणः। जले-मग्नः=जलमग्नः। आतपे-शुष्कः=आतपशुष्कः। कार्ये-दक्षः=कार्यदक्षः इत्यादि।

### कर्मधारयसमास

विशेषण और विशेष्य का जो समास होना है उसे कर्मधारय समास कहते हैं, किन्तु विशेषण पूर्व में रहता है। यथा—कुत्सितः पुरुषः कुपुरुषः (बुरा आदमी) कुत्सितः छात्रः=कुछात्रः (बुरा विद्यार्थी) दीर्घ-नयनम्=दीर्घनयनम्। नीलम्-उत्पलम्=नीलोत्पलम्। सुन्दरः-पुरुषः=सुन्दरपुरुषः। भूषितः-बालकः=भूषितबालकः। सुन्दरी-नारी=सुन्दरनारी। महान्-चाप्य देवः=महादेवः। महत्-फलम्=महाफलम्। दुःखमेव-समुद्रः=दुःखसमुद्रः। कमलमेव मुखम्=कमलमुखम्। घन इव श्यामः=घनश्यामः। नवनीतमिव कोमलम्=नवनीतकोमलम्। पुरुषः व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः, नरशार्ङ्गलः अधरपल्लवः, नृसिंहः। चन्द्रसदृशं मुखम्=चन्द्रमुखम्। कमलचरणम् इत्यादि।

### द्विगुसमास

यदि कर्मधारय समास के पूर्व कोई संख्यावाचक शब्द हो तो उसे द्विगुसमास कहते हैं। यथा—समाहार में—पञ्चानां गवां समाहारः=पञ्चगवम्। पञ्चपात्रम्। त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी, त्रयाणां भुवनानां समाहारः=त्रिभुवनम्। शतानाम् अवदानां समाहारः=शताव्दी। तद्धितार्थे में—पञ्चभिः गोभिः क्रीतः पञ्चगुः। पञ्चमु कपालेषु संस्कृतः=पञ्चकपालः। उत्तरपद में—पञ्च हस्ताः प्रमाणमस्य=पञ्चहस्तप्रमाणः। द्वाभ्यां मासाभ्यां जातः=द्विमासजातः इत्यादि।

### बहुव्रीहिसमास

जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता हो अर्थात् जो-जो पद समस्त हों उनका स्वतन्त्र अर्थ बीच न होकर अन्य किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध करके वे शब्द किसी अन्य शब्द के विशेषण की तरह काम करते हों उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि के चार भेद हैं—(१) समानाधिकरण (२) तुल्ययोग (३) व्यधिकरण और (४) व्यतिहार।

१-समानाधिकरण—जहाँ दोनों पदों में समान विभक्ति हो। यथा—निर्गन्तं भयं यस्मात् सः=निर्गन्तभयः (पुरुषः)। दत्त धनं यस्मै स=दत्तधनः (भिक्षुः)। आरूढः कपिः यं सः=आरूढकपिः (वृक्षः)। पराजिताः रिपवो येन सः=पराजितरिपुः (राजा)। महान् आशयो यस्य सः=महाशयः (सत्पुरुषः)। निर्मलाः आपो यस्मिन् तत्=निर्मलार्पणं (सरः)।

२-तुल्ययोग—इसमें सह शब्द का तृतीयान्त पद से समास होता है। यथा—यान्धवैः सहितः=सदान्धवः या सहयान्धवः। अनुजेन सहितः=मानुजः या सहानुजः। विनयेन सह विद्यमानम्=सविनयम्।

३-व्यधिकरण—जिसमें भिन्न-भिन्न विभक्तिवाले पदों का समास हो। यथा—पुण्यं मतिः यस्य सः=पुण्यमतिः। धनुः पाणी यस्य सः=धनुष्पाणि। कुम्भान् जन्म यस्य सः=कुम्भजन्मा।

४-व्यतिहार—यह समास तृतीयान्त और सप्तम्यन्त पदों के साथ होता है और युद्ध का बोधक है। यथा—केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं—केशाकेशि। दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्येवं युद्धं प्रवृत्तं—दण्डाददण्डि। मुष्टामुष्टि इत्यादि।

### द्वन्द्वसमास

जब दो या अधिक संज्ञाएँ इस तरह जुड़ी रहती हैं कि उनके बीच में 'च' (और) छिपा रहे तो उनमें 'द्वन्द्वसमास' होता है। द्वन्द्वसमास तीन प्रकार का है—(१) इतरेतर (२) समाहार और (३) एकशेष।

१—इतरेतर—जिसमें प्रत्येक पद के वचनानुसार समस्त पद के वचन हों। यथा—दिनञ्च यामिनी च=दिनयामिन्यो। कन्दश्च भूलं च फलं च=कन्दमूलफलानि। माता च पिता च=मातापितरौ। सूर्यश्च चन्द्रमाश्च=सूर्याचन्द्रमसौ।

२—समाहार—जहाँ अनेक पदों का समाहार (एक जगह ठहरना) बोध हो। समाहार द्वन्द्व समास में समस्त पद में नुंसकलिङ्ग का एक वचन होता है। यथा—हस्ती च पादौ च=हस्तपादम्। भेरी च पटहश्च अनयोः समाहारः=भेरीपटहम्। हस्तिनश्च अश्वाश्च एतेषां समाहारः=हस्त्यश्वम्। मयूरा च पाटलीपुत्रश्च=मयूरा-पाटलीपुत्रम्। दधिवृतम्। गोमहिषम्। अहश्च दिवा च=अहदिवम्। किन्तु, कुशश्च लवश्च=कुशलबी। अहश्च रात्रिश्च=अहोरात्रः।

३—एकशेष—एक विभक्ति वाले समस्त अनेक समानाकार पदों में जहाँ एक ही पद शेष रह जाय। यथा—स च स च=तौ। वृक्षश्च वृक्षश्च=वृक्षाः। ब्राह्मणश्च ब्राह्मणी च=ब्राह्मणी। हंसी च हंसश्च=हंसी। पुत्रश्च दुहिता च=पुत्री। माता च पिता च=पितरौ। श्वश्रूश्च श्वशुरश्च=श्वशुरी इत्यादि।

### अन्यसमास

नञ्-सुबन्त पद के साथ होता है। व्यञ्जन पर रहने पर 'अ' और स्वर पर रहने पर 'अन्' हो जाता है। यथा—न प्रिय=अप्रियः। न मुखम्=असुखम्। न उपकारः=अनुपकारः इत्यादि।

मध्यमपदलोपी—गह वर्मधारय या बहुव्रीहि में होता है। यथा—कर्मधारय—सिंह-



चिह्नितम् श्रमनम्—मिहासनम् । देवपूजको ब्राह्मणः=देवब्राह्मणः । बहुब्रीहि—चन्द्र  
इव आनन यस्याः ना—चन्द्रानना । कण्ठे स्थितः कालो यस्य सः=कण्ठकालः ।

अलुक् समास—जिसमें पूर्व पद की विभक्ति का लोप न हो । यथा—मनसाकृतम् ।  
परस्मैपदम् । दूराद्यामनः । वाचोयुक्तिः । अन्तेवासी, पङ्केतम् इत्यादि ।

संस्कृत वनाओ :—

(१) देवप्रयाग के पास गंगा और अलकनन्दा का संगम है । (२) कंजूस का धन तीन प्रकार से नष्ट होता है । (३) धार्मिक मरते-मरते भी धर्म की रक्षा करते हैं । (४) मैं हर रोज स्कूल जाता हूँ । (५) संसार के सच्चे मार्ग पर चलने वाला मनुष्य साधु कहलाता है । (६) महात्मा पुरुष सुख से युक्त जीवन को नहीं चाहते । (७) शरण में आये हुए को नहीं मारना चाहिए । (८) व्याध के तीर से विधा हुआ मृग मर गया । (९) जो तुम्हारे घर से आदमी आया है उसको खाना खिलाओ । (१०) तुम्हें भूतों के लिए बलियों क्यों नहीं रखी (११) तुम्हारे जैसा मनुष्य तीनों लोकों में नहीं है । (१२) ईश्वर की भक्ति मनुष्य के जीवन को सफल कर देती है । (१३) क्षण क्षण जीवन का काल घटता जाता है । (१४) उस के पिता माता बड़े धर्मात्मा हैं । (१५) महाराज अशोक का राज्य हिमालय तक विस्तृत था । (१६) संसार के माता-पिता पार्वती और परमेश्वर हैं । (१७) जो सभा में पण्डित हो वही असली पण्डित है । (१८) मैंने गुरु जी के कमल समान चरणों को नमस्कार किया ।

संज्ञावाचक शब्दों पर विचार

१ साधारण तौर पर संज्ञाएँ तीन प्रकार की हैं—

१. व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ :—कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ ऐसी हैं जो हिन्दी और संस्कृत में एक समान रहती हैं, उन्हें तत्सम कहते हैं । जैसे—

(१) काश्मीर देशो भूस्वर्गः=काश्मीर देश संसार में स्वर्ग है ।

(२) प्रयागस्य आम्रलानि प्रसिद्धानि=इलाहाबाद के अमरूद मशहूर हैं ।

(३) चुनारस्य मृत्पात्राणि भारते विख्यातानि सन्ति=चुनार के मिट्टी के बर्तन हिन्दुस्तान में मशहूर हैं ।

(४) काश्याः कोशयशाटिका जगद्विख्याताः=काशी की रेशमी साड़ियाँ संसार में मशहूर हैं ।

(५) यूरोपीयप्रदेशात् वायुयानेन समाचारपत्राणि भारतमायान्ति=यूरोप से हवाई जहाज में समाचारपत्र हिन्दुस्तान को आते हैं ।

(६) हिमालयाद् गङ्गा निर्गच्छति=हिमालय से गंगा निकलती है ।

(७) महेच्छोदारो प्राचीनतमानि वस्तूनि भूम्या निर्गतानि=महेच्छोदार में जमीन के नीचे से बहुत पुरानी चीजें निकली हैं ।

(८) शान्तिनिकेतनं बोलपुरविश्रामस्थानस्य समीपम्—शान्तिनिकेतन बोलपुर स्टेशन के नजदीक है ।

कुछ व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हिन्दी में ऐसी हैं जिनका संस्कृत में अनुवाद थोड़ा सा परिवर्तन करने पर होता है । जैसे—

(१) पुरा मौर्यवंशोद्भवानां राज्ञां राजधानी पाटलीपुत्रमासीत्=प्राचीनकाल में पटना नगर मौर्य राजाओं की राजधानी था।

(२) वङ्गदेशीयास्तण्डुलप्रिया भवन्ति=बंगाली चावल बहुत पसन्द करते हैं।

(३) जयपुरे सङ्गमरमरस्य चित्रकर्म प्रसिद्धम्—जयपुर में सगमरमर की चित्रकारी मशहूर है।

(४) आगरानगरे यमुनातटे ताजमहलं जगद्विख्यातम्=आगरा में यमुना के तट पर ताजमहल संसार में मशहूर है।

(५) सिन्धोरत्यधिकं जलम्=सिन्धु नदी में बहुत ज्यादा पानी है।

(६) रणजीतसिंहः पञ्चनदस्य शासक आसत्=रणजीतसिंह पञ्जाब का शासक था।

(७) गङ्गदेशे श्रीवदरीशस्य मन्दिरमस्ति=गढ़वाल में श्रीवद्रीनाथजी का मन्दिर है।

(८) पुरा तक्षशिलास्थाने जगद्विख्यातो विश्वविद्यालय आसीत्=पुराने जमाने में तक्षशिला में अतिविख्यात यूनिवर्सिटी थी।

(९) शतद्रुः, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा, वितस्ता, सिन्धुञ्च पञ्चनदे विद्यन्ते=सतलुज, व्यास, रावी, चनाव जेहलम और सिन्ध नदी पञ्जाब में हैं।

हिन्दी भाषा में कुछ ऐसे शब्द हैं जो उसमें दूसरी भाषाओं से आये हैं और कुछ ऐसे हैं जो संस्कृत से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखते उनका संस्कृत-अनुवाद ज्यों का त्यों करना चाहिए। किन्तु कुछ ऐसे शब्द भी हैं जो विदेशी भाषा और संस्कृत से कोई सम्बन्ध न रखते हुए भी संस्कृत लेखकों में प्रचलित हो गये हैं उनको बदलने में कोई क्षति नहीं। जैसे—

(१) कलकत्ता नामकं भारतविख्यातं नगरम्=कलकत्ता भारत में मशहूर है।

(२) भोन्दूमलः प्रयागे प्रसिद्धः वणिक्=भोन्दूमल इलाहाबाद में प्रसिद्ध सौदागर है।

(३) एस० एम० रज्जिकस्य कानपुरे चर्मव्यापारोऽस्ति=एस० एम० रज्जिक का कानपुर में चमड़े का व्यापार है।

(४) जापानस्य व्यापारविषये महती उन्नतिरस्ति=जापान ने व्यापार में बड़ी उन्नति की है।

(५) यवनदेशीयः सम्राट् अलक्षेन्द्रो भारतमाजगाम=ग्रीक सम्राट् अलेग्जेंडर भारत में आया था।

(६) मानचैस्टरात् भारतमायातिस्म वस्त्रम्—मानचैस्टर से कपड़ा भारत को आता था।

(७) जविस्कोनाम्नः नामानाम्नश्च मलयोर्मल्लयुद्धमभवत्=जविस्को और नामा ने कुश्ती लड़ी।

(८) कुछ संज्ञाएं जातिवाचक हैं। जैसे—मनुष्य, राजा, प्रजा, पशु, पक्षी, पुरुष, स्त्री इत्यादि। इनके पर्याय शब्द भी इसके स्थान पर रखे जा सकते हैं।

जैसे—स एव राजा (नृपतिः, भूपतिः) यस्य प्रजायाः सुखम्=राजा वही है जिसकी प्रजा सुखी है।

परन्तु बिडला, मालवीय, सैय्यद आदि शब्द संस्कृत-अनुवाद में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं की तरह रखे जाते हैं।

जैसे—विडलोपाह्वः धनश्यामदासः=धनश्यामदास बिडला।

कुछ शब्द देशी या विदेशी आजकल संस्कृत में कल्पित रूप से प्रचलित हो गए हैं, उनका अनुवाद प्रचलित शब्दों में होगा। जैसे—

(१) भारतमन्त्री=सेक्रेटरी आफ स्टेट फार इण्डिया।

(२) प्रधानमन्त्री=प्राइम मिनिस्टर।

(३) व्यवस्थापिकापरिषद्=लेजिस्लेटिव काउन्सिल।

(४) सभा=असेंबली।

(५) विषयनिर्धारिणी सभा=सब्जेक्टिव कमेटी।

(६) कार्यकारिणी सभा=एग्जिकुटिव कमेटी।

(७) मण्डलम्=जिला।

(८) प्रदेशः=प्राविंस।

(९) वाष्पयानम्=रेलगाड़ी।

(१०) जलयानम्=जहाज।

(११) वायुयानम्=हवाई जहाज।

(१२) निरीक्षकः=इन्स्पेक्टर।

(१३) विद्यालयः=कालिज।

(१४) विश्वविद्यालयः=यूनिवर्सिटी।

(१५) द्विचक्रिका=बाइसिकल।

(१६) जलान्तरितयानम्=सबमैरीन (पनडुब्बी)।

परन्तु मोटर के लिए “मोटरयानम्” कोट के लिए “कोटनामकं वस्त्रम्” ही लिखना ठीक है।

(३) भाववाचक संज्ञाएं वे हैं जिनसे किसी जाति आदि संज्ञाओं के भाव का बोध हो। जैसे—मनुष्यत्व, ज्ञान, मान, मृदुता, मधुरता, आलाप, चतुरता इत्यादि।

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन=विद्वत्त्व और राजत्व हरगिज बराबर नहीं। तस्य ज्ञानमेवैतावत् आसीत्=उसका ज्ञान ही इतना था।

असहयोगान्दोलनस्य कार्यक्रमे बहवः प्रस्तावा आसन्=तानकोआपरेषन मूवमेन्ट के प्रोग्राम में बहुत से रेजोल्यूशन थे।

कुछ अन्य भाववाचक संज्ञाओं के उदाहरण—

(१) नूनं छनच्छनिति बाष्पकणाः पतन्ति=निःसन्देह ‘छनछन’ शब्द करके आसुओं की बूँदें गिर रही हैं।

(२) स्थाने स्थाने मुखरककुभो क्षाकृतैर्निक्षंराणाम्=स्थान-स्थान पर झरनों के क्षाकृत शब्द से दिशाएं गूँज रही थीं।

(३) वधणत्कनककिङ्किणीक्षणक्षणायिनस्यन्दनैः—रथ पर टकरा कर सोने की किङ्किण्यां क्षण क्षण कर रही थीं ।

(४) धनुष्टङ्कारो दूरतोऽपि श्रयते=धनुष की टंकार दूर से भी सुनाई देती है ।

(५) भूषणानां शिञ्जितमतिमधुरम्=ज्वरों का शब्द बहुत ही मनोहर था ।

(६) वव श्रयते पटपदानां झङ्कारः=भौरों का शब्द कहाँ सुनाई देता है ।

(७) गजानां बृंहितेन, सिंहांनां नादेन च वनमेवाकम्पत=हाथियों की चिंघाड़ से और सिंहों की गजेंता से जंगल ही कांप उठा ।

(८) चरणसिंहेजीव धृष्टता विद्यते=चरणसिंह में बड़ी ठिठाई है ।

(९) समुद्रस्य गाम्भीर्यं ज्ञातुमसुलभम्=समुद्र की गहराई कठिनता से जानी जाती है ।

(१०) सत्यं वद=सच बोल ।

### लिङ्गप्रकरणम् ।

जिससे पुंस्त्व (पुरुषत्व) स्त्रीत्व और नपुंसकत्व का बोध हो उसे लिङ्ग कहते हैं ।

संस्कृत में लिङ्ग तीन प्रकार का है—पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग, और नपुंसकलिङ्ग । संस्कृत शब्दों का लिङ्ग-निर्णय बड़ा कठिन है, क्योंकि संस्कृत में शब्दों का अर्थ देखकर लिङ्ग-निर्णय नहीं होता । यद्यपि दार, भार्या और कलत्र इन तीनों का अर्थ स्त्री है, तथापि दार पुंलिङ्ग, भार्या स्त्रीलिङ्ग और कलत्र नपुंसक लिङ्ग है । कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका अर्थभेद से लिङ्गभेद होता है, जैसे मित्र शब्द—यह सखा का बोधक होने से नपुंसकलिङ्ग और सूर्य का बोधक होने से पुंलिङ्ग होता है । इस प्रकार संस्कृत के प्रत्येक शब्द का लिङ्ग निश्चित है । पर हिन्दी में लिङ्ग-निर्णय अधिकतर व्यवहार पर निर्भर रहता है । संस्कृत शब्दों के लिङ्ग-निर्णय के कुछ नियम नीचे लिखे गये हैं—

### पुंलिङ्ग

१—घञ् और अप्, घ और अच् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं, जैसे—पाकः, त्यागः, भावः, करः, गरः, विस्तरः, गोचरः, सञ्चयः, विजयः, विनयः इत्यादि । परन्तु भय, मुख, वर्ष, पद, लिङ्ग आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं ।

२—किप्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—विधिः, निधिः, वारिधिः इत्यादि, परन्तु किप्रत्ययान्त इषुधि शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग दोनों में होता है ।

३—नङ् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—यत्नः, प्रयत्नः, स्वप्नः । परन्तु याचञ् शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है ।

४—ईमन् प्रत्ययान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे—महिमा, गरिमा, लघिमा इत्यादि । परन्तु ब्रमेन् शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों में होता है ।

५—नकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं । जैसे, राजन्—राजा, आत्मन्—आत्मा । किन्तु मन् प्रत्ययान्त कर्मन् और चर्मन् आदि शब्द नपुंसकलिङ्ग हैं ।

६—साधारण और विशेष सुर (देवता) और असुर (राक्षस) और इनके

अनुचर वाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—देवः, विष्णुः, शिवः, दानवः, दैत्यः, आदि।

७—दार, अक्षत, लाज, अमु (प्राण) शब्द पुल्लिङ्ग और बहुवचनान्त होते हैं।

८—करः (किरण) हाथ और बलिः, गण्ड (कपोल) आण्डः (ओठ), दोः (बाहु), दन्तः (दांत), कण्ठः, केश, नखः (नाखून) और स्तनः ये सब शब्द और इनके पर्यायवाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। दीर्घतिः (किरण) शब्द स्त्रीलिङ्ग है, मरीचिः शब्द स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों है।

९—स्वर्ग, याग (यज्ञ), अद्रि (पर्वत), मेघ, अण्वि (समुद्र), द्रु (वृक्ष) काल (समय), असि (तलवार), शर (बाण) और शत्रु ये सब शब्द और इनके पर्याय वाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। किन्तु त्रिविष्टपम् (स्वर्ग), अभ्र (मेघ) ये शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं। घ्नीः और दिव (स्वर्ग) ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। इषु (बाण) शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों है। स्वर (स्वर्ग) अव्यय है।

१०—मास (वंशाख जेठ आदि महीने), ऋतु (वसन्त, ग्रीष्म आदि), रस (कटु, तिक्त आदि), वर्ण (शुक्ल, कृष्ण आदि रंग), अग्नि, शब्द, वायु (हवा), नर (आदमी), अहि (सांप) ये शब्द तथा इनके पर्यायवाचक शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। किन्तु ऋतुवाचक शब्द और वर्षा शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं।

११—खवः, निखर्वः, शङ्खः, पद्मः और सागरः शब्द पुल्लिङ्ग हैं।

१२—समास-युक्त अह और अह-भागान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं।

जैसे—पूर्वाल्लः, पराल्लः, मध्याह्नः, एकाहः, द्वयहः, त्रयहः इत्यादि। किन्तु पुण्याह शब्द नपुंसकलिङ्ग है।

१३—समासोत्पन्न रात्रिभागान्त शब्द पुल्लिङ्ग होते हैं। जैसे—सर्वरात्रः, मध्यरात्रः आदि। किन्तु संख्यावाचक शब्द के आगे रात्रि शब्द रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रम् पञ्चरात्रम् इत्यादि।

### स्त्रीलिङ्ग

१—क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—मतिः, गतिः, सम्पतिः इत्यादि। परन्तु ज्ञाति शब्द पुल्लिङ्ग होता है।

२—तिथिवाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं, जैसे—प्रतिपत्, द्वितीया, चतुर्थी, पूर्णिमा आदि।

३—तल् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं, जैसे—लघुता, सुन्दरता, ब्राह्मणता आदि।

४—ऋकारान्त मातृ (माता) दुहितृ (कन्या) स्वसृ (बहिन) यातृ (पति के भाइयों की स्त्रियाँ) और ननान्द (नन्द) शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

५—एकाक्षर ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—श्रीः, ह्रीः, मूः, अः आदि।

६—ईकारान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—नदी, लक्ष्मीः, गौरी, देवी, इत्यादि।

७—विंशति से नवति पर्यन्त संख्यावाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—विंशतिः, त्रिंशत्, आदि।



८—ऊङ और आप् प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—कुलः, विद्या, शोभा इत्यादि।

९—विद्युत् (विजली) निशा (रात) वल्ली (लता) वीणा (वीन) दिक् (दिशा) भू (पृथ्वी) नदी, ह्री (लाज) वाचक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं।

१०—समाहार द्विगु समासयुक्त अकारान्त शब्द (जिनके आगे ईप् होता है) स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—त्रिलोकी, पञ्चवटी, द्विपुरी आदि। किन्तु पात्र, युग और भुवन शब्द परे रहने से नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—पञ्चपात्रं, चतुर्युगं, त्रिभुवनम्।

### नपुंसकलिङ्ग

१—भाववाच्य में ल्युट् (अन) प्रत्यय करने से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—गमनं शयनं, भोजनम् इत्यादि।

२—भाव में (क्त) प्रत्यय करने से बने हुए शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—हसितं गीतं, जीवितम् इत्यादि।

३—तद्धित के त्व और ण्यञ् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शुक्लत्वं, शीकल्यं; सुन्दरत्वं, सीन्दर्यं, राजत्वं, राज्यम्, मधुरत्वं माधुर्यम् इत्यादि।

४—यत्, य, टक्, यक्, अञ् अण् वृञ् छ प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं जैसे—स्तेयं, सङ्गं, कायेयम्, आधिपत्यम्, औष्ट्रं, द्रुहायनं, पितापुत्रकं, किराता-जुगीयम् आदि।

५—उसका भाव या कर्म, इस अर्थ में ण् (अ) प्रत्यय से जो शब्द बनते हैं वे नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शैशवं, गौरवं, लाघवम् आदि।

६—शत आदि संख्यावाचक शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—शतं, सहस्रम् आदि। परं कोटि शब्द स्त्रीलिङ्ग होता है। शत, अयुत, प्रयुत, शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। जैसे—अयं शतः, इदं शतम् इत्यादि।

७—भाववाच्य में कृत्य (तव्य, अनीय, ण्यत्, यत्, क्यप्) प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—भवितव्यं, भवनीयं, भाव्यम् आदि।

८—द्वयट् और तयट् प्रत्ययान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—द्वयं, त्रयं, द्वितयं, त्रितयम् इत्यादि। ये शब्द स्त्रीलिङ्ग भी होते हैं।

९—जिनके अन्त में हो ऐसे शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—छत्रं, पत्रं, चरित्रम् इत्यादि। परन्तु मूत्र, अमित्र, छात्र, पुत्र, मन्त्र, वृत्र, मेढ्र और जव्द शब्द पुल्लिङ्ग हैं और पत्र, पात्र, पवित्र, सूत्र और छत्र पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं। यात्रा, मात्रा, भला और दण्डा ये शब्द स्त्रीलिङ्ग हैं। मित्र शब्द सूर्य के अर्थ में पुल्लिङ्ग और बन्धु के अर्थ में नपुंसकलिङ्ग है।

१०—क्रियाविशेषण और अव्ययविशेषण नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—साधु ववति—अच्छा कहता है। मनोहरं प्रातः—सुन्दर मन्त्रेरा।

११—जो शब्द स्त्रीलिङ्ग या पुल्लिङ्ग नहीं हैं वे भी नपुंसकलिङ्ग होते हैं। वृक्षं (समूह) खं (आकाश) अरण्यं (वन) पर्णं (पत्ता) श्वभ्रं (बिल) हिमं (पोला) उदकं (जल) शीतं (ठण्डा) उष्णं (गर्म) मौसं (मांस) ईधिरं (रक्त)

मुखं (मुंह) अक्षि (आंख) द्रविणं (घन) वलं (बल) हलं (हल) हेम (सोना) शुल्वं (तांबा) लोहं (लोहा) सुखं (सुख) दुःखं (दुःख) शुभं (कुशल) अशुभम् (अमंगल) जलपुष्पं (पानी में उत्पन्न होने वाला फूल) लवणं (नमक) व्यञ्जनं (दूध, दही आदि) अनुलेपनं (चन्दन आदि) ये ऊपर लिखे हुए शब्द तथा इन शब्दों के अर्थ बोध कराने वाले अन्यान्य शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। किन्तु अर्थः और विभक्त्यः (घन) अवश्यायः, नीहोरः और तुषारः (पाला) तथा छदः (पत्ता) पुल्लिङ्ग हैं। अप् (जल) अटवि (बन) मृद् और प्रीतिः (हर्ष) वपा और शुषिः (बिल), दूश और वृष्टि (आंख) तथा मिहिका (पाला) स्त्रीलिङ्ग हैं। आकाशः और विहायस् (आकाश) तथा क्षेमः, ये पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों होते हैं।

१२—समाहारद्वन्द्व और अव्ययीभावसमासोत्पन्न शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—पाणिपादं, हस्त्यश्वम्, प्रतिदिनम्, और ययाशक्ति आदि।

१३—संख्यावाचक और अव्यय शब्द के परवर्ती समासोत्पन्न, 'पथ' शब्द नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—त्रिपथं, चतुष्पथं, विपथम् कापथम् आदि।

१४—दो स्वर वाले अस्, इस्, उस् और अन् भागान्त शब्द नपुंसकलिङ्ग होते हैं। जैसे—अस् भागान्त—यशस्, तेजस् आदि। इस् भागान्त—सर्पिस्, हविस् आदि। उस् भागान्त—वपुस्, धनुस् आदि। अन् भागान्त नामन्, चर्मन् इत्यादि। किन्तु अचिंस् शब्द स्त्रीलिङ्ग और वेधस् शब्द पुल्लिङ्ग है। दो से अधिक स्वर होने के कारण अणिमा, महिमा, चन्द्रमा आदि शब्द पुल्लिङ्ग हैं और अप्सरस् शब्द स्त्रीलिङ्ग है। ब्रह्मन् शब्द पुल्लिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग दोनों हैं।

१५—आदि में यदि संख्यावाचक शब्द हो और अन्त में रात्र शब्द हो तो नपुंसकलिङ्ग होता है। जैसे—द्विरात्रं, पञ्चरात्रम् इत्यादि।

### लेखोपयोगी चिह्न (Punctuation)

संस्कृत भाषा में वाक्य से शब्दों का कोई क्रम निश्चित नहीं है। कर्ता, कर्म, क्रिया वाक्य के आदि, मध्य और अन्त में भी रखे जा सकते हैं। यही कारण है कि संस्कृत ग्रन्थों में आधुनिक लेखोपयोगी चिह्नों का विशेष महत्त्व नहीं है। तथापि "अत्रतुनाक्तम् तथापिनाक्तम्" प्रसिद्ध संस्कृत वाक्य का सीधा अर्थ यही प्रतीत होता है—“इस स्थल पर नहीं कहा गया है (और) उस स्थल पर भी नहीं कहा गया है।” लेखक को यह अर्थ अभिप्रेत नहीं। वह तो चाहता है—“अत्र तुना उक्तम्, तत्र अपिना उक्तम्” अर्थात् “जो बात इस स्थल पर “तु” शब्द से प्रकट की गई है वही बात उस स्थल पर “अपि” शब्द द्वारा व्यक्त की गई है। अतः मानना पड़ेगा कि शोभन शब्द-विन्यास से लेख में अवश्य चारुता आ जाती है और जटिलता भी जाती रहती है। इसी ध्येय को दृष्टि में रखकर निम्नलिखित लेखोपयोगी चिह्न दिये गये हैं :—

अल्प-विराम-चिह्न

अर्धविराम-चिह्न

पूर्णविराम-चिह्न

(Comma)

(Semi-Colon)

(Full-Stop)

प्रसङ्ग समाप्ति चिह्न	॥	
प्रश्नबोधक चिह्न (काकुचिह्न)	?	(Sign of Interrogation)
विस्मयादिवोधक चिह्न	!	(Sign of admiration,
(सम्बोधनाऽऽश्चर्यखेदचिह्न)	]	Surprigse etc)
उद्धरणचिह्न	' "	(Inverted Commas)
निर्देशचिह्न	:—	
योजकचिह्न	—	(Hyphen)
कोष्ठक (पाठान्तर चिह्न)	()	(Parenthesis)
सन्धिच्छेद चिह्न	+	
पर्याय-चिह्न	=	
श्रुतिपूर्ण चिह्न	^	

उदाहरण (हिन्दीभाषा में अनुवाद करो) :—

१—हा ! कथं सीतादेव्या ईदृशं जनापवादं देवस्य कथयिष्यामि ! अथवा  
नियोगः खल्वीदृशो मन्दभाग्यस्य । (उत्तररामचरिते)

२—आसीच्च मे मनसि, “शान्तात्मन्यस्मिञ्जने मां निक्षिपता, किमिदमनार्येणा-  
सदृशमारब्धं मनसिजेन !” (कादम्बर्याम्)

३—अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशम् ? (कुमारसम्भवे)

४—तारापीडो देवीमवदत् :—“अफलमिवाखिलं पश्यामि जीवितं राज्यं च ।  
अप्रतिविधेये (निष्प्रतीकारे) धातरि किं करोमि ! तमुच्यतां देवि ! शोकानुबन्धः ।  
आधीयतां धैर्ये च धीः ।” (कादम्बर्याम्)

५—अहो प्रभावो महात्मनाम् ! अत्र शाश्वतं विरोधमपहायोपशान्तान्तरा-  
त्मानस्तिर्यञ्चोऽपि तपोवनवसतिसुखमनुभवन्ति । (कादम्बर्याम्)

संस्कृतभाषयाऽनूद्यताम्—

१—हे मित्र ! अब आप आदि से मेरा वृत्तान्त सुनिए । मेरा जन्म पद्मपुर  
में हुआ था । मेरे पिता के पांच भाई थे, जो मृत्यु को प्राप्त हुए । आप ही के  
देश से आये हुए एक ब्राह्मण से मेरा विवाह हुआ । उनको मेरे आज सात वर्ष हो  
गये । मैं अतः अब क्या करूं ? मन्दभागिनी में कहाँ जाऊँ ? इस अवस्था में  
आप ही मेरी शरण हैं । (काशी प्रथमा परीक्षा १९३१)

२—जेठ महीने की पूर्णमासी तिथि को प्रतिव्रता स्त्रियां वटवृक्ष की पूजा  
और उपवास करती हैं । इस तिथि को प्राचीनकाल में सत्यवान् की भार्या सावित्री  
ने यम से लिये जाते हुए अपने पति सत्यवान् को छुड़ाया था । तभी से इस व्रत  
का आरम्भ हुआ है । स्त्रियां यह मानती हैं कि इस व्रत के करने से उनके पति  
की आयु दीर्घ होती है । सब मोहागिन स्त्रियां इस व्रत को करती हैं । (काशी  
प्रथमा परीक्षा १९३१)

## अनुवादार्थसंस्कृतवाक्य

(१) एकस्मिञ्जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य-  
कथमपि पितुरहमेवैको विधिवशात्सूनुरभवम् । (कादम्बरी पृ० २५)

(२) देव काचिच्चाण्डालकन्या शुक्रमादाय देवं विशापयति—“सकलभुवनतल-  
सर्वरत्नानामुदधिरिवैकभाजनं देवः । विहंगमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभुवनतलरत्न-  
मिति कृत्वा देवपादमूलमागताहमिच्छामि देवदर्शनमुखमनुभवितुमिति” । (काद-  
म्बरी पृ० ८)

(३) एषा मे मनोरथप्रियतमा सकुसुमास्तरणं शिलापट्टमधिशयाना सखीभ्या-  
मन्वास्यते । सागरं वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति । क इदानीं सहकारमन्तरे-  
णातिमुक्तलतां पल्लवितां सहते । (शकुन्तला ३)

(४) तं क्रमेण जन्मभूमिं जातिं विद्यां च कलत्रमपत्यानि विभवं वयःप्रमाणं  
प्रव्रज्याकारणं स्वयमेव पप्रच्छ चन्द्रापीडः । (कादम्बरी)

(५) तौ कुशलवौ भगवता वाल्मीकिना धात्रीकर्मवस्तुतः परिगृह्य पोषितौ  
परिरक्षितौ च वृत्तचडौ च त्रयीवर्जमितरा विद्याः सावधानेन परिपाठितौ । समस्त-  
रञ्ज गर्भादेकादशे वर्षे क्षात्रेण कल्येनोपनीय गुरुणा त्रयीं विद्यामध्यापितौ ।  
(उत्तर० २)

(६) अयं शिशून् शक्नोति शिरोधरां धारयितुम् । तदाहि गृहाणेममवतारय-  
सलिलसमीपमित्यभिधाय तेनधिकुमारेण मां सरस्तीरमनायत् । उपसृत्य च  
नलसमीपं स्वयं मामादाय मुक्तप्रयत्नमुत्तानितमुखमंगुल्या कतिचित्सलिलविन्दून-  
नाययत् । (कादम्बरी ३८)

(७) अथि पञ्चालतनये अलं विषादेन । किं बहुना । यत्करिष्ये, तच्छ-  
यताम्—अचिरेणैव कालेन सुयोधनशोणितशोणपाणिस्तव कचान् भीम उत्तंसयि-  
ष्यति । (वेणीसंहारे १)

(८) प्रवातशयने निपण्णा देवो परिजनहस्तगहीतेन चरणेन परिव्राजिकया  
कथाभिविन्दोद्यमाना तिष्ठति । (मालविकाग्निमित्रे ४)

(९) तेषु तेषु रम्यतरेषु स्थानेषु तथा सह तानि तान्यपरिसमाप्तान्यपुनरुक्तानि  
न केवलं चन्द्रमाः कादम्बर्या सह कादम्बरी महाश्वेतया सह महाश्वेता तु पुण्डरीकेण  
मानन्दरथाध्यगच्छन् । (कादम्बर्याम् ३६९)

(१०) मूर्खं नैव तव दोषः । साधोः शिक्षा गुणाय सम्पद्यते, नासाधोः ।  
(पञ्चतन्त्रे १—१८)

१—जीर्णकोटर—पुराना कोटर । जाया=स्त्री । २—उदधि=समुद्र ।  
विहङ्गम=पक्षी । ३—अन्वास्यते=सेवा की जा रही है । सहकार=आम ।  
अनिमुक्तलता=माधवीलता । पल्लव=पत्र । —कलत्र=स्त्री । प्रव्रज्या=संन्यास ।  
५—कल्य=प्रायमिक । ६—शिरोधरा=गर्दन । उत्तानित=खुला हुआ । ७—शोणित  
=खून । शोणपाणि=रक्तहस्त । कच=वाल । उत्तंस=शोभित करना । ८—  
प्रयात=हवा वाला । परिव्राजिका=संन्यासिनी ।

(११) प्रसीद भगवती वसुन्धरे शरीरमसि संसारस्य । तत्किमसंविदानेव  
जामात्रे कुप्यमि । (उत्तररामचरिते ७)

(१२) सखि वासन्ति दुःखायेदानीं रामस्य दर्शनं सुहृदाम् । तत्कियच्चिरं  
त्वां रोदयिष्यामि । तदनुजानीहि मां गमनाय । (उत्तररामचरिते २)

(१३) त नृपं वसुरक्षितौ नाम मन्त्रिवृद्ध एकदाऽभिवृत्त । तच्च अत्र भवति  
सर्ववृत्तिसम्पदभिज्ञानात्प्रभृत्यनूनेव लक्ष्यते । बुद्धिता निसर्गपट्वी तवेतरेभ्यः  
प्रतिविशिष्यते । (दशकु० १८)

(१४) न जानामि केनापि कारणेनापहस्तितसकलसखीजनं त्वयि विश्वसिति  
मे हृदयम् । (कादम्बरी २३३)

(१५) धिङ् मां दुष्कृतकारिणी यस्याः कृते तवेयमीदृशी दशा वर्तते ।

(१६) हा दयित माधव परलोकगतोऽपि स्मर्तव्यो युष्माभिरयं जनः । न  
खलु स उपरतो यस्य बल्लभो जनः स्मरति ।

(१७) अत्रान्तरे शक्तिखण्डामपितेन गाण्डीविनैवं भणितम्—“अरे दुर्योधन-  
प्रमुखाः कुश्वलसेनाप्रभवः” अरे अविनयनदोर्कर्णधारकर्ण युष्माभिर्मम परोक्ष  
एकाकी पुत्रकोऽभिमन्युव्यापादितः । अहं पुनर्युष्माकं प्रेक्षमाणानामेनं कुमार-  
वृषसेनं स्मर्तव्यशयं नयामि ।” (वेणी० ४)

(१८) तदेव पञ्चवटीवनम् । सैव प्रियसखी वासन्ती । त एव जात-  
निविशेषाः पादपाः । मम पुनर्मन्दभाष्यायाः सर्वमेवैतद् दृश्यमानमपि नास्ति ।  
(उ० ३)

(१९) तस्य तरुषण्डस्य मध्ये मणिदर्पणमिव त्रैलोक्यलक्ष्म्याः क्वचित् त्र्यम्बक-  
वृषभविषागकोटिखण्डिततटशिलाखण्डं कथंचिदरावतदशनमूसलखण्डितकुमुदवण्डमच्छोद-  
नाम सरो दृष्टवान् । (कादम्बरी १२३)

(२०) अलमनया कथया । मल्लितमियम् । अहमप्यसमर्थः श्रोतुम् ।  
अतिक्रान्तान्यपि संकीर्त्यमानान्यनुभवसमां वेदनामुपजनयन्ति सुहृज्जनस्य दुःखानि ।  
तन्नाहंसि कथं कथमपि विधृतानिमानमुलमानसून् पुनः पुनः स्मरणशोका-लन्धनता-  
मुपनेतुम् । (कादम्बरी १६९)

(२१) उपकारिणि विश्रब्धे शुद्धमती यः समानगित गापम् ।

न जनमसत्यसन्धं भगवति त्रमुध कथं वहसि ॥

(२२) कन्या वरयते वित्तं माता रूपं पिता सुखम् ।

बान्धवाः कुलमिच्छन्ति मिष्टान्नमितरे जनाः ॥

(२३) सकृदुक्तं च गृह्णाति न च विस्मरति श्रुतम् ।

धीधारणावनी यस्य मेधावी स ईहोच्यते ॥

११—असंविदान=अभिज्ञ । १८—अपहस्तित=दूर करके । १७—गाण्डीविन=अर्जुन । अमपित=क्रुद्ध । १८—पादप=वृक्ष । १९—तरुषण्ड=वृक्षवन । त्र्यम्बक-  
वृषभ=शिवजी का बैल । विषाण=सींग । एरावत=इन्द्र का हाथी । २०—वेदन=दुःख । असु=प्राण । अनल=आग । इन्धन=लकड़ी । २१—असत्यसन्ध=झूट  
बोलने वाला ।



- (२४) रसवन्मानसग्राहि गुणालङ्कारसंयुतम् ।  
कवीनां यशसे काव्यं हास्यायान्यच्च जायते ॥  
अग्नीं परीक्ष्यते स्वर्णं काव्यं सदसि तद्विदाम् ।  
किं कवेस्तेन काव्येन सद्भिर्यन्तानुगृह्यते ॥
- (२५) गुरोः प्राप्तः परीवादो न श्रोतव्यः कदाचन ।  
कर्णो तत्र पिघातव्यो गन्तव्य वा ततोऽन्यथा ॥
- (२६) अलं भारतीया मतानां विभेदैरलं देशभेदेन वरेण चालम् ।  
अयं शाश्वतो धर्म एको धरायां न सम्भाव्यते धर्मतत्त्वेषु भेदः ॥
- (२७) लक्ष्मीश्चन्द्रादपेयाद्वा हिमवान्वा हिमं त्यजेत् ।  
अतीयात्सागरो वेलो न प्रतिशामहं पितुः ॥
- (२८) क्व नु तेऽद्य पिता राजन् ! क्व नु तेऽद्य पितामहाः ।  
न त्वं पश्यसि तानद्य न त्वाम्पश्यन्ति तेऽनघ !
- (२९) अनित्यं यौवनं रूपं जीवितं द्रव्यसञ्चयः ।  
ऐश्वर्यं प्रियसंवासो मुह्येत्तत्र न पण्डितः ।
- (३०) आदरेण यथा स्तौति धनवन्तं धनेच्छया ।  
तथा चेद्विश्वकर्तारं को न मुच्येत बन्धनात् ॥
- (३१) न जातु कामः कामानामुपभोगन शाम्यति ।  
हविषा कृष्णवर्त्मन् भूय एवाभिवर्धते ॥
- (३२) रघुमेव निवृत्तयौवनं तममन्यन्त नवेश्वरं प्रजाः ।  
स हि तस्य न केवलां श्रियं प्रतिपेदे सकलान्गुणानपि ॥
- (३३) सर्वोपमाद्रव्यसमुच्चयेन यथाप्रदेशं विनिवेशितेन ।  
सा निर्मिता विश्वसृजा प्रयत्नादेकस्यसौन्दर्यदिदृक्षयेव ॥
- (३४) पुराणमित्येव न साधुसर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवन्धम् ।  
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद्भजन्ते मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः ॥
- (३५) विश्वासप्रतिपन्नानां वञ्चने का विदग्धता ।  
अङ्कमाह्वय सुप्तं हि हत्वा किन्नाम पौरुषम् ॥
- (३६) साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।  
नृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भाषणार्थं परमं पशूनाम् ॥
- (३७) सा सीतामङ्कमारोप्य भर्तृप्रणिहितेक्षणाम् ।  
मामेति व्याहरत्येव तस्मिन्पातालमभ्यगात् ॥
- (३८) गुणेषु क्रियतां यत्नः किमाटोपैः प्रयोजनम् ।  
विक्रीयन्ते न घण्टाभिर्गावि क्षीरविजिताः ॥

(२५) — परीवाद = निन्दा । पिघातव्यो = बन्द करने चाहिए । २६ — शाश्वत = नित्य । ३१ — हविष् = धी । कृष्णवर्त्मन् = अग्नि । ३३ — दिदृक्षा = देखने की च्छा । ३४ — अवन्ध = निन्दनीय । प्रत्यय = विश्वास । ३७ — व्याहृ = बोलीना । ३८ — आटोप = कृत्रिम वेप ।

- (३९) लतायां पूर्वलूनायां प्रसूनस्यागमः कुतः ।  
(४०) केतकीगन्धमाध्राय स्वयं गच्छन्ति षट्पदाः ।

मुहावरेदारप्रयोग

- (१) इयं कथा मामेव लक्ष्मीकरोति—(इस कथा का संकेत-विषय मैं ही हूँ ।)  
(२) न ते वचोऽभिनन्दामि—(मैं तेरे वचन का समर्थन नहीं करता ।)  
(३) कर्तव्यं हि सतां वचः—(सज्जन पुरुषों की बात माननी चाहिए ।)  
(४) द्वितीयगामी नहि शब्द एष नः—(यह हमारा उपाधिसूचक पद दूसरे किसी के नाम के साथ नहीं जा सकता ।)  
(५) मृग मृगः सङ्गमनन्नजन्ति—(मृग मृग का साथ है, अर्थात्—अच्छे अच्छों या बुरे बुरों का साथ होता है ।)  
(६) लोकापवादी बलवान्मतो मे—(मेरा विचार है कि लोकनिन्दा बड़ी बलवाली है ।)  
(७) सकलवचनानामविषयम्—वर्णनविषयातिक्रान्तम् तत्स्थानम्—(उस स्थान का वर्णन ही नहीं हो सकता ।)  
(८) किं मिष्टमन्नं खरसूकराणाम्—(भैंस के आगे वीन बजाना ।)  
(९) स्वभावो दुरतिक्रमः—(स्वभाव नहीं बदल सकता ।)  
(१०) अतिभूमि गतो रणरणकोऽस्याः—(इसकी चिन्ता की कोई हद नहीं ।)  
(११) अग्निसात्कुश—(आग में फेंक दो ।)  
(१२) अपि रक्ष्यते रहस्यनिक्षेपः—(क्या तूने गुप्त बात की रक्षा की ?)  
(१३) सर्वजनस्योपहास्यतामुपयान्ति—(सब उनकी हंसी करते हैं ।)  
(१४) सा पुषोष लावण्यमयान् विशेषान्—(उस [उमा] के अङ्ग अङ्ग में सौन्दर्य भर गया ।)  
(१५) नाहमात्मविनाशाय बेतालोत्थापनं करिष्यामि—(मैं अपने नाश के लिए शैतान को नहीं उठाऊंगा ।)  
(१६) वसुधां तस्य हस्तगामिनीमकरोत्—(उसने भूमि उसे दे दी ।)  
(१७) अतिभूमि गतोऽस्या अनुरागः—(इसके प्रेम की सीमा न रही ।)  
(१८) मनो मे संशयमेव गाहते—(मेरे चित्त में संदेह ही है ।)  
(१९) मम द्रव्यस्य कथं त्वया विनियोगः कृतः—(तुमने मेरे द्रव्य को किस प्रकार खर्च किया ?)  
(२०) अपि कुशलं (शिवं) भवतः—(आप अच्छे तो हैं ?)  
(२१) नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण—(चक्र की नेमि के चक्रानुसार सुख और दुःख घूमते रहते हैं ।)  
(२२) शिखी केकाभिस्तिरयति मे वचनम्—(मयूर अपनी आवाज से मेरे वचन को छिपाता है ।)  
(२३) न परिहृयामि, नायं परिहासस्य समयः—(मैं सत्य कहता हूँ, यह हंसी करने योग्य बात नहीं है ।)

- (२४) शृणु मे सावशेषं वचः—मेरी पूरी बात तो सुनो ।
- (२५) अजीर्णं भोजनं विषम्—(अपच में भोजन करना विष के तुल्य है ।)
- (२६) कुतूहलेन तस्य चेतसि पदं कृतम्—(उसके चित्त में बड़ा आश्चर्य है ।)
- (२७) अतिवानाद्बलिवन्दः—(अति बुरी है ।)
- (२८) अलमतिविस्तरेण—(अति विस्तार की आवश्यकता नहीं ।)
- (२९) अपुत्रस्य गृहं शून्यम्—(निपूते का घर मसान ।)
- (३०) आज्ञा गुरुणा ह्यविचारणीया—(बड़ों की आज्ञा सिर माथे ।)
- (३१) स सत्कारो मम मनोरथानामप्यभूमिः—(वह आदर मेरी आशा से भी बाहर था ।)
- इति लोकवादः न विसंवादमासादयति—(इस लोकोक्ति में कोई विवाद नहीं ।)
- (३३) कालस्य कुटिला गतिः—(समय की गति कुटिल है ।)
- (३४) गुणान् भूषयते रूपम्—(रूप और गुण का साथ सोने में सुगन्ध के समान है ।)
- (३५) अनुतिष्ठात्मनो नियोगम्—(अपना कार्य करो ।)
- (३६) अतिपरिचयादवज्ञा—(अधिक परिचय से अपमान होता है ।)
- (३७) को वृत्तान्तस्तत्र भवत्याः—(श्रीमती जी का कैसा हाल है ?)
- (३८) सचेतसः कस्य मनो न द्वयते—(किस सहृदय का मन दुःखित न होगा ।)
- (३९) चिन्ताज्वरो मनुष्याणाम्—(चिन्ता बहुत बुरी है ।)
- (४०) मन्मुखासक्तदृष्टिः—(एक टक से मेरी ओर दृष्टि वाला ।)
- (४१) चौराणामनृतं बलम्—(चोर का बल झूठ है ।)
- (४२) यौवनपदवीमारूढः—(वह जवान हो गया ।)
- (४३) तृष्णांका तरुणायते—(तृष्णा कभी कम नहीं होती ।)
- (४४) सर्वनाशो समुत्पन्ने अर्थ त्यजति पण्डितः—(बिलकुल न होने से थोड़ा अच्छा है ।)
- (४५) महतां पदमनुविधेयम्—(बड़ों का अनुकरण करो ।)
- (४६) न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित्—(सत्पुरुष अपनी प्रतिज्ञा का पालन करते हैं ।)
- (४७) मात्र मुनिर्वीर्यं ग्रहीष्यति—(मुनि इसमें दीप न मानेंगे ।)
- (४८) उमास्थ्यां सा जगाम—(उसका नाम उमा प्रसिद्ध हुआ ।)
- (४९) ममाशयं सम्यग्गृहीतवानसि—(तू मेरा भाव अच्छी तरह समझ गया है ।)
- (५०) मृत्योर्मुखे वतते, मृत्युगोचरं गतः—(मरने वाला है ।)
- (५१) न हि सर्वविदं सर्वं—(संसार में कोई भी सर्वज्ञ नहीं ।)
- (५२) नास्ति बन्धुसमं बलम्—(बन्धु सदाश को बल नहीं ।)
- (५३) निःस्पृहस्य तृणं जगत्—(यागी को ससार तृणवत है ।)
- (५४) पुत्रः शत्रुरपण्डितः—(मूर्ख पुत्र शत्रु के समान है ।)
- (५५) मानुषीं गिरमुदीरयामास—(मनुष्य की भावा में कहा ।)
- (५६) अहो वारुणो वृषभुर्विपाकः—(ऐ वदकिस्मत !)

- (५७) भूस्वर्गायमानमेतत्स्थलम्—(यह स्थान पृथिवी पर स्वर्ग है ।)
- (५८) लुब्धमर्थेन गृह्णीयात्—(लोभी को द्रव्य से वश में करना चाहिए :)
- (५९) किमस्मान् सम्भूतदोषैरधिक्षिप्य—(हमारे ऊपर इतने दोष क्यों फेंकते हो ?)
- (६०) स महति जीवितसंशये अवर्तत—(वह मृत्यु के अत्यन्त खतरे में है ।)
- (६१) इति कर्णपरस्परया श्रुतमस्माभिः—(ऐसा हमने जनोक्ति द्वारा सुना है ।)
- (६२) विना पुरुषकारेण देवं न सिद्धयति—(ईश्वर उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं ।)
- (६३) भिन्नरुचिर्हि लोकः—(अपनी अपनी पसन्द अपना अपना स्वाद ।)
- (६४) इति राज्ञां शिरसि वामपादमाधाय—(इस प्रकार राजाओं को भली भांति नीचा दिखाकर ।)
- (६५) वाच्यतां याति—दोषभाजनं भवति—(दोषी बनता है ।)
- (६६) स्वगृहनिविशेषमत्र वस—(अपने घर की तरह यहाँ ठहरो ।)
- (६७) आकृतिरेवानुमाप्यत्यमानुषताम्—(उसकी शक्ल ही उसकी मनुष्य-भिन्न आकृति को बता रही है ।)
- (६८) रामस्य देवदुनियोगः कोऽपि—(यह राम का मन्द भाग्य था ।)
- (६९) परिहासविजल्पितं सखे !—(हे मित्र ! हँसी में कहा गया है ।)
- (७०) विषयसुखनिरतो जीवितमत्यवाहयत्—(विषय सुख में लीन होकर उसने जीवन बिताया ।)
- (७१) न चेदन्यकार्यातिपातः—(यदि और कोई कार्य न रहा ।)
- (७२) अमी विनोदनोपायाः संदीपना एव दुःखस्य—(ये विनोद के साधन दुःख को अधिक बढ़ा रहे हैं ।)
- (७३) ओजस्वितया सा न परिहीयते शच्याः—(वह ओजस्विता में इन्द्राणी से कम नहीं ।)
- (७४) एष ते जीवितावधिः प्रवादः—(यह अपवाद जीवन पर्यन्त ठहरेगा ।)
- (७५) तुल्यप्रतिद्वन्द्वि बभूव युद्धम्—(युद्ध बराबर ताकत वाले वीरों में हुआ ।)
- (७६) कतिपयदिवसस्थापिनी योधनश्रीः—(जवानी की शोभा बहुत थोड़े दिन ठहरती है ।)
- (७७) अनुदिवसं परिहीयसेऽङ्गः—(दिन प्रतिदिन तू बड़ी कमजोर हो रही है ।)
- (७८) मनुष्याः स्वलनशोलाः—(गलती करना मनुष्य का स्वभाव ही है ।)
- (७९) सुखमुपदिश्यते परस्य—(दूसरे को उपदेश देना सरल है ।)
- (८०) परित्रायस्वैनां मा कस्यापि तपस्विनो हस्ते पतिष्यति—(इसको बचाओ जब तक यह किसी तपस्वी के हाथ में नहीं पड़ी ।)
- (८१) गतोऽसि सबत्वायुधविद्यासु परां प्रतिष्ठाम्—(समग्र शस्त्रविद्याओं में तू पारङ्गत हो गया है ।)
- (८२) गात्राणामनीशोऽस्मि संवृतः—(मेरा अपने अंगों पर भी स्वामित्व न रहा ।)

(८३) तस्य दश इयत्ताया परिच्छेतुं नालम्—(उसकी कीर्ति की कोई सीमा नहीं ।)

(८४) स न तस्या रुचये बभूव—(वह उस (स्त्री) की इच्छा के अनुकूल नहीं था ।)

(८५) बंधे मोक्षे चाधुना सा ते प्रभवति—(तुम्हें रोकने या छोड़ने में वही अब समर्थ है ।)

(८६) एको दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति—(अनेक गुणों में एक दोष छिप जाता है ।)

(८७) आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा—(आनन्द पूर्ण नेत्रों से ।)

(८८) मालती मूर्धनि चालयति—(मालती सिर हिलाती है ।)

(८९) न कामचोरो मयि शंकनीयः—(मेरे ऊपर व्यभिचार की शंका न करनी चाहिए ।)

(९०) अलमन्यथा गृहीत्वा—(ऐसा न समझो ।)

(९१) सर्वत्र नो वार्तमवेहि—(“हम सब प्रकार अच्छे हैं” ऐसा समझो ।)

(९२) खलः सर्वपमात्राणि परिच्छद्वाणि पश्यति ।

आत्मनो चित्त्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति ॥

(दुष्ट पुरुष दूसरे के छोटे छोटे दोषों को भी देखता है

किन्तु अपने स्पष्ट दिखाई देते हुए दोषों को भी नहीं देखता ।)

(९३) त्वं मम जीवितसर्वस्वीभूतः—(तुम मेरे जीवन के एक मात्र धन हो ।)

(९४) वाच्यस्त्वया महचनात्स राजा—(मेरी ओर से उस राजा को कहना ।)

(९५) अनुरूपभर्ता मामिनी—(अपने अनुकूल पति पाने वाली ।)

(९६) स मुह्यद् व्यसने यः स्यात्—(आपत्तिकाल में साथ देने वाला ही मित्र होता है ।)

(९७) लघुसंदेशपदा सरस्वती—(संक्षिप्त पदों वाला संदेश ।)

(९८) कस्मिन्नपि पूजाहं अपराद्धा शकुन्तला—(किसी पूज्य व्यक्ति की शकुन्तला ने अवहेलना की है ।)

(९९) विहगा समदुःखा इव चुकुशः—(मानो सहानभूति भरे पक्षी चिल्लाने लगे ।)

(१००) तव न कदापि मया विप्रियं कृतम्—(मैंने कभी आपकी बुराई नहीं की ।)

(१०१) धारासारमंहती वृष्टिर्बभूव—(मूसलाधार वर्षा हुई ।)

(१०२) तथा हृदयवल्गुभोगमिलिख्य कामदेवव्यपदेशेन सखीपुरतोऽपह्नुतः—

(उसने अपने प्राणप्रिय का चित्र खींचा किन्तु मखियों के आगे कामदेव कह कर छिपा दिया ।)

(१०३) ग्राहकैर्गृह्यते चोरः पदेन—(चोर पैरों के चिल्लों से पकड़ा जाता है ।)

(१०४) अन्तःपुरविरहपर्युत्सुको राजर्षिः—(राजर्षि अपनी स्त्रियों के वियोग से दुःखित है ।)



(१०५) विल्लाप विकीर्णमूर्धजा—(वालों को बिखेर कर उसने विलाप किया ।)

(१०६) तेनाष्टौ परिगमितः समाः कथंचित्—(उसने किसी प्रकार आठ वर्ष बिताए ।)

(१०७) उपकारः प्रत्युपकारेण निर्यातयितव्यः—(उपकार का बदला उपकार से चुकाना चाहिए ।)

(१०८) हृदयंगमः परिहासः—(मनोहर हास्य ।)

(१०९) मित्राणां तत्त्वनिकषघ्नीवा विपत्—(मित्रता को परखने में विपत्ति कसीटी है ।)

(११०) यौवनमङ्गेषु संघट्टम्—(अंग अंग में जवानी भर गई है ।)

(१११) अपत्यमन्योन्यसंश्लेषणं पित्रोः—(सन्तान माता पिता के बन्धन की गाँठ है ।)

(११२) दासी देवीभावं गमिता—(दासी रानी के पद को प्राप्त हुई ।)

(११३) अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी—(विद्या उसकी जिह्वा पर थी ।)

(११४) ज्ञायतां कः कः कार्यार्थीति—(मालूम करो कौन कौन प्रार्थी है ।)

(११५) बधिरात् मन्दकर्णः श्रेयान्—(बहरे से अर्थ बहुरा अच्छा है ।)

(११६) शनैर्निद्रा निमीलितलोचनं मामकार्षीत्—(निद्रा ने धीरे धीरे मेरी आँखें बन्द कर दीं ।)

(११७) वरं मृत्युर्न पुनरपमानः—(अपमान से मौत अच्छी है ।)

(११८) प्रस्तूयतां विवाहवस्तु—(विवाह के विषय का प्रारम्भ करो ।)

(११९) वक्तुं सुकरमिदमध्यवसातुं तु दुष्करम्—(करने से कहना सरल है ।)

(१२०) तद्वचः मम हृदये शल्यं जातम्—(उसके वचन ने मेरे हृदय पर बाण का काम किया ।)

(१२१) तदहं विदधे तव स्तवं दमयन्त्याः सविधे—(सो मैं दमयन्ती के आगे तुम्हारी प्रशंसा करूँगा ।)

(१२२) सकलरिपुजयाशा यत्र बद्धा सुतैस्ते—(जिसके ऊपर तुम्हारे लड़कों ने समग्र शत्रुओं को जीतने की आशा रखी हुई है ।)

(१२३) इवं प्रायेण तव कर्ण-पथमायातम्—(शायद आपने यह सुन लिया हो ।)

(१२४) हवि एनां भारतीमुपधातुमर्हति—(इन शब्दों को भली भाँति याद रखिये ।)

(१२५) अन्यथा एषा वीप्सा न चरितार्था भविष्यति—(तहीं तो यह पुनश्चक्रित सफल न होगी ।)

(१२६) केन वान्येन साधारणी करोमि दुःखम्—(अन्य किसके साथ मैं अपने दुःख को कम करूँ ।)

(१२७) अस्मात्स्थानात्पदात्पदमपि न गन्तव्यम्—(इस स्थान से एक कदम भी मत हिलो ।)

(१२८) स्नेहस्यैकाग्रनीभूता—(एक मात्र स्नेह की वस्तु ।)

## अशुद्धि-संशोधन ।

संस्कृत के अनुवाद करने के समय प्रायः विद्यार्थियों से जो व्याकरण की भूल हो जाती हैं, उनमें से कुछ उदाहरणार्थ शुद्ध और अशुद्ध वाक्यों द्वारा नीचे दिखाई गई हैं ।

लिङ्ग, वचन और कारक की अशुद्धियाँ—

## अशुद्ध वाक्य

- (१) भवान्मम मित्रः अस्ति
- (२) सः देवस्य सह गृहं गतः
- (३) दशरथः प्राणं तत्याज
- (४) श्यामो मम स्नेहपात्रः
- (५) राजन् तं भोजनं देहि
- (६) ते तव दाराः भवन्ति

## शुद्ध वाक्य

- भवान् मम मित्रमस्ति ।
- स देवेन सह गृहं गतः ।
- दशरथः प्राणान् तत्याज ।
- श्यामो मम स्नेहपात्रम् ।
- राजन् तस्मै भोजनं देहि ।
- सा तव दाराः भवति ।

शब्दों के लिखने में अशुद्धियाँ—

## अशुद्ध वाक्य

- (७) महाराजः आज्ञास्ति
- (८) परमात्मस्य महिमां पश्य
- (९) मम लक्ष्मी नास्ति
- (१०) भवानस्य किं नाम
- (११) मम मनो सन्देहः
- (१२) नदीपथा नगरं गच्छ
- (१३) भूपत्यः आज्ञा अस्ति
- (१४) कौऽस्ति राजसखा
- (१५) स चन्द्रमां पश्यति
- (१६) मम मुहृदस्य गृहम्

## शुद्ध वाक्य

- महाराजस्य आज्ञा अस्ति ।
- परमात्मनः महिमानं पश्य ।
- मम लक्ष्मीः नास्ति ।
- भवतः किं नाम ।
- मम मनसि सन्देहः ।
- नदीपथेन नगरं गच्छ ।
- भूपतेः आज्ञा अस्ति ।
- कौऽस्ति राजसखः ।
- स चन्द्रमसं पश्यति ।
- मम मुहृदः गृहम् ।

१—मित्रम् नपुंसक है और भवान् के साथ प्रथम पुरुष की क्रिया लगती है ।

२—सह के साथ तृतीया । सः के आगे व्यञ्जन परे होने से विसर्ग का लोप होता है । ३—प्राण शब्द बहुवचनान्त है । ४—पात्र शब्द नपुंसकलिङ्ग है ।

५—दो धातु के कर्म में चतुर्थी होती है । ६—दारा शब्द बहुवचनान्त है ।

७—राजन् शब्द महत् के साथ समस्त होने से अकारान्त हो जाता है । ८—

परमात्मन् की पठ्ठी में परमात्मनः और महिमन् शब्द की द्वितीया में महिमानम् होता है । ९—लक्ष्मी शब्द के प्र० के एकवचन में विसर्ग होता है । १०—भवत् शब्द नपुंसकलिङ्ग है । ११—भवत् और मनस् शब्द हलन्त हैं । १२—पथिन् शब्द समास में अकारान्त हो जाता है । १३—पति शब्द समास में हरि के समान होता है । १४—सखि शब्द समास में अकारान्त होता है । १५—चन्द्रमस् शब्द हलन्त है । १६—मुहृद् शब्द भी हलन्त है ।

अशुद्ध

शुद्ध

- (१७) भवान् केन पथेन यास्यति  
(१८) नरः जन्मे भवित कुर्यात्

- भवान् केन पथा यास्यति ।  
नरः जन्मनि भवित कुर्यात् ।

सन्धि की अशुद्धियाँ—

- (१९) अर्जुनोवाच  
(२०) कवोमी यातः  
(२१) अम्पजा गच्छन्ति  
(२२) नराक्षाकारय  
(२३) हे देवागच्छ  
(२४) मित्रं अहं अवदं  
(२५) सो विप्र आगच्छति  
(२६) सखि प्रियंवदा  
(२७) स काश्मीरे अनीवसत्  
(२८) भ्रातृ आदेशात्  
(२९) शृगालो पञ्चत्वं गतः  
(३०) वालो सुखेन शेते

- अर्जुन उवाच ।  
कवो इमी यातः ।  
अमी अजा गच्छन्ति ।  
नरान् आकारय ।  
हे देव आगच्छ ।  
मित्रमहमवदम् ।  
स विप्र आगच्छति ।  
सखी प्रियंवदा ।  
स काश्मीरे न्यवसत् ।  
भ्रातुरादेशात् ।  
शृगालः पञ्चत्वं गतः ।  
बालः सुखेन शेते ।

सर्वनाम तथा विशेष्य विशेषण की अशुद्धियाँ—

- (३१) इमं पुस्तकं पश्य  
(३२) सर्वाः नराः गच्छन्ति  
(३३) स इमं स्त्रीमपश्यत्  
(३४) किञ्चित् अन्यं वद  
(३५) सर्वाणां प्रियो हरिः  
(३६) त्रयः सुन्दरा बालिकाः

- इदं पुस्तकं पश्य ।  
सर्वे नरा गच्छन्ति ।  
स इमां स्त्रीमपश्यत् ।  
किञ्चिद् अन्यद् वद ।  
सर्वेषां प्रियो हरिः ।  
तिस्रः सुन्दर्यः बालिकाः ।

१७—पथिन् शब्द के तू० के एकवचन में पथा होता है । १८—जन्मन् शब्द हलन्त है । १९—विसर्ग के लोप होने पर सन्धि नहीं होती । २०—ईकारान्त द्विवचन में सन्धि नहीं होती । २१—अदस् शब्द के मकारयत् ई में सन्धि नहीं होती । २२—दीर्घ स्वर से न् परे रहने पर द्वित्व नहीं होता । २३—संबोधन के ध्वनि की प्लुत स्वर के साथ सन्धि नहीं होती । २४—स्वर परे तथा पदान्त में 'म्' का अनुस्वार नहीं होता । २५—अकार भिन्न स्वर तथा व्यञ्जन परे होने पर 'स्' के विसर्ग का लोप हो जाता है । २६—२७—२८—एक पद में, धातुपदार्थ में और समास में सन्धि अवश्य होती है २९—३०—क, ख, ग, क, प, स, श परे रहने पर विसर्ग का ओ नहीं होता । ३१—३२—३३—नामकलिङ्ग पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग में सर्वनाम शब्दों के लिङ्ग वचन विशेष्य के समान ही होंगे । ३४—नामकलिङ्ग में अन्यत् होता है । ३५—सर्वनाम शब्दों के रूप अकारान्त शब्द से भिन्न है । ३६—बालिका शब्द स्त्रीलिङ्ग है, अतः उसके विशेषण भी स्त्रीलिङ्ग ही होंगे ।

## अशुद्ध

- (३७) सुन्दरी अवलागणः याति  
(३८) मे भ्राता आगतः  
(३९) इमं फलम् अस्ति  
(४०) स महति विपदि वर्तते

## शुद्ध

- सुन्दरीऽवलागणो याति ।  
मम भ्राता आगतः ।  
इदं फलमस्ति ।  
स महत्यां विपदि वर्तते

## वर्ण तथा अव्ययों की अशुद्धियाँ—

- |                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| (४१) धनवान् वृद्धिबलं निन्दति | धनवान् वृद्धिमन्तं निन्दति । |
| (४२) अहं फलं गृहीतुमिच्छामि   | अहं फलं ग्रहीतुमिच्छामि ।    |
| (४३) मार्गं हस्तिः पलायते     | मार्गं हस्ती पलायते ।        |
| (४४) पितृन् संतपय             | पितॄन् संतपय ।               |
| (४५) शशी आकासे सुसोभते        | शशी आकाशे सुशोभते ।          |
| (४६) धनुःसु शरान् योजय        | धनुःषु शरान् योजय ।          |
| (४७) स मिथ्या वदति            | स मिथ्या वदति ।              |
| (४८) देवः च शिवः गच्छतः       | देवः शिवश्च गच्छतः ।         |
| (४९) तु अहं न गमिष्यामि       | अहं तु न गमिष्यामि ।         |
| (५०) प्रतिदिनस्य प्रातरि याति | प्रतिदिनं प्रातः याति        |

## क्रिया में काल आदि की अशुद्धियाँ—

- |                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| (५१) त्वया गम्यसे          | त्वया गम्यते              |
| (५२) अहम् अत्र स्यामि      | अहमत्र तिष्ठामि ।         |
| (५३) स चन्द्रं दृश्यति     | स चन्द्रं पश्यति ।        |
| (५४) तेन नगरे वस्यते       | तेन नगरे उष्यते ।         |
| (५५) राज्ञा प्रजाः पाल्यते | राज्ञा प्रजाः पाल्यन्ते । |
| (५६) स मृगं विध्यति        | तेन मृगः विध्यते ।        |

३७—गण शब्द पुल्लिङ्ग है। अतः उसके विशेषण सुन्दर शब्द भी पुल्लिङ्ग होगा। ३८ युष्मद् और अस्मद् शब्द को पद के आदि में होने पर 'ते, मे' आदेश नहीं होते। ३९...फल प्रथमा विभक्ति में है, इसलिए उसका विशेषण भी प्रथमा में होगा। ४०—विद् शब्द स्त्रीलिङ्ग है, इसलिए महत् शब्द की भी स्त्रीलिङ्ग में सप्तमी विभक्ति ही होगी। ४१—यदि उपधा में अवर्ण हो तो म् का व् हो जाता है। ४२—ग्रह होता है। ४३—यह इन् प्रत्ययान्त शब्द है। ४४—पदान्त में न् का ण् नहीं होता। ४५—तालव्य (ञ) है। ४६—विसर्ग बीच में होने पर भी म् को ष् हो जाता है। ४७ अव्यय में कोई विभक्ति नहीं होती। ४८—च दूसरे शब्द के बाद आता है। ४९—चेत्, तु, च, वा आदि वाक्यारम्भ में नहीं आते। ५०—अकारान्त अव्ययों में तृतीया, पंचमी और सप्तमी के सिवाय अम् होता है। ५१—भाववाच्य में सदा प्र० पु० के एकवचन में क्रिया होती है। ५२—५३—वर्तमानकाल में स्या को तिष्ठ और दृश् को पश्य हो जाता है। ५४—वस् का भाव में उष् हो जाता है। ५५—कर्मवाच्य में क्रिया कर्म के अनुसार होती है। ५६—दिवादिगणीय धातुओं के कर्तृवाच्य में भी 'य्' लगता है।

अशुद्ध

- (५७) देवः भृत्यं भारं नाययति  
(५८) प्रीतः यतिः प्रतस्थौ  
(५९) स माम् अवदत् स्म  
(६०) तेन वाणीं श्रोतुमिष्यते

शुद्ध

- देवः भृत्येन भारं नाययति ।  
प्रीतः यतिः प्रतस्थे ।  
स माम् अवदत् ।  
तेन वाणीं श्रोतुमिष्यते ।

कृदन्त प्रत्ययों की अशुद्धियाँ—

- (६१) त्वाम् अगृह्य न यास्यामि  
(६२) भिक्षां ददन् बालः हसति  
(६३) गृहम् आगत्वा पठामि  
(६४) स पुष्पं दृष्ट.  
(६५) सा बालकं दृष्टवान्  
(६६) स पाठः पठित्वा भुङ्क्ते  
(६७) अहं बालं वक्तुमशृणवम्  
(६८) त्वया वचांसि श्रोतव्यम्  
(६९) अहं देवं जिज्ञासितः  
(७०) स आगत्य अहं गमिष्यामि  
(७१) देवः गुरुं सेवन् तिष्ठति  
(७२) स पुस्तकं पठनं करोति  
(७३) अन्नपाचकः खादति

- त्वामगृहीत्वा न यास्यामि ।  
भिक्षां ददत् बालः हसति ।  
गृहमागत्य पठामि ।  
तेन पुष्पं दृष्टम् ।  
सा बालकं दृष्टवती ।  
स पाठं पठित्वा भुङ्क्ते ।  
अहं बालं ब्रुवन्तमशृणवम् ।  
त्वया वचांसि श्रोतव्यानि ।  
मया देवः जिज्ञासितः ।  
तस्मिन्नागते अहं गमिष्यामि ।  
देवः गुरुं सेवमानः तिष्ठति ।  
स पुस्तकस्य पठनं करोति ।  
अन्नस्य पाचकः खादति ।

स्त्रीप्रत्ययान्त तथा समासान्त पदों की अशुद्धियाँ—

- (७४) बालकः हंसां पश्यति  
(७५) सा अश्वी गच्छति

- बालकः हंसीं पश्यति ।  
सा अश्वा गच्छति ।

५७—नी धातु के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया होती है । ५८—प्र उपसर्ग लगने से स्था उभयपदी है । ५९—भूतकाल की क्रिया के साथ स्म नहीं लगता । ६०—यदि तुम् वाच्य का और क्रिया का एक ही कर्म हो तो कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है । ६१—तत् समास में ल्यप् नहीं होता । ६२—जुहोत्यादिगणीय धातु के साथ नुम् नहीं होता । ६३—उपसर्ग पूर्व होने से क्त्वा को न्यप् होता है । ६४—कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है । ६५—कर्तृ वाच्य के कर्ता में प्रथमा और उसी के अनुसार क्रिया के लिङ्ग वचन होते हैं । ६६—क्त्वा, शतृ, शानच् और तुम् के कर्म में द्वितीया होती है । ६७—एक कर्ता में तुम् न होता है, किन्तु दो क्रियाएँ एक समय होने से शतृ या शानच् होते हैं । ६८—कर्मवाच्य के कर्ता में तृतीया और कर्म में प्रथमा होती है । ७०—एक कर्ता न होने से क्त्वा नहीं होता । ऐसी जगहों पर भाव में सप्तमी होती है । ७१—आत्मनेपदी से शानच् और परस्मैपदी से शतृ प्रत्यय होते हैं । ७२—पठन के योग में षष्ठी होती है । ७३—तच्, अक् के प्रत्ययान्त के साथ षष्ठी तत्पुरुष नहीं होता । ७४—७५—हस का स्त्रीलिङ्ग 'हंसी' और अश्व का 'अश्वा' होता है ।



## अशुद्ध

- (७६) चन्द्रवदनीं वालां पश्य  
(७७) नृत्यती वाला आगता  
(७८) मया रुदन्ती स्त्री दृष्टा  
(७९) महाराजा अद्यैव गतः ।  
(८०) अहोरात्र्यी वर्तते

## शुद्ध

- चन्द्रवदनीं वालां पश्य ।  
नृत्यन्ती वाला आगता ।  
मया रुदती स्त्री दृष्टा ।  
महाराजः अद्यैव गतः ।  
अहोरात्रः (त्रं) वर्तते ।

## हिन्दी भाषा बनाओ :—

१—हा कथ महाराजदशरथस्य धर्मदाराः प्रियसखी मे कौशल्या । क एतत्प्रत्येति संवेयमिति ।... 'धिक्' प्रहसनम् । अयमृष्यशृंगाश्रमाश्रुवतीपुरस्कृतान् महाराजदशरथस्य दारानधिष्ठाय भगवान् वसिष्ठः प्राप्तः । तत्किमेवं प्रलपामि । (उत्तरराम च० ४)

२—चन्द्रापीडस्य सहपांशुक्रीडिततया सहसंवृद्धतया च सर्वविश्वम्भस्थानं द्वितीय-मिव हृदयं वंशपायनः परं मित्रमासीत् । (कादम्बरी ७६ पृ०) ।

३—अथ दुर्लङ्घ्यशासनतया भगवतो मनोभुवो मन्दजननतया च मधुमासस्या-तिरमणीयतया च तस्य प्रदेशस्याविनयबहुलतया चाभिनदयीवनस्य चञ्चलप्रकृतितया चेन्द्रियाणां दुर्निवारतया च विषयाभिलाषाणां तथा भवितव्यतया च तस्य तस्य वस्तुनः तमपि तरलतामनयदन्तः । (का० १४३)

४—स्वयमेवंताद्यन्ते एवंविधाः कुलपांसवो निःस्नेहाः पशवो येषां क्षुद्राणां प्रज्ञा पराभिसन्धानाय न ज्ञानाय, पराक्रमः प्राणिनामुपघाताय नोपकाराय, धनपरित्यागः कामाय न धर्माय, किं बहुना, सर्वमेव येषां दोषाय न गुणाय । (कादम्बरी २८८ पृ०)

५—राजा विस्फारितेन स्निग्धेन चक्षुषो पिवन्निवालपन्निव स्पृशन्निव मनोरथ-सहस्रप्राप्तदर्शनं सस्पृहमीक्षमाणस्तनयाननं मुमुदे कृतकृत्यं चात्मानं मेने । (कादम्बरी ७२)

६—सर्वथा निष्प्रतीकारेयमापदुपस्थिता । किमिदानीं कर्तव्यं कां दिशं गन्तव्यमित्येते चान्ये च विषण्णहृदयस्य मे सङ्कल्पाः प्रादुरासन् । (कादम्बरी १५७)

७—राजवाहनो रसालतरुषु कोकिलादीनां पक्षिणामालपाञ्छ्रावं श्रावं विकसितानि सरांसि दर्श दर्शममंदलोलया ललनासमीपमवाप । (द० कु० १-५)

७६—दो से अधिक स्वर वाले शब्दों में 'ई' नहीं होता । ७७—नृत् धातु से नृम् होता है । ७८—रुद् से नृम् नहीं होता । ७९—समास में महत् शब्द का महा हो जाता है । ८०—समाहार द्वन्द्व में अन्त वाले शब्द में 'अ' लगकर पुलित्ङ्ग या नपुंसकलिङ्ग का एक वचन हो जाता है ।

१—दार=स्त्री । २—पांशु=धूलि । विश्वम्भस्थान=विश्वासपात्र । ३—मनोभू या अनङ्ग=कामदेव । मधुमास=वसंत । ४—अभिसन्धान=छल । ५—विस्फारित=खोला हुआ । ईक्षु=देखना । ६—निष्प्रतीकार=इलाज के बिना । विषण्ण=दुःखित । ७—ललना=स्त्री ।

८—अतिप्रबलपिपासावसन्नानि गन्तुमल्पमपि मे मालमङ्गलानि । अलमप्रभुर-  
स्यात्मनः । सीदति मे हृदयम् । अन्धकारतामपुयाति चक्षुः । अपि नाम खलो  
विविरनिच्छतोऽपि मे मरणमद्यैवोपपादयेत् । (का० ६)

९—अथ धर्मानुरोधादितरपक्षावलम्बनद्वारेण मृत्युमङ्गीकारोमि एवमपि प्रथमं  
तावत्स्वयमागतस्य तत्रभवतः कपिञ्जलस्य प्रणयप्रसरभङ्गः । पुनरपरं यदि तस्य  
जनस्य मत्कृतादाशाभङ्गात्प्राणविपतिरुपजायते तदपि मुनिजनवधजनितं महदेनो  
भवेत् । (का० १६०)

१०—सखे पुण्डरीक सुविदितमेतन्मम । केवलभिदमेव पृच्छामि यदेतदारब्धं  
भवता किमिदं गुह्यभरुपदिष्टमुत धर्मशास्त्रेषु पठितमुत मोक्षप्राप्तियुक्तिरियमाहो-  
स्विदन्यो नियमप्रकारः ? (का० १५५)

११—एवं कदलीदलेनानवरतं बीजयतः समुद्रभूम्ने मनसि चिन्ता । नास्ति खल्व-  
साध्यं मनोभुवः । वघायं हरिण इव वनवासनिरतः स्वभावमुग्धो जनः, वव च  
विविधविलासरसराशिर्गन्धर्वराजपुत्री महाश्वेता ! (का० १५७)

१२—स मद्भवतानन्तरमेव न वेत्ति किमसह्यवृत्तेर्मदनज्वरस्य वेगादुत, सद्योविपा-  
कस्यात्मनो दुष्कृतस्य गौरवादाहोस्विन्मद्वचस एव सामर्थ्यादाच्छिन्नमूलस्तरुविव  
क्षितावपतत । (का०)

१३—नदेवं प्रायेऽतिकुटिलकण्टचेष्टासहस्रदारुणे राज्यतन्त्रेऽस्मिन् महामोहान्ध-  
कारकारिणि च यौवने कुमार तथा प्रयतेथा यथा नोपहस्यते जननीपालभ्यसे सुहृद्भि-  
र्नाक्षिप्यसे विषयैर्न विकृष्यसे रागेण नापह्लियसे सुखेन । (का० १०९)

(किरातार्जुनीये)

स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं  
हितान्न यः संश्रूणुते स किं प्रभुः ।  
सदानुकूलेषु हि कुर्यते रतिः,  
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसंपदः ॥ १ ॥

मदसिक्तमुखैर्मृगाधिपः करिभिर्वर्तयते स्वयं हतैः ।  
लवयन् खलु तेजसा जगन्न महानिच्छति भूतिमन्यतः ॥ २ ॥  
किमपेक्ष्य फलं पयोधरान्धवनतः प्रार्थयते मृगाधिपः ।  
प्रकृतिः खलु सा महीयसः सहते नान्यसमुन्नतिं यया ॥ ३ ॥

८—अवसन्न=कमजोर । सीद=दुःखित होना । खल=दुष्ट । विधि-  
भाग्य । ९—अनुरोध=लिहाज । प्रणय=प्रेम । एनस्=पाप । १०—महास्वत=  
अश्व । ११—मदन=काम । विपाक=फल । दुष्कृत=पाप । क्षिति=पृथ्वी । १२—  
कदली=केला । अन्धरत=निरन्तर । विलास=क्रीडक । १३—दारुण=दुःखप्रद ।  
उपालभ=ताना मारना ।

१—अमात्य=मन्त्री । २—मृगाधिप=सिंह, करिन्=हाथी, भूति=ऐश्वर्य ।  
३—पयोधर=मेघ, प्रकृति=स्वभाव, महीयस्=महापुरुष ।

## (शकुन्तलानाटके)

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्ति सपत्नीजने  
 भर्तुविप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः ।  
 भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोग्येष्वनुत्सेकिनी  
 यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः ॥ ४ ॥  
 पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या  
 नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।  
 आद्ये वः कुसुमप्रवृत्तिसमये यस्या भवत्युत्सवः

सयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥ ५ ॥  
 स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वममानुषेषु, संदृश्यते किमुत याः प्रतिबोधवत्यः ।  
 प्रागन्तरिक्षगमनात्स्वमपत्यजातमन्येद्विजः परभृतः खलु पोषयन्ति ॥ ६ ॥  
 यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा त्वमसि किं पितुरुत्कुलया त्वया ।  
 अथ तु वेत्सि शुचिन्नतमात्मनः पतिकुले तव दास्यमपि क्षमम् ॥ ७ ॥  
 सा निन्दन्ती स्वानि भाग्यानि बाला बाहूक्षेपं रोदितुं च प्रवृत्ता ।  
 स्त्रीसंस्थानं चाप्सरस्तीर्यमारोदुत्क्षिप्यन्तां ज्योतिरेकं जगाम ॥ ८ ॥

## (कुमारसम्भवे)

क्रोधं प्रभो संहर संहरेति यावद्गिरः खे मरुतां चरन्ति ।  
 तावत्स वल्लिर्भवनेत्रजन्मा भस्मावशेषं मदनं चकार ॥ ९ ॥  
 तमवेक्ष्य रुरोद सा भृशं स्तनसंवाधमुरो जघान च ।  
 स्वजनस्य हि दुःखमग्रतो विवृतद्वारमिवोपजायते ॥ १० ॥  
 विविप्रयुक्तां परिगृह्य सत्क्रियां परिश्रमं नाम विनीय च क्षणम् ।  
 उमां स पश्यन्नुजुर्नैव चक्षुषा प्रचक्रमे वक्तुमनुज्झितक्रमः ॥ ११ ॥  
 अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते ।  
 अपि स्वशक्त्या तपसे प्रवर्तसे शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ॥ १२ ॥  
 किमित्यपास्याभरणानि योक्ने वृतं त्वया वार्षिकशोभि वल्कलम् ।  
 वद प्रदोषे स्फुटचन्द्रतारका विभावरी यद्गुणाय कल्पते ॥ १३ ॥  
 वपुर्विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता दिग्म्बरत्वेन निवेदितं वसु ।  
 वरेषु यद्बालमृगाक्षि मृग्यते तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने ॥ १४ ॥  
 द्वयं गतं सम्प्रति शोवनीयतां समागमप्रार्थनया कपालिनः ।  
 कला च सा कान्तिमती कलावतस्त्वमस्य लोकस्य च नेत्रकीमुदी ॥ १५ ॥

४—प्रतीप—विपरीत । अनुत्सेक—निरभिमान । ६—अन्तरिक्ष—आकाश ।  
 द्विज—पक्षी । परभृत—कोयल । ७—क्षितिप—राजा । शुचि—पवित्र । दास्य—  
 दासता । ९—मरुत—देवता, ख—अकाश, वल्लि—आग, भव—शिव । ११—ऋजु  
 —सीधा । १३—आभरण—ज्वर, वल्कल—छाल, विभावरी—रात्रि, प्रदोष—निशा  
 ना मुख । १४—वसु—वदन, व्यस्त—अलग अलग, त्रिलोचन—शिव । १५—कपालिन—  
 राजा, कीमुदी—रोशनी ।

उवाच चैनं परमार्यतो हरं न वेत्सि नूनं यत एवमात्थ माम् ।  
 अलोकसामान्यमचिन्त्यहेतुकं द्विषन्ति मन्दाश्चरितं महात्मनाम् ॥ १६ ॥  
 निवार्यतामालि किमप्ययं वटुः पुनर्विवक्षुः स्फुरितोत्तराधरः ।  
 न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक् ॥ १७ ॥  
 इतो गमिष्याम्ययमेति वादिनी चचाल बाला स्तनभिन्नवल्कला ।  
 स्वरूपमाश्रयाय च तां कृतस्मितः समाललम्बे वृषराजकेतनः ॥ १८ ॥

### (रघुवंशे)

अलं महीपाल तव श्रमेण प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् ।  
 न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः शिलोच्चये मूर्च्छति मास्तस्य ॥ १९ ॥  
 एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं नवं वयः कान्तमिदं वपुश्च ।  
 अल्पस्य हेतोर्वहु हातुमिच्छन् विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम् ॥ २० ॥  
 वपुषा करणोज्झितेन सा निपतन्ती पतिमप्यपातयत् ।  
 ननु तैलनिषेकविन्दुना सह दीपाचिरुपैति मेदिनीम् ॥ २१ ॥  
 विललाप स बाष्पगद्गदं सहजामप्यपहाय घोरताम् ।  
 अभितप्तमयोऽपि मार्दवं भजते कैव कथा शरीरिषु ॥ २२ ॥  
 स्रगियं यदि जीवितापहा हृदये किं निहिता न हन्ति माम् ।  
 विषमप्यमृतं ववचिद्भवेदमृतं वा विषमीश्वरेच्छया ॥ २३ ॥  
 कुसुमान्यपि गात्रसङ्गमात्प्रभवन्त्यायुरपोहितुं यदि ।  
 न भविष्यति हन्त साधनं किमिवान्यत्प्रहरिष्यतो विधेः ॥ २४ ॥  
 अथवा मम भाग्यविप्लवादशनिः कल्पित एष वेधसा ।  
 यदनेन तरुर्न पातितः क्षपिता तद्विपश्चिता लता ॥ २५ ॥  
 गृहिणी सचिवः सखी मिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ ।  
 करुणाविमुखेन मृत्युना हरता त्वां वत किञ्च मे हृतम् ॥ २६ ॥

### (नेषधे)

मदेकपुत्रा जननी जरातुरा नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी ।  
 गतिस्तयोरेष जनस्तमदयन्नहो विधे त्वां करुणा रुणद्धि न ॥ २७ ॥  
 पदे पदे सन्ति भटा रणोद्धटा नतेषु हिसारस एष पृथ्वे ।  
 धिगीदृशं ते नृपते कुविक्रमं कृपाश्रये यः कृपणे पतत्रिणि ॥ २८ ॥  
 इत्थममुं विलपन्तममुञ्चद्दीनदयालुतयावनिपालः ।  
 रूपमदर्शि धृतोऽसि यदर्थं गच्छ यथेच्छमयेत्यभिधाय ॥ २९ ॥

१७—आली=सखी, वटु=वृक्षचारी । १८—वृषराजकेतन=शिव । १९—  
 अंहस्=वेग । २१—मेदिनी=पृथिवी । २२—अयस्=लोहा । २३—स्रक्=माला  
 २५—अशनि=वज्र । २७—वरटा=हंभी । २८—पतत्रिन्=पक्षी । २९—  
 अवनिपाल=राजा [नल] ।

## लोकोक्ति-संग्रहः Proverbs.

- (१) 'इतो भ्रष्टस्ततो नष्टः' (घोड़ी का कुत्ता घर का न घाट का ।)  
A man falls between two stools.
- (२) 'कञ्चुकमेव निन्दति पानस्तनो नारी' (नाच न जाने आंगन टेढा ।)  
A bad workman quarrels with his tools.
- (३) 'आमुखापाति कल्याणं कार्यसिद्धिं हि शंसति' (होनहार विरवान के हाँत चौकने पात ।) Coming events cast their shadows before.
- (४) 'निसारस्य पदार्थस्य प्रायेणाङ्ग्वरो महान्' (ऊँची दूकान फीका पकवान ।)  
Great cry and little wool.
- (५) 'अङ्गीकृतं युक्तिनः परिपालयन्ति' (प्राण जाय पर वचन न जाय ।)  
The virtuous make good their promise.
- (६) 'नवाननानां नव एव पन्थाः' (हर एक अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद बनाता है ।) New Lords new laws.
- (७) 'गनस्य शीघ्रं नास्ति' या 'निर्वाणदीपे किमु तैलदानम्' अथवा 'काले वत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनाऽपि किम् ?' (अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।) It is no use crying over spilt milk.
- (८) 'छिद्रेष्वनर्था बहुला भवन्ति' या 'विपद विपदमनुवध्नाति' (गरीबी में आटा गीला, या ताल से गिरा खजूर पे अटका ।) Misfortunes never come alone.
- (९) 'न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे' या 'शिरसि फणी दूरे तत्प्रतीकारः' (जब तक हिमालय से सज्जोवनी आवे बीमार मर जावे ।) While the grass grows the horse starves.
- (१०) 'अतिपरिचयादवज्ञा सन्ततगमनादनादरो भवति' (मान घटे नित के घर जाये ।) A constant guest is never welcome.
- (११) 'याचकां याचक दुष्ट्वा इवानवद् गुर्गुरायते' (कुत्ता कुत्ते का बैरी होता है ।) Two of the traders seldom agree.
- (१२) 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' (बड़ों की राह भली ।) Do what the great men do.
- (१३) 'इवा यदि क्रियते राजा स किं नाश्नात्सुपानहम्' या 'सुनप्तमपि पानीयं समयत्येव पावकम्' (आदत सिर के साथ जाती है) या 'सुनप्तमपि पानीयं समयत्येव पावकम्' (आदत सिर के साथ जाती है)
- (१४) 'निरस्तपादेषु देशे एरण्डोऽपि हुमायते' या 'यत्र विद्वज्जनो नास्ति श्लाघ्यस्तत्रालम्भारपि' (अर्थों में काना राजा ।) Figure among ciphers.
- (१५) 'अर्थो घटो घोषमुपैति नूनम्' (थोथा घना बाजे घना ।) An empty vessel makes much noise.
- (१६) 'इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितः गुणैः' (अपने मुँह मिया मूँठ—अपने मुँह अपना बड़ाई शोभा नहीं देती ।) Self praise is no recommendation.



(१७) 'कण्टकेनैव कण्टकम्' या 'पिशाचानां पिशाचभाषयेवोत्तरं देयम्' (कांटे से कांटा निकाला जाता है ।) One nail drives out another.

(१८) 'यो यद्वपति वीजं हि लभते सोऽपि तत्फलम्' (जैसा करोगे वैसा भरोगे ।) As you sow so shall you reap.

(१९) 'बह्वारम्भे लघुक्रिया' (खोटा पहाड़ निकला चूहा ।) Much ado about nothing.

(२०) 'हिताहितं वीक्ष्य निकाममाचरेत्' (जितनी चादर देखो उतने पर फैलाओ ।) Cut your coat according to your cloth.

(२१) 'सर्वः कान्तमात्मनोऽप्यश्रयति' (कोई अपनी लस्सी को खट्टी नहीं कहता ।) Every potter praises his own pot.

(२२) 'न हि सुखं दुःखं विना लभ्यते' (सेवा विन सेवा नहीं ।) No pains no gains.

(२३) 'महान् महत्येव करोति विक्रमम्' अथवा 'अनुहुंकुस्ते घनध्वनिं न तु गोमायुस्तानि केसरो' (शेर बादल गरजने पर ही गरजता है ।) The great display their power only before the great.

(२४) 'बली बलं वेत्ति न वेत्ति निबलः' या 'गुणो गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः' (हीरे की परख जीहरी ही जाने ।) The mighty knows what might is and not the weak.

(२५) 'अपि घन्वन्तरिर्विद्यः किं करोति गतायुषि' या 'मरणं प्रकृतिः शरीरिणाम्' (एक दिन सब को मरना है ।) Death is inevitable to every mortal.

(२६) 'या यस्य प्रकृतिः स्वभावजनिता केनापि न त्यज्यते' या ।

अथवा 'भूयोऽपि निवृत्तः पयसाघूतेन न निम्बवक्षो मधुरत्वमेति' ।

अथवा 'आकण्ठ जलमग्नाऽपि श्वालिहृत्येव जिह्वया' ।

अथवा 'किमदितोऽपि कस्तूरी लशुनो याति सीरभम् ?

'न हि कस्तूरिकामोदः शपथेन निवार्यते' (आदत सिर के साथ जाती है ।) It is hard to break an old hog of an ill custom.

(२७) 'पाणौ पयसा दग्धे तत्र फूत्कृत्य पाप्मनः पिबति' (दूध का जला छाल को फूंक फूंक कर पीता है ।) A burnt child dreads the fire.

(२८) 'निजसदननिविष्टः श्वो न सिहायते किम् ?' (अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।) Every cock fights best on its own dung-hill.

(२९) 'दुर्बलस्य बलं राजा' (निबल के बल राम ।) The king is the strength of the weak.

(३०) 'दूरतः पर्वताः रम्याः' (दूर के डोल सुहावने ।) Distance lends enchantment to the view.

(३१) 'अर्थमनर्थं भावय नित्यम्' (दीलत का नशा बुरा है ।) Wealth is the root of all calamities.

(३२) 'कष्टः खलु पराश्रयः' (पराधीन सपनेहु सुख नहीं ।) Dependence is indeed painful.

(३३) 'कुपुत्रेण कुलं नष्टम्' (डूबा वंस कबीर का उषजे पूत कमाल ।) A bad descendant destroys the life.

(३४) 'को धर्मः कृपया विना' (दया धर्म का मूल) No pity without mercy.

(३५) 'जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' (बूंद बूंद ते घट भरे) Little drops make the pitcher full.

(३६) 'पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्' (जो तू सोंचे दूध से नीम न पीठो होय ।) Snake's venom increases by drinking milk.

(३७) 'वीरभोग्या वसुन्वरा' 'बली बलोरान्न तु नीतिमार्गः' (जिसकी लाठी उसकी भैंस) Might is right or The brave rule the earth.

(३८) 'बालानां रोदनं बलम्' (बालक को बल रोदन एका ।) Cry is the only strength of a child.

(३९) 'सत्संगजानि निषनान्यपि तारयन्ति' 'कर्तव्यो महदाश्रयः' 'हरेः पदावतिः श्लाघ्या न श्लाघ्यं खररोहणम्' (बड़ों के सहारे छोटे भी तर जाते हैं ।) It's wise to take refuge under the great.

(४०) 'एका क्रिया द्वयार्थकरी प्रसिद्धा' (एक पत्थर दो काज ।) To kill two birds with one stone.

(४१) 'काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तं रम्या' अवयवा 'पण्डितोऽपि वरं शत्रुनं मुखो हितकारकः' (नीम हकीम खतरा जान ।) Little knowledge is a dangerous thing.

(४२) 'अधुवादं ध्रुवं वरम्' 'वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः' (नी नकद, न तेरह उवार ।) A bird in hand is better than two in the bush.

(४३) 'नवा वाणी मुखे मुखे' (पाचों अंगुलियां बारबर नहीं ।) There are men and men.

(४४) 'गतः कालो न चायाति' (गया वक्त फिर हाथ आता नहीं है ।) Time once past cannot be recalled.

(४५) 'अतिदपे हता लङ्का' (गरूर का सिर नीचा ।) Pride goth before a fall.

(४६) 'एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते नैव प्राणिनः' (एक हाथ से ताली नहीं बजती ।) It takes two to make a row.

(४७) 'मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभागभवेत्' 'शनैः पन्थाः शनैः कन्या शनैः पर्वतलङ्घनम्' (सहज पके सो मांठा होय ।) Slow and steady wins the race.

(४८) 'न मुनिः मुनरायातो न चासौ वर्धते गिरिः' (न तो मन तेल होना न राधा नाचेगी ।) If the sky falls we shall catch larks.

(४९) 'गतस्य शोचनं नास्ति' (बीती ताहि विसारि दे ।) Let bygone be bygone.

(५०) 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति' (एक मछली सारे ताल को गन्दा करती है ।) A black sheep infects the whole flock.

(५१) 'वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मनीषिणः' (जैसा देश वैसा भेष ।) When you are at Rome, do as the Romans do.

(५२) 'यथा वृक्षस्तथा फलम्' (जैसा मुह वैसी चपेट ।) Thank a man according to his rank.

(५३) 'ये गर्जन्ति मुहुर्मुहुर्जलधरा वर्षन्ति नैतादृशाः' (जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।) Barking dogs seldom bite.

(५४) 'दानिद्रघदोषो गुणराशिनाशी' (गरीब की जोरु सब की भात्री ।) A light purse is a heavy curse.

(५५) 'चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च' (चार दिन की चांदनी फिर अन्धेरी रात ।) To every spring there is an autumn.

(५६) 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवेत ।

ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ॥'

(दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम ।) Between two stools a man falls to the ground.

(५७) 'प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया' (छज्जू जैसा सुख चुबारे न बल्ल न बुखारे) East or West home is the best.

(५८) 'हा हन्त सम्प्रति गतानि दिनानि तानि' (वे दिन गये जब लखीलखां फाखता उड़ाया करते थे) Those palmy days are gone.

(५९) 'विश्वस्तेषु च वञ्चना परिभवश्चौर्यं स शौर्यं हि तत् ।

or (अङ्कमारुह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पौरुषम् ॥')

(विश्वासघात महापाप है ।) It is a great sin to harm a person who comes for shelter.

(६०) 'खलः करोति दुर्वृत्तम् तद्धि फलति साधुषु ।

दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महोदधेः ॥'

(लरें लोह पाहन दोऊ बीच रुई जरि जाय ।) Wicked person commits a fault and a good man suffers for it.

(६१) 'भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः' (जेहि के कारण मूँड मूँडाका दुख मोरे आगे आवा ।) Even in using bitter pill one is not free from disease.

(६२) 'स सुहृद् व्यसने यः स्यात्' (बत पड़े पर जानिए को बरी को पीत ।) A friend in need is a friend indeed.

(६३) 'विषकुम्भं पयोमुखम्' (मुह में राम राम बगल में छुरी) A wolf in lamb's clothing.

(३२) 'कष्टः खलु पराश्रयः' (पराधीन सपनेहु सुख नहीं ।) Dependence is indeed painful.

(३३) 'कुपुत्रेण कुलं नष्टम्' (डूवा वंस कबीर का उपजे पूत कमाल ।) A bad descendant destroys the life.

(३४) 'को धर्मः कृपया विना' (दया धर्म का मूल) No pity without mercy.

(३५) 'जलविन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः' (बूंद बूंद से घट भरे) Little drops make the pitcher full.

(३६) पयःपानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्' (जो तू सोचे दूध से नीम न सीठी होय ।) Snake's venom increases by drinking milk.

(३७) 'वीरभोग्या वसुन्धरा' 'बली बलीयान् तु नीतिमार्गः' (जिसकी लाठी उसकी भैंस) Might is right or The brave rule the earth.

(३८) 'बालानां रोदनं बलम्' (बालक को बल रोदन एका ।) Cry is the only strength of a child.

(३९) 'सत्संगजानि निधनान्यपि तारयन्ति' 'कर्तव्यो महदाश्रयः' 'हरेः पदावृत्तिः श्लाघ्या न श्लाघ्यं खररोहणम्' (बड़ों के सहारे छोटे भी तर जाते हैं ।) It's wise to take refuge under the great.

(४०) 'एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा' (एक पत्थर दो काज ।) To kill two birds with one stone.

(४१) 'काश्मीरजस्य कटुतापि नितान्तं रम्या' अवथा 'पण्डितोऽपि वरं शत्रुं न मूर्खो हितकारकः' (नीम हकीम खतरा जान ।) Little knowledge is a dangerous thing.

(४२) 'अध्रुवाद ध्रुवं वरम्' 'वरमद्य कपोतो न श्वो मयूरः' (नौ नकद, न तेरह उवार ।) A bird in hand is better than two in the bush.

(४३) 'नवा वाणी मुखे मुखे' (पाचों अंगुलियां बारबर नहीं ।) There are men and men.

(४४) 'गतः कालो न चायाति' (गया वस्त फिर हाथ आता नहीं है ।) Time once past cannot be recalled.

(४५) 'अतिदर्ये होता लङ्का' (गरूर का सिर नीचा ।) Pride goth before a fall.

(४६) 'एकस्य हि विवादोऽत्र दृश्यते नैव प्राणिनः' (एक हाथ से ताली नहीं बजती ।) It takes two to make a row.

(४७) 'मन्दोऽप्यविरतोद्योगः सदा विजयभाग्मवेत्' 'शनैः पन्थाः शनैः कन्था शनैः पर्वतलङ्घनम्' (सहज पके सो माठा होय ।) Slow and steady wins the race.

(४८) 'न मुनिः पुनरायातो न चासी वर्षते गिरिः' (न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी ।) If the sky falls we shall catch larks.

(४९) 'गतस्य शोचनं नास्ति' (बीती ताहि बिसारि दे ।) Let bygone be bygone.

(५०) 'संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति' (एक मछली सारे ताल को गन्दा करती है ।) A black sheep infects the whole flock.

(५१) 'वर्तमानेन कालेन वर्तयन्ति मर्नापिणः' (जैसा देश वैसा भेष ।) When you are at Rome, do as the Romans do.

(५२) 'यथा वृक्षस्तथा फलम्' (जैसा मुंह वैसी चपेट ।) Thank a man according to his rank.

(५३) 'ये गर्जन्ति मूढमुहुर्जलधरा वर्षन्ति नेतादृशाः' (जो गरजते हैं वे बरसते नहीं ।) Barking dogs seldom bite.

(५४) 'दानिद्रघदोषो गुणराशिनाशो' (गरीब की जोरु सब की भात्री ।) A light purse is a heavy curse.

(५५) 'चक्रवत्परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च' (चार दिन की चांदनी फिर शन्धेरी रात ।) To every spring there is an autumn.

(५६) 'यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते ।

ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव च ॥'

(दुविद्या में दोनों गये माया मिली न राम ।) Between two stools a man falls to the ground.

(५७) 'प्राणिनां हि निकृष्टापि जन्मभूमिः परा प्रिया' (छज्जू जैसा सुख चुबारे न बल्ख न बूखारे) East or West home is the best.

(५८) 'हा हन्त सम्प्रति गतानि दिनानि तानि' (वे दिन गये जब लखीलखां फाखता उड़ाया करते थे) Those palmy days are gone.

(५९) 'विश्वस्तेषु च वञ्चना परिभवश्चौर्यं स शौर्यं हि तत् ।

or (अङ्कमादह्य सुप्तं हि हत्वा किं नाम पीरुषम् ॥')

(विश्वासघात महापाप है ।) It is a great sin to harm a person who comes for shelter.

(६०) 'खलः करोति दुर्वृत्तम् तद्धि फलति साधुषु ।

दशाननोऽहरत् सीतां बन्धनं च महोदधः ॥'

(लरें लोह पाहन दोऊ बीच रुई जरि जाय ।) Wicked person commits a fault and a good man suffers for it.

(६१) 'भक्षितेऽपि लशुने न शान्तो व्याधिः' (जेहि के कारण मुँड मुँडावा दुख मोरे आगे आवा ।) Even in using bitter pill one is not free from disease.

(६२) 'स मुहूर्द् व्यसने यः स्यात्' (बकत पड़े पर जानिए को बैरी को पीत ।) A friend in need is a friend indeed.

(६३) 'विषकुम्भं पयोमुखम्' (मुह में राम राम बगल में छूरी) A wolf in lamb's clothing.



(६४) 'कस्यात्यन्तं सुखमुपपन्नं दुःखमेकान्ततो वा' (हर रोज ईद कहां)  
Christmas comes but once a year.

(६५) 'सर्वनाशो समुत्पन्ने अर्द्धे त्यजति पण्डितः' (भागते चोर की लंगोटी ही सही ।) Something is better than nothing.

(६६) 'पङ्क्तो हि न भसि क्षिप्तः क्षेप्युः पतति मूर्धनि' (आस्मान पर थूका अपन सिर ।) Slander hurts the slanderer.

(६७) 'न विडालो भवेद्यत्र तत्र क्रीडन्ति मूषकाः' (मियां घर नहीं बीबी को डर नहीं ।) When the cat is away the mice will play.

(६८) 'यत्र चोरा न विद्यन्ते तत्र किं स्यान्निरिक्षकैः' (मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी ।) Where there is peace at home there is no need of a judge.

(६९) 'को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः' (लेने देने से सभी अगने हो जाते हैं ।) Wealth is a great attraction. Friends are plenty when the purse is full.

(७०) 'प्रक्षालनादि पङ्क्तस्य दूरादस्पृशेनं वरम्' (पंर कीचड़ में डाल कर धोने से कीचड़ में न डालना अच्छा है ।) Prevention is better than cure.

(७१) 'उद्गाणां च विवाहोऽस्ति गर्दभा गीतगायकाः' (जंसा घर वंसा वर, जैसे को तैसा मिले ।) It is only asses that sing at the marriage of camel, or Birds of the same feather flock together.

(७२) 'अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदराऽपि विमुञ्चति' (बुरे का साथी कीत है ।) None would like to be the friend of a wicked person.

(७३) 'अगच्छन् वनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति' (आलस बुरी बला है ।) Idleness is a great disease.

(७४) 'पावका लोहान्गेन मृद्गरैरभिहृत्यते' (गैहू के संग घुन पिसें) One is to suffer when associated with another.

(७५) 'नीचो वदति न कुर्वते, वदति न साधुः करोत्येव' अथवा 'ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयागिनाम्' (सज्जन करते हैं कहते नहीं ।) Good men prove their usefulness by deeds, not by words.

(७६) 'बन्धनभ्रष्टो गृहकान्तिश्चल्लाया मुखे पतितः' (भाड़ से निकसा आग में पड़ा ।) He has escaped one danger only to fall into another.

(७७) 'रत्नाकरो जलनिधिरित्यसेवि घनाशया ।

घनं दूरेऽस्तु वरुणमारि क्षारवारिभिः ॥'

(चौबे गये छत्ते बनने दुब्बे बन के आए ।) One trying for better got worst.

(७८) 'आपदापामपत्नीनां हिनोऽप्यायात्यहेतुताम्' (आपत्ति पड़ने पर अपना ही पराया हो जाता है ।) When calamities fall upon one, his own friends become his enemies.

(७९) 'अगाधजलसञ्चारी न गर्व याति रोहितः ।  
(अगाध (सागर) जल में विचरण करता हुआ भी रोहित (महामत्स्य)  
अभिमान नहीं करता ।)

(८०) 'अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीग्रमुष्णं  
शमयति परितापं छायाया संश्रितानाम् ।'  
(वृक्ष अपने सिर पर सूर्य की प्रचण्ड धूप लेता है, किन्तु अपने आश्रितों का  
ताप अपनी छाया से दूर करता है ।)

(८१) 'अन्यायं कुरुते यदा क्षितिपतिः कस्तं निरोद्धुं क्षमः ।'

(यदि राजा ही अन्याय करता है तो उसे कौन रोक सकता है ।)

(८२) 'अपि मृदमुपयान्तो वाग्विलासैः स्वकीयैः,  
परभणितेषु तृप्तिं यान्ति सन्तः कियन्तः ?'

(अपनी रचनाएं तो सभी को अच्छी लगती हैं किन्तु ऐसे सगजन बहुत कम हैं  
जो दूसरों की रचनाओं को सुन कर प्रसन्न होते हैं ।)

(८३) 'अप्रकटीकृतशक्तिः शक्तोऽपि जनस्तिरस्त्रियां लभते ।

(अपनी शक्ति का परिचय न देने पर शक्तिशाली व्यक्ति भी तिरस्कृत  
होता है ।)

(८४) 'अश्नुते स हि कल्याणं व्यसने यो न मुह्यति ।

(जो मुसीबत में नहीं घबराना वही संसार में सुख भोगता है ।)

(८५) आहारो व्यवहारो च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

(आहार और व्यवहार में संकोच न करने वाला सुखी रहता ।)

(८६) उदिते हि सहस्रांशो न खद्योतो न चन्द्रमाः ।

(सूर्य के उदय हो जाने पर न जगुनू और न चन्द्रमाही जचते हैं ।)

(८७) कलौ वेदान्तिनो भान्ति फाल्गुने वालका इव ।

(कलियुग में इसी प्रकार वेदान्ती दिखाई देते हैं जैसे फाल्गुन के महीने में बालक ।)

(८८) कल्पवृक्षोऽप्यभव्यानां प्रायो याति पलाशताम् ।

(भाग्यहीनों के लिए कल्पवृक्ष भी ढाक का पेड़ बन जाता है ।)

(८९) कष्टं निर्धनिकस्य जीवितमहो दारैरपि त्यज्यते !

(ओह ! निर्धन पुरुष का भी कोई जीवन है, स्त्री भी साथ छोड़ देती है ।)

(९०) कः प्राज्ञो वाञ्छति स्नेहं वेश्यासु सिकतामु च ।

(कौन बुद्धिमान् वेश्याओं और बालू से स्नेह की आशा करेगा ? स्नेह—प्रेम

और तेल ।)

(९१) काले दत्तं वरं ह्यल्पमकाले बहुनामि किम् ?

(समय पर थोड़ा भी दिया जाय तो बहुत है, बाद में अधिक दिया हुआ  
भी बेकार ।)

(९२) कुदेशेष्वपि जायन्ते क्वचित्केचिन्महाशयाः ।

(कभी-कभी निकुष्ट स्थान में भी बड़े आदमी पैदा हो जाते हैं ।)

(९३) किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेसा,  
तं चेत्सहस्रकिरणो धुरिनाऽकरिष्यत् !

(सूर्य भगवान् यदि पीठ पर न होते तो क्या अरुण (संसार के) घने अन्धकार को मिटा सकता ?)

(९४) को जानाति जनो जनार्दन मनोवृत्तिः कदा कीदृशी !

(कौन जानता है—भगवान् कब क्या करना चाहते हैं ?)

(९५) को वा दुर्जनवाग्रामु पतितः क्षमेण यातः पुमान् !

(दुर्जन के फन्दे में पड़कर कौन कुशल पूर्वक वच सकता है ?)

(९६) प्रावाणोऽप्यार्द्रतां सम्यग् भजन्त्यभिमुखे विधी ।

(भाग्य साथ दे तो पत्थर भी सुखाई छोड़ कर चिकनाई धारण कर लेते हैं ।)

(९७) दर्दुरा यत्र वक्तास्तत्र मीनं हि शोभनम् ।

(जहाँ मेंढक ही वक्ता हो वहाँ चुप रहना ही अच्छा है ।)

(९८) दुग्धघातोऽपि किं याति वायसः—कल हंसताम् !

(दूध में नहलाने से क्या कौआ हंस बन सकता है ?)

(९९) दैवे दुर्जनतां गते नृणमपि प्रायेण वज्रायते ।

(दैव के उलट होने पर तिनका भी प्रायः बज्र बन जाता है ।)

(१००) न दरिद्रस्तथा दुःखी लब्धक्षीणघनो यथा ।

(निधन आदमी उतना दुःखी नहीं जितना वह जो धनी होने के बाद सब कुछ खो बैठता है ।)

(१०१) न सुवर्णे ध्वनिस्तादृक् यादृक् कास्ये प्रजायते ।

(सोने में वैसी आवाज नहीं जैसी कासि में ।)

(१०२) न स्पृशति पल्वलाम्भः पञ्जरशेषोऽपि कुञ्जरः क्वापि ।

(पंजर मात्र रहजाने पर भी हाथी कभी छिछली तलैयाँ का पानी नहीं छूता ।)

(१०३) नहि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोत्कया ।

(घास फूस की आग से समुद्र का पानी गरम नहीं किया जा सकता ।)

(१०४) पञ्चभिर्मिलितैः किं यज्जगतीह न साध्यते ?

(संसार ऐसा कौनसा काम है जिसे पांच आदमी मिल कर पूरा न कर सकें ।)

(१०५) प्रासाद—शिखरस्योऽपि काकः किं गरुडायते ?

(कौआ यदि महल के शिखर पर बैठ जाय तो क्या वह गरुड़ बन जायगा ?)

(१०६) प्रिया नाशो कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति ।

(प्रिया के नाश होने पर समस्त संसार जंगल बन जाता है ।)

(१०७) बुभुक्षितैर्व्याकरणं न भुज्यते, न पीयते काव्यरसः पिपासुभिः ।

(भूखे व्याकरण नहीं खा लेंगे और व्यासे काव्यरस से सन्तुष्ट न होंगे ।)

(१०८) मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

(अत्यन्त संक्षिप्त तथा साररूप वचन ही वाग्मिता है । इसी को वक्तृत्व कला कहते हैं ।)

(१०९) यदेव राचते यस्मै भवेत्तत्तस्य सुन्दरम् ।

(जिनके मन में जो बस गया वही उसके लिए सुन्दर है ।)

(११०) मोघा नाम जायेत महत्सूपकृति—कुतः ?

(महान् पुरुषों के प्रति किया हुआ उपकार कभी निष्फल नहीं होता ।)

शरीर—सम्बन्धी व्यावहारिक शब्द

हिन्दी संस्कृत

सिर—शिरः (न०) शीर्षम् (न०)

माथा—ललाटम् (न०)

भी—भ्रूः (स्त्री०)

आंख—नेत्रम्, नयनम्, चक्षुः (न०)

पलक—नेत्रलोम (न०)

कान—कर्णः (पुं०)

नाक—नासिका (स्त्री०)

मुंह—मुखम्, आननम् (न०)

लार—लाला (स्त्री०)

दांत—दन्तः, दशनः (पुं०)

होंठ—ओष्ठः (पुं०)

मसूड़े—दन्तमांसम् (न०)

जीभ—जिह्वा, रसना (स्त्री०)

गर्दन—घ्रीवा, (स्त्री०) गलः (पुं०)

कंधा—स्कन्धः (पुं०)

गला—कण्ठः, गलः (पुं०)

ठुड्डी—चिबुकम् (न०) हनुः (पुं०)

छाती—उरः, वक्षः (न०)

चूची—चूचुकम् (न०)

स्तन—कुचः, स्तनः (पुं०)

शरीर—शरीरम् (न०) कायः, देहः (पुं०)

नाभि—नाभिः उदरावर्तः (पुं०)

गन—चित्तम्, हृदयम्, मनः (न०)

बुद्धि—बुद्धिः, मनीषा, धीः, प्रज्ञा (स्त्री०)

पेट—उदरम् (न०)

आंत—अन्त्रम् (न०)

पीठ—पृष्ठम् (न०)

कमर—कटिः, क्षोणिः (स्त्री०)

फेफड़ा—फुफुसम् (न०)

तोंद—तुन्दम् (न०)

कलेजा—वृक्कम्, हृद् (न०)

हिन्दी संस्कृत

खून—रक्तम्, रुधिरम् (न०)

चरबी—मेदः (न०) वपा, वसा, (स्त्री०)

हड्डी के भीतर की चरबी—मज्जा (स्त्री०)

हाथ—करः हस्तः, पाणिः (पुं०)

बांह—बाहुः भुजः (पुं०)

हथेली—करतलः-लम् (अस्त्री०)

ताली—करतलध्वनिः (पुं०)

नाडी—स्नायुः (पुं०) शिरा (स्त्री०)

नाखून—नखः, नखम् (अस्त्री०) कररुहः-

(पुं०)

हड्डी—अस्थि, कीकसम् (न०)

माम-मांसम्, पिशितम् कृष्यम् न०

उंगली—अंगुलिः (स्त्री०)

अंगूठा—अङ्गुष्ठः (पुं०)

चारों उंगलियां—तर्जनी, मध्यमा, अना-

मिका, कनिष्ठा (स्त्री०)

मुट्ठी—मुष्टिका (स्त्री०)

चूतड़—नितम्बः (पुं०)

जाघ—जङ्घा (स्त्री०) उरु (न०)

गुदा—अपानम्, मलद्वारम् (न०)

लिङ्ग-लिङ्गम् (न०) शिश्नः, मेढः (पुं०)

योनी—योनिः (पुं०, स्त्री०) भग

(पुं०)

अंडकोश—वृषणम् (न०)

मूत—मूत्रम् (न०) प्रस्रावः (पुं०)

मल—मलम् (न०) मलम्,

पूरीषम् (न०)

गोबर-गोमयः (पुं०) शकृद् (स्त्री०)

स्त्री का वीर्य—रजः पुष्पम्,

आर्तवम् (न०)

पुरुषका वीर्य-शुक्रम्, वीर्यम् (न०)

हिंदी संस्कृत

टेहुना—जानु (न०)

पाव—पदः, अङ्घ्रिः, (पु०)

हिन्दी संस्कृत

चरणः (अस्त्री०)

खाल-चर्म (न०) त्वक् (स्त्री०)

## संस्कृत बनाओ :—

१—उस के व्याख्यान के अन्त में सब लोगों ने ताली बजाई । २—उस बनीय की तौंद बड़ी है । ३—हम जीभ से स्वाद लेते हैं । ४—अच्छे लक्षणों वाली स्त्री की कमर पतली होती है । ५—चुटकी मत बजाओ । ६—योगी आंखों को धोते हैं । ७—कान का मल निकालना चाहिए । ८—उसके शरीर में खून सूख गया । ९—वच्चे के पैदा होने से पहले मां के स्तन में दूध आ जाता है । १०—उसकी जांघें केले के खम्भे की तरह और बांह हाथी की सूड़ की तरह हैं । —उसके शरीर में खून का विकार है । ११—गोबर से लिपी हुई जमीन पवित्र होती है ।

## पाठशाला-सम्बन्धी शब्द

स्कूल—पाठशाला (स्त्री०)

पढ़ाने वाला—अध्यापकः

शिक्षकः पाठकः (पु०)

जमात—श्रेणी, कक्षा (स्त्री०)

पुस्तक-पुस्तकम् (न०) ग्रन्थः (पु०)

स्याही—मसी (स्त्री०)

दवात—मसीपात्रम् (न०)

कलम—लेखनी (स्त्री०)

पन्ना, कागज—पत्रम् (न०)

सफा, पेज—पृष्ठम् (न०)

पढ़ना—पठनम् (न०)

पढ़ाना—पाठनम् (न०)

लिखना—लेखनम् (न०)

याद करना—स्मरणम् (न०)

अच्छा लेख—सुलेखः (पु०)

सवाल—प्रश्नः (पु०)

उत्तर देना—उत्तरम् (न०)

सलाह—परामर्शः (पु०)

इम्तिहान—परीक्षा (स्त्री०)

खेल—क्रीडा (स्त्री०)...

खेलाड़ी—क्रीडकः (पु०)

खेल का मैदान—क्रीडा क्षेत्रम् (न०)

कालिज—विद्यालयः, (पु०)

विद्यार्थी—छात्रः, शिष्यः, विद्यार्थी,

अध्येता, अध्यापक (पु०)

मैनेजर—प्रबन्धकर्ता (पु०)

हाजिर—उपस्थितः (पु०)

गैर हाजिर—अनुपस्थितः (पु०)

होशियार—प्राज्ञः, बुद्धिमान् (पु०)

नालायक—मन्दधीः, मूर्खः (पु०)

सजा—दण्डः (पु०)

डिसिप्लिन—अनुशासनम् (न०)

विनयः (पु०)

वर्तव्य—व्यवहारः (पु०)

नतीजा—परिणामः (पु०)

वकवक—जल्पनम् (न०)

नंबर—अङ्कः (पु०)

थूकना—छीवनम् (न०)

दास्त—मित्रम् (न०) सुहृद् (पु०)

१२ वजे—द्वादशवादन—समयः (पु०)

सगंडा—विवादः, कलहः (पु०)

छुट्टी—अवकाशः (पु०)

उपदेश—शिक्षा स्त्री०)

आजकल—अद्यतन, इदानीन्तन



## संस्कृत बनाओ—

१—पुरानी और आजकल की पढ़ाई में बड़ा अन्तर है । २—पढ़ना तो आमाम पर नञ्जना लाना कठिन है । ३—पिछले इम्तिहान में तुमने कितने नम्बर पाये ? ४—लिखते पढ़ने के अलावा प्रतिदिन खेलना भी चाहिए । ५—अपने सहपाठियों के साथ सदैव मित्रता का व्यवहार करो ६—अपने अध्यापक का कहना मानो और अपना गठ ध्यान पूर्वक पढ़ो । ७—आपस में कभी मत झगड़ो और एक दूसरे को गाली मत दो । ८—रोज साफ कपड़े पहन कर स्कूल जाओ । ९—जो प्रश्न पूछा जाय उसी का उत्तर दो । १०—बिना कारण स्कूल में अनुपस्थित मत रहो । ११—चतुर विद्यार्थी को सभी अच्छा मानते हैं और नालायक को सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं । १२—स्कूल के अवकाश के दिनों में भी कुछ न कुछ अवश्य पढ़ना चाहिए ।

## भोजन सम्बन्धी व्यावहारिक शब्द

कच्चा अन्न—आमान्नम् (न०)  
पक्का अन्न—सिद्धान्नम् (न०)  
रोटी—रोटिका (स्त्री०)  
फुलका—पोलिका (स्त्री०)  
भात—ओदनः, भक्तम्, ओदनम् (पुं० न०)

दाल—सूपः (पुं०)  
सब्जी—व्यञ्जनम् (न०)  
साग—शाकः, शाकम् (पुं० न०)  
खीर—पायसम्  
पकवान—पक्वान्नम्  
मिठाई—मिष्टान्नम्  
लड्डू—मोदकः  
पूरी—शष्कुली, पुलिका  
पूआ—पूपः (पुं०) पीठिका (स्त्री०)  
पूड़े—अपूपः (पुं०)  
पापड़—पर्वटा (स्त्री०)  
परीठा—पोलिका (स्त्री०)  
मालपूआ—मल्लपूपः (पुं०)  
खिचड़ी—कृशरः  
चना—चणकः  
जौ—यवः  
धान—धान्यम् (न०) शालिः पुं०)  
कचौरी—माषगर्भा (स्त्री०)

रायता—दाधेयम् (न०)  
अरहर—आढ़की (स्त्री०)  
मसूरः (पुं०)  
उड़द—माषः  
हलुआ—लपटिका (स्त्री०)  
लपसी—यवागूः  
भरता—भर्ता  
शक्कर—शर्करा  
चीनी—सिता  
लाजा खील—लाजाः (पुं० बहु०)  
सत्तू—सक्तुः (पुं०)  
कढ़ी—तेमनम् (न०)  
दूध—दुग्धम्, पयः (न०)  
मलाई—कूचिका (स्त्री०)  
मावा (खोया)—किलाटिका  
मवखन—नवनीतम् दधिजम्  
घी—घृतम्  
दही—दधि (न०)  
छाछ—तक्रम्, कालभोग्यम्  
तेल—तैलम्  
भांग—मातुलानी, भंगा  
सेवई—सूत्रिका  
कसैला—कषायम्

तेज—तिक्तम्  
गर्भ—उष्णम्  
ठंडा—शीतलम्  
खट्टा—अम्लम्  
कडुआ—कटु  
चिकना—चिकणम्  
गोल-मोल—वर्तुलम्

टेढा—वक्रम्  
नमक—लवणम्  
मूंग—मुद्गकः  
मटर—वर्तुलः, कलायः (पुं०)  
कोदो—कोद्रावः (पुं०)  
कीनी—कंगूः (पुं०)  
सरसो—सर्षपः, तन्तुकः

### संस्कृत बनाश्रोः—

१—पंजाब के लोग प्रायः रोटी खाते हैं और बंगाल के लोग प्रायः भात खाते हैं। २—भात से रोटी अधिक बलदायक है। ३—दालभात के साथ साग और पापड़ अधिक स्वाद देते हैं। ४—जाड़े की रातों में पुरी का भोजन बलदायक है। ५—खिचड़ी का खाना भी जाड़ों में हिनकर है। ६—गरीब सत्तू खाकर दिन बिताते हैं। ७—खत्री लोग रात को अक्सर परीठा खाते हैं। ८—भोजन के अन्त में चीनी मिली हुई दही खाई जाती है। ९—बीमार को मूंग की दाल देते हैं। १०—तिलों से तेल निकला है। ११—दूध पीने से बच्चे तंदुरुस्त रहते हैं। १२—गमियों में मछली पीने से तंदुरुस्ती बढ़ती है।

### खाद्य पदार्थ

चावल—अक्षतानि, तण्डुलः  
मकई—शस्यम्  
गेहूँ का आटा—गोधूमचूर्णः  
बाजरा—प्रियङ्गुः  
सिम—कडुगुः  
खजुली—खाजा (स्त्री०)  
आचार—सन्धितम्, संधानम्  
मुरब्बा—रागखाण्डवम्  
साठी—पण्डिका (स्त्री०)  
ककड़ी—कर्कटिका  
फूट, खीरा—वर्भटिः (स्त्री०)  
हौरा—होलररः (पुं०)  
गरम मसाला—मीरभम्  
शकरपारा—शकरनाल-पालिका  
चटनी—अवलेहः (पुं०)  
पादाना—अजगन्धः  
राई—राजिका  
इमली—तिन्तडीफलम्  
करौंदा—करमर्दकम्

ओल—सूरणकम्  
इलायची—एला  
अदरक—आर्द्रकम्  
कत्था—खदिरम्  
बेर—बदरम्, कोलः  
बरफी—चक्रिका (स्त्री०)  
जलेबी—कुण्डलिका, कुण्डलिनी (स्त्री०)  
इमरती—  
वालशाही—मिष्टमण्डः (पुं०)  
फंती—फेनिका (स्त्री०)  
आलू—आलूका  
ककोड़ा—कर्कोटकम्  
कद्दू—कुम्भी (पुं०)  
पालकी—पालक्या (स्त्री०)  
कुलफा—मेघनादः  
परवर—पटोलकम्  
प्याज—पलाण्डुः  
लहसुन—लशूनम्

गाजर—गृञ्जनम्  
बैंगन—वृन्ताकम्, वर्तकुः  
मूली—मूलिका  
कच्चा—वस्तुकम्  
कचनार—काञ्चनारः

करेला—कारवेल्लम्  
तरोई—कोशातकी  
भिण्डी—रामकोशानकी  
गोभी—गोजिह्वा

### संस्कृत बनाओ:—

१—कुल्फा और पालक का शाक गर्मियों में अधिक पसंद किया जाता है। २—परवर की तरकारी बीमारी में भी हानिकारक नहीं। ३—गोभी और आलू की तरकारी अच्छी होती है। ४—मटर और आलू की तरकारी बड़ी बलदायक होती है। ५—हिन्दू शास्त्रों में प्याज को निषिद्ध बताया गया है। ६—इमली की चटनी पोदीन के साथ बड़ी स्वादिष्ट होती है। ७—करेले की तरकारी बड़ी गुणकारक है। ८—कच्ची मूली बड़ी गुणकारक है। ९—फेनियाँ दूध में मिलाकर खाई जाती हैं। १०—भिण्डियाँ में कागजी नींबू का रस पड़ने से बड़ी स्वादिष्ट हो जाती है। ११—तरोई वर्षा ऋतु में अधिक पैदा होती है। १२—बालूशाही, जलेबी, लड्डू आदि मिठाइयाँ स्वास्थ्य को लाभदायक नहीं।

### फलों के नाम

आम—आम्रः, रसालः (पुं०)  
अनार—दाडिमफलम्  
अंगूर—मृदिका, द्राक्षफलम्  
अमरुद—आम्रलम्  
अखरोट—अक्षोटफलम्  
केला—कदलीफलम्  
कसेरू—कसेरुः (पुं०)  
ककड़ी—कर्कटिका  
कटहर—पनसः (पुं०)  
कमरख—कर्मरक्षः  
करीच—कर्मदकम्  
कदम—कदम्बः, नीपफलम्  
नींबू—जम्बीरीफलम्  
कागजीनींबू—निम्बूकम्  
कैत (कन्या)—कपिलवृक्षम्  
बिजोरा नींबू—बीजपुरः (पुं०)  
खीरनी—क्षीरिकाफलम्  
खरबूजा—दशाङ्गुलम्

खजूर—खजूरफलम्  
खीरा—अपुषम, चर्मटी  
तरबूजा—तारबूजम्, कलिङ्गम्  
बेर—बदरीफलम्, कर्कन्धुः  
नारियल—नारिलफलम्  
नारंगी—नारङ्गफलम्  
सेव—सेवफलम्  
बेल—विल्वफलम्  
बादाम—बादामः, वातादफलम्  
पीलू—पीलूफलम्  
सुपारी—पूगः, पूगीफलम्  
जामुन—जम्बूफलम्  
जामुन—जम्बूफलम्  
फालसा—परुषः (पुं०)  
तूत—तूतम्  
सरीफा—शिशवृक्षफलम्  
पिस्ता—अङ्कूटफलम्

## संस्कृत बनाओ ।

१—आम सब फलों में उत्तम है । २—प्रयाग के अमरुद संसार भर में प्रसिद्ध है । ३—लखनऊ के खरबूजों का स्वाद अमृत के समान है । ४—चुनार के पास अच्छे स्वाद वाले सरीफ होते हैं । ५—कटहर की तरकारी अच्छी होती है । ६—गर्मियों में तरबूज खाने से ठंडक होती है । ७—अंगूर खाने से बल बढ़ता है । ८—नारंगी का रस बड़ा स्वादिष्ट और मधुर होता है । ९—जामुन का मुरब्बा पाचक होता है । १०—गर्मियों में कसेरू भी ठंडा होता है । ११—कैत के फल की चटनी स्वादिष्ट होती है । १२—बिजौरा नींबू का अचार अच्छा होता है । १३—रोगियों को प्रायः अनार खाने के लिए दिया जाता है । १४—बेर सब फलों में निकृष्ट फल है । १५—खट्टी चीजों में कागजी नींबू का अधिक सेवन करना चाहिए ।

## संवन्धवाचक शब्द

पिता—पिता, जनकः  
माता—माता, जननी  
दादा—पितामहः  
दादी—पितामही  
परदादा—प्रपितामह  
परदादी—प्रपितामही  
नाना—नानी—मातामहः, मातामही  
परनाना—प्रपातामहः  
परनानी—प्रपातामही  
वृद्ध प्रनाना—वृद्धप्रपातामहः  
चाचा, चाची—पितृव्यः, पितृव्यपत्नी  
चचेरा भाई—पितृव्यपुत्रः  
भाई—भ्राता  
सगाभाई—सहोदरः  
भौजाई—(भाबी)—भ्रातृजाया  
भतीजा—भ्रातृपुत्रः भ्रात्रोपः  
भनीजी,—भ्रातृमुवा  
मामा, मामी—मातुलः, मातुली  
मामा का लड़का—मातुलपुत्रः  
पुत्र, पुत्री—पुत्रः, पुत्री  
पोता, पोती—पौत्रः, पौत्री  
परोतरा-तरी—प्रपौत्रः, प्रपौत्री  
दामाद, जमाई—जामाता  
बहिन—भगिनी

बहनोई—भगिनीपतिः  
भानजा—भागिनेयः  
ओरत—स्त्री, योषित्, नारी  
यार—जारः, उपपतिः  
फूफी—पितृष्वसा  
फूफड़—पितृष्वसृपतिः  
फूफेरा भाई—पितृष्वस्त्रीयः  
मासी—मातृष्वसा  
मासड़—मातृष्वसृपतिः  
मसेरा भाई—मातृष्वसृसोयः  
पति, स्त्री—पतिः, पत्नी  
ससुर—श्वशुरः  
सास—श्वश्रुः  
साबा—श्यालः  
देवर—देवरः  
देवरानी—याता  
ननद—नदान्दा  
पतोहू—पुत्रवधूः  
नौकर—भृत्यः  
नौकरानी—परिचारिका  
मालिक—स्वामी  
मित्र—मित्रम्, वयस्यः  
दुश्मन—शत्रुः, अरिः, रिपुः  
गाभिन—गाभिणी

दूती—दूती, सञ्चारिका  
 सखी—आलि: वयस्या  
 वेश्या—वारसत्री, गणिका, वेश्या

रण्डा—विधवा, विश्वस्ता, रण्डा  
 सोहागिनी—सौभाग्यवती, पतिव्रती  
 पतिव्रता—साध्वी, पतिव्रता

### संस्कृत बनाओ ।

१—ब्रज्जाल में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा है । २—दूती अपनी सखी के संदेश को उसके पति के पास पहुंचाती है । ३—अपने बड़े भाई की स्त्री माता के तुल्य होती है । ४—चंचल स्त्री का विश्वास न करना चाहिए । ५—सास को माता कहकर पुकारना चाहिए । ६—विधवा का यही शृङ्गार है कि वह ईश्वर की आराधना करे । ७—रामचन्द्र जी ने कहा था कि संसार में सहोदर भाई नहीं मिल सकता । ८—दक्षिण में मामा की लड़की से विवाह निषिद्ध नहीं । ९—वेश्या की संगति स्त्री को पतित कर देती है । १०—घर में पतोहू की पूरी इज्जत होनी चाहिए ।

### जातीवाचक शब्द

सुनार—स्वर्णकार:  
 लोहार—लौहकार: अयस्कार:  
 चमार—चर्मकार:  
 कुम्हार—कुम्हकार:, कुलाल:  
 माली—मलकार:  
 मल्लाह—कर्णधार: नाविक:  
 चप्पू—अरित्रम्  
 चित्र बनाने वाला—चित्रकार:  
 तेली—तैलकार: तैलिक:  
 जुआरी—द्यूतकार:  
 मेहतर—श्वपच:, मार्जक:, महतर:  
 झाड़ू—सम्मार्जनी  
 चाक—चक्रम्  
 कारिगर—शिल्पी, कारु:  
 धोबी  
 जुलाहा—तन्तुवाय:  
 मदारी—ऐन्द्रजालिक:, आहितुण्डिक:  
 फावड़ा—खनित्रम्  
 मजदूर—भारवाह:  
 दर्जी—सौचिक:, सूचक:  
 नाई—नापित:, कारिक:  
 रंगरेज—रञ्जक, वस्त्ररागकृत्  
 बकुई—तक्षक:, सूत्रधार:  
 शिकारी—व्याध:

दरवान—प्रतिहार:  
 बीना—वामन:  
 पेदू—तुन्दिल:  
 भूनेने वाला—मर्जक:  
 भार—भूर्जनयन्त्रम्  
 लेप लगाने वाला—लेपक:, सुधाजीवी  
 ठग—वञ्चक:  
 चूड़ीहार—कांचकङ्कणविक्रेता (पुं०)  
 सितारिया—वैणिज:, वीणावादक:  
 खटिक—शाकविक्रेता  
 शाण वाला—शस्त्रमार्जक:, असि-  
 जीवी (पुं०)  
 कंधा वाला—कङ्कतकृत्  
 चारण—कुशीलक:  
 कान का मैल निकालने वाला—(कन-  
 मैलिया) कर्ण मलनिस्सारक:  
 बेंहगी—जलानयनयन्त्रम्  
 कहार—जलवाह:, कहार:  
 कसाई—~~मणि~~, नासिकक्रेता  
 कलाल—शीण्डिक:, सुराजीवी  
 शराब—मद्यं, सुरा मदिरा  
 शराबघर—शुण्डापानं, मद्यस्थानम्  
 खेन—वप्र: केदार: क्षेत्रम्  
 रेत—सिकता



## संस्कृत बनाओ ।

१—आम सब फलों में उत्तम है । २—प्रयाग के अमरुद संसार भर में प्रसिद्ध है । ३—लखनऊ के खरबूजों का स्वाद अमृत के समान है । ४—चुनार के पास अच्छे स्वाद वाले सरीफ होते हैं । ५—कटहर की तरकारी अच्छी होती है । ६—गमियों में तरबूज खाने से ठंडक होती है । ७—अंगूर खाने से बल बढ़ता है । ८—नारंगी का रस बड़ा स्वादिष्ट और मधुर होता है । ९—जामुन का मुरब्बा पाचक होता है । १०—गमियों में कसेरू भी ठंडा होता है । ११—कैत के फल की चटनी स्वादिष्ट होती है । १२—बिजौरा नींबू का अचार अच्छा होता है । १३—रोगियों को प्रायः अनार खाने के लिए दिया जाता है । १४—बेर सब फलों में निकृष्ट फल है । १५—खट्टी चीजों में कागजी नींबू का अधिक सेवन करना चाहिए ।

## संबन्धवाचक शब्द

पिता—पिता, जनकः  
माता—माता, जननी  
दादा—पितामहः  
दादी—पितामही  
परदा—प्रपितामह  
परदादी—प्रपितामही  
नाना—नानी—मातामहः, मातामही  
परनाना—प्रपातामहः  
परनानी—प्रमातामही  
बृद्धप्रनाना—बृद्धप्रमातामहः  
चाचा, चाची—पितृव्यः, पितृव्यपत्नी  
चचेरा भाई—पितृव्यपुत्रः  
भाई—भ्राता  
सगाभाई—सहोदरः  
भोजाई—(भावी)—भ्रातृजाया  
भतीजा—भ्रातृपुत्रः भ्रातृभयः  
भनीजी,—भ्रातृमुखा  
मामा, मामी—मातुलः, मातुली  
मामा का लड़का—मातुलपुत्रः  
पुत्र, पुत्री—पुत्रः, पुत्री  
पोता, पोती—पौत्रः, पौत्री  
परोतरा-तरी—प्रपौत्रः, प्रपौत्री  
दामाद, जमाई—जामाता  
बहिन—भगिनी

बहनोई—भगिनीपतिः  
भानजा—भगिनेयः  
औरत—स्त्री, योषित्, नारी  
यार—जारः, उपपतिः  
फूफी—पितृव्यसा  
फूफड़—पितृव्यसृपतिः  
फूफेरा भाई—पितृव्यस्त्रीयः  
मासी—मातृव्यसा  
मासड़—मातृव्यसृपतिः  
मसेरा भाई—मातृव्यसृस्त्रीयः  
पति, स्त्री—पतिः, पत्नी  
ससुर—श्वशुरः  
सास—श्वश्रुः  
साबा—श्यालः  
देवर—देवरः  
देवरानी—याता  
ननद—नदान्दा  
पतोह—पुत्रवधूः  
नौकर—भूत्यः  
नौकरानी—परिचारिका  
मालिक—स्वामी  
मित्र—मित्रम्, वयस्यः  
दुश्मन—शत्रुः, अरिः, रिपुः  
गाभिन—गाभिणी

दूती—दूती, सञ्चारिका  
सखी—आलि: वयस्या  
वेश्या—वारसत्री, गणिका, वेश्या

रण्डा—विधवा, विश्वस्ता, रण्डा  
सोहागिनी—सौभाग्यवती, पतिव्रती  
पतिव्रता—साध्वी, पतिव्रता

### संस्कृत वनाओ ।

१—बङ्गाल में विधवाओं की बड़ी दुर्दशा है । २—दूती अपनी सखी के संदेश को उसके पति के पास पहुंचाती है । ३—अपने बड़े भाई की स्त्री माता के तुल्य होती है । ४—चंचल स्त्री का विश्वास न करना चाहिए । ५—सास को माता कहकर पुकारना चाहिए । ६—विधवा का यही शृङ्गार है कि वह ईश्वर की आराधना करे । ७—रामचन्द्र जी ने कहा था कि संसार में सहोदर भाई नहीं मिल सकता । ८—दक्षिण में मामा की लड़की से विवाह निषिद्ध नहीं । ९—वेश्या की संगति स्त्री को पतित कर देती है । १०—घर में पतोहू की पूरी इज्जत होनी चाहिए ।

### जातीवाचक शब्द

सुनार—स्वर्णकार:  
लोहार—लोहकार: अयस्कार:  
चमार—चर्मकार:  
कुम्हार—कुम्हकार:, कुलाल:  
माली—मलाकार:  
मल्लाह—कर्णधार: नाविक:  
चप्पू—अरित्रम्  
चित्र बनाने वाला—चित्रकार:  
तेली—तैलकार: तैलिक:  
जुआरी—द्यूतकार:  
मेहतर—इवपच:, मार्जक:, महतर:  
झाड़ू—सम्मार्जनी  
चाक—चक्रम्  
कारिगर—शिल्पी, कारु:  
धोबी  
जुलाहा—तन्तुवाय:  
मंदारी—ऐन्द्रजालिक:, आहितुण्डिक:  
फावड़ा—खनित्रम्  
मजदूर—भारवाह:  
दर्जी—सौचिक:, सूचक:  
नाई—नापित:, शौरिक:  
रंगरेज—रञ्जक, वस्त्ररागकृत्  
बढ़ई—तक्षक:, सूत्रधार:  
शिकारी—व्याध:

दरवान—प्रतिहार:  
बौना—वामन:  
पेटू—तुन्दिल:  
भूनेने वाला—मर्जक:  
भार—भूर्जनयन्त्रम्  
लेप लगाने वाला—लेपक:, सुधाजीवी  
ठग—वञ्चक:  
चूड़ीहार—कांचकङ्कणविक्रेता (पुं०)  
सितारिया—वैणिज:, वीणावादक:  
खटिक—शाकविक्रेता  
शाण वाला—शस्त्रमार्जक:, असि-  
जीवी (पुं०)  
कंधा वाला—कङ्कतकृत्  
चारण—कुशीलव:  
कान का मैल निकालने वाला—(कन-  
मैलिया) कर्ण मलनिस्सारक:  
बेहंगी—जलानयनयन्त्रम्  
कहार—जलवाह:, कहार:  
कसाई—मर्दि, मांसिक्रेता  
कलाल—शीण्डिक:, सुराजीवी  
शराब—मद्यं सुरा मदिरा  
गराबघर—शुष्कापानं, मद्यस्थानम्  
खेत—वप्र: केदार: क्षेत्रम्  
रेत—सिकता

टोकरा—कण्डोलः  
पेटो—पेटिका  
प्याला—चषकः, पानपात्रम्  
बाँसुरीं—वंशी, वेणुः  
मूदङ्ग—मूदङ्ग, मुरजः  
मोम—द्रावकः  
आवा—आपाकः  
बाजा—वादनम्, वाद्यम्  
ढोल—आनकः पटहः  
चक्की (घराट)—घरट्टः  
नगरा—दुन्दुभिः

ढिठोरा पीटने का बाजा—डिण्डिमा  
कैची—कर्तरी, छेदनी (स्त्री०)  
पनशाला—प्रपा, पानीयशालिका  
आरा—ककचः (कक्चिकः)  
चाकू—छुरी छुरिका, असिपुत्री, कर्तारिका  
सूई—सूचिः, सेवनी (स्त्री०)  
सूई का काम—सूचिकर्म, सूत्रकर्म (न०)  
दरांती—दात्रम्  
तागा—सूत्रम्  
छाज—शूर्पम् (त०)

### संस्कृत बनाओ—

१—सुनार देखते हुए चोराता है, अतएव 'पश्यतोहर' कहलाता है। २—कुम्हार आवा में मिट्टी के बरतन पकाता है। ३—लोहार चाकू, कैची सूई बनाता है। ४—चमार जूना सीता है (सीव्यति)। ५—कुम्हार डंडे से चाक घुमा रहा है। ६—भूतने वाला रेत के साथ चना भून रहा है। ७—लेप लगाने वाले ने पैर में लेप लगाया। ८—खटिक सुबह और शाम तरकारियाँ बेचता है। ९—कल सरकार ने ढिठारा पिटवाया कि कोई आठ बजे के बाद न घूमे। १०—कसाई बूढ़ी गीवों को खरीदते हैं। ११—इस पनशाला में ठंडा पानी मिलना है। १२—विवाह आदि उत्सवों में कहार वहंगियों से पानी लाते हैं।

### वस्त्रों के नाम

रई (कपास)—कार्पासः, तूलः  
कपड़ा—वस्त्रं, वसनं, चीरम्  
पगड़ी—उष्णीषं, शिरस्त्रम्  
मुरेठा (टोपी)—शिरस्कं, शिरस्त्राणम्  
कुरता मिजई कोट—कञ्चुकः, निचोलः  
दुपट्टा—उत्तरीयः  
अगरखा—अङ्गरक्षिणी-रक्षिका  
जाबिया—जङ्घावस्त्रम्  
धोतो—अधोवस्त्रम्  
गलेबन्द—गलबन्धनाशुकम्  
रुमाल—करधस्त्रम्  
कबल—कम्बलः  
लोई—रल्लकः  
रजाई—तूलिका, नीशारः  
गद्दी—शाटिका

रेशमी—कौशिक, क्षौमं दुकूलम्  
परदा—जवनिका, तिरस्करिणी  
कनात—काण्डपटः, अपटी  
पाजाम—जङ्घात्राणम्  
पतलून—जङ्घावस्त्रम्  
मोजा—पादत्राणम्  
तकिया—उपधानी  
चादर (बिछाने की)—शय्याच्छादनं प्रच्छदः  
बिछौना—शय्या  
कमरबंद—रशवा, परिकरः, कटिसूत्रम्  
पर्दा—अवगुण्ठनम्  
जूता—उपानतं (स्त्री०)  
जाकट—अङ्गरक्षकः  
अंगोछा—गात्रमार्जनी  
ओढ़ने की चादर—उत्तरीयावच्छलः

## शृङ्गारिक वस्तुओं के नाम

सिन्दूर—सिन्दूरम्  
विन्दो—विन्दुः (पुं०)  
साबुन—फेनिलः  
काजल—अञ्जनम्, कज्जलम्  
इत्र—गन्धतैलम्

आयना—दर्पणः, मुकुरः, आदर्शः  
ब्रुश—लोममयी मार्जनी  
कङ्घी—कङ्कतिका, प्रसाधनी  
दांत कुरेदने की सुई—दन्तशोधनी, सुची  
मंगल टीका—ललाटिका

## गहनों के नाम

गहना—अलङ्कारः, आभरणम्  
कण्ठा—कण्ठिका, कण्ठाभरणम्  
अँगूठी—अंगुलीयकम्, ऊर्भिका  
माला—ललन्तिका, लेम्बनम्  
चूड़ी—काचवलयः-यम्  
बाजूबन्द—केयूरम्, अङ्गदम्  
कनफूल—कर्णपूरः, कर्णिका  
पहुँची—आवापकः, कटकः  
बुलाक—नासाभरणम्

करधनी—मेखला, काञ्चिः  
हसुली—ग्रैवेयकम्  
टिकुली—ललाटालङ्कारः  
कँगना—कङ्कणः, कङ्कणम्  
नथ—नासाभरणम्  
पोजेव (झांझ)—नूपूरः  
वाली—कुण्डलम्  
बेणी—स्त्रीमस्तकाभरणम्

## संस्कृत बनाओ :—

१—आजकल इत्र, तेल, साबुन के बिना पूरा शृङ्गार नहीं होता । २—साबुन से कपड़े साफ करो । ३—शहर की औरतें नय और बुलाक से बड़ी नफरत करती हैं । ४—चूड़ी पहनने का रिवाज शहर और गांव सभी जगह है । ५—विवाह में कङ्कण पहनाया जाता है । ६—कङ्घी से बाल साफ रखो । ७—ओढ़ने बिछाने की चादरें बिलकुल साफ होनी चाहिए । ८—सिन्दूर सोहाग की खास निशानी है । ९—रूमाल से हाथ मुंह साफ रखने चाहिए । १०—कुरता, कोट, पतलून पुराने जमाने के कपड़े नहीं हैं ।

## पशुओं के नाम

शेर—सिंहः, सिंही  
बाघ—व्याघ्रः, व्याघ्री  
भालू—श्लोकः, भल्लूकः  
गेंडा—गण्डकः  
सुअर—शूकरः  
भेड़िया—वृकः  
गोदह—श्रगालः  
खरगोश—शशकः  
बंदर—वानरः, कपिः

घोड़ा—अश्वः  
ऊँट—उष्ट्रः  
गधा—गर्धभः  
भैंस—महिषः, मुख्खी  
गुरा—गुरगुरः, श्वा  
कुत्ती—शुनी  
बिल्ली—मार्जारः, मार्जारी  
बकरा—अजः  
बकरी—अजा

हरिण—मृगः  
नेवलः—नकुलः  
गाय—गीः  
बैल—वलदः, वृषभः

भेंड़—एडका  
चूहा, चूही—मूषिकः, मूषिका  
गोह—गोधा

### पक्षियों के नाम

कोयल—कोकिलः  
भोर—मयूरः  
हंस—हंसः  
तोता—शुकः  
मैना—सारिका  
पपीहा—चातकः  
चकवा—चक्रवाकः  
तीतर—तित्तिरिः  
बटेरा—लावः  
चकोर—चकोरः  
ममोला—खञ्जनः

कबूतर—कपोतः  
वतक—वर्तकः, वसिका  
टिटीहर—टिट्टिभः, टिट्टिभी  
चील—चिल्लः  
कीवा—काकः  
मुर्गा—कुक्कुटः, कुक्कुटी  
चिड़िया—चटकः, चटका  
गीघ—गृध्रः  
बगला—बकः  
उल्लू—उल्लूकः  
बाज—श्येनः

### संस्कृत बनाओ :—

१—शेर और हाथी का स्वभाविक बैर है। २—लोग तोता और मैना को बड़े चाव से पालते हैं। ३—कीवा एक ऐसा पक्षी है जिसके लिए किसी के दिल में स्थान नहीं। ४—बंदर और भालू का नाच बच्चों को बहुत अच्छा लगता है। ५—चूहा और किल्लो का सहज बैर है। ६—जानवरों में शृगाल और पक्षियों में कीवा बड़ा चतुर होता है। ७—कहते हैं चकोर चन्द्र की किरणों का पान करता है। ८—जित्ने घोड़ की सवारी नहीं आती वे गधे पर चढ़ते हैं। ९—बाज बड़ा शिकारी पक्षी है। १०—रेगिस्तान में ऊट का बड़ा महत्व है। ११—गंडे की गारना अत्यन्त कठिन है।

### कुछ क्रियात्मक शब्द

(नपुंसकलिङ्ग)

उठना—उत्थानम्  
बैठना—उपवेशनम्  
सोना—शयनम्  
जागना—जागरणम्  
सुनना—हसनम्  
रोना—रोदनम्  
खाना—खादनम्  
पाना—पानम्  
भागना—भागणम्

छूना—स्पर्शनम्  
जानना—ज्ञानम्  
लेना—आदानम्  
देना—दानम्  
धूमना—परिभ्रमणम्  
दूँटना—अन्वेषणम्  
निगलना—निगरणम्  
चबाना—चर्वणम्  
चकना—आरोहणम्



उतरना—अवरोहणम्  
 डूबकी लगाना—निमज्जनम्  
 पानी से बाहर आना—उत्तमज्जनम्  
 धोना—प्रक्षालनम्  
 निचोड़ना—निष्पीडनम्  
 पीसना—पेषणम्  
 घिसना—घर्षणम्  
 लीपना—लेपनम्  
 ढाँपना—आवरणम्  
 ठगना—वञ्चनम्  
 पोंछना—प्रोञ्छनम्  
 सूँघना—गन्धनम्  
 चाटना—लेहनम्  
 नाचना—नर्तनम्  
 गाना—गानम्  
 बजाना—वादनम्  
 तोलना—तोलनम्  
 मापना—मानम्  
 इकट्ठा करना—संग्रहणम्  
 बिखेरना—विक्षेपणम्  
 बाँधना—बन्धनम्  
 छोड़ना—मोचनम्, विसर्जनम्

खोलना—उद्घाटनम्  
 रँगना—रञ्जनम्  
 चुनना—चयनम्  
 फँकना—प्रक्षेपणम्  
 ऊपर फँकना—उत्क्षेपणम्  
 नीचे फँकना—अपक्षेपणम्  
 भूल जाना—विस्मरणम्  
 ढाँकना—पिघानम्  
 फैलाना—प्रसारणम्  
 भूतना—भर्जनम्  
 ताड़ना—त्रोटनम्  
 जोड़ना—संयोजनम्  
 खरीदना—क्रयणम्  
 बेचना—विक्रयणम्  
 घेरना—वेष्टनम्  
 भेजना—प्रेषणम्  
 गाढ़ना—निखननम्  
 निकालना—निष्कासनम्  
 भागना—पलायनम्  
 बोलना—वपनम्  
 बुनना—वयनम्  
 लेजाना—हरणम्

### संस्कृत बनाओ :—

१—भोजन को ढाँप कर रखना चाहिए। २—धन-संग्रह करना चाहिए पर उसकी ठीक तरह से खर्च भी करना चाहिए। ३—सिपाहियों को देखकर चोरों ने भागना शुरू किया। ४—अच्छे गृहस्थ अपने घरों को लीप-पोत कर रखते हैं। ५—पहाड़ का चढ़ना उतरना अच्छा व्यायाम है। ६—छात्रों को नाचने गाने में समय बरबाद न करना चाहिए। ७—वस्त्र निचोड़ने से जल्दी सूख जाता है। ८—दवाई घिसकर बीमार को पिला दो। ९—किसी चीज को निगलना न चाहिए उसे चबाना चाहिए। १०—हँसना, रोना मनुष्य-जीवन के साधारण धर्म हैं।

### कुछ व्यावहारिक शब्द

अदल-बदल—विनियमः  
 देश में आया हुआ—अयातः  
 देश से गया हुआ—निर्यातः  
 ऐनक—उपनेत्रम्  
 भीषी—घात्या

कड़ाई—कटाहः  
 कण्डा (पाथी)—करीषम्  
 कसरत—व्यायामः  
 कानून—राजनियमः  
 कैद—कारावासः

खिड़की—गवाक्षः

अपराधी—प्रतिवादी

घूस—उत्कोचः

छोक—क्षवयुः, छिक्का

जामिन—प्रतिभू

जुगनू—खद्योतः

जुर्माना—अर्थदण्डः

झरना—निर्झरः

मुकद्दमा—अभियोगः

वकील—व्यवहाराजीवः

वसीयतनामा—चरमपत्रम्

व्याज—कुसोदः वृद्धिजीविका

पैसा—पणः (पु०)

अठग्री—रूपकाद्रकम्

चवग्री—चतुराणकः

दुवग्री—आणकद्वयम्

आना—आणकम्

रुपया—रौप्यकं रूपकं रजतमुद्रा

अशर्फी—स्वर्णमुद्रा, दीनारः

उधार—ऋणम्

साहूकार—उत्तमर्णः

कर्जदार—अधमर्णः

धरोहर—न्यासः, उपनिधिः

डाकिया—पत्रवाहकः

डाट—छिद्रोद्यकः

ढक्कन—आच्छादनम्

तख्ता—काष्ठफलम्

दखल—अधिकारः

दाढ़ी—कूर्चकम् (न०)

बोरा—क्षणपुटः

दूकान—आपणः, विपणिः

नकशा—मानचित्रम्

नियुक्तिपत्र—नियोगपत्रम्

जज—विचारकः, न्यायाधीशः

पसीना—स्वेदः

पहरेदार—यामिकः

होड—प्रतिद्वन्द्विता

प्रतिज्ञा—प्रतिश्रुतिः

मखोल—परिहासः

मस्तूल—कुपकः

शोर—कोलाहलः

हद—सीमा

हंजा—विमूचिका

डैरा—निवेशः, वासस्थानम्

हाथी का झूल—कूबम्

चिघाड़—चोत्कारः

कोड़ा—कशा

लगाम—खलीनः नम्, रश्मिः

पैदल—पतिः, पदातिः पदगः ।

छावनी—शिविरम्

## संस्कृत बनाओः—

१—शोर गुल न करो यहाँ पर लड़के पड़ रहे हैं । २—छावनी असंख्य पैदल सिपाही हैं । ३—इस संगीन मुकदमे के लिए अच्छे वकील की जरूरत है । ४—उस अपराधी को ५०० रु० जुर्माना हुआ । ५—उसने मरते वक्त एक वसीयतनामा लिखा । ६—कर्जदार अपने साहूकार से हर वक्त डरता है । ७—कानून के खिलाफ कभी काम न करना चाहिये । ८—उस चोर को दो साल की कैद की सजा हुई । ९—वह चिट्ठी लाया । ११—उसने कोड़ों से उस घोड़े को इतना पीटा कि वह गिर पड़ा । १२—इतनी आँधी आई कि पेड़ तक उखड़ गये । १३—इस जिले में एक नया जज आया है । १४—घूस लेना बड़ा भारी अपराध है ।

अनुवादार्थ श्लोक

\*निम्न लिखित श्लोकों का सरल हिन्दी भाषा में अनुवाद करो :—

- १—तुल्यान्वयेत्यनुगुणेति गुणोन्नतेति दुःखे सुखे च मुचिरं सहवासिनीति ।  
जानामि केवलमहं जनवादभीत्या, सीते, त्यजामि भवतीं न तु भावदोषात् ॥
- २—घृष्टं घृष्टं पुनरपि पुनश्चन्दनं चारु गन्धं,  
छिन्नं छिन्नं पुनरपि पुनः स्वादु चैवेक्षुकाण्डम् ।  
ददग्ध दुग्धं पुनरपि पुनः कारुचर्नं कान्तवर्णं,  
प्राणान्तेऽपि प्रकृतिविकृतिजायते नोत्तमानाम् ॥
- ३—यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरजं यावज्जरा दूरतो,  
यावच्चन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः ।  
आत्मश्चेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्  
संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्धमः कीदृशः ॥
- ४—सारङ्गाः सुहृदो गृहं गिरिगुहा शान्तिः प्रिया गहिनी,  
वृत्तिर्वन्यलताफलैर्निवसनं श्रेष्ठं तरुणां त्वचः ।  
तद्व्यानामृतपूरमग्नमनसां येषामियं निर्दृति—  
स्तेषामिन्दुकलाऽवतंसयमिनां मोक्षेऽपि नो न स्पृहा ॥
- ५—सत्यं न मे विभवनाशकृतास्ति चिन्ता भाग्यक्रमेण हि घनानि भवन्ति यान्ति ।  
एतत्तुमां दहति नष्टघनाश्रयस्य यत्सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति ॥
- ६—लक्ष्मि । क्षमस्व वचनीयमिदं दुरुक्तमन्धीभवन्ति पुरुषास्त्वदुपासनेन ।  
नोचेत् कथं कमलपत्रविशालनेत्रो नारायणः स्वपिति पद्मगभोगतल्पे ॥
- ७—कस्यादेशात् क्षपयति तमः सप्तसप्तिः प्रजानां—  
छायाहेतोः पथि विटपिनामञ्जलिः कन बद्धः ।  
अभ्यर्च्यन्ते जललवमूचः केन वा वृष्टिहेतोः  
जात्यैवैते परहितविधौ साधवो बद्धकक्ष्याः ॥
- ८—वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च लक्ष्म्या  
सम इह परितोषो निर्विशेषावशेषः ।  
स तु भवति दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला  
मनसि च परितुष्टे को ऽर्थवान् को दरिद्रः ॥
- ९—स हि गगनविहारी कल्मषध्वंसकारी दशशतकरधारी ज्योतिषां मध्यचारी ।  
विधुरपि विधियोगाद् ग्रस्यते राहुणासौ लिखितमपि ललाटेऽप्रोज्झितम् ॥
- १०—उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीर्देवेन देयमिति का प्रवृत्तिः ।  
देवं निहत्य कुरु पौरुषमारुह्य कुरु कर्तुं यदि न सिद्धयति कोऽत्र दोषः ॥
- ११—को वीरस्य मनस्विनः स्वाविषयः को वा विदेशस्तथा  
यं देशं श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम् ।

\*ये श्लोक सुपाठ्य तो हैं ही किन्तु ये यू० पी० हाईस्कूल की संस्कृत परीक्षा में पिछले वर्षों में पूछे गये हैं । अतः इन्हें पढ़कर और भी बढ़ जायेंगे ।

यद्दृष्टान्खलांगुलप्रहरणः सिंहो वनं गाहते

तस्मिन्नेव हतद्विपेन्द्ररुधिरैस्तृष्णां छिनत्त्यात्मनः ।

१२-कल्याणानां त्वमसि महसां भाजनं विश्वमूर्ते,

धूर्या लक्ष्मीमथ मयि भृशं वेहि देव प्रसीद ।

यद्यत्पापं प्रतिजहि जगन्नाथ नम्रस्य तन्मे,

मद्रं भद्रं वितर भगवन्भूयसे मङ्गलाय ॥

१३-तानीन्द्रियाण्यविकलानि तदेव नाम सा बुद्धिरप्रहिता वचनं तदेव ।

अर्थोष्मणा धिरहितः पुरुषः स एव अन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥

१४-गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः ।

आस्वाद्यातोयाः प्रभवन्ति नद्यः समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः ॥

१५-धर्मानं न तथा सुशीतलजलैः स्नानं न मुक्तावली

न श्रीखण्डविलेपनं सुखयति प्रत्यङ्गमप्यपितम् ।

प्रीत्या सज्जनभाषितं प्रभवति प्रायो यथा चेतसः

सद्युक्त्या च पुरस्कृतं सुकृतिनामाकृष्टिमन्त्रोपमम् ॥

निम्नलिखित श्लोकों की हिन्दी-भाषा में व्याख्या कीजिए :—

१६-नीतो न केनापि न दृष्टपूर्वो न श्रूयते हेममयः कुरङ्गः ।

तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य विनाशकाले विपरीतबुद्धिः ॥

१७-दुष्प्राप्याणि च वस्तूनि लभ्यन्ते वाञ्छितानि च ।

पुरुषः संशयारुडैरलसैर्न कदाचन ॥

१८-आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात् ।

दिनस्य पूर्वार्धपरार्धं भिन्ना छायेव मंत्री खल-सज्जनानाम् ॥

१९-स्त्रीणां हि साहचर्याद् भवन्ति चैतांसि भर्तृसदृशानि ।

मवुरापि हि मूर्च्छयन्ते विषविटप-समाश्रिता बल्ली ॥

२०-पशवोऽपि हि जीवन्ति केवलं त्वोदम्भराः ।

तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं यः परार्थे हि जीवति ॥

२१-मृषा वदति लोकोऽयं ताम्बूलं मुखभूषणम् ।

मुखस्य भूषणं पुंसः स्यादेकैव सरस्वती ॥

२२-सहकारे चिरं स्थित्वा सलीलं बालकोकिल ।

त्वं हित्वाऽद्यान्यवृक्षेषु विचरन् विलज्जसे ॥

२३-अनिष्टादिष्टलाभेऽपि न गतिर्जायते शुभा ।

यत्राप्ते विषमसर्गोऽमृतं तदपि मृत्यवे ॥

२४-अनन्तरत्नप्रभवस्य यस्य हिमं न सौभाग्यविलोपि जातम् ।

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतान्दोः किरणेष्विव वाङ्मनः ॥

२५-कान्पृच्छामः सुराः स्वर्गं निवसामो वयं भुवि ।

किंवा काव्यरसः स्वादुः किंवा स्वादीयसी सुधा ॥

२६-विधौ विरुद्धे न पयः पयोविधौ सुधौ घसिन्धौ न सुधा सुधाकरे ।

न वाञ्छितं सिद्धयति कल्पपादगे न हेम हेमप्रभवे गिरावपि ॥

२७-असंभवं हेम मृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।

प्रायः समापन्न विपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ॥

२८-जनयति हृदि खेदं मङ्गलं न प्रसूते, परिहरति यशांसि ग्लानिमाविष्करोति ।

उपकृतिरहितानां सर्वभोगच्युतानां कृपणकरगतानां संपदां दुर्विपाकः ॥

२९-पात्रं पवित्रयति नैव गृणान् क्षिणोति, स्नेहं न संहरति नापि मलं प्रसूते ।

दोषावसानश्चिरश्चलतां न वत्ते, सत्प्रज्ञमः सुकृतसन्निवि कोऽपि दीपः

३०-चित्रं चित्रं वत वत महच्चित्रमेतद्विचित्रम्,

जातो देवादुचितरचना संविधाता विधाता ।

यन्निम्नानां परिणतफलस्फीतिरास्वादनीया,

यच्चैतस्याः कवलनकलाकोविदः काकलीकः ॥

## अनुवादार्थगद्यसंग्रह

### १-पहला पाठ

१-नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य श्रेष्ठ धर्म है । २-किसी वन में चार दांतों वाला हाथी रहता था । ३-पूर्व पुरुषों से आये हुए घर को छोड़ना आसान नहीं है । ४-अब वर्षा बंद हो गई है, हम लोभ टहलने चलें । ५-क्या आप वहां जावेगे, नहीं, वह स्थान मुझे अच्छा नहीं लगता । ६-रमेश की लड़की उसके बनारस जाने पर इलाहाबाद जावेगी । ७-लड़का सो गया है, उसको जगाना उचित नहीं । ८-मुझे देखकर वह अपने स्थान पर खड़ा हो गया । ९-आज आप कहा चलेगे ? आज क्या है ? १०-मेरे लिए रोटी बनाकर रख दो । ११-आज दो दिन से मदन और मोहन में बोल चाल नहीं है । १२-अनाथों का रक्षक दीनानाथ के सिवाय कौन है ? १३-हाय ! पुत्र, तुने यह क्या दुष्कृत किया । १४-यह सोचते हुए वह रात्रि गजर गई । १५-महारज चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र (पटना) में निवास करते थे ।

### २-दूसरा पाठ

१-राजा भगीरथ की प्रार्थना से गंगा स्वर्ग से नीचे आई । २-यदि तुम ऐसा करोगे तो अपने देश के शत्रु समझे जाओगे । ३-यदि हम सूर्य की ओर देर तक देखें तो अन्धवत् हो जायेंगे । ४-वह एक दुष्ट बालक है, क्योंकि वह सदा स्कूल से अनुपस्थित रहता है । ५-अपने बड़े भाई की आज्ञा से लक्ष्मण ने सीता को वन में छोड़ दिया । ६-पुष्पपुर नाम का एक सुरम्य नगर है उसमें नन्द नामक एक राजा रहता था । ७-राजा अपने राज्य में पूजा जाता है पर विद्वान् सब जगह पूजा जाता है । ८-महाराज दशरथ ने वचन-वद्ध होकर राम को वन में भेज दिया । ९-झूठ मत बोलो, झूठ बोलने वाले को धिक्कार है । १०-बालक चन्द्रमा को देखकर खुश होते हैं और नाचते हैं । ११-आपका मेरे साथ यह समयोचित व्यवहार करूंगा । १२-आह ! धन से रहित मुझे धिक्कार है, मगर मैं नाचता हूँ । १३-झूठ बोलने वाले का कोई फायदा नहीं करता । १४-जब तक आप शासन करते रहे हमारी हार न हुई ।

१ हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद के लिए "आदर्श वाक्य" आगे पटना मैट्रिक्यूलेशन के परीक्षा-पत्रों के साथ देखिए ।



## ३—तीसरा पाठ

१—एकता का यही गुण है कि उससे असाध्य काम भी सिद्ध हो जाते हैं । २—गोविन्द ने बारह वर्ष में व्याकरण सीख लिया । ३—कोशलाधीश राजा दशरथ की राजधानी अयोध्या थी । ४—दशरथजी के राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चार लड़के थे । ५—सारे राजपाठ को जुए में हारकर राजा नल वन को चले गये । ६—धन, जन, और यौवन का गर्व मत करो । ७—उसके सामने पगली की तरह न जाने मैंने क्या क्या कहा । ८—गोदावरी के किनारे पर एक बड़ा भारी शाल्मली का वृक्ष था । ९—दक्षिण देश में महिलारोप्य नामक एक नगर था । १०—सञ्जय धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र का सब वृत्तान्त सुना रहे थे । ११—प्रातःकाल और सायंकाल का भ्रमण स्वास्थ्यवर्धक है । १२—महाकवि श्रीकालिदास को आबुनिक योरोपियन् विद्वान् भारत का शेक्सपियर कहते हैं । १३—बुहा-बिल्ली, साँप-न्योला और सिंह-धकरी का स्वाभाविक बैर है । १४—संसार में वही मनुष्य जीवित है जो दूसरों के लिए अपने जीवन को न्योछावर करता है ।

## ४—चौथा पाठ

१—अण अण के वाद जिसमें नूतनता पाई जावे, उसी को सौन्दर्य कहते हैं । २—अहिल्याबाई का राज्यप्रबन्ध वस्तुतः प्रशंसनीय था । ३—वीर अभिमन्यु ने निडर होकर कहा—मैं चक्रव्यूह में लड़ूंगा । ४—पक्षिकुल के कलरव से वह स्थान मानो बोल रहा था । ५—भारतवर्ष में श्रीशंकराचार्य जी ने वैदिक धर्म का झण्डा गाड़ दिया । ६—दीवानचन्द्र के सुरीले स्वर पर लोग मानो दीवाने हो गये । ७—प्राचीन समय में भारत एक सोने की चिड़िया कहीं जाती थी । ८—ऐसे क्षुद्र मनुष्य का जीना या मरना एक ही समान है । ९—बहुत बकवाद न कर, मैं तेरा भण्डा फोड़ दूंगा । १०—वीर हकीकत, हकीकत में धर्मवीर था । ११—तू तो कानों का बहिरा और आँखों का अन्धा है । १२—सनियम विद्याभ्यास करना लोहे के चने चवाना है । १३—इस कार्य को वही कर सकता है जो तलवार की तंगी धार पर खड़ा हो सके । १४—आप जो हातमताई की कवर पर लान मारते हैं ।

## ५—पाँचवाँ पाठ

१—उस सरोवर के पाम पहुँच कर वानर ने राजा से कहा—“जो लोग आधा सूर्य निकलने पर इस सरोवर में स्नान करते हैं, उन्हीं को सिद्धि प्राप्त होती है ।” २—ऐसा सोचकर बंग देश के राजा ने दिन के तिसरे पहर में अपने मित्र रत्न-सेन को बुलाने के लिए अंगरक्षक का भेजा । ३—जुलाहे ने कहा—“यदि ऐसा ही है तो मैं अपने घर जाकर अपनी स्त्री से पूछकर आता हूँ, तब तुम वरदान देना ।” ४—महापि श्रीवाल्मीकि जी ने रामायण में वर्णन किया है कि रावण को मारकर श्रीरामन्द्र जी अपने प्रियजनों के सहित पृथ्वी विमान में बैठकर लका से अयोध्या को आये ।

५—इस समय ऐसी ऐसी पनडुब्बी नौकाएँ बनी हुई हैं कि जो पानी के भीतर ही भीतर चलती हैं, और पानी के नीचे जाकर दुश्मनों के जहाजों को समुद्र में डुबो देती हैं, और उनमें चढ़े हुए सब मनुष्य डूब जाते हैं ।



एक आदमी पेड़ पर चढ़ गया और दूसरा निर्वल होने से प्राणायाम चढ़ाकर वहीं लेट गया। रीछ ने उसे मृतक समझ कर छोड़ दिया। रीछ के चले जाने पर पेड़ वाला मनुष्य नीचे उतरा और दूसरे से पूछने लगा कि रीछ तुम्हारे कानों में क्या कहा था। उसने उत्तर दिया कि रीछ कहता था—'दगावाजों का कभी विश्वास मत करो।'।

(ड) एक लड़का छोटी अवस्था में चीजें चुराकर अपनी माता को देता था। माता खुश होती थी। इस तरह लड़का पक्का चोर हो गया। एक समय किसी बड़ी चोरी के कारण उसे फांसी की सजा मिल गई। सब लोग उसे देखने आये। उसकी माता भी वहाँ पर थी। उसने माता का कान काट दिया। लोगों ने उसे धिक्कारते हुए कारण पूछा। उस चोर ने उत्तर दिया—'सारा कसूर तो इसी का है अगर यह वचन में ही मुझे चोरी करने से रोक देती तो मुझे आज फांसी न मिलती।'।

#### ७—सातवाँ पाठ

(क) किसी तलाब के किनारे पर एक बालक खेल रहा था। बालक के बहु-मूल्य वस्त्रों तथा जेवरों को देखकर एक ठग उसके पास आया। बालक ने उसे ठग समझ कर रोना शुरू किया। बालक को रोते देख, ठग ने रोने का कारण पूछा। बालक ने कहा—'मेरी एक सोने की अंगूठी इस तालाब में गिर गई।' ठग ने कपड़े उतारे और पानी में धुस गया। बालक ठग के कपड़े उठाकर चल दिया। शरारती के साथ शरारत करना ही ठीक है।

(ख) दो तपस्वी शिव के किसी मन्दिर में तपस्या करने लगे, आकाशवाणी हुई—'मैं तुम पर प्रसन्न हूँ वर मांगों। जो पहिले मांगेगा, उससे दूसरे को दूनी चीज मिलेगी।' उनमें एक लालची था। यह सोचकर कि मुझे दूनी चीज खुद बखुद मिलेगी चुप हो गया। दूसरे ने लालची को चुप होते देखकर मांगा—'हे प्रभो मेरी एक आंख कानी हो जाय।' लालची सहसा दोनों आंखों से अन्धा हो गया। इस लिए सच है कि लालच बुरी बला है।

(ग) कहते हैं श्रीरामचन्द्र जी जब बालक थे, माता की गोद में बैठे हुए पूर्ण-चन्द्र जी रोने लगे। माता ने बहुत समझाया मगर बालक ने एक न मानी। सख कहा—'राम, ठहरो मैं अभी चन्द्रमा को पकड़ कर लाता हूँ।' तुरन्त वह एक बड़ा शीशा लाया और उसमें चन्द्र दिखा दिया। रामचन्द्र जी मुस्कराते हुए बहुत खुश हुए।

(घ) किसी जङ्गल में एक पेड़ के नीचे शेर सोता था। उसकी गर्दन के बालों पर एक चूहा कूदने लगा। सिंह जान उठा और चूहे को मारना ही चाहता था कि चूह ने प्रार्थना की—'आप मृगराज हैं मुझ दान पर दया कीजिए।' सिंह ने उसे छोड़ दिया। एक समय वही शेर किसी जाल में फँसा। चूहे ने अपने उपकार का बदला चुकाने के लिए जाल को काट दिया। सिंह चूहे की तारीफ करता हुआ चला। सच है किसी के साथ की हुई भलाई निरर्थक नहीं जाती।

(ड) एक समय वही चूहा फिर उस शेर को मिला। शेर ने कहा हे मूषक ! मैं तुझ पर बहुत प्रसन्न हूँ और तेरे इस उपकार का बदला चुकाना चाहता हूँ, कुछ माँग। चूहा फूल गया और सोचने लगा कि मैं सिंह से किस बात में कम हूँ—शेर भी मेरा कृतज्ञ है। उसने कहा कि अपनी लड़की की शादी मुझ से कर दो। सिंह ने ज्योंही यौवन से मस्त अपनी लड़की बुलवाई चूहा उसके पैर के नीचे आकर मर गया। छोटी मुँह बड़ी बात हानिकारक है।

#### ८—आठवां पाठ

(क) किसी नदी में मिट्टी और पीतल के दो बरतन बह रहे थे। मिट्टी का बरतन आगे और पीतल का पीछे था। मिट्टी का बरतन घबड़ाने लगा। पीतल के बरतन ने उसे दिलासा देकर कहा कि घबड़ाओ मत, मैं तुम्हें बचाऊँगा। मिट्टी के बरतन ने कहा—भाई दूर से बोलो, कहीं तुम्हारी हमारी टक्कर हो गई तो मैं टूट जाऊँगा। ठीक है बलवान् और कमजोर की लड़ाई में कमजोर का ही नुकसान होता है।

(ख) एक गड़रिये ने अपनी भेड़ों की रक्षा के लिये एक कुत्ता पाला हुआ था। वह उसे कच्चीड़ी हलवा आदि अच्छी अच्छी चीजें खिलाया करता था। कुत्ता भी स्वामी की गैरहाजरी में एक न एक भेड़ को खा ही लेता था। जब स्वामी को उसका भेद मालूम हो गया तो वह तलवार लेकर उसे मारने लगा। कुत्ते ने कहा—मैंने तो आपके थोड़े से ही भेड़ खाये हैं जो भेड़िया रोज कई भेड़ खा जाता है तू उसे क्यों नहीं मारता।' गड़रिये ने जवाब दिया कि तू ने मेरा नमक खाकर नमक-हरामी की है इसलिए तू मारा जायगा।

(ग) किसी नदी के किनारे पर एक भेड़िया और एक भेड़ का बच्चा पानी पी रहे थे। भेड़िया ऊपर की ओर, और भेड़ का बच्चा नीचे की ओर था। भेड़िये ने भेड़ के बच्चे से कहा—'ओ बेवकूफ पानी को क्यों जूठा कर रहा है, देखता नहीं मैं पानी पी रहा हूँ।' भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—'भगवन् ! मैं आप से नीचे की ओर हूँ, पानी तो ऊपर से मेरी ओर आ रहा है फिर जूठा कैसे हो सकता है।' भेड़िये ने कहा—'ठीक है परके साल तूने मुझे गाली दी थी।' भेड़ के बच्चे ने जवाब दिया—'महाराज ! मैं सिर्फ नौ महीने का हूँ परके साल तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था।' भेड़िये ने कहा—'तो फिर तेरा बाप रहा होगा।' भेड़ के बच्चे ने कहा—'मेरा बाप तो एक वर्ष पूर्व ही मर चुका है।' भेड़िये ने यह कह कर कि तो तेरी जाति का और कोई रहा होगा, भेड़ के बच्चे को पकड़ कर मार डाला। दुष्ट अपनी दुष्टता के लिए कोई न कोई बहाना बना ही लेता है।

(घ) एक उस्ताद कुछ शागिर्दों को पढ़ाया करते थे। ~~उस्ताद साहब के लिए अपने अपने घर में कोई न कोई नकल लाते थे।~~ रहीम नाम वाला एक शागिर्द उस्ताद ~~के लिए कभी कुछ नहीं लाता था।~~ इस लिए उस्ताद साहब उस पर प्रायः नाराज रहा करते थे। एक दिन रहीम एक बड़े मिट्टी के कटोरे को भरकर उस्ताद साहब के लिए दूध लाया। उस्ताद साहब ने कटोरे को जल्दी से मुँह में लगाया और दूध पीने लगे। मगर कटोरा बहुत बड़ा था उस्ताद



साहब से सारा पिया नहीं जाता था, इस लिए दूध पीते पीते रहीम से बातें करने लगे । उस्ताद साहबने कहा—सुन तो रहीम, आज क्या बात है, सूरज पच्छिम से कैसे आया है ? रहीम ने कहा—उस्ताद साहब, आज मेरी माँ ने ज्योंही दूध दुह कर नीचे रक्खा कि एक कुत्ता आया और दूध को पीने लगा । इस लिए माँ ने सोचा कि जूठा दूध फेंकना क्यों है उस्ताद साहब को पहुँचा दे । उस्ताद ने सुनते ही कटोरा जमीन में पटक दिया और लगे रहीम को गाली देने । रहीम ने जोर जोर से रोते हुए कहा—‘उस्ताद साहब आपने कटोरा फोड़ कर बड़ा नुकसान कर दिया है क्योंकि मेरी माँ तो इसी कटेरी में मेरे छोटे भाई को रात को पेशाब करवाया करती थी ।

### ९—नीवां पाठ

महाकवि श्रीकालिदास सब कवियों में श्रेष्ठ हो चुके हैं, इसमें कुछ भी विवाद नहीं । इनके काव्य में माधुर्य-प्रसादादि सब गुण हैं जो कि अच्छे काव्यों में होने चाहिए । इसी लिए इस महाकवि का तथा इसके काव्यों का सम्य सम्राज में बहुत आदर है ! यह महाकवि कब हुआ ? यह सन्दिग्ध है । कोई कहते हैं कि ८ वीं ईस्वी में हुए हैं, दूसरे कहते हैं, कि ५ वीं ईस्वी में, और तीसरे कहते हैं कि ये विक्रमादित्य की सभा के नी रत्नों में से एक थे, परन्तु ठीक मत यही है कि यह ईसा से ५७ वर्ष पूर्व हुए हैं ।

यह कवीन्द्र ब्राह्मण थे इस में सब की एक सम्मति है किन्तु यह कहाँ के थे ? यह फिर विवाद-प्रस्त है । कोई इन्हें काश्मीर का बताते हैं, कोई पञ्जाब का और बाकी इन्हें मालव देश का बताते हैं । इस महाकवि के विषय में परम्परागत जन्म-श्रुति यह सुनी जाती है कि—यह निरक्षर भट्ट थे, अगरचे जवान और अच्छे रूप वाले थे । माग्यवंश एक राजा की लड़की विद्वत्तमा के साथ इनका विवाह हुआ और एकान्त में वात्सलाय से जब उसे मालूम हुआ कि यह मूर्ख है तो घर से इसे बाहर निकाल दिया । उसके अपमान से दुःखित और विद्या सीखने में दत्तचित्त यह सरस्वती की आराधना करके बहुत शीघ्र महाकवि हो गया । जब विद्वत्तमा के पास घर पर आयो तो किवाड़ बंद पाये । जोर से कहने लगा—‘अनावृतकपाटं द्वारं देहि ।’ कालिदास ने संस्कृत-सम्भाषण से उसे खुश किया । उसने ‘अस्ति कश्चित् वाक्’ उसके कहे हुए तीन पदों में से एक एक पद को एक एक महाकाव्य के प्रारम्भ में रखकर तीन महाकाव्य बनाये । उन में—‘अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा’ इत्यादि से कुमारसम्भव नामक प्रथम काव्य, ‘कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा’ इत्यादि से मेघदूत नामक द्वितीय काव्य, ‘वागर्थानिवृत्तं संपूवनी’ इत्यादि से रघुवंश नामक तृतीय काव्य बनाया । और भी इन्होंने अभिज्ञानशाकुन्तल, मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीय, श्रुतवांघ ऋतुसंहार, नलोदय, शृंगारतिलक और ज्योतिर्विदाभरण नामक ग्रन्थ बनाये हैं । इसके बाद राक्षस काव्य आदि ग्रन्थ भी इन्हीं के बनाये हैं जिनके बनाने से यह संसार में विख्यात हो गये हैं । इस प्रकार इस महाकवि ने चिरकाल तक संसार का सुख भोगा और यश के शरीर से वह हमेशा जीवित है ।



धन्य सुरस के रसिक कवि, नित्य सुकृति जग माहि ।  
जिनके यश के काय में, जरामरण भय नाहि ॥

### १०—दसवां पाठ

(क) एक दिन विद्यासागर किसी मित्र के साथ सड़क पर टहल रहे थे !  
इसने में सामने से रोता हुआ एक ब्राह्मण आ निकला । विद्यासागर ने उससे रोने  
का कारण पूछा, किन्तु ब्राह्मण ने उनके वेष को देखकर अपने रोने का कारण  
बताना व्यर्थ समझ कर कुछ न कहा । पीछे उनके आग्रह करने पर ब्राह्मण न  
कहा—“महाशय, हम ने एक महाजन से रुपये उधार लेकर कन्या का विवाह किया  
था, पर ठीक समय पर हम उसको रुपये न दे सके, अब उसने हमारे उपर दो  
हजार चार सौ की नालिश की है जिसकी परसों तारीख है ।” यह सुन विद्यासागर  
ने ब्राह्मण से उसके घर का पता पूछ लिया और उसे विदा किया । पीछे विद्यासागर  
ने जाँच की तो ब्राह्मण की बात सत्य निकली । तब उन्होंने दो हजार चार सौ  
रुपये ब्राह्मण के नाम से अदालत में जमा कर दिये । ब्राह्मण ने कचहरी में जाकर  
सुना कि किसी ने सारे रुपये जमा कर दिये हैं । इस अद्भुत कोतुक को देखकर  
उसका चित्त कैसा गद्गद हुआ होगा इसे वह ब्राह्मण ही जानता था । फिर उमने  
उस महापुरुष का नाम जानना चाहा जिसने रुपये जमा किये थे, परन्तु कुछ  
पता न लगा । अन्त में वह दीन ब्राह्मण कृतज्ञ हृदय से गद्गद कण्ठ हो अपने गुप्त-  
दानी को असंख्य आशीर्वाद देता हुआ घर लौट आया । निदान विद्यासागर की दया  
की सीमा नहीं थी । जिस ग्राम में वे जा पड़ते थे वहीं के लोग उनके दर्शन को  
आते और भीड़ लग जाती थी ।

(ख) कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने में किसी गुण के न रहने  
पर गुणवान् बनना चाहते हैं । जैसे यदि कोई पुरुष कविता करना न जानता हो,  
पर वह अपना ढंग ऐसे बनाये रहे कि जिससे लोग समझें कि यह कविता करना  
जानता है, तो यह कविता का आडम्बर रखने वाला मनुष्य झूठा है, और फिर यह  
अपने वेष का निर्वाह पूरी रीति से न कर सकने पर दुःख सहता है और अन्त में  
भेद खूल जाने पर लोगों की आँखों में झूठा और नीच गिना जाता है । परन्तु जो  
मनुष्य सत्य बोलता है वह आडम्बर से दूर भागता है और उसे दिखलाया नहीं  
हचता । उसे तो इसी में बड़ा सन्तोष और आनन्द होता है कि सत्यता के साथ  
वह अपना कर्तव्य पालन कर रहा है ।

### ११—ग्यारहवां पाठ

(क) सम्राट् विक्रमादित्य का स्वभाव था कि वह नगर के बाहर राजा को  
अकेला नगर में घुमा करता था । एक दिन का घटना है कि नगर के बाहर राजा को  
चार मनुष्य दिखाई दिये । सम्राट् ने उन मनुष्यों से पूछा कि तुम कौन हो ? उन्होंने  
कहा ‘हम चोर हैं ।’ सम्राट् ने कहा—‘मैं भी तुम्हारा साथी हूँ, अच्छा अब तुम  
अपना अपना कौशल वर्णन करो ।’ यह सुनकर एक चोर ने कहा कि ‘मैं जानबरे  
की भाषा भली प्रकार जानता हूँ ।’ दूसरा बोला—‘मैं सूँघ कर कोष का स्थान

प्रतीत कर लेता हूँ ।" तीसरे ने कहा—“मैं ताली के बिना ही ताला खोल लेता हूँ ।” चौथा चोर कहने लगा—“मैं अन्वेष में भी मनुष्य को एक बार देख लूँ तो तुरन्त पहचान सकता हूँ । फिर इन चारों चोरों ने सम्राट से पूछा कि भाई तुम में क्या कीशल है ? तुम भी तो बताओ ।” सम्राट ने उत्तर दिया कि मुझ में यह कीशल है कि यदि चोर को फाँसी मिलती हो तो मेरे सिर हिला देने से उनकी जान बच सकती है । थोर यह बात सुनकर हर्षित हुए और कहने लगे कि अब किस बात का डर है ? चलो आज सम्राट् ही के महल में चोरी करें ।

(ख) कैदखाने की कोठरी में एक फटी पुरानी चटाई पर वह बहादुर कैदी सो रहा था । उसकी आँख खुली तो क्या देखता है कि दासी सिरहाने खड़ी रो रही है । इन्द्रनाथ ने कहा—हमदर्द और नैकवस्त दासी ! मैं तुम्हारी सहानुभूति का बदला देने के योग्य नहीं । मेरे पास है ही क्या जो दे सकूँ ? परन्तु, इतना कहकर अपने बाहू से सोने का बाजूबन्द उतार कर देने लगा । दासी ने एक ठण्डी आह भर कहा—इन्द्रनाथ ! मैं भिखारिनी तो हूँ परन्तु मैं कुछ माँगने को नहीं आयी । विमला की आवाज सुनकर इन्द्रनाथ चौंक पड़ा, और बोला—“भिखारिनी ! क्या तुम्हीं ने मेरे लिए इस कदर दुःख उठाया है ? तुम ही दासी के वेप में हो ? तुम शत्रुदल में भी आ पहुँची ।” विमला ने धैर्यपूर्वक कहा—“संसार में कोई ऐसा स्थान है जहाँ स्त्री अपना वचन निभाने को न पहुँच सके ।”

### पंजाब यूनिवर्सिटी की एन्ट्रेंस परीक्षा के प्रश्नपत्र

(१९२६)

(क) १—निषध देश का राजा नल एक बार बन बिहार को निकला । नगर से कुछ दूर निकल जाने पर एक उपवन में उसने एक मनोहर तलाव देखा । उसमें खूब कमल खिले हुए थे ; मछलियाँ खेल रही थीं ; और अनेक प्रकार के जलपक्षी कलोल कर रहे थे । वहाँ पर उसने एक बहुत ही मनोहर हंस को देखा । राजा को वह ऐसा अच्छा लगा कि उसने उसे सजीव पकड़ना चाहा । इसलिए उसने अपने निषङ्ग से एक सम्मोहन शर उस पर चलाने के लिये निकाला । शर को उसने शरासन पर रक्खा ही था कि उसने एक अलक्षित बाणी सुनी । उस बाणी का यह मर्म था कि “ह तरेज, इन पर बाण मत छोड़ । यह तेरा अभीष्ट सिद्ध करेगा । तेरी ही गुणसम्पदा के अनुरूप यह तुझे एक त्रिभुवनमोहिनी राजकन्या प्राप्त करावेगा । उसे तू अपनी महिषी बनाना ।”

(ख) १—मैं कल ही कलकत्ते से आया हूँ । २—तुम्हारा भाई लंकग्राम से लौट आया । ३—महात्मा परोपकार के लिए तन मन धन अर्पण कर देते हैं, ४—जैसे पहाड़ पृथ्वी को धारण करते हैं वैसे ही राजा प्रजा का पालन करते हैं । ५—किसी साधु ने कुत्ते से पूछा—‘तू रास्ते में क्यों सोता है ।’ कुत्ता बोला—‘मे भले बुरे की परीक्षा करता हूँ ।’ ६—जो सच बोलेंगे तो ईश्वर हम से प्रसन्न होगा । ७—

श्याम बड़ा अच्छा लड़का है। वह किसी को नहीं सताता। ८—ईश्वर के दिये देह के किसी अङ्ग की निन्दा नहीं करनी चाहिए। ९—इस विषय में तुम्हें कुछ चिन्ता नहीं करनी चाहिए १०—माता पिता की सेवा करो; फल पाओगे।

(१९२७)

(क) नल की दयालुता पर वह हंस बहुत प्रसन्न हुआ। वह अपना स्थान छोड़ कर नल के कुछ निकट आया और बोला—“हे निषधनाथ, ईश्वर तेरा कल्याण करें। तूने भूषण पर दया दिखाई है। इसके बदले में मैं भी तेरी कुछ सेवा करना चाहता हूँ। तू मुझे साधारण पक्षी मत समझ। मैं ब्रह्मा के रथ को खींचता हूँ, इन्द्र के सिंहासन के पास बैठता हूँ। जयन्त इत्यादि देव—बालकों के साथ खेलता हूँ और मन्दाकिनी के किनारे त्रिहार किया करता हूँ। तूने अपने नृपोचित गुणों से इस भूमण्डल को स्वर्ग से भी अधिक मनोहर बना दिया है। इसलिए कभी-कभी मैं यहाँ भी घूमने आया करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि जैसे देवता भूषण से सख्यभाव रखते हैं वैसे ही तू भी रखें।” नल ने इस बात को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

(ख) १—जो गङ्गा में स्नान करता है उसके पाप दूर हो जाते हैं। २. उद्यमी पुरुष सब कुछ कर सकता है। ३. यह मयूर मुझे बहुत अच्छा लगता है। ४. चाणक्य ने नन्द को बद्धिबल से जीता न कि बाहुबल से। ५. उस भयङ्कर दृश्य को देखकर उस स्त्री के हाथ पाँव कापने लगे। ६. हरि का पुत्र परशुराम अपने कुल का भूषण और अपनी श्रेणी का रत्न है। ७. अरे अन्धे! इस दीप से तुझे क्या लाभ। ८. सीता को रामचन्द्र जी प्राणों से भी प्यारे थे। ९. इस उद्यान में यह सब से ऊँचा वृक्ष है। १०. यह बातें सुनकर मुझे अत्यन्त दुःख हुआ।

(१९२८)

(क) सन्तान होने पर पुरुषों को इतनी खुशी क्यों होती है। राजा कैदियों को मुक्त कर देते हैं। धनी दरिद्रों को दान देते हैं। सामान्य गृहस्थ भी यथाशक्ति आनन्द प्रगट करने में श्रुति नहीं करते। सन्तान से उपकार होगा कि अपकार, इसकी कुछ चिन्ता नहीं। उसके द्वारा कुल उज्ज्वल होगा कि कलङ्कित, इसका कुछ निश्चय नहीं। सन्तान बचेगी या मर जावेगी इसका कुछ पता नहीं। फिर भी कितना आह्लाद और आनन्द होता है। माता पिता का निःस्वार्थ प्रेम और स्नेह धन्य है।

(ख) १—यदि मैं झूठ बोलूँ तो आप मुझे दण्ड दें। २. बड़े भाई की आज्ञा पाकर लक्ष्मण सीता को निर्जन वन में छोड़ आया। ३. तुम्हारे पिता का नाम क्या है? ४. अन्धकार में घूमता हुआ मोहन गिर पड़ा और रोने लगा। ५. साधु घटुन गया है कि हमारे राजा ने शत्रु की सेना को जीत लिया है। ६. उसने हँसकर कहा—मित्र! प्यासा था, जल पीने के लिए आया था। ७. उसने सचमुच मुझे अकेली चुप रहो, मैंने सब का कारण मालूम कर लिया है। ८. क्या सचमुच मुझे अकेली छोड़कर लक्ष्मण चला गया है? ९. गोदड़ बारम्बार जाल को देखकर सोचने लगा—‘यह बन्ध’ बहुत पक्का है। १०. मैं स्नान के लिए नदी पर जाता हूँ। तू अपने बन्धे को मेरे साथ भेज दे।

(१९२९)

१. माता पिता की सेवा करना सन्तान का धर्म है । २. गङ्गा का जल बहुत पवित्र माना जाता है । ३. पुरुष अपने कर्मों से ही बड़ा अथवा छोटा होता है । ४. मेरे पिता की आयु ८३ वर्ष है । ५. क्या आप लाहौर जावेंगे ? ६. कल वसन्त-पञ्चमी का उत्सव था । ७. जाओ, यह समय काम करने का है, साने का नहीं । ८. पञ्चवटी जाते हुए राम वाल्मीकि के आश्रम में ठहरे थे । ९. तुम्हारे भ्रातृ ने अपने कुल को कलङ्कित किया है । १०. भीष्म कुरुक्षेत्र में अर्जुन से मारा गया था । ११. इस वृक्ष के फल मीठे हैं । १२. कहा जाता है कि कल हमारे स्कूल में जलसा होगा ।

(१९३०)

१. विद्या की शोभा सेवा में ही है । २. हम पढ़ने के लिए काशी गये । ३. राजा ने ऋषियों को तप करते देखा । ४. ईश्वर तेरी रक्षा करें । ५. यदि तुम मेहनत करोगे तो फल पाओगे । ६. मैं आज तुमसे एक पत्र लिखवाऊंगा । ७. मुझ से उसका दुःख सहा नहीं जाता । ८. इस पुस्तक में १६ अध्याय और ७२५ श्लोक हैं । ९. शत्रु के मरने पर सब प्रसन्न हुए । १०. धन से हीन पुरुष का कीन आदर करता है ।

(१९३१)

१. प्राचीन काल में सब लोग विद्या पढ़ते थे । २. तब कोई भी विद्या रहित नहीं था । ३. राजा, रंक सब एक स्थान में पढ़ें ऐसा नियम था । ४. सब इतिहास ग्रन्थों में ऐसा सुना जाता है । ५. विद्या भी विना मूल्य दी जाती थी । ६. आजकल इससे उलटा होता है । ७. विद्यार्थी पहिले तपस्वी होते थे । ८. आज गिण्ठ मास्टरो को गाली देते देखे गये हैं । ९. यह समय का भेद है । १०. देखें, आगे समय क्या करायेगा ।

(१९३२)

१. पहले इस देश का नाम आर्यावर्त था । २. यह देश सारे संसार से उत्तम है । ३. इसमें छःओं ऋतु अपने यौवन में होती हैं । ४. यहाँ अनेक ऋषि मुनि जन्म ले चुके हैं । ५. वे ऋषि सच बोलने वाले और धर्म में स्थिर थे । ६. हमें चाहिये कि हम भी उन्हीं का अनुकरण करें । ७. इसी प्रकार मे हमारा कल्याण होगा और दुःख कटेंगे । ८. उन ऋषियों का कथन है कि प्रत्येक बालक ब्रह्मचारी बने । ९. ब्रह्मचर्य बल और बुद्धि का बढ़ाने वाला है । १०. हे गिण्ठ ! उठो प्रनःकाल हो गया ।

(१९३३)

१. नम्रता मनुष्य का गुण है । २. फलवान् वृक्ष ही झुकते हैं । ३. श्रीनानक आदि भक्त बड़े नम्र थे । ४. युधिष्ठिर के यज्ञ में भगवान् कृष्ण ने नवकी सेवा की थी । ५. राजा लोग विद्वानों की सेवा करना अपना भाग्य मानते थे । ६. अभिमान म बड़े बड़े राजा नष्ट हुए । ७. विद्यार्थी को अति नम्र होना चाहिए । ८. कई अमीर लोगों के लड़कों में यह गुण दिखाई नहीं देता । ९. अभिमानी बालक दूसरों

से ज्ञान नहीं ले सकता । १०. शास्त्र में कहा है—अभिमान और सुरापान बराबर हैं ।

(१९३४)

१. मारा हुआ धर्म मनुष्य को मार देता है । २. अहिंसा नाम का धर्म परम धर्म है । ३. अहिंसक मर कर स्वर्ग को प्राप्त होगा । ४. प्राचीन आर्य हिंसा नहीं करते थे । ५. हिंसक कभी भी विश्वासयोग्य नहीं होते । ६. दूसरे प्राणियों को मारना हिंसा है । ७. शास्त्र सुनने से ऐसी भावना उत्पन्न होगी । ८. अतः शास्त्र का पाठ अवश्य करना चाहिए । ९. ऐ विद्यार्थी जनों ! प्रातः स्नान करके स्वाध्याय करो । १०. स्वाध्याय करने वाला ईश्वर विश्वासी हो जाता है ।

(१९३५)

१. उन मूर्ख पण्डितों के इन वचनों को सुन कर सब लोग जो उस सभा में बैठे थे हँस पड़े । २. यह नदी हमारे देश में सब से छोटी नदी है । ३. तुमको देख देख कर मेरा मन क्यों इतना प्रसन्न होता है । ४. यह पुस्तक पढ़ने योग्य है, अवश्य खरीद लो । ५. उससे पूछ कि पढ़ने के लिए कब गुरु जी के पास जायेगा । ६. पिता जी, मैं भी आपके साथ घूमने के लिए जाना चाहता हूँ । ७. कृपा करके मुझे अपना घर दिखा दें । ८. यहीं ठहर, मैं अभी नदी से जल पीकर आता हूँ । ९. गुरुजी, मेरी चार बहीन और तीन भाई हैं, मैं इनमें बड़ा हूँ । १०. बहुत दान देने से भी धन नष्ट नहीं होता, जैसे, सारे ग्राम से ले जाने पर भी किसी बड़े कुएं का जल ।

(१९३६)

१. धन के लिए मनुष्य घर के सुख को छोड़ कर कहाँ २ फिरता है । २. चिन्ता करने से क्या मिलेगा । अब क्या करना चाहिए ? यह आप कहें । ३. इन चारों चोरों को नगर से बाहर ले जाकर मार दो । ४. ऊपर से गिरते हुए बालक को पिता ने दोनों हाथों से पकड़ लिया । ५. आज ज्वर के कारण गुरु जी ने हमें पाठ नहीं पढ़ाया । ६. वह मेरा सब से बड़ा भाई है और यह सब से छोटा । ७. यहाँ बैठ जा और ध्यान देकर सुन, गुरु जी क्या कहते हैं । ८. यह काम कर जिससे दुनियाँ में तेरी शोभा हो । ९. देख, कोई स्त्री बाहर आई है जा उससे उसका नाम पूछ । १०. मैं इस घोड़ी को बेचकर नई घोड़ी मोल लेना चाहता हूँ—माता जी आपकी क्या इच्छा है ?

(१९३७)

१. मैं हर दिन स्नान करके, पाठशाला को जाता हूँ—प्रातः प्रातः स मेरे साथ भोजन खाता हूँ । २. हमारे गुरु जी के चार पुत्र हैं—मेरे साथ तुम्हारे छोटे भाई के लिए क्या क्या नहीं आये हैं, चौथा वही ग्राम में है—तुम्हारे छोटे भाई के लिए क्या क्या नहीं किया परन्तु वह मेरे किये को नहीं जानता । ३. जो सुनने योग्य था सुन लिया है अब यहाँ ठहर कर क्या करूँगा । ४. देख, देख-देख कर चल, नहीं तो तू जमीन पर गिर पड़ेगा । ५. पापी चोरों ने शाम के समय कन्या की मार कर नदी में डाल दिया । ६. यह दो विद्यार्थी सारा दिन खेलते हैं, न पढ़ते हैं न पढ़ेंगे । ७. प्या



भाई जल्दी जा, और यह पत्र पिता जी को दे दे। ९. माता ने कहा 'बोल' तू क्या चाहता है। १०. मनुष्य ससार में रोने के लिए आया है या हँसने के लिए ?

(१९३८)

१. तू भी तो वहाँ ही था—मुझे सुना, वहाँ क्या क्या हुआ ? २. तुम दोनों चलो, हम दोनों भी अपनी माता जी के साथ तुम्हारे पीछे आते हैं। ३. पूछो, जो पूछना है—जल्दी कर मुझे जाना भी है। ४. इन फलों को लेकर दोनों हाथों से अपने, गुरु जी के आगे रख दे। ५. विद्या के बिना मनुष्य कुछ नहीं—पशु के समान ही होता है। ६. दूसरे दिन वह स्त्री रोती हुई फिर हमारे घर रात के समय आ गई। ७. जो सोता है वह रोता है वह किसी महात्मा ने ठीक कहा है। ८. तुम्हारे माता पिता किस दिन यहाँ से अपने ग्राम को जायेंगे ! ९. तू कौन है ? कहाँ से आया है ? कब, और किस लिए। १०. दूध पीकर पानी कम नहीं पीना चाहिए—तू सुन याद रख।

(१९३९)

१. हमारे ने कहा—तुम कैसे मूर्ख हो, मैं तुम्हारे वचन नहीं सुनूँगा। २. उसने कहा—मैं उस नरश्रेष्ठ का राजलक्ष्मी हूँ। मुझे अब उसे त्यागना पड़ेगा। अतएव अब मैं दुखी हूँ। ३. सूर्य, चन्द्रमा और तारे सब ईश्वरीय नियम के आधीन हैं। ४. मेरे ऊपर क्रांति मत करो। मैं जो कहता हूँ वह सत्य है। यद्यपि वह बट्ट है। ५. इस मास में सूर्य बड़ी जल्दी उदय हो जाता है और रात से दिन अधिक लम्बा होता है। ६. राम ! जाओ, पचपन आम खरीद कर शीघ्र लौट आओ। ७. परमेश्वर के बिना आपद् में हमारा कौन बन्धु है ? ८. शीघ्र ही उसे मार दिया गया। ९. माता तथा मातृ-भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। १०. आप जाएँ, फिर दर्शन दीजिएगा। ११. किसी साधु ने एक कुत्ते से पूछा—तू मार्ग में क्यों रोता है ? कुत्ते ने कहा—मैं भले बुरे की परीक्षा करता हूँ। १२. श्रीराम मार्ग पूछते हुए सुतीक्ष्ण मुनि के आश्रम को पहुँच गये। १३. महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में वर्णन किया है कि रावण को मारकर श्रीराम अपने प्रिय-जनों के साथ पुष्पक विमान में चढ़कर लंका से अयोध्या को आये।

पञ्जाब यूनिवर्सिटी की प्राज्ञ परीक्षा के प्रश्नपत्र  
हिन्दी अनुवाद परीक्षा पत्र (छठा)

(१९२६)

(क) मीरा एक राठौर-सामन्त की कन्या थी। दो त्रानों के लिए तो वह वचन से ही विख्यात हो गई थी। एक तो अलौकिक रूपसौन्दर्य के लिए और दूसरा वाणी के लिए। उसके यह दोनों गुण देश-विदेश सब जगह फैल गये। यहाँ तक कि उसकी सुन्दरता को देखने और उसके सुरीले गान को सुनने के लिए दूर-दूर से लोग उसके पिता के यहाँ आया करते थे। मीरा अपने रूप-लावण्य और

संगीत माधुर्य के द्वारा सब को मुग्ध कर देती थी। मीरा देवी वचन से ही ईश्वर की भक्ति में लीन रहती थी। उसके जी में संसारिक भोग-विलास की लालसा थी ही नहीं। अपने पिता के घर मीरा सारे दिन सब को साथ लेकर भगवान् के नामों और गुणों का गान किया करती थी। संसारी प्रलौभनों से वह सदा दूर रहती थी।

(ख) पञ्चवटी की शोभा को देखकर रामचन्द्र जी बहुत प्रसन्न हुए, वास्तव में पञ्चवटी स्थान ही ऐसा था। वाल्मीकि जी ने पञ्चवटी का बहुत विस्तार से वर्णन किया है। उन्हीं के वर्णन का कुछ सारांश हम यहाँ लिखते हैं।

(ग) मुनि, मेरे चार भाई हैं और सात बहिनें।

(१९२७)

(क) बेटा दुर्योधन ! काम और क्रोध के वश होने से तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। इसी से तुम गुरुजनों का कल्याणकारी उपदेश नहीं सुनते। किन्तु हे पुत्र ! जब तुम अपनी अधर्म-बुद्धि को नहीं जीत सकते तब राज्य जीतने या राज्य की रक्षा करने की तुम किस तरह आशा करते हो ? बेटा ! तुमने आज तक पाण्डवों के साथ जो बुरा व्यवहार किया है, उनको जो तुमने नाना प्रकार की पीड़ा पहुँचाई है—उसका प्रायश्चित्त उन्हें उनका राज्य देकर कर डालो। तुम समझते हो कि युद्ध होने पर भीष्म द्रोण आदि सब तरह तुम्हारी ही तरफ रहेंगे। यह बात कभी नहीं हो सकती। पाण्डवों का राज्य में हक है; और धर्मार्त्ता होने के कारण सब लोग उन्हें अधिक चाहते हैं, जो लोग तुम्हारे अन्न से पले हैं वे युद्ध में तुम्हारे लिए प्राण दे सकते हैं। परन्तु पाण्डवों के खिलाफ कभी तुम्हारी सहायता नहीं कर सकते। इसलिए हे पुत्र ! सन्धि स्थापन करके सब की रक्षा करो और पाण्डवों के साथ मेल करके सुख पूर्वक रहो।

(ख) अपनी विधवा पुत्री को अपने पास रखकर भाम्बराचार्य उसको ज्योति-विद्या पढ़ाने लगे। कहा जाता है कि लीलावती विद्या में इतनी प्रवीण थी कि वह वृक्ष के पत्तों की ठीक संख्या बता देती थी। लीला ने अपना सारा जीवन विद्या-शिक्षा के काम में ही व्यतीत किया।

(ग) मैं तो अपने सब से छोटे भाई के साथ गच्छीस दिन के बाद फिर यहाँ आ जाऊंगा, परन्तु मेरी चार बहिनें वहाँ पर ही रहेंगी।

(१९२८)

(क) हरिद्वार हिन्दुओं का परम पवित्र तीर्थ है। ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों में इसकी महिमा बहुत गाई गई है। वेद मन्त्रों में भी इसकी चर्चा पाई जाती है। जो लोग मानते हैं कि यदि तुम अपने ~~इन्द्र के~~ <sup>इन्द्र के</sup> पुनः असत्य भाषण से ~~इन्द्र के~~ <sup>इन्द्र के</sup> बुद्धि के लिए गङ्गा में जाने की कोई आवश्यकता नहीं।

जो लोग शास्त्रोक्त विधि के अनुसार श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उक्त तीर्थ का सेवन करते हैं वही यथा योग्य फल को प्राप्त कर सकते हैं, अन्य नहीं, प्रत्युत तीर्थ पर निषिद्ध आचरण करने वालों को भयङ्कर नारकी गति मिलती है।

(ख) विचारशील मनुष्यों से ऐसा सुना जाता है कि कविता और मानव जाति का अनादि सम्बन्ध चला आता है। मनुष्य के बिना अन्य कोई प्राणी कविता के रचने या समझने में समर्थ नहीं। मनुष्यों में भी सहृदय पुरुष ही उसके रस भावादि मर्म को जान सकता है। कविता के आस्वादन में रहित मनुष्य पशुवत् होते हैं। संसार में ऐसी कोई भाषा नहीं जिसमें कुछ न कुछ कविता न पाई जाय। सज्जीत भी कविता की शाखा है। सज्जीत कविता-प्रेम का बड़ा भारी सहायक है और प्रेम ही सृष्टि का मूल मन्त्र है। आजकल के नवशिक्षित युवकों में से कई एक निजमातृ-भाषा की कविता से घृणा करते हैं। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि वे कविता के मर्मज्ञ तथा मातृभाषा के स्नेही नहीं।

(ग) भद्रसेन ने कहा—उठो भाई! रात्रि के चार बजे चुके हैं। ब्राह्म मूर्हत हो गया है, सब से प्रथम भगवत् चिन्तन कर आवश्यक शौचादि से निवृत्त हो स्नान सन्ध्या करके अपने स्वाध्याय का आरम्भ करो। यह सुनकर सब ब्रह्मचारी अपने अपने विस्तरों को छोड़ कर यथावत् नित्यविधि समाप्त करने में तत्पर हुए, उसी समय उनके गुरु आ रहे हैं।

आते ही गुरुजी ने कहा कि सब छात्र मेरी बात सुनें। आज नौ बजे के लग-भग दरभङ्गा नरेश पाठशाला का निरीक्षण करेंगे। उनके साथ अनेक शास्त्रों के विद्वान् भी आ रहे हैं। वे योग्यतानुसार परीक्षा लेंगे—ऐसा सुना जाता है। किन्तु यह निश्चित बात है कि उनकी आज्ञा के अनुसार उनके प्रधान मंत्री प्रत्येक सब को एक स्वर से वेदपाठ सुनाना होगा।

(१९२९)

पाप छिराये कदापि नहीं छिपता। पाप का फल अवश्य भोगना पड़ता है। खाँसी की तरह पाप अवश्य प्रकट हो ही जाता है। किसी एक कमरे में तीसरी श्रेणी के दो विद्यार्थी रहते थे। एक दिन का वृत्तान्त है कि हैं। दो बड़े बड़े पलंग सफेद विस्तरों से कसे हैं। पृथक् पृथक् मेज कुर्सियाँ लगी लेट कर स्वाध्याय में नितान्त मग्न हो रहे हैं। प्रायः दोनों की आयु समान थी। दोनों बहुत। सुन्दर नवतरुण तथा मेधावी थे। एक का नाम 'चन्द्रशेखर' दूसरे का नाम 'निरञ्जन' था। चन्द्रशेखर शान्त तथा गम्भीर प्रकृति का था। 'निरञ्जन' का स्वभाव कुछ तर्कवितर्क करने का था। पढ़ते पढ़ते अचानक निरञ्जन ने चन्द्रशेखर की ओर देखकर कहा—भाई! पाप क्या वस्तु है? चन्द्रशेखर बोला—आश्चर्य, तुमका आज तक यही ज्ञात न हुआ कि पाप किसको कहते हैं? निरञ्जन—क्या हुआ आप ही बता दें पाप किसे कहते हैं। चन्द्रशेखर—बुरे कार्य का करना पाप है। निरञ्जन—यह ठीक नहीं, कभी कभी बुरा काम भी किया जाता है पर वह पाप नहीं होता। क्या झूठ बोलकर गी की जान बचा लेना पाप है? नहीं, कदापि नहीं। यह सुनकर चन्द्रशेखर ने कहा—तुम्हें तर्कवितर्क करने की बहुत बान (आदन) है कभी धोखा खाओगे, चुप रहो अपना काम करो। निरञ्जन—अस्तु, मैं चुप

रहता हूँ तथापि यह अवश्य कहूंगा कि जिससे अपने या दूसरे को हानि पहुँचे वही पाप है ।

कुछ समय बीत गया । दोनों विद्यार्थी अपने अपने काम में लगे रहे । परन्तु निरञ्जन ने अपने स्वभाव के अनुसार पड़ोस में रहने वाली एक कुलीन स्त्री को जो बहुत सुन्दरी थी चोरी चोरी देखना प्रारम्भ कर दिया । निरञ्जन जानता था कि मेरे देखने से इस स्त्री को कोई हानि नहीं पहुँचती, किसी को मालूम तो है ही नहीं । एक दिन कामाध होकर उसने उस स्त्री पर कङ्कड़ फेंका । स्त्री ने अपने पति को उसकी दुष्टता का वृत्तान्त सुना दिया । स्त्री के पति ने प्रिंसिपल के आगे उसकी शिकायत की । प्रिंसिपल ने भले प्रकार तहकीकात करके निरञ्जन को कालेज से बाहर निकाल दिया । तब उसको कई एक दुर्व्यसनो ने घेर लिया, अन्ततः राजयक्ष्मा रोग से क्षीण होकर सदा के लिए संसार से विदा हो गया । सच है पाप छिपाये नहीं छिपता ।

(१९३०)

एक नगर में कोई साहूकार रहता था । उसके पाँच पुत्र थे । समय पाकर साहूकार बूढ़ा हो गया । उसके सब धन को पुत्रों ने ले लिया, और पिता के प्रति नम्र-भाव से निवेदन किया कि—अब आप कोई काम न करें, आनन्दपूर्वक डेवढ़ी में आसन जमा लें, यथेष्ट भोजनादि सेवा हो जायगी । पर ध्यान रहे कि कोई अपरिचित आदमी अन्दर न आ सके । पिता ने अपने पुत्रों की बात को मान लिया । कुछ दिवस बीतने पर उसके पुत्रों की स्त्रियों ने अपने पतियों से कहा—तुम्हारा पिता बहुत थूकता है, सब स्थान को भ्रष्ट कर देता है, यह मालूम नहीं कि—कब मरेगा । इसको ऊपर के चुबारा में ले जाओ, वहाँ इनके पास एक घण्टी रख दें, जब इनकी भूख प्यास लगे—अथवा और आवश्यकता हो तो घण्टी बजा दिया करें, हम इनकी इच्छानुसार सेवा कर दिया करेंगी, पुत्रों ने ऐसा ही किया, पिता ने यह भी मान लिया । एक दिन का वृत्तान्त है कि उस बूढ़े का पोता अपने दादा के पास चुबारा में चला गया और दादा के साथ खेलने लगा । दादा भी उसके साथ प्यार करके बहुत प्रसन्न हुआ ।

अन्ततः वह बालक अपने दादा की घण्टी लेकर नीचे चला आया, पर किसी का इस बात पर ध्यान न पड़ा । जब बूढ़े की भूख प्यास सताने लगी तो इधर उधर हाथ मारा, घण्टी न मिली, उसकी कोई आवाज सुन न सका, क्योंकि चिल्लाहट लगाने का उसमें बल था ही नहीं । एवं भूख प्यास से तड़फ तड़फ कर यम-लोक को सिधार गया । जब उसके पुत्र घर आये तो उन्होंने स्त्रियो ने कहा—हमारी माँ जी भोजन कर चुके हैं क्या ? स्त्रियाँ बोलीं, आप ऊपर गये, देखा तो पिता जी यदि लगती तो घण्टी बजाते । सदा के लिए मर गया है ।

संसार में प्रायः निर्धन बूढ़ों की यही दशा होती है ।

(१९३१)

(क) सुनो, इस बात पर मैं बालू के पुल का वृत्तान्त आप लोगों को सुनाता हूँ:—



प्रतिष्ठान नगर में तपोदत्त नाम का एक ब्राह्मण था। उसने बाल्यावस्था में पिता के बहुत समझाने और ताड़ना करने पर भी विद्या नहीं पढ़ी। जब अवस्था अधिक हुई तब सब लोगों से अपनी निन्दा सुनकर पश्चात्ताप करने लगा और विद्या की प्राप्ति के लिए गंगा तट पर जाकर तपस्या करने लगा। चिरकाल के अनन्तर उसे उग्र तप करता देखकर इन्द्र ब्राह्मण का रूप धारण करके उसके निकट आये और उसी के आगे गंगा किनारे की बालू ले ले कर जलप्रवाह में फेंकने लगे। यह देखकर वह तपोदत्त मौन को त्याग कर बोला—‘हे ब्राह्मण! यह तुम क्या कर रहे हो?’ उसके बार-बार पूछने पर इन्द्र ने कहा—‘लोगों के पार जाने के ही सुख से गंगा पार हो जाया करोगे।’ यह सुन कर तपोदत्त ने कहा—‘रे मूर्ख! सकता है? कदापि नहीं, यह तेरा प्रयत्न सर्वथा निष्फल है।’ तब इन्द्र ने हंसकर व्रत उपवासादि करके विद्या के उपार्जन करने का क्यों उद्योग कर रहे हो? और बिना भित्ति के चित्र के समान है, तब तुम्हारा भी यह यत्न मेरी ही तरह जान कर तप को त्याग कर अपने अपने घर को चला गया और गुरु के पास अक्षरा-भ्यास और अध्ययन में कठिन परिश्रम करके थोड़े ही काल में अच्छा विद्वान् हो गया। सारांश यह कि विद्या अभ्यास के बिना नहीं प्राप्त होती।

(ख) एक पहाड़ के नीचे एक नदी बहती थी। नदी के किनारे किनारे पहाड़ से मिला हुआ एक तंग रास्ता दूर तक चला गया था। संयोगवश दो बकरे एक ही समय उस राह से आ निकले, एक इधर से और दूसरा उधर से। जब बराबर सामने आये तो बड़ी कठिनाई में पड़ गये। न कोई मुड़कर लीट सकता और दूसरी तरफ नदी का भय था कि तनिक पर फिसला और जान गई। अब सहज ही में छुटकारा हो गया। उनमें से एक बकरा राह में लेट गया और दूसरा धीरे धीरे उस पर पांव रख कर इधर उतर आया। अब जो लेटा हुआ था उसके लिए आगे का रास्ता साफ हो गया। जहाँ जाना था उठ कर चल दिया। मेल सारांश यह कि गुरु दूसरे की सहायता करो और एक दूसरे के लिये कष्ट सहना सीखो, इसमें दोनों की भलाई निश्चित होती है।

(ग) कितने ही आत्मा धड़ी-धड़ को देखकर विस्मित हो जाते हैं। पर इस हमारे शरीर का यन्त्र इसमें भी अद्भुत है। इसमें कुछ तो कर्म या ज्ञान इन्द्रिया हैं, जैसे—हाथ, कान, नाक, मुँह आदि और जिन में सारे शरीर की पृष्टि

(१९३२)

(क) कितने ही आत्मा धड़ी-धड़ को देखकर विस्मित हो जाते हैं। पर इस हमारे शरीर का यन्त्र इसमें भी अद्भुत है। इसमें कुछ तो कर्म या ज्ञान इन्द्रिया हैं, जैसे—हाथ, कान, नाक, मुँह आदि और जिन में सारे शरीर की पृष्टि



होती है और कर्मेन्द्रियां अपने अपने कामों में प्रवृत्त होती हैं उन्हें अङ्ग कहते हैं। कर्मेन्द्रियों को रोगों से बचाने के ये उपाय हैं कि उनसे उतना ही काम लेना चाहिए जितनी उनमें सामर्थ्य है। जब किसी इन्द्रिय में दुःख या थकान का अनुभव होने लगे तो तुरन्त उससे काम लेना बन्द कर दिया जाय। पर यह भी न भूलना चाहिए कि ये इन्द्रियां और शरीर काम करने ही के लिए बने हैं, काम न लेने से ये निकम्मे हो जाते हैं।

साधारण काम काज के सिवाय शरीर से परिश्रम के काम नियमानुसार लेने से बल बढ़ता है और भोजन पचता है। इस नियमानुसार परिश्रम को ही व्यायाम कहते हैं। व्यायाम दो प्रकार का होता है—एक साधारण दूसरा विशेष। साधारण व्यायाम वह है जिससे सारा शरीर हिलता है, जैसे—घोंड़े की सवारी करना, कुश्ती लड़ना, तैरना, दौड़ना, गेंदबल्ला खेलना आदि। विशेष व्यायाम वह है जिससे विशेष-विशेष अंगों को बल प्राप्त हो, जैसे—मुद्गर हिलाना, जोर जोर से चिल्लाना इत्यादि।

सब तरह के व्यायामों में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अपने बल के अनुसार ही व्यायाम हो, नहीं तो बड़ी हानि होती है। व्यायाम के पीछे विश्राम करना भी अति आवश्यक है। इसके सिवाय स्वच्छ भोजन, पानी, हवा और स्वच्छ-चरित्र भी शरीर की स्थिति के लिए परम आवश्यक है।

(ख) एक बार एक भेड़िये के गले में एक हड्डी अटक गई। उसने बहुतेरा यत्न किया पर हड्डी न निकली। अन्त में उसने सारस के पास जाकर कहा—भाई! हम तुम एक ही जगल के रहने वाले हैं। इस समय पड़ोसी का घमं निवाहो। मेरे गले में हड्डी अटक गई है प्राण जाते हैं, तुम अपनी लम्बी चौंच से इसको निकाल दो जो कुछ माँगोगे वही दूंगा। सारस ने यह बात मान ली और भेड़िये (भगियाड़) के गले में अपनी लम्बी चौंच डाल कर हड्डी खींच ली।

कुछ दिन के बाद भेड़िया एक हरिण मार लाया और नदी के किनारे बैठकर खाने लगा। इतने में सारस उसके पास गया और अपने पहले उपकार की याद दिला कर कहने लगा—भाई आज मैं बहुत भूखा हूँ इसमें से मुझे भी एक टुकड़ा दो।

भेड़िया हंस कर बोला—ऐ मूर्ख! यह उपकार क्या थोड़ा है कि तूने मेरे गले में अपनी गर्दन डाली और मैंने बिना चवाए छाँड़ दी और तुम्हें प्राण-दान दिया।

(१९३३)

तब युधिष्ठिर जी बोले—हे प्रिये! क्रोध से भला भी हो सकता है ~~अपराध~~ भी। इस लिए देश, काल का विचार करके क्रोध करना चाहिए। समय और जिस जगह क्रोध करने को ~~क्रोध करना चाहिए~~ क्रोध को रोक नहीं सकता उसका विनाश होना आवश्यकता ~~होना चाहिए~~। आप दुःखी होने पर दूसरे को दुःख आग किए हुए यमून बिना नहीं रहता। आप दुःखी होने पर दूसरे को दुःख आग किए हुए यमून प्रहार करना, मारने पर मारना बहुत बुरी बात और बग से बह रही है। पार जान ऐसा ही करते तो सम्पूर्ण पृथ्वी आज तक विन की शिक्षा याद आई, और सूखे बा

सनातन धर्म है। इसलिये हमने दुर्योधन आदि से क्षमा का व्यवहार किया है।' द्रौपदी ने कहा—'राजन्! राज्य की रक्षा करना आप का परम कर्त्तव्य था। जिस सनातन धर्म ने मोह उत्पन्न करके उस कर्त्तव्य से आप की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया उसको नमस्कार है। आप अपना कर्त्तव्य छोड़कर अब वन में बैठे कीनसा धर्म कमा रहे हैं। सो भी तो मैं नहीं देखती। हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना ही आप की पसन्द है। आर्य लोग कह गये हैं कि जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म भी करता है, पर कहिए आपके धर्म ने आपकी रक्षा कहाँ की? और अधर्म की विजय कैसे हुई? कारण इसका यह है कि वह बलवान् है। बलवान् से धर्म भी डरता है। इसलिए हे महाराज! बल ही मुख्य है। दुर्बल मनुष्य ही पराधीन होते हैं और उनकी ही दशा सदा शोचनीय होती है।' युधिष्ठिरजी फिर कहने लगे—  
द्रौपदी! तुम्हारी बात ऊपर से अवश्य ही बहुत भली जान पड़ती है किन्तु, मालूम होता है कि तुम उसका पूरा तत्त्व नहीं समझतीं। हे सुन्दरी! तुम्हें अपनी अल्प बुद्धि पर विश्वास करके विधाना का तिरस्कार न करना चाहिए। तुरन्त फल लाभ की ओर सदा दृष्टि रखने से कभी कभी अन्तिम फल शुभ नहीं मिलता। हम आगामी नित्य सुख की ओर दृष्टि रखकर वर्तमान समय के शीघ्र ही नाश हो जाने वाले दुःखों के सहन करने की पूर्ण शक्ति रखते हैं और इसी का नाम बल है। जिसे तुम बल कहती हो वही दुर्बलता है।

(१९२४)

(क) राज-कुल के पुरोहित यह बन्धुविरोध न देख सके। ब्राह्मण के उदार हृदय पर बड़ा आघात हुआ। शक्ति को ऐसे दूषित होते देख कर वे दुःखसागर में निमग्न हो गये! इस राज्य की वे सर्वत्र उन्नति चाहते थे। राज-कुमारों की श्री-वृद्धि और कोशान्ध देखकर शान्ति-प्रिय ब्राह्मण ने प्रताप और शक्ति को बड़ी नम्रता से कहा—  
'सिसोदिया वंश के गौरव का नष्ट मत करो। मैं आपका पूज्य कुल पुरोहित हूँ। हमारे वचनों की रक्षा आपके पूर्वजों ने सदा की है। अतः मैं प्रार्थना करता हूँ कि इस वैरभाव को छोड़ कर परस्पर प्रेम से रहो।'

(ख) महाराज उदयन वासवदत्ता के प्रेम में आसक्त हो, राज काज का भार मन्त्रियों पर डालकर लावण्य में सुख भोगने लगे। उबर शत्रुओं ने उन पर आक्रमण कर दिया। मन्त्रियों ने सोचा कि मगधदेव का राजा उनकी सहायता कर सकता है। अतः उसकी वहिन पद्मावती से महाराज उदयन के विवाह के लिए उन्होंने एक षड-  
'... रचा। एक दिन महाराज आखेट को गये हुए थे। मन्त्रियों ने ग्राम में आग लगा दी और मगधराज को भी आग में कूद कर नष्ट हो गये। राजा को इससे अत्यन्त दुःख हुआ। मगधराज ने ब्राह्मण का रूप धारण किया और वासवदत्ता को अपनी

हर्ष, अहंकार, क्रोध और सुख ये सब धन से पैदा होते हैं। (३) ब्राह्मण सब वर्णों से विद्या में उत्कृष्ट हैं। (४) भले लोगों की संगत सुख देने वाली होती है। (५) चूहा प्रतिदिन उस विल में सोया करता था। (६) हम अपने आप को बड़ा समझते हैं।

(१९३५)

(क) महाराज दशरथ एक दिन वन में शिकार खेलते खेलते तमसा नदी के किनारे पर जा पहुँचे। उस समय श्रवण नामक एक ऋषिकुमार नदी में से जल भर रहा था। जल भरने से गड़-गड़ का शब्द हो रहा था। महाराज दशरथ ने समझा कि कोई जङ्गली हाथी नदी में जलपान कर रहा है। उन्होंने शब्द-वेधी बाण छोड़ा। बाण लगते ही श्रवण चिल्लाया। इतने में महाराज दशरथ भी वहाँ पहुँच गये और उस भयानक दृश्य को देखकर काँप उठे। ऋषि-कुमार के कहने पर वे उठे उसके अंधे माता-पिता के पास ले गये। महाराज ने अपना परिचय देकर सब हाल कह सुनाया। यह सुनते ही दोनों का हृदय शोक से विदीर्ण हो गया और मरते मरते महाराज दशरथ को यह शाप दे गये कि जैसे वृद्धावस्था में पुत्र-वियोग से पीड़ित हो हम मरते हैं यही दशा तुम्हारी भी होगी।

(ख) किसी गाँव में एक घोड़ी रहता था। उसके पास एक कमजोर सा गधा था। उसे एक दिन एक मरा हुआ व्याघ्र मिला। उसने सोचा "यदि शेर की खाल पहना कर अपने गधे को खेत में छोड़ दूँ तो उसे निकालने का किसी को साहस न होगा।" उसने ऐसा ही किया। शाम को शेर की खाल पहनाकर उसे खेत में छोड़ जाता और सबेरे ही अपने घर ले जाता। ऐसे कुछ दिनों में ही गधा खूब मोटा-ताजा हो गया। एक दिन उसने दूर से गधे के शब्द को सुना। उसे सुनते ही मद-मस्त हो चिल्लाने लगा। अब खेतवालों को मालूम हुआ कि यह शेर की खाल में छिपा गधा है। सो उन्होंने उसे डंडों से पीटकर मार डाला।

(ग) (१) हरि ने या तुमने इस लड़की को मारा है। (२) मैं, तुम दोनों और राम के तीनों भाई कल अयोध्या जायेंगे। (३) पञ्जाव और संयुक्त-प्रान्त के बीच में यमुना नदी बहती है। (४) कुशक्षेत्र में भगवान् कृष्ण ने अर्जुन को आत्म-तत्त्व का उपदेश दिया। (५) गुरु अपने शिष्यों को वेद पढ़ाता है और धर्म का मार्ग दिखाता है। (६) गोपाल न सो रूपये में दस पुस्तकें खरीदीं और उन्हें सिर पर उठाकर घर ले गया। (७) गंगा नदी यमुना से ज्यादा लम्बी है और सब नदियों से ज्यादा पवित्र है। (८) ब्रह्मचारी को दिन में दो बार भोजन करना चाहिए। (९) ज्योंही मैं घर पहुँचा त्योंही मूसलाधार वर्षा होने लगी। (१०) यदि अच्छी वर्षा हो जाती तो दुर्भिक्ष न होता।

(१९३६)

(क) अब श्रीरामजी और लक्ष्मण सहित भारद्वाज मुनि को प्रणाम कर उनके बनाए हुए रास्ते से, चित्रकूट पर्वत की ओर चल दिये। भारद्वाज भी उन्हें आशीर्वाद देकर अपने आश्रम में बैठ गये। दोनों भाई जानकीजी को आगे किए हुए यमुना के तीर पर पहुँचे। देखा कि यमुना बड़ी गहराई और वेग से बह रही है। पार जान चाहते हैं पर कोई नाव नहीं। तब उन्हें मुनि की शिक्षा याद आई, और सूखे बाँ

इकट्ठे करके एक घरनाई बनाई। फिर वृक्षों की सूखी लकड़ियों और घास से उसके छिद्र भरे और नरम नरम टहनियों से सीताजी के लिए बैठक बनाई। तब सीता को उस पर बैठा कर दोनों भाइयों ने भाव चलाई और दूसरे किनारे जा उतरे।

(ख) दूरदृशिता के समान संसार में मनुष्य का हित करने वाली दूसरी कोई वस्तु नहीं है। जहाँ तक देखते हैं वह कभी मनुष्य को दुःख में पड़ने नहीं देता, वरन् आने वाली विपत्तियों ने उसकी रक्षा करती है। यही मनुष्य को आगा-पीछा सुझाती है और समय के अनुसार उचित शिक्षा भी देती है। जो मनुष्य दूरदृशिता से काम करता है वह कभी कोई दुःख नहीं देखता। क्योंकि वह मनुष्य को सम्मार्ग दिखलाती है और सब उत्तम गुणों का स्थान है। वृद्धि इसकी बड़ी बहिन है। इसी से इन दोनों का ऐसा परस्पर प्रेम और सम्बन्ध है कि जहाँ एक रहती है वहाँ दूसरी अवश्य आ मीजुद होती है।

(ग) (१) हरि और तुम या राम और मैं इस कठिन कार्य को कर सकते थे।

(२) बोधी मैले कपड़ों को गाड़ी में नदी पर ले जायगा। (३) माता पुत्र को प्रेम से लड्डू खिलाती है और दूध पिलाती है। (४) बारह वर्ष में चारों वेद छे अंगों सहित पढ़े जाते हैं। (५) उसने मेरे सी रुपये देने हैं इसलिये वह मुझ से द्रोह करता है। (६) ब्रह्मचारी भाग-विलास से सदा डरे और पाप से बचे। (७) मेरे किये हुए उपकारों को याद करके आप मुझ पर अवश्य दया कीजिए। (८) उस पुरुष को हूँ, अब मैं कहाँ जाऊंगा और कैसे अपनी रक्षा करूंगा? (९) मैं बड़े सकट में पड़ गया करते तो परीक्षा में जख्म पास हो जाते।

(१९३७)

(क) एक साधु का कथन है कि "सांसारिक कार्य साधन कर जो परमार्थ लाभ करता है वह मनुष्य सचमुच ही प्रशंसनीय है" यह उक्ति हमारे परम पूज्य वैदिक धर्मतत्त्वों के अनुसार ही है। वैदिक धर्म ने जो वर्णाश्रम-व्यवस्था बतलाई है उसके अनुसार चलते हुए अनेक सत् पुरुष सब कार्य करके अन्त में जीवन्मुक्त हो चुके हैं। कि वैदिक धर्म पर आसाधारण श्रद्धा रखकर उसके अनुसार आचरण रखना चाहिए।

(ख) वाल्मीकिजी ने रामजी से कहा कि "मैं प्रथम व्याध का काम करता था। अनेक जीवों को मारकर उनका द्रव्य हरण करके अपने कुटुम्ब का पाकन करता था। एक दिन सन्निधि वहाँ आगये। मैं उनको भी मारने लगा। तब वे बोले जिन्होंने तुझे वार्ता सुनकर कुटुम्ब के लोगों से पूछने गया। उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पाप में मुझे शिक्षा दी।"

(ग) (१) नम्रता मनुष्य का अत्युत्तम गुण है। (२) अभिमान से मनुष्य नष्ट हो जाता है। (३) तू क्या चाहता है स्पष्ट क्यों नहीं कहता? (४) राम ने वानरों की सहायता से लंका को जीता। (५) खेलने के समय खेलता और पढ़ने के समय



पढ़ना चाहिए। (६) अभिमानो बालक विद्या नहीं प्राप्त कर सकता। (७) प्राचीन काल में राजा लोग विद्वानों की सेवा करना अपना भाग्य समझते थे।

(१९३८)

(क) इतने में गुरु गोविन्द सिंह आ पहुँचे। कौन कह सकता है कि उनके मन में मातृ-भूमि का हित न रहा था! मनुष्य को बचपन में पिता से प्यार होता है, बूढ़ापे में सन्तान से। इनके लिए वह बड़े से बड़ा पाप करने को भी उद्यत हो जाता है। परन्तु गुरु गोविन्दसिंह ने देश और धर्म पर दोनों को न्योछावर कर दिया। प्रतीत होता है कि वे पञ्जाब के वीरों से निराश हो गये थे और देख रहे थे कि आशा की किरण कहीं और भी दिखाई देती है, या नहीं? इसी धुन ने उन्हें पञ्जाब से दक्षिण में खींच लिया। यहां आये, तो वैरागी की कीर्ति सुनी। उनका हृदय-कमल खिल उठा; सोचने लगे; क्या मेरी मानोवाञ्छा सिद्ध होगी?

(ख) हिन्दू-समाज में रामायण का जो स्थान है, जैसा उसका मान है, दूसरे किसी ग्रन्थ का नहीं। राजा से लेकर रंक तक, पण्डित से लेकर सामान्य अक्षराभ्यासी तक, सब रामायण को अपनी रुचि के अनुसार पढ़कर आनन्द प्राप्त करते हैं। हर जगह पण्डितों के द्वारा उसकी कथा कहलाते हैं।

(ग) देखो, इस संसार में जितने बड़े बड़े लोग हो गये हैं, जिन्होंने संसार का उपकार किया है और उसके लिए आदर और सत्कार पाया है उन सभी ने अपने कर्तव्य को श्रेष्ठ माना है। जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है, वे ही संसार में उन्नति करती हैं और उनका नाम आदर से लिया जाता है।

(घ) (१) सन् उन्नीस सौ पैंतीस ईस्वी में इस घर में एक पुरुष, दो स्त्रियाँ, तीन बालक और चार कन्याएं रहती थीं। (२) धन से सब कार्य और मनोरथ सिद्ध होते हैं। (३) क्या आप से बैठा नहीं जाता? (४) माता पिता की आज्ञा पालना बालकों का पहला कर्तव्य होना चाहिए।

(१९३९)

(अ) शूर्पणखा ने देखा कि यह तो बड़ी दुर्घटना हुई। अब क्या करूँ और इनसे कैसे बदला लूँ। यह राम तो बड़ा बलवान् है। सेना कटी और दोनों भाई मारे गये। अब यह समाचार रावण को देना चाहिए। वह चाहे तो बदला ले सकता है। यह सोचकर वह लङ्का में पहुँची और रावण से उसके दरबार में बोली कि मेरी दशा पर रोओ। तुम्हारे जीते जी मेरी यह दुर्दशा! तुम तो यहीं पड़े-पड़े सुख से दिन बिता रहे हो और राज्य में क्या हो रहा है इसका तुम्हें कुछ भी पता सारी ऐसे ही राजाओं का राज्य नष्ट होता है। तुम्हारी पञ्चदश - सत्तारो सारी सेना मारी गई। खर और दूषण भी मारे गये।

(इ) महावि कण्व ने राम के निमन्त्रण की चिरकाल तक प्रतीक्षा की। उसकी उपेक्षा का कारण अज्ञात था। उन्होंने यह सोचकर कि विवाहिता लड़की को बहुत दिन पिता के घर रहना उचित नहीं, उसे बिना बुलाये ही भेज देने का निश्चय कर लिया। दो ब्रह्मचारियों और दाया गौतमी के साथ शकुन्तला को राजा के पास भेज दिया। यह दृश्य अतीव हृदय-विदारक था। यद्यपि कण्व बड़े सिद्ध थे तथापि वियोग



के समय वह साधारण संसारियों की भाँति विलख विलख कर रोये। सखियों की दशा विचित्र थी। बेचारी शकुन्तला के हृदय को कीन कहे।

(उ) (१) उस सेठ के पास दो करोड़, पैंतीस लाख, सत्तर हजार, तीस, सान रुपये थे। (२) जो उसने सुना मुझे सब ही सुना दिया। (३) आओ, यहाँ बैठें और ईश्वर के गुण गावें। (४) संसार में पिता और पुत्र में भी धन के लिए झगड़ा हो जाता है।

## PATNA UNIVERSITY QUESTIONS

संस्कृत अनुवाद के लिए आदर्श वाक्य—

1928 (Additional)

(१) एक स्त्री जल के घड़े को लेकर पानी लाने को जाती है। (२) सूर्य की प्रखर किरणों से वृक्ष लता सब सूख जाते हैं। (३) हम घर जाकर अपने मित्रों से पूछ कर आवेंगे। (४) माता और गुरुजनों का सम्मान करना उचित है। (५) देशदत्त करने से शरीर बलवान् हो जाता है।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) एका स्त्री जलकुम्भमादाय जलमानेतु गच्छति। (२) सूर्यस्य तीक्ष्णकिरणैः वृक्षलताः शुष्काः भवन्ति। (३) अहं गृहं गत्वा मित्राणि पृच्छ्यामि। (४) मातापितरौ गुरुजनाश्च सम्माननीयाः। (५) देशार्पणं शरीरं बलवद् भवति।

1928 S.

(१) राम ने वन में लाखों राक्षसों को मारा। (२) वह वानर वृक्ष से उतर कर नीचे बैठा है। (३) विद्यार्हीन मनुष्य और पशुओं में कोई भेद नहीं है। (४) एक पागल लड़का इधर दौड़ता हुआ आया। (५) ईश्वर की कृपा से उसका शरीर आरोग्य हो गया।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) रामः वने लक्षशः राक्षसान् जघान। (२) स वानरः वृक्षात् अवतीर्य नीचैः उपविशति। (३) विद्याहीनस्य नरस्य पशूनाञ्च कोऽपि भेदो नास्ति। (४) कश्चिन् (एक) मत्तो बालक इतो घावन्नागतः। (५) ईश्वरस्य कृपा तस्य शरीरं नारोग्यमभवत्।

1929 S.

(१) मैंने आज पढ़ा नहीं, इसलिए मेरे पिता मुझ पर नाराज थे। (२) और मैं खेलकर समय नष्ट नहीं करूँगा। (३) तुम घर जाओ। तुम्हारे साथ मैं नहीं खेलूँगा। (४) देवदत्त आज मेरे घर आवेगा। (५) इस वर्ष परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ इस कारण वह परिश्रम से पढ़ता है।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) अहमद्य नापठम् अतः मम पिता मयि अप्रसन्न आसीत्। (२) अहञ्च क्रीडित्वा समयं न नक्ष्यामि। (३) त्वं गृहं गच्छ। त्वया सह अहं न क्रीडिष्यामि।

(४) देवदत्तः अद्य मम गृहमागमिष्यति । (५) अस्मिन्वर्षे स परीक्षायामुत्तीर्णो नाभवत् अतः परिश्रमेण पठति ।

पुराणों में क्या है कि एक बार धर्म और सत्य में परस्पर विवाद हुआ । धर्म ने कहा "मैं बड़ा" सत्य ने कहा "मैं" । अन्त में फैसला कराने के लिए वे दोनों शेषजी के पास गये । उन्होंने कहा कि "जो पृथ्वी धारण करे वही बड़ा" । इस प्रतिज्ञा पर धर्म को पृथ्वी दी, तो वे व्याकुल हो गये, फिर सत्य को दी, उन्होंने कई युग तक पृथ्वी को उठा रखा ।

### एतस्य प्रघट्टकस्य संस्कृतानुवादः

पुराणेषु कथास्ति यत् एकदा धर्मसत्ययोः परस्परं विवादोऽभवत् । धर्मोऽब्रवीत् "अहं बलवान्" "सत्योऽवददहम्" अन्ते निर्णायितुं तौ सर्पराजस्य समीपे गतौ । तेनोक्तं यत् "यः पृथ्वी धारयेत् स एव बलवान् भवेदिति ।" अस्यां प्रतिज्ञायां धर्मयि पृथ्वीं ददौ । स हि धर्मो व्याकुलोऽभवत् । पुनः सत्याय ददौ । स कतिपय-युगानि यावत् पृथ्वीमुत्थापयत् ।

(१) सवरे उठकर पढ़ने बैठ जाओ । (२) परीक्षा के बाद छुट्टियों में दूसरी जगह जाना अच्छा है । (३) अच्छी तरह पास करोगे तो एक किताब मिलेगी । (४) हस्तलिपि को साफ शुद्ध बनाओ (५) पढ़ने के समय दूसरी ओर ध्यान मत दो ।

### एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः

(१) प्रातरुत्थाय अव्येतुमुपाविश । (२) परीक्षानन्तरम् अवकाशेषु अन्यत्र गमनं वरम् । (३) सम्यगुत्तीर्णो भवेत्सि हि पुस्तकमेकं लभेथाः ! (४) हस्तलिपेः स्पष्टं कुरु । (५) अध्ययनसमये अन्यत्र मा ध्यान देहि ।

### नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

एक घूर्त सियार था । उसके चार मित्र थे । उन में से एक बाघ था, एक मूसा, एक भेड़िया और एक नेवला था । पांचों मित्र बड़े आत्मीय थे और जंगल में रहते थे, और जिन पशुओं को वे मार सकते उन्हीं को खाकर जीते थे । एक ही तरह का शिकार प्रतिदिन नहीं मिल सकता है । किसी दिन उनको एक छोटा पशु मिलता था और किसी दिन एक बड़ा । एक दिन कहीं से एक बहुत बड़ा हरिन वहां आया । पांचों मित्र उस हरिन को देख कर बहुत प्रसन्न हुए । उन सबों ने कहा आज हम लोग इस हरिन को मारेंगे और उसको अपना भोजन बनावेंगे । इससे बाद उसी क्षण बाघ दौड़ा, भेड़िया दौड़ा, नेवला दौड़ा । हरिन भी अपने प्राण की रक्षा के लिए भागा । खूब तेजी से उस हरिन को पीछा करने के कारण पांचों मित्रों की भी जीमें उनके मुख से बाहर निकल पड़ी ।

### एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

एकः घूर्तः सियार आसीत् । तस्य चत्वारि मित्राणि आसन् । तेष्वेकः व्याघ्रः, एकौ मूषिकः, एका वृकः, एकश्च नकुल आसीत् । पञ्च मित्राणि अत्यात्मीयानि आसन् वने च वसन्ति स्म । यान् पशून् हन्युः तांश्च भक्षयित्वा जीवन्ति स्म । सदा समानमृगया न लभ्यते कदाचित् तैः कश्चिन् लघुपशुः कदाचिच्च महान् पशुः अलभ्यत । एकदा कुतश्चित् कश्चित् महान् मृगः तत्रागतः । पञ्च मित्राणि तं मृगं

दृष्ट्वा अतिप्रसन्नानि बभूवुः । ते सर्वे ऊचुः अद्य इमं हनिष्यामस्तच्च भक्षयिष्यामः ।  
अथ तस्मिन्नेव क्षणे वृकव्याघ्रमूषिकनकुला अधावन् । हरिणोऽपि प्राणान् रक्षितुं  
पलायितवान् । अतिवेगेन तमनुसरतां पञ्चमित्राणां दीर्घजिह्वाः तेषां मुखेभ्यो  
बहिरागताः ।

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

तब सियार बोला, “बाघ मामा, यह जानवर बड़ा बली है । तुम इसे आसानी  
से हरा नहीं सकते । आओ, हम लोग झाड़ी में चुपचाप छिप रहें । तब हरिन के  
सो जाने पर मित्र चूहा उसकी टांगों की रगें काट देगा और वह दौड़ न सकेगा ।  
हम लोग उसे मारकर उसका मांस मनमाना खायेंगे” । बाघ बोला—“खूब कहा  
भांजे, ऐसा ही हो । भेड़िया बाघ नेवला और चूहा एक स्वर से बोले—“हां हां ऐसा ही  
हो” ! तब चूहे ने हरिन की टांगें काट दीं । और बाघ ने उसकी गर्दन तोड़ दी ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

तदा शृगाल उवाच—मातुल व्याघ्र, अयं पशुमंहावलवान् अस्ति, त्वमिमं लील-  
यैव जेतुं न शक्यसि । आगच्छ वयं गुल्मे तूष्णीं प्रच्छन्ना भवेम । ततो हरिणे सुप्ते  
मित्रं मूषिकः तस्य पदानां शिराः छेत्स्यति स च घावितुं न शक्यति । वयं तं हत्वा  
तस्य मांसं स्वेच्छ्या भक्षयिष्यामः । व्याघ्र उवाच—साधूक्तं भागिनेय, एवमेवास्तु ।  
वृकव्याघ्रमूषिकनकुलाः एकस्वरेणोचुः—आम् आम् ( वाढम् वाढम् ) एवमेवास्तु ।  
ततो मूषिकः हरिणस्य पदानां शिराः चिच्छेद । व्याघ्रश्च तदेव तस्य ग्रीवां वमञ्ज ।

१९२५

नीचे लिखे वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो—

(क) जिसने हमको और संसार की सब वस्तुओं को बनाया है और जो  
सर्वव्यापक तथा निराकार है उसी का नाम ईश्वर है । (ख) भूखे को भोजन देना,  
प्यासे को पानी पिलाना, और वस्त्रहीन को वस्त्र देना, उपकार कहलाता है । (ग)  
जिस प्रकार अपवित्र स्थान में पड़े हुए सोने को कोई नहीं छोड़ता उसी प्रकार अपने  
से नीचे के पास भी विद्या हो तो उसे अवश्य सीख लेना चाहिए । (घ) प्रातःकाल  
अतिरमणीय समय है । इस समय सूर्य की किरणों से सारी पृथ्वी प्रकाशित हो  
जाती है और मनुष्यगण शय्या त्याग करके अपने कार्यों में लग जाते हैं ।

(१) राम के साथ रावण का भीषण युद्ध हुआ था । इस युद्ध में रावण का विख्यात  
वीरपुत्र इन्द्रजित आदि महावीर लोग विनष्ट हुए थे । (२) रामचन्द्रजी ने द्वितीय  
वार विवाह न करके सीता जी की सुवर्णमयी मूर्ति निर्माण करके यज्ञ आरम्भ किया ।  
(३) एक चक्षु अन्ध होने से दूसरे चक्षु की और समस्त शरीर का भार होता है ।  
(४) बाघ, सिंह, सियार प्रभृति मांसाजी पशु वन में वास करते हैं । (५) पिता  
माता और गुरुजनों की भक्ति करनी चाहिए ।

एषां वाक्यानां संस्कृतानुवादः ।

(क) योऽस्मान् संसारस्य सर्ववस्तुनि च निर्मयी यश्च सर्वव्यापको निराकार-  
श्चास्ति, तस्यैव नाम ईश्वर इति । (ख) वृभुक्षिताय भोजनदानं पिपासिताय जल-  
दानं वस्त्रविहीनाय च वस्त्रदानम् उपकार इति उच्यते । (ग) यथा—अपवित्रस्थान-

पतितं सुवर्णं कोऽपि न परित्यजति तथैव स्वस्मान्नीचादपि विद्याऽवश्यं शिक्षितव्या ।  
(घ) प्रभातमतिरम्यकालोऽस्ति । अधुना सर्वा पृथिवी सूर्यकिरणैः प्रकाशिता जाता ।  
मनुष्यगणाः शय्यां विहाय स्वेषु स्वेषु कर्मसु प्रवर्तन्ते ।

(१) रामेण सह रावणस्य भीषणयुद्धं बभूव । अस्मिन् युद्धे रावणस्य विख्याता  
इन्द्रजित्प्रभृतयः पुत्रा महावीरा विनष्टाः बभूवुः । (२) रामचन्द्रो द्वितीयं वारं  
परिणयमकृत्वा सीतायाः सुवर्णमयीं मूर्त्तिं विधाय यज्ञमारेभे । (३) एकस्मिन्नेत्रेऽन्धे  
जाते द्वितीयचक्षुः प्रति सर्वदेहस्य भारो भवति । (४) शृगालव्याघ्रसिंहप्रभृतयो  
मांसाशिनः पशवो वने वसन्ति । (५) पितरौ गुरुजनाश्च प्रति भक्तिः कार्या ।

—:०:—

### अधोलिखितस्य सन्दर्भस्य संस्कृतानुवादः कार्यः

एक समय राजा दिलीप ने अश्वमेध यज्ञ करने के लिए एक घोड़ा छोड़ा ।  
उसकी रक्षा का भार रघु पर पड़ा । वह घोड़े के पीछे-पीछे चला । इन्द्र ने इस  
डर से कि 'सौ यज्ञ करके दिलीप मेरा पद ले लेगा' छिपकर उस घोड़े को चुरा  
लिया । नन्दिनी की कृपा से रघु को यह बात विदित हुई और पहले उसने साम-  
नीति के अनुसार देवेन्द्र से वह घोड़ा मांगा । घोड़ा न मिलने पर रघु ने देवेन्द्र  
के साथ युद्ध आरम्भ किया । उनके बीच में युद्ध होने पर रघु ने ही पहले देवेन्द्र  
के हृदय पर बाण मारा । प्रहार से क्रुद्ध होकर उसने भी रघु पर बाण मारा ।  
दानवों के रक्त को निरन्तर पीते रहने के कारण और मनुष्य के खून का स्वाद  
न जानते हुए मानो वह बाण रघु का खून पीने लगा । उसके बाद सुकुमार रघु  
ने भी अपने नाम वाले बाण को देवेन्द्र की बांह पर मारा । बाण फँकने के बाद  
उसने देवेन्द्र की ध्वजा काट डाली । इस प्रकार उनका घोर युद्ध हुआ । इन्द्र के  
पास सिद्धियाँ थीं; रघु के पास जो सैनिक थे वे युद्ध को देखते रहे । इन्द्र के  
आकाश में और रघु के भूमि पर होने के कारण उनके बाणों के मुख ऊपर और  
नीचे थे । समय पाकर रघु ने देवेन्द्र के धनुष की डोर काट डाली । इससे  
अति क्रुद्ध होकर देवेन्द्र ने पहाड़ों के पंखों को काटनेवाले वज्र से सुकुमार रघु के  
ऊपर प्रहार किया । उससे चोट खाकर रघु पृथ्वी पर गिर पड़ा । किन्तु क्षण  
भर में पीड़ा को भुला कर फिर युद्ध करने के लिए तैयार हो गया । इस प्रकार  
रघु की अलौकिक वीरता को देखकर देवेन्द्र बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने युद्ध  
बन्द कर दिया ।

### अस्य सन्दर्भस्य संस्कृतानुवादः

एकदा राजा दिलीपः अश्वमेधं कर्तुं मन्त्रविक्रमं मुनीन् तस्य रक्षितृत्वेन नियुक्तो  
रघुः सन् गन्तव्यः । "दिलीपः दातुं यज्ञान् विधाय पदवीं मे गृहीष्यति" इति भवेन  
प्रच्छन्नरूपो देवेन्द्रस्तं वाजिनमपजहार । नन्दिनी प्रसादात् विदितवृत्तो रघुः प्रथमं  
साम्नादेवेन्द्रमश्वं ययाच । अनुपलब्धेऽश्वे तेन सह योद्धुं प्रवृत्ते । तयोर्मियः  
युद्धे संप्रवृत्ते रघुरेव पूर्वं देवेन्द्रं बाणेन हृदि विभेद । तत्प्रहारेण संक्रुद्धो देवेन्द्रोऽपि



रघुनाथने प्रत्यविध्यन् । शायकः खलु यः सततमसुराणां रक्तयानेनाज्ञात नरद्विरा-  
स्वादः कुतूहलेनैव तच्छाणितं पपी । कुमारी रघुरपि स्वनामाङ्कित सायकं देवेन्द्रस्य  
भुजायां निचखान । ह्युणा च तस्य पताकां चिच्छेद । तयारेव तुमुलं युद्धमजनि ।  
इन्द्रपाश्वं सिद्धाद्याः, रघोःसमीपे च तस्यसैनिका युद्धप्रेक्षणका बभूवुः । इन्द्ररघो-  
राकाशभूमिसंयुतित्वन तयोः सायकाभ्युध्वंमुखा अधोमुखाश्च प्रासरन् । अवसरमुप-  
लभ्य रघुर्देवेन्द्रस्य धनुर्धामिच्छिनत् । तेनातिक्रुद्धो भववा पतपयच्छदनांचितं वृद्ध-  
सुकुमारे रघो प्राहिणोत् । तेन ताडितां रघुभूभ्यां पपात । तद्वयथां च क्षणेनैवाक-  
ध्वय सः पुनर्योद्धुं सज्जोऽभवत् । रघोस्तादृशमलौकिकं वीर्यं निरीक्ष्य भृशं तुतोष-  
देवेन्द्रो युद्धाद्वयस्मेञ्चेति ।

अधोलिखितस्य संदर्भस्य संस्कृतभाषयानुवादो विधेयः

राजा रघु ने विश्वजित् नामक यज्ञ में अपना समस्त खजाना यज्ञ करनेवालों  
और भिखमंगों को दान किया और अपना समस्त स्नानादि कार्य मिट्टी के बर्तन  
से करने लगा ।

कुछ ही समय के बाद महर्षि वरतन्तु का शिष्य कौत्सऋषि गुरुदक्षिणा  
प्राप्त करने के उद्देश्य से रघु के पास आया क्योंकि चौदह विद्याएं सीखकर वह गुरु  
को दक्षिणा देना चाहता था । रघु ने अपने घर पर आये हुए अतिथि कौत्स  
को अध्यादि से यथाविधि पूजा की । रघु ने कुशल पूछी तो कौत्स ने कहा—  
“राजन् आपके समान धर्मि प्रजापालक राजा के हाते हुए प्रजा क्यों सुखी न  
हो । इस समय मैं आपके पास स्वार्थवश आया हूँ । किन्तु आपकी वर्तमान स्थिति  
को देख कर यही कल्पना करता हूँ कि अच्छा होता यदि मैं आपके पास पहले  
ही आ गया होता । इसलिए अब मैं गुरु-दक्षिणा को प्राप्त करने के लिए किसी  
और राजा के पास जाऊंगा ।” यह कहकर कौत्स जाना ही चाहता था कि रघु ने  
उसे रोक कर कहा—“विद्वन्, आपको कितने धन की आवश्यकता है ?” तब कौत्स  
ने अपने गुरु महर्षि वरतन्तु के साथ हुई पहले क अपनी बातचीत सुनी कि उन्हें  
देने के लिए मुझे चौदह करोड़ गुरु-दक्षिणा की आवश्यकता है । यह सुनकर  
रघु ने कहा—“आज तक कभी भी कोई अतिथि रघु के पास में विफल मनोरथ  
नहीं गया । अब आप दो तीन दिन मेरे अग्नि-गृह में निवास करके प्रतीक्षा करें,  
मैं प्रयत्न करता हूँ ।” कौत्स ने रघु की बात मान ली ।

तब रघु ने कुबेर पर चढ़ाई करने का निश्चय किया । सुबह वह रथ पर  
चढ़ कर जाना ही चाहता था, के मण्डारियों ने आकर निवेदन किया—राजन्,  
रात को खजाने में सोने की थपी हुई । रघु ने जाकर उसे देखा । उसने उस  
गमेरु पहाड़ के समान सुवर्ण के का पिता कौत्स को दान दे दिया । कौत्स  
ने उसे पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर गुरु के आश्रम की ओर चल दिया ।  
कुछ समय के बाद रघु की रानी को एक पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ जिसका नाम  
“अज” पड़ा ।

इस प्रकार शनैः शनैः उचित समय पर शिक्षा आदि प्राप्त करके अज जवान  
हुआ । पिता की आज्ञा से उसने इन्द्रमती के स्वयंवर की ओर प्रस्थान किया ।



मार्ग में उसने हाथी के रूप धारण किये हुए प्रियम्बद नामक गंधर्व को मारकर पोनि-मुक्न किया जिसको मातङ्ग मन्त्रि का शाप था। उसने प्रसन्न होकर अज को सम्मोहन नामक अस्त्र दिया। इस प्रकार वह विदर्भ के राजा भोज की नगरी में पहुँचा। भोजने उसका स्वागत किया और खूब सजाये हुए अपने महल में उसे ठहराया। अज ने समस्त स्नानादि क्रियाएँ समाप्त की और वहाँ विश्राम किया। दूसरे दिन प्रातःकाल वर के योग्य वेशभूषा बनाकर स्वयंवर की ओर चला जहाँ राजा लोग एकत्र थे।

### उपरिलिखितस्य संदर्भस्य संस्कृतभाषयाऽनुवादः कार्यः

विश्वजिन्नाग्नि यज्ञे सर्व स्वकीयं कोषजातमृत्विग्भ्यो याचकेभ्यश्च दत्त्वा मृण्मय-पात्रेणैव रघुः सर्वमात्मीयं स्नानादिकं देहकृत्यमकार्षीत् । ततः कियत्समयानन्तरं महर्षेर्वरन्तोः शिष्यः कीर्त्तनात्मा ऋषिश्चतुर्दश विद्या अधिगत्य स्वगुरवे दक्षिणां दातुकामः रघोः समीपमाययौ । रघुः स्वगृहमागतमतिथिं कीर्त्तयं विलोक्य यथाविध्यध्यादिभिस्तमपूजयत् । कुशलप्रश्नानन्तरं कीर्त्तस्तमभाषत "राजन् ! भवादृशे धर्मात्मनि प्रजापालके भूपती सति कथं न प्रजाः सुखिताः स्युः । साम्प्रतमहं तु भवत्सन्निधौ स्वार्थं सावयितुमेवायातोऽस्मि, परं भावत्की वर्तमानस्थिति-मवलोक्य मया कल्प्यते यद्भवत्सन्निधौ ममागमनमतः प्रागेव समुचितमभवदिति । अतः सम्प्रत्यहं गुरुदक्षिणार्थमन्यस्यैव कस्यचिन्नरपतेः सविवेचयामि । इत्युक्त्वा यावत्कीर्त्तसौज्यत्र गन्तुमैच्छत् तावद्रघुस्तं प्रत्यावर्त्यापुच्छन्— "विद्वन् ! कियद्वनम-पेक्ष्यते भवता ?" ततः कीर्त्तसौ गुरुणा सह कृतां सर्वां स्वां वात्समुक्त्वा रघुं विज्ञा-पितवान्— "यदहं चतुर्दश कीर्त्तिपरिमितं द्रव्यं वाञ्छामीति । तदाकर्ण्य रघुरपि "मत्सकाशान्ताद्यावधि कश्चिदतिथिविफलीभूतमनोरथोज्यत्र गतः, इत्यतो भवान् मदीय आवासे द्वित्राणि दिनान्यतिवाहयन् प्रतीक्षतामहंतवद्भवदर्थं साधनाय प्रयते" इत्यवदत् । कीर्त्तसोऽपि तदङ्गीचकार ।

रघुरपि प्रातः कुबेरं प्रत्यभिधातुं निश्चिकाय । ततो यावत् प्रातरेव रथमारु-हन् । स उदतिष्ठत् तावदेव भाण्डागारिकेरागत्य विनयावनतः निवेदितम्— "यन्महाराज ! रात्रौ कोषागारे हेमवृष्टिरभवदिति । ततो रघुरपि तामब्रावीत् । ततश्च मुमेहपर्वतभागमिव स्थितं समस्त धनराशिं कीर्त्तसाय ददात् । कीर्त्तसोऽपि सुतप्राप्त्याशिषं तस्मै दत्त्वा गुरोराश्रममाजंगाम ततोऽचिरादेव रघोर्महिष्याः सुतरस्त्रमेकमजायत यः खलु "अज" इति नाम्ना प्रसिद्धिमागतः ।

एवं क्रमेण यथाकालं शिष्यादिकं प्राप्य किशोरावस्थामत्यवाप्सितम् । गजत्वं पितुराज्ञयेन्दुमत्वाः स्वयंवरे प्रस्थापयामास । मार्गे च राजा मन्त्राणां शिष्यान् गजत्वं प्राप्तं प्रियम्बदं बाणेनाहत्य यज्ञसौमित्ररत्नमुपगृह्यत् । प्रसन्ना भूत्वा तं च तस्मै सम्मोहनं नामकं अस्त्रं दत्तवान् । स चैव विदर्भराजभाजस्य नगरीं प्रापत् । राजाऽपि तस्य स्वागतं विचार्योत्सिमन् सर्वालङ्कारभूषितं बाभत राजप्रासादं तं न्यवागमयत् । ततोऽजः सकलाः स्नानादिकाः क्रियाः समाप्य विद्वान्महामतं अन्येभ्यः प्राग्ग्रेव वरीचिन देवभूषां विधाय राजाधिष्ठितं स्वयंवरं प्रतिजनाम् ।

## अनुवाद के लिए अभ्यास १

नीचे लिखे वाक्यों की संस्कृत बनाओ :—

(१) एक हंसिनी अपने बच्चे के साथ किसी खेत में रहा करती थी। उस खेत का अनाज पक जाने पर हंसिनी ने सोचा— कि अब किसान लोग अनाज काटना शुरू करेंगे। इसलिए प्रतिदिन भोजन ढ़ूँढ़ने के लिए बाहर जाते समय वह अपने बच्चों से कह जाती थी कि मेरे लौट आने के पहले, जो कुछ तुम लोग सुनो वह सब मेरे लौटते ही मुझ से कह देना।

(२) कृपा कर आप अपने पुत्र को अपने साथ मेरे पास लाइये। मैंने सोनपुर के मेले में सी रुपये का घोड़ा बेचा। वे लोग आप से कुछ पूछने आये हैं। क्या तुम मेरी बातें पसन्द हैं? वे दोनों भाई इसी स्कूल में पढ़कर पास हुए हैं। तुम लोगों ने मेरी बातें ध्यान देकर न सुनीं।

(३) मुझे इस रसोइये की बनायी रसोई नहीं रुचती। बाजार चलो वहाँ पर पर दूकानों में मैं तुम्हें मिठाई खिलाऊँगा। मैं आपकी फुलवारी से बहुत से सुगन्ध वाले फूल लाना चाहता हूँ। आजकल लड़के पढ़ने में रात-दिन व्यस्त देख पड़ते हैं। परीक्षा हो जाने पर वे घर जाकर आराम करेंगे। उनका इतना परिश्रम करना उचित ही है।

(४) हम लोग कृष्ण को ईश्वर का अवतार मानते हैं। हम लोग यहाँ और नहीं रह सकेंगे। कृष्ण के बिना और कोई यह कार्य नहीं कर सकेगा। बड़े लोगों की आज्ञा के अनुसार हम लोगो को काम करना चाहिए। शिक्षक को पिता के समान पूजना चाहिए।

(५) हनुमान् को देखकर मैनाक ऊपर उठा। उन्होंने छाती का धक्का लगाया, जिससे पर्वत समुद्र में दब गया। देवताओं ने नागमाता सुरसा को भेजा। वृद्ध लोगों तथा रावण की भार्या मन्दोदरी ने सीता को वापस देने को कहा पर रावण उनकी बातों को न माना। शूर्पणखा की शिकायत पर उसने कहा कि उसके पति को युद्ध में मारूँगा। दुर्वासा के आने पर शकुन्तला की सखियों ने क्षमा मांग कर शिष्य छुड़ाने की प्रार्थना की।

(६) कण्व—बेटी मेरे मन में बड़ी चिन्ता रहती थी कि तुझे अच्छा पति मिले। सो तूने अपने सुकृतों से योग्यपति पाया। अब मैं तेरी लता का भी विवाह इस आम से जाँ उसके तिरकवर्ती हो रहा है, कर दूँगा। तुम अब देर मत करो। विदा होओ। शकुन्तला—हे सखि ! प्यारी माधवी को तुझे सौपती हूँ इसकी देख भाल तू करना।

(७) अपने विवाह से पहले मेरा भाई मथुरा में रहता था। मोहन, तुमने इस छोटे लड़के को कई बार (कतिकृत्वः) पीटा। महाशय ! मैं रोज तीन बार आपके पास जाता हूँ पर आपके दर्शन नहीं कर सका। तुम लोगों में कौन बड़ा धर्मिमा है, उसका नाम बताओ। कल दोपहर के बाद यहाँ बहुत लोग आवेंगे उनकी श्रुषा करनी चाहिए।

## अनुवाद के लिए अभ्यास २

(१) मेरा मन यहां नहीं लगता है। मुझे यहां आये हुए बहुत दिन बीत गये। अब जल्दी से मैं प्रयाग को प्रस्थान करूंगा। यहां कोई दार्शनिक नहीं है—जिससे मैं पढ़ूं। केवल दिन में चार या पांच बार इधर उधर घूमता हूं। यही तो मेरा दैनिक कर्तव्य है। अधिक सोचना व्यर्थ है, अब मैं चला।

(२) दो मित्र एक साथ जंगल में घूम रहे थे। दैवयोग से एक भालू उसी समय वहां पहुंच गया। मित्रों में से एक भालू को देख कर बहुत डर गया और निकटवर्ती वृक्ष पर चढ़ गया। दूसरा आदमी और कोई उपाय न देखकर मृतक के समान जमीन पर लेट गया। क्योंकि उसने पहले सुना था कि भालू मरे मनुष्य को नहीं छूता है।

(३) विश्वामित्र नामक एक बड़े ज्ञानी मुनि बक्सर के नजदीक जंगल में रहा करते थे। वह एक बार राजा दशरथ की सभा में गये तो उन्हें देख राजा आसन से उठ गये और प्रणाम करके उन का उचित सत्कार किया।

तुम लोग आकर उन गरीब लड़कियों को भोजन वस्त्र और कपड़े दो। यदि तुम संस्कृत के विद्वान् होना चाहते हो तो पहले सिद्धान्तकीमुदी को काशी में जाकर पढ़ो, पीछे इङ्ग्लैण्ड जाकर डाक्टर इत्यादि उपाधि लेना सुगम है। नहीं तो बिना पाणिनीय व्याकरण पढ़े इङ्ग्लैण्ड जाकर संस्कृत पढ़ने से कोरे रह जावोगे। मुनि लोग वन में रह कर वृक्ष से फल को तोड़ कर खाकर तपस्या करते थे न कि चावलों से भात पका कर।

(४) मोक्ष चाहने वाले रोते पुत्र और कलत्र को छोड़ कर संन्यासी हो जाते हैं। सुख और शान्ति पाने के लिए ज्ञान और कर्म सच्ची राह है जिसके बिना कुछ नहीं होता। चन्द्रगुप्त ने अपने राज्य की सीमा सिन्धुनदी तक की थी। एक दिन जब पांचों पाण्डव वन में घूम रहे थे तब युधिष्ठिर को प्यास लगी, उन्होंने नजदीक वाले किसी सरोवर से जल लाने को सहदेव को भेजा।

(५) सीता राजा जनक की अपनी पुत्री नहीं थी। जिस समय जनकजी यज्ञ के लिए मिट्टी खोद रहे थे उसी समय पृथ्वी के भीतर से सीता निकली और राजर्षि जनक उसी क्षण उनको गोद में उठा कर घर ले आये। यह कथा रामायण में लिखी हुई है। इसी लिए बहुत से लोग सीता को पृथ्वी की कन्या कहते हैं।

(६) गृहजी ने शिष्यों से कहा कि मेरे चारों ओर बैठ जाओ। उनके बोलने पर वे बोले—सुनो जहां कोई राजा या विद्वान् न रहता हो वहां चारों दिशाओं में जाने से चार फल मिलते हैं। उन्हें जो अपने परिश्रम से पा लेगा उसी का जन्म सफल होगा।

(७) इक्ष्वाकुवंश में सगर नाम के राजा हुए। राजा बड़े पराक्रमी शूरवीर थे। उन्होंने अनेक बार अश्वमेध यज्ञ किये अन्त में फिर अश्वमेध यज्ञ करने की तैयारियां कीं। यज्ञ के लिए घोड़ा छोड़ा गया। उस घोड़े को इन्द्र ने बांध रक्खा। घोड़ा दूढ़ने के लिए राजा के लड़के और बहुत सी सेना गई। परन्तु घोड़े का

कहीं पता न मिला, सध लोग निराश होकर लौट आये । अन्त में पाताल लोक में जाकर उन लोगों ने देखा कि कपिल मुनि यहां तपस्या कर रहे हैं, घोड़ा वहीं उनके समीप बंधा हुआ है ।

## PATNA UNIVERSITY. Matriculation Examination 1924

- (क) कछुवा स्वभाव से बहुत धीरे धीरे चलता है । इसलिए एक खरहा किसी कछुवे की हंसी उड़ाने लगा । कछुवा कुछ हस कर बोला ! भाई बोल चाल का काम नहीं, दिन ठीक करो उसी दिन हम दोनों एक समय चलना आरम्भ करें । देखा जायगा कि कौन पहले निवृत्त स्थान पर पहुंचता है । खरहा बोला और दिन का क्या काम है आओ आज ही देखा जाय, अभी जाना जायगा कि कौन कितना चल सकता है ।

1926 (Additional)

- (ख) (१) आपाढ़ और श्रावण इन दोनों महीनों को वर्षा ऋतु कहते हैं । इन महीनों में वर्षा न होने दूभिस होता है । (२) आदमी लोग धन के वास्ते धर्म अधर्म नहीं समझते हैं । (३) स्वास्थ्य से और अच्छा पदार्थ कुछ नहीं है । स्वास्थ्य रहने से मनुष्य विद्या और धन का लाभ कर सकता है । (४) बुद्धदेव ने राजगृह में वास कर बहुत दिन तपस्या की थी । (५) रामचन्द्रजी विश्वामित्र के साथ गङ्गा नदी पार होकर जनकपुरी में पहुंचे ।

1926 (Supplementary)

- (१) गाय, भेड़, बकरी और भैंस आदि जन्तुओं से मनुष्य का बहुत कार्य सिद्ध होता है । (२) इस ग्राम में पाच सौ आदमी वास करते हैं । वे लोग बड़े गरीब हैं । (३) हिमालय ऐसा ऊंचा पर्वत संसार में अन्यत्र नहीं है । (४) नदी के किनारे वास करके और नदी का पानी पीकर आदमी स्वस्थ रहता है । (५) लड़के लोग वसन्त काल में फूलों के बगीचे में टहल कर गीत गाते हैं ।

एक किसान को एक घोड़ा था । वह एक दिन अपने पुत्र को साथ लेकर इस घोड़े को बेचने चला । उस समय इनके रास्ते में कितने लड़के हसी खेल करते चले जाते थे । उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, क्या तुमने इस किसान और इसके बेटे के समान कोई गवार देखा है ? ये बिना क्लेश के घोड़ा चढ़ सकते थे । किन्तु ये घोड़े के साथ पैदल दौड़ रहे हैं !

1925

जब शिकारी दौड़ रहे थे, एक हरिण मारे जाने के डर में भाग कर अंगूरवन में छिप गया और वह यह समझ कर कि शिकारी मुझे ढूँढ़ नहीं सकेंगे स्वच्छन्द मन से अंगूर-लता को खाने लगा । शिकारी हरिण के विषय में निराश होकर अंगूरवन के किनारे से जाने लगे । उन्होंने लता भक्षण का जब्द मुन कर धन की ओर मुंह

फेरा और यह अनुमान करके कि हरिण यही है तीर चलाया। तीर के आघात से हरिण मर गया।

1927

एक सिंह एक गदहा और एक सियार ये तीनों मिलकर शिकार करने को गये। शिकार शेष होने पर उन्होंने भाग कर खाने की इच्छा की। सिंह ने गदहा को भाग करने की आज्ञा दी। तब गदहा तीन समान भाग करके साथियों को एक एक भाग लेने को बोला। सिंह ने बहुत क्रोधित होकर नखों से गदहा को शीघ्र ही टुक टुक कर डाला। तब सियार ने भाग करने को आरम्भ किया।

1929

(१) रामचन्द्र सा दयालु और युधिष्ठिर सा धार्मिक संसार में दूसरा नहीं।  
(२) उसने उसका नाम और निवास-स्थान पूछा था। (३) इस प्रकार का फल दूसरी जगह कहीं नहीं मिलता। (४) राजा उदयकेतु ने ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। (५) तुमने देर क्यों की? कहां गये थे?

1926

(१) लड़के लोग वहां पर खेलते थे और नाचते थे। (२) कुरुक्षेत्र के युद्ध में अर्जुन ने कौरवों को पराजित किया। (३) सीताजी ने मृग को देख कर रामचन्द्रजी से उसको लाने को कहा। (४) हम चार महीने से ज्वर से पीड़ित हैं। (५) एक अन्वा भिक्षुक भिक्षा मांगने का आया था।

1927

एक जगह पर कई मोर के पर पड़े थे। उन्हें देख कर एक काग ने अपने मन ही मन सोचा कि यदि मैं इन परो को अपने पंख में लगा लूं तो मैं भी मोर सा ही सुन्दर हो जाऊंगा। यही सोच कर वह काग अपने पंखों में उन पंखों को लगा कर दूसरे कागों के निकट जाकर कहने लगा कि तुम सब बड़े नीच हो, बड़ ही बदसूरत हो। आज मैं तुम लोगों के साथ नहीं रहूंगा। यही कह कर उन कागों को मालियों के वह मोरों के दल में मिलने गया।

1929 A.

(१) मैं आज अपने पुत्र के साथ प्रयाग जाऊंगा। (२) मैंने तुम्हरी बहन को एक किताब दी। (३) मुरारि इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुआ। (४) हरि बहुत अच्छा लड़का है, वह रोज रोज मन लगा कर पढ़ता है। (५) समय गोलमाल मत करो।

1930 A.

(१) रामचन्द्र आदि चारों भाई क्रमशः बड़ने लगे। (२) अयोध्या के लोग के तीरे आंखों के तारे थे। (३) सभी लोग उनकी देख कर अपनी आंखों की सफलता समझते थे। (४) राजा दशरथ ने उनकी शिक्षा में अच्छा प्रयत्न किया। (५) थोड़े दिनों में चारों भाई शम्भु विद्या और कलाओं में प्रवीण हो गये।



1930 S.

(१) वह मुझे छोटे भाई के समान मानता है। (२) तुमने व्यापार के लिए मुझसे एक हजार रुपये कर्ज लिये। (३) मैंने उनसे चार प्रश्न पूछे पर उन्होंने किसी का उत्तर नहीं दिया। (४) रोज सबेरे हाथ मुह अच्छी तरह धोकर ध्यान से पढ़ने बैठो। (५) जो लड़का परिश्रम से पढ़ेगा व जरूर इनाम पावेगा।

1931

(१) बुरे कामों से बहुत तरह की बदनामी होती है। (२) कालिदास के समान कवि संसार में न होगा। (३) वेद पढ़ना ही तो ब्रह्मचारी होना चाहिए। (४) यदि बचपन में जो लगाकर विद्या पढ़ते तो अब जगह आदर होता। (५) गुरु के उपदेश और आज्ञा को पालन करना उचित है।

Additional Sanskrit 1931

(१) राजा ने अपने भूत्यों को बुलाकर कोलाहल के कारण को निर्णय करने को आदेश दिया। (२) संन्यासी का वेष धर कर राक्षसराज रावण ने सीता के निकट उपस्थित होकर भिक्षा मांगी। (३) वन के मध्य में जाते जाते पथिक ने देखा कि एक मरा हुआ मनुष्य जमीन पर पड़ा है। (४) जब मृत्यु निश्चित है तो बुद्धिमान् को परोपकार के लिये जीवन त्याग करना उचित है। (५) दया करने वाली बालिका ने भिक्षुओं को भोजन कराया और उनको कुछ वस्त्र दिया।

1932 (S.)

(१) प्रातःकाल गीएँ बुझी जाती हैं। (२) बिना आज्ञा यहां तुम्हारे आने का प्रयोजन नहीं। (३) क्योंकि तुम अस्वस्थ हो, मैं तुम्हें धूप में नहीं दौड़ने दूंगा। (४) बेटा! दुःखी मत हो। एक न एक दिन सब मरेगे। (५) मेरे लड़के! तुम मत डरो। यह पशु गान्त है। यह तुमको नहीं काटेगा।

1931

(१) क्या इसी आश्रम में भगवान् महर्षि वाल्मीकी रहते हैं। (२) पुत्र के विद्वान् होने पर पिता बड़ा प्रसन्न होता है। (३) बचपन चरित्र-गठन और गुरुजनों के उपदेश ग्रहण करने का समय है। (४) जो लड़के बचपन में मन लगाकर पढ़ते हैं, वे ही बड़े होकर विद्वान् बनते हैं। (५) इस किताब का मूल्य सवा रुपया है।

Addl. 1931.

(१) बालिका हाथ में एक किताब लेकर घर जाती थी। (२) उसके बाद मुनि ने देखा कि एक बिलाई चूहे को खाने के लिये उसके पीछे पीछे दौड़ रही है। (३) इस स्थान को छोड़ कर राजपुत्र दिन-रात चरित्र-गठन से मन्दिर में उपस्थित हुआ। (४) अनुग्रह करके कल आप अपने छोटे भाई को लेकर हम लोगों के घर आइयेगा। (५) मैंने एक दिन प्रातःकाल एक मनुष्य को देखा जिसका दाहिना पैर भग्न था। आज सिद्धार्थ अपनी ही इच्छा से भिल्वारी वने हुए हैं। जिसके पास हजारों मोजूद थे, आज उनके पास बात पूछने वाला भी कोई नहीं रह गया। जो लंग पर सोता था, उसके पास एक विस्तर भी नहीं है। जिसके भोजन के लिए

उत्तमोत्तम पदार्थ सदा तैयार रहते थे, उसके खाने का कोई ठौर ठिकाना नहीं है। जो सोने चांदी के बर्तनों में खाता था, वह पत्तों पर खा रहा है।

(१) कुसुमपुर में नन्द नामक एक राजा था। उसका शकटार नामक एक कायस्थ मन्त्री था। दोनों ही बड़े बुद्धिमान् और राजनीति जाननेवाले थे। (२) मनुष्य को उद्यम करना चाहिए। उद्यम के बिना किसी कामका निर्वह नहीं हो सकता। जो आलसी है और परिश्रम नहीं करना चाहता है वही सब से बड़ा पापी है। (३) त्याग से समाज की शक्ति बढ़ती है। पूर्वकाल में भारतवर्ष में बड़े बड़े त्यागी पुरुष हुए। राजर्षि दशार्चि ने देवताओं को अपनी हड्डी दे दी। (४) यह तालाब बहुत गहरा है। इसमें जल भरा हुआ है और बहुत से कमल भी हैं। मैं कमल से भगवान् की आराधना करता हूँ। (५) जो समाज-सेवा और लोक-सेवा में नियत है वे धन्य हैं। समाज ही भगवान् का प्रत्यक्षरूप है। (६) कुमार्ग में जाने से दुःख होता है और सुमार्ग में जाने से सुख और यश मिलता है। जो अच्छा लगे उसी मार्ग से जाओ। (७) सुख और दुःख कोई दूसरा नहीं देता। ये अपनी करनी से उत्पन्न होते हैं। जो यह समझते हैं कि दूसरा दुःख देता है, उसकी कुबुद्धि है।

### 1932 A—S(c).

(१) सूर्य, चन्द्र और तारे ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। (२) सूर्य डूब गया। चिड़ियाँ अपने अपने घोंसलों को लौट रही हैं। (३) वह जंगल में रहता है, वह वृक्ष से फल इकट्ठा करता है और चावल से भात पकाता है। (४) जब गाय घूमी जा रही थी मैं गया और जगत्पति-कृष्ण को देखा। (५) राजा धनपाल हाथी पर चढ़ कर कई एक जंगलों के बीच भ्रमण करते हुए अपने देश को वापस आये।

### 1932 A—S(a).

(१) मत डरो, सुबह होते ही मैं तुम को घर ले जाऊँगा। (२) विद्वान् होने की इच्छा से उसने पाँच वर्ष बनारस में पढ़ा। (३) प्रातःकाल जब वह बगीचे में टहल रहा था तब उसने एक लड़की को फूल इकट्ठा करते हुए देखा। (४) हम लोग ईश्वर को नहीं देख सकते, परन्तु वह, हम लोग जो कुछ करते हैं, सब देखता है। (५) हर घास मेरा विछोना है। चिड़ियाँ मेरे खेल के साथी हैं।

### 1933.

(१) विष्णु ने क्षीरसागर से अमृत मया। (२) सृष्टिकर्ता की महिमा का सब जगह देखा जाता है। (३) हरिण वन में दोपहर के समय घास चराने करते हैं। (४) उसने शत्रु से एक सौ गाएँ जीत लीं। (५) मुझ छात्रों से दुर्गुणों को छुड़ाता है।

### 1935 A—S(c).

(१) तुम कहीं रहते हो, यह मैं जानना चाहता हूँ। (२) मैं तुम्हारा बोझ लेकर नहीं जाऊँगा। (३) जुलाहे ने राह में कपड़ा फेंका था। (४) उसने वन में जाते जाते मुझे एक बाघ दिखाया। (५) किसी को चलते हुए नहीं खाना चाहिए।

## A—S(a).

(१) रति अपने पति के मृत शरीर को देखकर और उसके अनेक गुणों को स्मरण करती हुई बहुत समय तक विलाप करती रही। (२) ब्राह्मण ने दुष्ट के वचनों को सुनकर खसी (बकरा) को पृथ्वी पर रख दिया और बारबार उसकी ओर देखा। फिर वह उसको अपने कन्धे पर रख घर की ओर उस दुष्ट की बातों को सोचता हुआ चला। (३) अपने माता पिता की आज्ञा मानों, विद्वान् का सत्कार करो। दूसरों के प्रति निन्दा का एक शब्द भी न कहो और अपनी अवस्था पर सतुष्ट रहो। (४) अभ्युदय के समय सैकड़ों मनुष्य उसका घेरे रहते हैं, परंतु दुःख के समय वे उसको छोड़ देते हैं। (५) मित्र, मेरे लिए इतना करो मैं स्त्री के वस्त्र पहिन कर तुम्हारी कन्या बनूंगा तब तुम राजा के पास ले जाकर उनसे ऐसा कहना।

## 1933 (Compulsory)

(१) अज्ञानी लोग अपने नाश के लिए ही दुष्ट कर्म करते हैं। (२) उसने व्याकरण पढ़ कर शास्त्र पढ़ा। (३) मोक्ष विद्वानों को ईप्सित होना चाहिए। (४) गङ्गा अपने निर्मल जल से मनुष्यों को पवित्र करती है। (५) मन की शान्ति के लिए लोभ छोड़ देना चाहिए।

## 1933 (Additional)

(क) एक आदमी नदी के किनारे एक पेड़ को काट रहा था, दुर्भाग्य से उसने अपनी कुल्हाड़ी पानी में गिरा दी। (ख) कार्तवीर्य ने अपने शत्रुओं को परास्त किया और सम्पूर्ण देशों को विजय किया। उसकी कथा पुराणों तथा दूसरी पुस्तकों में लिखी है। (ग) आकाश के मेघ, पृथ्वी का पंक और जल का गंदलापन ये सब शब्द ने दूर कर दिये। (घ) उस दिन से लेकर उसने विश्वास किया कि ज्ञान का मार्ग भक्ति के मार्ग से अच्छा है। (ङ) एक दिन वह बाहर गया और भोजन करने के लिए नहीं लौटा। यह न जान कर, कि वह कहाँ गया, सभी शङ्कित थे।

## 1934 (Compulsory)

१. मनुष्यों को किसी के साथ शत्रुता न बढ़ानी चाहिए। २. आचार्यों से धर्म का उपदेश दिया जाता है। ३. कवियों से विद्वानों की प्रशंसा होनी चाहिए। ४. बालिकाएँ पेड़ को सींच कर बैठ गईं। ५. मैंने दूध पीते हुए बालक को देखा।

## 1934 (Additional)

(१) जब सौंप ने मुझे श्राप दिया तो मैं जङ्गल के पूरव की तरफ भ्रमण करने लगा और थक गया; तब एक दयालु पुरुष ने मुझे एक ऋषि के आश्रम पर पहुँचा दिया। (२) कुछ गाँव के रहनेवाले ने किसी किसान की एक भैंस को पकड़ा और बटवृक्ष के नीचे देवी के सामने उसे मारा और बाट कर भोजन किया। भैंस वाले ने राजा के पास नालिश कर दी। (३) उसने ब्राह्मण को बुलाया और कहा कि सन्ध्या हो गई, सामने बहुत बड़ा जङ्गल है और वह घोर हिसक जन्तुओं से भरा है, इसलिए रात्रि को घर में बिताता उचित है। (४) कलिङ्ग देश में शोभावती नामक नगरी है। यहाँ यशस्कर नामक एक जानी और घनी ब्राह्मण रहता था। जिसकी प्रसिद्धि धर्मपरायणता के लिए थी। (५) जब वह उपवास कर रहा था, देवी ने स्वप्न में उससे

कहा, मेरे बालक, उठो और काशी जाओ। वहाँ एक वटवृक्ष है उसके तले से तुझे धन मिलेगा।

### 1935 (Compulsory)

(१) विष्णु ने क्षीर समुद्र से अमृत मथा। (२) सृष्टिकर्ता की महिमा का फल सब जगह देखा जाता है। (३) हरिण वन में दोपहर के समय पानी पीने की इच्छा करते हैं। (४) उसने शत्रु से एक सौ गायें जीत लीं। (५) गुरु छात्रों के दुर्गुणों को छुड़ाता है।

### 1935 (Additional)

(१) तब राजा ने मुँह खोले आते हुए एक भयंकर राक्षस को देखा। राक्षस घोर गर्जन करके नीचे उतरा और बालिका को मुख में लेकर निगल गया। (२) सन्यासी न कहा—“आप मेरे आश्रम पर भूखे आये हैं इस लिए स्नान कीजिये और मेरे भिक्षाप्राप्त अन्न में से कुछ ग्रहण कीजिए।” (३) जब वे वहाँ निवास करते थे, उस समय वहाँ एक भयानक दुर्भिक्ष पड़ गया, और उस ब्राह्मण ने अपनी स्त्री से कहा, “यह देश दुर्भिक्ष में नष्ट हो गया है और मैं अपने सम्बन्धियों की विपत्तियों को नहीं देख सकता हूँ।” (४) तब आँखवाले मनुष्य ने जन्मान्ध मनुष्य से कहा, “ठीक ही यहाँ महावीर आगये हैं। मनुष्य उसकी पूजा और दण्डवत् करने जा रहे हैं।” (५) तब नापित राजा के निकट आया और हाथ जोड़कर बोला—“महाराज कृपाकर बतलाइये मुझे क्या करना है।”

### 1936 (Compulsory)

(१) अहा! यह मेरी अँगूठी है। आठ दिनों से मैं इसकी खोज कर रहा था, तुम्हें यह कहाँ मिली? (२) मैं यह कहता हूँ क्योंकि कहना जरूरी है। हमारा ऐसा भाग्य नहीं है। कृपया अर्जुन से मेरी बात कहें। (३) कल गोपाल राम सभी गायों को बाजार ले गया और कम मूल्य पर उन्हें बेच डाला। (४) यह मार्ग सीधे नदी को जाता है। दूसरा मार्ग जरा टेढ़ा है। जिसे चाहो, अपनाओ। (५) जेठे बेटे को अपने परिवार की रक्षा का भार सौंप कर वह बूढ़ा पवित्रस्थल जगन्नाथ के दर्शनार्थ चल पड़ा।

### 1936 (Additional)

(१) नदी के किनारे बहुत प्रकार के वृक्ष थे, जिनकी डालियों पर चिड़ियाँ बहस रही थीं। (२) पिता के मरने पर मैं बनारस पहुँचा और वहाँ आकर विद्याप्राप्ति के लिए एक शिक्षक के पास गया। (३) अनन्तर वे दोनों ब्राह्मण वहाँ से चले और कुछ दिन बीतने पर राजा के पास पहुँचकर अपना वृत्तान्त उनसे ठीक ठीक कह सुनाया। (४) बहुत पहले उज्जैन में पुण्यसेन नाम के एक राजा थे। एक बार उनके राज्य पर किसी पराक्रमी शत्रु ने आकर आक्रमण किया। (५) दूसरे दिन मुझे शिष्य के साथ योगी के आश्रम पर गये और वहाँ वृक्ष के नीचे ध्यान लगाकर बैठ गये।



## 1937 (Compulsory)

(१) राजा इन्द्रद्युम्न अपने हाथी पर चढ़ा और कई एक देशों में भ्रमण करता हुआ अन्त में जगन्नाथ घाम पहुँचा। (२) मगध में बहुत दिन पूर्व जरासन्ध नाम का राजा रहता था और एक समय कृष्ण के साथ भीमसेन वहाँ आये और उसको मार दिया। (३) उसके दूसरे दिन गुरु अपने शिष्यों के साथ योगी के आश्रम में गये और वहाँ गोदावरी नदी के किनारे ध्यान में बैठ गये। (४) जो धर्म के अनुकूल काम करते और दूसरों की भलाई करने में लगे रहते हैं केवल वे ही ईश्वर के कृपापात्र होते हैं। (५) उसकी सेना के शत्रु से पूरी तरह हराये जाने पर कुछ सिपाही पहाड़ों पर चढ़ गये, कुछ समुद्रों से उतर गये और दूसरे एकान्त कन्दराओं में घुस गये।

## 1937 (Additional)

(१) सब प्रजाओं को खबर दो कि अब चन्द्रगुप्त अपने ही राजकायों को देखेंगे। (२) अपने माँ बाप की आज्ञा मानो; विद्वानों का आदर करो; दूसरों की निन्दा का एक शब्द भी कभी मत बोलो; और अपनी अवस्था से सन्तुष्ट रहो। (३) व्याध को अपनी ओर आते देख सब जानवर डर कर भिन्न भिन्न दिशाओं में भाग गये। (४) मुझे आशा है कि आपको उस आदमी का स्मरण होगा जिसके बारे में एक महीना पहले आप से मैंने कहा था। (५) पुराने समय में असित नाम का एक मुनी था जिसने अपने धर्माचरण के लिए देवों के देव से देवल की पदवी प्राप्त की।

## 1938 (Compulsory)

(१) धन से अच्छे और बुरे दोनों काम होते हैं। इसका जैसा व्यवहार करोगे वैसा ही फल मिलेगा। (२) तुमको उत्तम पुरुष होना चाहिए। इसके लिए सबों की भलाई करो। (३) अपने बड़े भाई रामचन्द्र की आज्ञा से लक्ष्मण ने सीता को वन में ले जाकर अकेली छोड़ दिया। (३) जब कोई तुम्हारे घर पर आ जाय तो उसका आदर करो, उसे बैठने के लिए आसन और पैर धोने के लिए जल दो। (५) धर्म को छोड़ कर सुख पाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। इस लिए अच्छे लोग धर्म के लिए प्राण तक भी दे देते हैं।

## 1938 (Additional)

(१) मन में अत्यन्त उद्विग्न होकर युवा संन्यासी नदी के किनारे टहलने के लिए निकला। (२) रात बहुत अँधेरी थी; मधुमन्त्रियाँ ही गूँज रही थी; सब विश्राम कर रहे थे। (३) जो हो युवा संन्यासी को विश्राम न था। उसने मानसिक शान्ति खो दी थी। (४) राजा अपनी प्रजाओं को पालता है। यदि कोई कुरास्ते जाय तो राजा को चाहिए कि उसे दण्ड दे। (५) यदि बदमाशों को दण्ड नहीं दिया जाय तो सम्पूर्ण समाज विश्रुद्ध हो जायगा।



1947 (Annual)

(१) मनुष्य किसी के साथ शत्रुता न करे। (२) आचार्य लॉग धर्म का उपदेश देते हैं। (३) कवि सज्जनों की प्रशंसा करता है। (४) बालिका वृक्ष को देखकर बैठ गयी। (५) मैंने अतिदुर्बल बालक को देखा। (६) मैंने गोदीहनकाल में कृष्ण को देखा।

1947 (Supplementary)

- (a) विष्णु ने क्षीर समुद्र को मया।
- (b) ईश्वर की कृपा का फल सर्वत्र देखा जाता है।
- (c) हरिण वन में पानी पीने की इच्छा करता है।
- (d) उसने शत्रु से एक सौ गायें जीत लीं।
- (e) गुरु छात्रों को पढ़ाते हैं।
- (f) तुम कहां रहते हो, यह मैं जानना चाहता हूं।

1948 (Annual)

- (a) पिता की आज्ञा से रामचन्द्र वन गये।
- (b) कृपया मुझे फल दीजिए।
- (c) परमपिता परमेश्वर सर्वत्र हैं।
- (d) श्याम पुत्र के लिए पुस्तक लाता है।
- (e) तुम्हारा भाई कहाँ पढ़ता है?
- (f) कब काशी जाओगे?

1948 (Supplementary)

- (a) कृपया ग्राम में चलिए।
- (b) तुम्हारा घर कहां है?
- (c) पिता आज आवेंगे।
- (d) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ थे।
- (e) रामचन्द्र ने रावण को मारा।
- (f) मैं स्वयं कार्य करूंगा।

काशी प्रथमा परीक्षा के प्रश्न-पत्र

१९३३

१--अवःस्यितसन्दर्भस्य सुरलङ्घिनीभाषायामनुवादः कार्यः—

पिङ्गलक आह—“नम्र? यदि एवम्, तद्गच्छ। शिवास्ते पन्थानः सन्तु” इति।  
दमनकोऽपि न प्रणम्य मञ्जीवकगण्डानुसारी प्रतप्त्ये। अथ दमनके गते भयव्याकुलितमनाः  
पिङ्गलकः विन्तयामास—“अहो न शोभनं कृतं मया यत्तस्य विश्वासं गत्वा आत्माभि-  
प्रायो निवेदितः। कदाचिद् दमनकोऽयम् उभयवेत्तनो भूत्वा ममोपरि दुष्टबुद्धिः स्याद्

भ्रष्टाधिकारत्वात् । तत् तावदस्य चिकीर्षितं वेत्तुमन्यस्थानान्तरं गत्वा प्रति-  
पालयामि । कदाचिद् दमनकः तमादाय मां व्यापादयितुमिच्छति ।" एवं सम्प्रधाय  
स्थानान्तरं गत्वा दमनकमार्गमवलोकयन् तस्थौ ।

२—संस्कृतभाषायामनुवादः कार्यः—

चित्रग्रीव विल पर आकर उच्च स्वर से बोला—“अरे मित्र हिरण्यक ! जल्दी  
आ । मैं बड़ी आपत्ति में हूँ ।” यह सुनकर हिरण्यक भी विल के अन्दर से बोला—  
“आप कौन हैं ? क्यों आए हैं ? क्या कारण है ? तुम किस आपत्ति में हो ? सो  
कहो ।” यह सुनकर चित्रग्रीव बोला—“मैं चित्रग्रीव नाम वाला कवूतरो का राजा  
तेरा मित्र हूँ ! सो जल्दी से आ । बड़ा भारी काम है ।” यह सुनकर प्रसन्नता से  
रोमाञ्चित शरीर होकर जल्दी से हिरण्यक बाहर निकल आया ।

१९३४

१—अवस्थितसन्दर्भस्य सरलहिन्दीभाषायामनुवादः कार्यः—

कस्मिंश्चिज्जलाशयेऽनागतविधाता, प्रत्युपनमतिः, यद्भविष्यश्चेति त्रयो मत्स्याः  
सन्ति । अथ कदाचित् जलाशयं दृष्ट्वा गच्छद्भिर्मत्स्यजीविभिरुक्तम्—“यदहो  
बहुमत्स्योऽयं ह्रदः, कदाचिदपि नास्माभिरन्वेषितः । अद्य तावदस्माकमाहारवृत्ति-  
सञ्जाता, सन्ध्यासमयश्च संवृत्तः । तस्मात्प्रभातेऽनागन्तव्यमिति निश्चयः ।” तेषां  
वज्रपातसदृश वचनमाकर्ण्य अनागतविधाता उक्तवान्—“अहो! श्रुतं भवद्भिर्यदेतैर्मत्स्य-  
जीविभिरुक्तम् । तच्छीघ्रमेव किञ्चिन्निकटं सरो गम्यताम् ।”

२—संस्कृतभाषायामनुवादः कार्यः—

एक दिन एक कछुआ कहीं जा रहा था । रास्ते में एक खरगोश मिला ! कछुआ  
बोला—“भाई ! मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा ।” खरगोश ने हँसकर उत्तर दिया—  
“तू तो धीरे धीरे चलता है । मैं बहुत शीघ्र दौड़कर चलता हूँ । मेरा और तेरा कैसे  
साथ हो सकता है ।” कछुआ ने कहा—“मैं तुम से चलने में कम नहीं हूँ । बड़ी दूर  
तक एक गति से चल सकता हूँ ।” खरगोश ने कहा—“आओ दौड़ो, देखें कौन  
आगे जाता है ।”

सन् १९३६

एक ग्राम में एक निर्धन ब्राह्मण रहता था । उसको कोई सन्तान नहीं थी । उसने  
एक नेउला पाल रखा था । थोड़े दिनों बाद उसकी स्त्री के एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।  
ब्राह्मणी एक दिन पुत्र को खाट पर सुलाकर किसी काम से बाहर चली गई । ब्राह्मण  
भी अपने काम में लग गया । इसी बीच में एक साँप विल से निकला और बच्चे की  
ओर चला । नेउले ने साँप को देख लिया । उसने साँप के टुकड़े टुकड़े कर दिये । थोड़ी  
दूर में ब्राह्मणी लौटी । उसने आते ही द्वार पर नेउले को देखा । उसके मुँह पर खून लगा  
हुआ था, वह समझी की नेउले ने बच्चे को मार डाला है । क्रोध में आकर उसने वही नेउले  
के ऊपर एक पत्थर फेंक कर मारा । नेउला रर गया । जब ब्राह्मणी घर के अन्दर  
चली गई तब उसने देखा कि लड़का खाट पर सो रहा है और पास में एक साँप मरा पड़ा  
है । यह देखकर वह अपनी भूल पर पछताई और बाढ़ मार कर रोने लगी ।

सन् १९३७

(क) एक दिन एक कछुआ कहीं जा रहा था। रास्ते में उसे एक शशक मिला। कछुआ बोला—“भाई! मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा।” शशक ने हँसकर उत्तर दिया—“तू तो धीरे-धीरे चलता है। मैं बाघ्रना में दौड़कर चलता हूँ। मेरा और तेरा कैसे साथ हो सकता है?” कछुए ने कहा—“मैं तुम से चलने में न्यून नहीं हूँ। मैं बड़ी दूर तक एक साथ में जा सकता हूँ।” शशक ने कहा—“चलो दौड़ो, देखें कौन आगे जाता है।” शशक दौड़ता दौड़ता छलांग मारता हुआ भागने लगा। कछुआ धीरे-धीरे चलने लगा।

(ख) सब बोलना धर्म है और झूठ बोलना पाप। सब बोलने से मन प्रसन्न रहता है। मन बोलने वाले का कोई डर नहीं रहता। झूठ बोलने में सदा भय रहता है कि कहीं झूठ खुल न जाय। झूठे मनुष्य को सब लोग निन्दा करते हैं। कभी कोई उमकी बात पर विश्वास नहीं करता।

सन् १९३८

एक दिन दो मनुष्य किर्गी जङ्गल में साथ साथ जा रहे थे। रास्ते में सामने से एक रीछ आ रहा था। उसे दूर से ही देखकर दोनों आदमी बड़े घबराये। एक आदमी तो झट दौड़कर पेड़ पर चढ़ गया और पत्तों में छिप गया। दूसरा पेड़ पर चढ़ना न जानता था। इसलिए भूमि पर मृतक की भाँति लेट गया। रीछ ने पास आकर भूमि पर मृतक की भाँति पड़े हुए आदमी के नाक मुँह आदि को सूँघा। रीछ उसको मृतक समझ कर छाड़कर चले दिया। रीछ के चले जाने पर दूसरा आदमी पेड़ पर से उतरा। अपने साथी के पास आकर वह बोला—“भाई! रीछ तुम्हारे कान के पास मुँह करके तुम में कुछ कह रहा था। बताओ उसने तुमसे क्या कहा?” साथी ने कहा—“रीछ ने कहा कि जो आदमी कण्ट पड़ने पर साथी को छोड़कर चला जावे वह मनुष्य नहीं है, उसमें मैत्री न करो।”

अनेक महापुरुषों ने इस देश में जन्म लिया, जिनकी कीर्ति अब तक संसार में जगमगा रही है। यहीं जन्म लेकर भगवान् रामचन्द्र ने मर्यादापुरुषोत्तम का आदर्श संसार में खड़ा किया। यहीं जन्म लेकर भगवान् कृष्णचन्द्र ने कर्मयोग का महान् सन्देश सुनाया। दया की पावन धारा से समस्त संसार को आप्लावित करने वाले महात्मा बुद्ध ने भी यहीं जन्म धारण किया था।

१९३९

प्रथमापरीक्षा के प्रश्न-पत्र ।  
अनुयाय प्रश्नी ।

१—अप्रीतिश्चिन्तः सङ्कृतामदभौ विजृम्भित्वादीभाषयाऽनुवृत्ताम् :-

रामो मारीच राज्ञम हत्वा द्वायथम प्रतिनिवृत्तः । स दूरादेवायान्तं सुमित्रा मन्दन निरीक्ष्य विस्तारमापेदे । सीमित्रि, कथं सीता त्यक्त्वा मदन्तिकमायाति निरिन्ध्रैश्च लक्ष्मणमवकीर्तु । भ्रातः! कथमेकाकिनी भ्रातृजायां विहायेहागतोऽसि

लक्ष्मणो रुदनं प्राञ्जलिस्त्वाच । आर्य्य ! सीता देवी यत् दुर्वचो व्याहरत् तन्नाहं  
वक्तुं शक्नोमि । हा लक्ष्मण ! इति भवद्वचनं श्रुत्वा सा मां भवत्साहाय्यार्थं  
प्राहिणीत् । रामो द्रुतं पर्णशालां प्रविश्य परितः पत्नीमन्विष्यालब्ध्वा विललाप ।  
विलपन्तं तं रुधिराप्लुतशरीर आश्रमसमीपस्थ एकः खग उवाच । सीतां रावणो  
जहार । स एव मामिमां दशां निनाय । रामः पक्षिराजं जटायुमङ्गं निधाय घृलि-  
घूसरं तदीयपङ्क्तं जटाभिरभार्जयत् । रामगात्रस्पर्शसुखमनुभूय जटायुस्त्रिदिव-  
जगाम । रामो लक्ष्मणेन चितां विरचय्य तस्यान्त्येष्टिसंस्कारं चकार । तस्मै  
तिलोदकं दत्त्वं स शान्तिमाप । २०

२--विशदस्वच्छसंस्कृतभाषयानूयतामधस्तनो हिन्दीसन्दर्भः :-

मैं एक रोज पाठशाला जा रहा था। राह में दो छात्र मिले। एक की देह खूब  
मजबूत थी। एक का मुंह पीला था। मैंने पहले से पूछा "भाई तुम क्यों ऐसे दृष्ट  
पुष्ट हो?" उसने कहा—"मैं रोज चार बजे उठता हूँ। उठ कर लघुशुद्धा करके हाथ  
मुंह धोता हूँ। कुछ स्वाध्याय भी करता हूँ। शौच क्रिया से निपट कर सूर्योदय से  
पहले नहा लेता हूँ। बाद सन्ध्या, व्यायाम और सूर्यनमस्कार करता हूँ।" उसने दूसरे  
से पूछा—"कहो जो तुम्हारा मुंह पीला क्यों है?" वह रोने लगा। बहुत आग्रह करने  
पर बोला—"मेरी सङ्गति बुरी है। मेरे सोने उठने का कुछ नियम नहीं है।" मैंने डाँट  
ऐसा ही करो। एक दिन तुम भी बीर, धीर, विद्वान् और यशस्वी हो जाओगे।

११४४ वर्षे चतुर्थ पत्रम् ।

१--(क) अधस्तनः संस्कृतसंदर्भो हिन्दीभाषयाऽनूयताम् :-

पञ्चविंशतिः शतानि, वत्सराणां व्यतीतानि यदा गीतमकुलोत्पन्नः सिद्धार्थ  
इमां भारतभूमिमलञ्चकार निजजन्मना । भागीरथ्या उत्तारे तीरे कपिलवस्तु  
नाम महनीयं नगरमेकमासीत् । साक्यवंशोत्पन्नः शुद्धोदनस्तत्र नयेन प्रजा  
अनुरञ्जयंश्चिरं राज्यमकरोत् । तस्य मायादेवी नाम रमणीरत्नमग्राणीः  
पतिव्रतानां भार्याऽभवत् । तस्याश्च सिद्धार्थो नाम सूनुरज्जन्म लेभे । स शंशवादेव  
सुवृत्तो विवेकी चाऽभूत् । मृगयां गतस्य 'किमर्थमेते मृगा हन्तव्या' इति भूत-  
दययाऽद्रवत्तास्य हृदयम् ।

(ग) निम्नाङ्कितानां हिन्दीवाक्यानां संस्कृतेऽनुवादो विधेयः :-

- (१) बुरी का साथ छोड़ो और भलों की संगति करो । ... ३
- (२) उस डरावने दृश्य को देखकर उसके हाथ पैर कांपने लगे । ... ४
- (३) उस रात का बड़ा घना अंधेरा था और मूसलाधार वर्षा हो रही थी । ४
- (४) तड़के सोकर उठने के बाद हम सब को अपने हाथ मुँह की खूब सफाई करनी चाहिये । ... ४

(५) इसी जंगल में किसी समय रामचन्द्र एक वृक्ष के नीचे कुटिया बनाकर  
मुनियों के साथ रहते थे और लक्ष्मण तथा सीता उनकी सेवा किया  
करते थे। यहीं पर किसी गुफा में वाली ने दुन्दुभी नाम के राक्षस  
को मारा था । ... १५

१९४५ वर्षे षष्ठं पत्रम् ।

१—निम्नाङ्कितो निबन्धो हिन्दीभाषया नूतनात् ।  
अयं कदाचिद्भोजराजो बहिरुद्यानमध्यं मार्गं प्रत्यागच्छन्तं कमपि विप्रं ददर्श ।  
तस्य करे चर्ममयं कमण्डलुं वीक्ष्य तं चातिदरिद्रं ज्ञात्वा मुखश्रिया विराजमानं  
चावलोक्य तुरङ्गं तदग्रे निधाय प्राह । विप्र ! चर्मपात्रं किमर्थं पाणौ वहामीति ।  
स च विप्रो नूनं मुखशोभया मृदुवत्या च भोज इति विचार्याह । देव !  
वदान्यशिरोमणी भोजे पृथ्वी शासति लांहताम्राभावः समजनि । तेन च चर्ममयं  
पात्रं वहामीति । ...२०

२—अधोलिखितस्य हिन्दीभागस्य संस्कृतेऽनुवादो विधेयः ।  
अयोध्या नगरी कोसल देश के राजा दशरथ की राजवानी थी । उसके राम,  
लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न नाम के चार लड़के थे । उनमें राम सबसे बड़े  
थे जो कि अत्यन्त धार्मिक, सच बोलने वाले और हिम्मत वाले थे । उनका  
विवाह सीता नाम की एक रूपवती राजकुमारी से हुआ था । उन रामचन्द्र को  
अयोध्या राज्य का युवराज बनना था । ...४०

१९४६ वर्षे षष्ठं पत्रम् ।

अनुवादे हिन्दीपाठमालायां च प्रश्नाः ।

१—निम्नाङ्कितः, सन्दर्भो हिन्दीभाषयानूद्यताम् :—

पुरा हस्तिनाम्नि नगरे महम्मदनामा यवनेश्वरो बभूव । तस्मिन् आसमुद्रं धरणी-  
तलं प्रशासति तदुत्कर्षासहिष्णुः काफरनरपतिस् तमाभयोद्धुं सकलवनसहितस्त-  
त्राजगाम । यवनेश्वरस्तमायान्तं दृष्ट्वा सैन्यः पुगद् बहिर्भूय तेन सम-  
युध्यत । तयोर्युद्धे समारब्धे महीयसा काफरसैन्येन हन्यमाना महम्मदयोधाः  
पलायिताः । ततः पलायमानं स्वयलं दृष्ट्वा यवनेश्वर उवाच—‘रे रे मम  
सैन्यसुभटाः । युष्माकं मध्ये कोऽप्येतादृशा नास्ति य इदानीं रिपुभयेन पलाय-  
मानाया मे सेनाया गतिं निरुन्ध्यात् ।’

२—अवस्तनस्य हिन्दीनन्दर्भस्य संस्कृतेऽनुवादः कार्यः—

सूर्यवंश में दिलीपनामक एक प्रसिद्ध राजा था । वह प्रजापालन में सदैव रत  
रहता था । वह सब शुभ गुणों से अलंकृत था, परन्तु पुत्र के अभाव से सदा  
दुःखी रहता था । एक समय वह पत्नीसहित अपने गुरु वसिष्ठ जी के आश्रम  
का गया और प्रणाम करके बोला—‘हे गुरु ! मुझसे क्या अपराध हुआ कि मैं  
पुत्रविहीन हूँ’ । वसिष्ठ जी ने विचार कर कहा—‘देख ! नन्दिनीनामक मेरी  
गाय की सेवा कर । उसके प्रसन्न होने पर तुमको पुत्र होगा ।’ गुरुजी से यह सुनकर  
वह राजा नन्दिनी की सेवा करने लगा ।



## U. P. HIGH SCHOOL BOARD

### Examination Sanskrit Second Paper.

1916. (a) (i) The less you have such friends, the better will it be for you. (ii) Under these circumstances, there was no other help than retreat. (iii) The king had the palace built by his workmen in forty-two days.

(b) Translate the following piece into Sanskrit, observing the rules of Sandhi—

Three little children went to a large forest one day, in order to seek flowers and birds' nests. Their father had told them not to go too far into the forest. But they did not obey and they lost themselves. When night came they were much frightened, but the eldest of them told his brother and sister that their father would seek them. For two days and two nights the father did seek for the poor children, but in vain. At last a king forester showed him the palace where the children were living exhausted with cold and hunger. The joy of the father knew no bounds when he found that they were not dead.

1918. Translate into Sanskrit using the words enclosed in the brackets:—

1. Kausalya was the eldest (वृद्ध) of the three wives of Dasharatha and Kaikeyi the youngest. 2. The honey in the flowers of the Kunda creepers has been drunk by the bees (मधुलिङ्ग). 3. Patsurama begged (वृ) that his mother might be restored to life again. 4. How many times in the day dost thou milk (दुह) cows? 5. The friends whom I expected long are come and have just alighted (अवतृ) from their carriages. 6. When he said (वच्) he could be a Sanskrit Pandit in ten days, I smiled.

1919. (a) We have drunk Soma and have become immortal. (b) Prudent people accomplish their own purpose (सिद्धिं). (c) Rama and Lakshmana lived in the Dandaka forest with Sita and ate roots and fruits. (d) None should rely on the words of the wicked. (e) He who walks by the path of truth attains prosperity. (f) The virtuous are happy and deserve respect.

1920. (a) India was the mightiest and most powerful of all the gods, and therefore they called him king. (b) Have you smelt the flower? It is very fragrant. (c) The gods called the sage, bowed to him and praised his might. (d) The king sitting upon the throne is consulting with his minister.

1921. In Varanasi there lived a Brahmana named Bhargava. Though pressed by his father, he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges

to perform penance in order to acquire knowledge. Indra went near him in the disguise of a Brahman and began to throw sand into the river. Bhargava asked him the meaning of what he was doing. Indra replied, 'I am building a bridge' Bhargava said, 'Oh you cannot succeed in your object in this way.' Indra replied, 'If I cannot build a bridge by throwing sand into the river, how can you expect to acquire knowledge by performing penance?' Thus addressed Bhargava ceased from austerities.

1922. (a) He asked him whether he was well. (b) Enough of your boasting. Let us fight so that people may see clearly which is the stronger of us two. (c) He renounced the world the very day on which he felt disgusted with its pleasures. (d) My mind was diverted, so I did not hear what you said. (e) The more you work, the more you acquire glory.

1923. (a) All his efforts bore fruit. (b) You have done well in sending your younger brother to Benares to learn Grammar. (c) I am sorry to find you are reduced these days. (d) Frogs jump in the rainy season. (e) A friend in need is a friend indeed.

1924. (a) His word is not trustworthy and his character is not praiseworthy. (b) There is a man waiting at the door who wants to speak to you on matters of great importance. (c) I have endured all taunts of the people calmly and borne the responsibility of governing uninterruptedly. (d) I am overcome by sleep caused by fatigue. (e) I shall resume my story from this point afterwards.

1925. (a) (1) I am thy pupil, teach me. I have come to thee for shelter. (2) As days went on the boy became clever. (3) In autumn the leaves fall down from trees. (4) I am pleased to hear your words which are as sweet as honey. (5) Animals in the hermitage went to the sage who was the lord of it.

1926. (1) Do you remember our residence in Benares on the banks of the holy Ganges? (2) Stay here for three or four days, I shall meanwhile try to accomplish your object. (3) A scorpion is produced from cowdung. (4) There was a terrible fight between the Pandavas and the Kauravas for eighteen days. (5) Happiness comes after misery and misery after happiness in this world of living beings.

1927. (1) My mind was diverted, so I did not hear what you said. (2) Instruction to a fool simply goes to increase his folly. It does not make him wise. (3) Ashvini asked the Gondharva why enmity arose between Vasishtha and Vishvamitra. (4) You are very cruel indeed, you have left me all of a sudden. (5) He who wishes to make a rogue a good man wishes to cross the ocean with his hands.

1928. (1) Stop the chariot till I get down. (2) It is better to resort to a forest than to serve an arrogant person. (3) Gopal, you and I shall read that book, in a garden tomorrow. (4) If we leave

one thing every day, we can learn three hundred and sixty-five things in a year. (5) The strong wind, the like of which was never heard before, has uprooted all the trees in the park.

1929. (1) He was the best of all teachers; his students looked upon him as their father. (2) Whoever is attentive to his duty and works harder and harder every day succeeds in life. (3) Before setting out on a journey, he prostrated himself before the feet of his parents. (4) That there can be friendship between us is as incredible as between grass and fire. (5) Four Vedas, six Vedangas, Mimamsa, and Dharmshastra are the fourteen branches of knowledge.

1930. (1) Having made preparations for his journey, he set out on an auspicious day. (2) The boy became afraid of the tiger, but was saved by his mother. (3) He gave money to the sons of their mother's sister. (4) If the ring had been found at the proper time, Dushyanta would not have cast off Shakuntala. (5) The king saw many ascetics practising penance on the bank of the Sarayu.

1931. (1) Our best friends are those who tell us of our faults and teach us how to correct them. (2) Early to bed, and early to rise, makes a man healthy, wealthy and wise. (3) Riding slowly, I reached home just as the sun was setting. (4) When the king saw him coming, he said, "Pray who are you, and what do you want?" (5) Bear in mind the advice that your father gave you recently.

1932. (a) Four Brahmanas decided to go to another country for the purpose of acquiring knowledge. (b) So they all went to Kanyakubja and studied there for twelve years. (c) They mastered all the sciences and proposed to return to their homes. (d) They took the permission of their preceptor and started from Kanauj. (e) On the way they met two travellers, one of whom said, "Gentlemen, we are going to Ayodhya. By what way should we go?"

1933. (a) Ravana was the ten-headed demon king of Lanka, and was very wicked by nature. (b) Although a Brahmana by birth and scholar of the Vedas, he used to annoy and torment the sages. (c) Once he, in disguise of an ascetic, approached Sita, when she was alone, and carried her away in his chariot. (d) Sita was kept in Lanka in a place surrounded by beautiful garden. (e) But she was always unhappy and shed tears without knowing when she would see Rama again.

1934. (a) King Shatila, a worshipper of Vishnu, went one day to the garden of gods, and picked many flowers. (b) By the order of his elder brother, Lakshmana, he sent many flowers to all animals. (c) King Harishchandra gave every thing to a Brahmana and for that reason he went to heaven after death. (d) There lived in a city, named Haripura, a great scholar, named Devadatta, who was an ornament of his society. (e) In the forest Rama dwelt accompanied by Sita and Lakshman in the society of hermits.

1935. (a) Rama was always obedient and devoted to his father and therefore he renounced the throne of Ayodhya and went to Dandak forest to live there as an exile for fourteen years. (b) Sita who loved Rama even more than her life did not like to stay in the palace of Ayodhya without her lord and accompanied him to the forest. (c) Once when they were living in exile, Ravana, the demon-king of Lanka came in disguise of a beggar to the forest-abode of Rama. (d) Ravana carried away Sita by force in his Chariot to Lanka and in consequence of his guilt he was killed by Rama. (e) After returning from Lanka Rama became the king of Ayodhya and lived happily with Sita.

1936. (a) On the bank of River Godavari there was a lofty tree on which birds of every quarter used to take rest during the night. (b) One day very early in the morning, a crow named Laghupatanaka, awoke and saw a hunter coming from a distance. (c) The crow thought that it was an unlucky omen that he saw a wicked person on the dawn of that day. (d) Considering this, the crow flew away, and then the hunter scattered grains at the foot of the tree and over them spread his net.

1937. (a) O Sita, my revered father has asked me to go to forest to-day, I shall tell you how this has happened. (b) Long ago, my father Dasharatha, who is true to his promise, gave two great boons to my mother Kaikeyi. (c) To-day she asked the king that I should live fourteen years in the forest and Bharata should be appointed as heir apparent to the throne. (d) Being ready to depart now I have come to see you. When I am gone to the forest, you should be devoted to the practice of your duty.

1938. (a) On the banks of the river were trees of different kinds under whose shade the breeze blew gently and birds were singing on the branches. (b) Rama saw the various rivers, hills and forests, and entered the Dandak along with Sita. Always the people were astonished to see the virtuous princes there. (c) Hanuman, the son of Vayu, addressed the two heroes, Rama and Lakshmana, and duly praised them. (d) At length, when the day dawned and all the people of the house did not see the young princes, they were all very sorry.

1944. 2. Translate into Sanskrit **either Group A or Group B.**

**Group A**

(a) One day some children were playing near a tank. This tank was the home of some frogs. Some of the children began to throw stones into the tank. They did not know that they were hurting the frogs.

(b) The messenger went to the King, and said, 'O great King the Sultan praises your bravery. He also praises the bravery of your Rajput soldiers. He desires peace'.



(c) Rats do a great deal of damage. They destroy everything they come across. They bite holes in boxes in which they smell food and they even bite through doors, when they cannot get in any other way.

(d) In Kashi there lived a Brahmana named Bharata. Though pressed by his father, he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges to perform penance in order to acquire knowledge.

### Group B

(a) वज्रदेश में एक विख्यात राजा था जो अपनी प्रजा को पुत्रवत् पालता था। एक समय उसके राज्य में अत्यन्त दुर्भिक्ष हुआ जिससे सारी प्रजा अत्यन्त पीड़ित हुई।

(b) जो धर्मात्मा हैं वे शरणागत का त्याग नहीं करते। विपत्ति में भी धर्म में दृढ़ रहते हैं। इसी कारण उनका यश बढ़ता है। बड़ों का निरादर करने से मनुष्य नीच दशा को प्राप्त होता है।

(c) सूर्य की किरणों से व्याकुल होकर दो कृत्ते एक वृक्ष की छाया में बैठ गये और बातचीत करने लगे। एक ने कहा, "भाई ! संसार में मूर्ख लोग व्यर्थ ही लड़ते हैं और दुःखित होते हैं।" दूसरे ने उत्तर दिया, "मित्र ! तुम सत्य कहते हो। कलह करना अनुचित है।"

(d) आने कर्तव्य को असम्भता से करो। उसके करने में उदास वा निराश मत होओ। आने कार्य को मनोऽञ्जक बनाओ। इस तरह वह कार्य सुख से सिद्ध होगा।

1945. 2. Translate into Sanskrit either Group A or B : -

### Group A

(i) Damayanti gave much wealth to the Brahman and said, 'I will give you more when Nali comes.'

(ii) Desiring to bathe in the holy water of the Ganges I went to Kashi and lived there for four years.

(iii) While going to his school the boy saw a fruit on the ground. He took it up and gave it to his teacher.

(iv) Prayaga is a beautiful place where blue water of the Yamuna meets with the blue water of the Ganges.

### Group B

(i) वह योग्य बालक है जो मद्रा स्कूल में उपस्थित रहता है।

(ii) महाराज दशरथ ने विवश होकर राज को वन में भेज दिया।

(iii) ठीक है, बरवान और निर्बल की लड़ाई में निर्बल की ही हानी होती है।

(iv) एक समय दो मित्रों ने साय यावा की ओर प्रणिजा की कि विपत्ति

में एक दूसरे की सहायता करेंगे।



1916. 2 Translate into Sanskrit either Group A or B:—

**Group A**

- (a) You have done well in sending your younger brother to Benares to learn Grammar.  
 (b) The gods went to the sage, bowed to him and praised his might.  
 (c) Rama and Laksmana lived in the Dandaka forest with Sita and ate roots and fruit.  
 (d) In Varanasi (Benares) there lived a Brahmana named Bhargava.

**Group B**

- (a) नारद ने युधिष्ठिर से कहा कि सत्य श्रेष्ठधर्म है।  
 (b) लड़का सौ गया है, उसको ज्ञाना उचित नहीं।  
 (c) अनाथों के रक्षक दीनानाथ के निवाय और कीर्ति है।  
 (d) महाराज चन्द्रगुप्त पाटलीपुत्र में निवास करते थे।

1917. 2. Translate into Sanskrit either Group A or B:—

**Group A.**

- (a) All those who visit Benares see the temple of Shiva. It is not far from the Ganges.  
 (b) Industrious persons obtain in this world whatever they desire.  
 (c) Some rich persons give money to the poor boys and encourage them to study.  
 (d) I always get up very early in the morning and then go out for a walk.

**Group B.**

- (a) सच्चा मित्र वही है जो अपने मित्र के दुःख में दुःखी होता है।  
 (b) जो संयमी होते हैं वही संसार में उन्नति कर सकते हैं।  
 (c) रामने पिता की आज्ञा से जङ्गल में जाना अपना कर्तव्य समझा।  
 (d) भारतवर्ष एक बार फिर संसार की शान्ति का मार्ग बतलावेगा।

**Admission Examination.**

(Benares Hindu University,

( 1924 )

Translate into Sanskrit.

There are many rivers in India. The greatest and most famous of them all is the Ganges. The Hindus regard this river as sacred. They speak of it with reverence and affection as mother Gauga. Of the cities on its banks Benares is the oldest. To this city come every year thousands of Hindu pilgrims. They bathe in the river; they drink its water; they worship at its banks and they go home with happy hearts.

( 1925 )

1. Translate the following into Sanskrit.

In Kashi there lived a Brahmana named Bhargava. Though pressed by his father he did not acquire knowledge in his youth. Afterwards he felt sorry and went to the bank of the Ganges to perform penance in order to acquire knowledge. Indra went near him in the disguise of a Brahmana and began to throw sand into river. Bhargava asked him the meaning of what he was doing. Indra replied, 'I am building a bridge.' Bhargava said, 'Oh, you cannot succeed in your object in this way.' Indra replied, 'If I cannot build a bridge by throwing sand into the river, how can you expect to acquire knowledge by performing penance?' Thus addressed, Bhargava ceased from austerities.

(1926)

- Translate the following sentences into Sanskrit:—

(a) In the fight with Rakshasas, Rama killed many hundreds of his enemies with his sharp weapons. (b) Raghu who took with him his great army going towards the eastern sea appeared like Bhagiratha who led the Ganges fallen from the matted hair of Shiva. (c) He has abandoned all worldly affairs and has now become a recluse. (d) We have drunk Soma and have become immortal. (e) He who walks by the path of truth attains prosperity. (f) The virtuous are always happy and deserve our respect.

(1927)

4. Translate into idiomatic Sanskrit:—

(a) On the bank of the Sarayu river stood the city of Ayodhya, famous in all three worlds, twelve yojanas long and three yojanas broad. (b) What is the use of pouring oil when the lamp has gone out? What is the use of carefulness when the thief has fled. (c) The night will pass, the sun will rise, the lotus will bloom—thus dreamed the bee at night. (d) May your path be pleasant and auspicious. (e) Let all men be happy and free from diseases.

(1928)

- Translate into idiomatic Sanskrit:—

(a) As the streams of the river go on, nor ever return so day and night bear ever away the life of mortals. (b) He caused a large pavilion to be erected by his servants for the marriage of his sons. (c) Alas! poverty is the root of all misery in this world. (d) I do not long for wealth but for immortal glory. (e) May you both get sons resembling you in all good qualities.

- (1929) 6. Translate into Sanskrit:—

(a) Try as far as possible, to depend upon your own exertions; for God helps those who help themselves. (b) If you try to get too much at once, you will lose even that which you have. (c) He who wishes

to please a fool, wishes to cross the ocean with his hands. (d) As the father looks to the welfare of his children, so should a king have the good of his subjects at heart.

(1930) Translate into Sanskrit : -

(a) The virtues of wise men are celebrated by poets. (b) Rama cut off the ten heads of Ravana. (c) Kausalya was the eldest of the three wives of Dasharatha and Kaikeyi the youngest. (d) All enemies were killed by the five Pandavas. (e) The master teaches us eight times in a fortnight.

3. Translate the following sentences into Sanskrit :—

(a) Having experienced the sorrows of the world, he became an ascetic. (b) Sita was dearer to Rama than his very life. (c) The virtuous are happy and deserve respect. (d) We have drunk Soma and have become immortal. (e) The wicked deeds of Bajiraja make us blush. (f) He is blind of one eye and lame of one leg.

(1932)

4. Translate the following sentences into Sanskrit :—

(i) The more you think of the miseries of your life the more your life will be full of grief. (ii) I do not consider my enemy worth even a straw. (iii) Milk is itself sweet; much more it is when mixed with sugar. (iv) The father asked his boy:—“When did you return from Madras?” (v) As the sun went down, the girl together with her sisters sat for study. (vi) Bhima was not inferior to Duryodhana in strength. (vii) The mother went to bathe leaving the child behind.

1933 (4) Translate the following into Sanskrit :—

(1) May God protect us all. (2) Man can achieve salvation only through virtue. (3) One's nature can easily be known by one's actions. (4) Truth is greater than thousands of Ashwamedha sacrifices. (5) Who else than the king himself can save one? (6) Sita was by her nature dear to Rama. (7) They dwelt happily on the mountain for seven years. (8) The teacher treats his students as his own sons.

1934 (4) Translate into Sanskrit :—

(i) The boy has finished the whole history within a month. (ii) The Brahmana begged a cow of the king. (iii) What do you know about this thing? (iv) He who desires wealth, will get it in abundance. (v) The servant has gone to the forest to bring fuel. (vi) The young man is well-versed in Shastras.

1935 (4) Translate into Sanskrit :—

(1) Nowhere have I seen such a beautiful garden. (2) Jumping from tree to tree, हनुमान saw the princess of विदेह sitting at the root of the Asoka tree. (3) Within how many days, Sir, shall I finish this book? (4) Tell me not in mournful numbers Life is but an empty dream.

(5) Friend : cut off my bonds at once and save me. (6) Please, take me to her room. I wish to see my old friend as soon as possible.

(1936) 5. Translate the following into Sanskrit :—

- (a) For men may come, and men may go, but I go on for ever.  
 (b) Great men remain the same whether in prosperity or in adversity.  
 (c) A coward dies many times, but a brave man dies only once.  
 (d) Oh, mother, tell me where is the great God Hari that I may go and find Him: (e) 'Child,' the mother answered, 'He is within your own heart.' (f) Long long ago, there lived in this land of ours a holy and merciful king by the name of Asoka.

### टिप्पणियाँ Glossary

(पाठ १) १-चार दाँतों वाला—चतुर्दन्तः, हाथी—गज । ३ आसान—सुगमम् ।  
 ४ बन्द हो गई है—समाप्तिमगच्छत्, टहलने के लिये—भ्रमणाय । ५ नहीं भाता—न रोचते । १० रोटी—रोटिका । ११ बोलचाल—मलापः । १३ सिचाय—विना ।  
 १४ गुजर गई—व्यतीता ।

(पाठ २) १ नीचे आई—तले समागता । २ समझे जाओगे—प्रतीतिपथमवतरिष्यः । ३ सूर्य की ओर—सूर्य प्रति । ५ छोड़ दिया—तत्याज । ८ भेज दिया—प्रेषयति स्म । ११ खुश होते हैं—प्रसन्ना भवन्ति । नाचते हैं—नृत्यन्ति । १५ हार—पराजयः ।

(पाठ ३) १ यही एक गुण है—अयमेवैको गुणः । सिद्ध हो जाते हैं—सिद्ध्यन्ति ।  
 ५ जूए में—द्युते । ७ बहुत जगद पुरुषात्तस्य मत्ता किलाहम् । १५ वूसरों के लिए—पराश्रमम् । न्योछावर करता है—अर्पयति ।

(पाठ ४) १ क्षणें क्षणें यन्त्रवनामपुंनि तदेव रूपं रमणीयतायाः । ३ निडर होकर—निर्भयो भूत्वा, लड़ंगा—योत्स्ये । ५ गाड़ दिया—अस्थापयत् । ६ बीचानें ही रहे थे—मुग्धा आसन् । ७ सोने की छिड़िया—सुवर्णपक्षी । ९ नाति प्रलप अन्यथाहं तव रहस्यं गेत्स्यामि । १० हकीकत में—वस्तुतः । ११ त्वं खलु कर्णनधिरा नेत्रान्धश्चासि ।  
 १२ लोहे के चने चवानें हैं—कठिनतममस्ति १३ स एवेवं कार्यं कर्तुं पारयति यः खलु असिधाराव्रतमाचरति । १४ रूपणः कालु भवान् वर्तते ।

(पाठ ५) १ पहुँच कर—प्राप्य, आधा सूर्य निकलने पर—अर्धोदगते रविबिम्बे ।  
 २ बुलाने के लिए—आह्वातम् । ३ जलाहा—तन्तुवायः । ४ चढ़ कर—आरुह्य । ५ जलहुब्बी—जलान्तरितपातः, डबो देता है—मज्जयन्ति । ६ जमीन और आसमान का फर्क है—दूरमन्तरमस्ति वा समुद्रपल्लवधारिवान्तरम् । ८ बुढ़ापे में—वृद्धावस्थायाम्, याव करेगा—स्मरिष्यसि । ९ नजर से—दृष्ट्या । घासफूस—तृणादीन्, लपेट कर—सक्षिप्य । १० हाजिर जवाबी प्रत्युत्पन्नमतिः, निलाक कर—आदाय, भाभी—भ्रातृजाया, छिपाया रहता है—सुमुप्तमस्ति, ले आया है—आनीतवानसि ।  
 खुश होकर—सहर्षम् । जल्दी दे दे—शीघ्रं प्रयच्छ । मरने से—मरणात् ।

(पाठ ६) (ब) भेंड़िया—वृकः, बकरे की—अजम्, हड्डी—अस्थि, गले में—ग्रीवा-याम्, इनाम—गारितोषिकम्, टुकड़ा—भागः, मांगने लगा—प्रार्थयते स्म, चवा कर—चर्वणं कृत्वा । (ख) शिर के बाल—केशा उखाड़ डाले—उदपाटयत् (ग) गीदड़—शृगालः, मारा २ फिर रहा था—इतस्ततो भ्राम्यति स्म, अंगूरों से—द्राक्षाभिः, कूदने पर भी—उत्कू-र्दनेऽपि, थक कर—परिश्रम्य, खट्टे अम्लाः चालाक—धूर्तः, बाज नहीं आता—न विरमति । (घ) मुसाफिर—पात्री, मुसाबत में—विपदि, साथ देगा—साहाय्यं करिष्यति, घने जंगल में—निविडे वने, रीछ—ऋक्षः, चढ़ गया—आरूरोह, लोट गया—अयेन, नीचे उतरा—अवातरत्, दगाबाजों का—विश्वामघातकानाम् । (ङ) चीजें—वस्तूनि, फांसी की सजा मिल गई—पाशदण्डेन व्यवस्थापितः, काट दिया—अकर्तयत्, कसूर—अपराधः, रोक देती—अवारयत् ।

(पाठ ७) जेवरों की—आभूषणानि, ठग—धूर्तः, रोना शुरू किया—रोदितुमारब्धः, अँगूठी—अंगुलीयकः, गिर गई है—अपतत्, उतारें—उदमुञ्चत्, घुस गया—प्राविशत्, शरारती के साथ—वंचकेन सह । (ख) दूसी चीज—द्विगुणं वस्तु, लालची—लोलूपः, गर्धनः खुदखुद—स्वयमेव, चुप हो गया—मीनमतिष्ठत्, लालच बुरी बला है—लोलुपता अनर्थकरी वर्तते । (ग) कहते हैं—अनुश्रूयते, गोव से—अङ्गे हंरान् थ—चिन्ताकुला आसन्, अवलमन्द—बुद्धिमान्, शीशा—मुकुरः, दिखा दिया—अदर्शयत्, सुस्कराते हुए—मन्दं हसन् । (घ) गरदन के बालों पर—सटायाम्, फंसा—अपतत्, तारीफ—प्रशंसायाम् । (ङ) चूहा—मूपकः, बदला—प्रत्युकारः, शादी—विवाहः, बलवाई—आहूता, मर गया—पञ्चत्व गतः, मृतः वा ।

(पाठ ८) (क) मिट्टी का—मृत्तिकायाः, बरतन—पात्रम्, घबराने लगा—व्याकुलम-भवत्, टक्कर—आघातः, टूट जाऊंगा—नष्टं भविष्यामि कमजोर—निबलः, नुकसान—हानिः । (ख) गडरिया—अवीपालः मेषपालः, वा, कचौड़ी हलवा—उत्तमपदार्थान्, गैरहाजिरी में—अनुपस्थितौ, भेड़-मेपः, भेद—रहस्यम्, तलवार—असिम्, नमकहरामी—प्रभुविद्वेषः । (ग) भेड़ का बच्चा—मेषशायक, बेवकूफ—मूढः, नीचे की ओर—अधोभागे, जूठा—उच्छि-ष्टम्, परके साल—पूर्वस्मिन् वर्षे, गाली—गाली, पैदा भी न हुआ था—उत्पन्नोऽपि ना-भवम्, बहाना—कारणम् । (घ) उस्ताद—अध्यापकः (मोलवीति श्रूयते) शागिर्दों की—छात्रान्, लाते थे—आनयन्, मिट्टी के कटोरे की—मृत्तिकापात्रम्, आज क्या बात है—किञ्चन वर्तते, सूरज.....कथमद्य सूर्योदयः प्रसिचीतः, फेंक दिया—प्राक्षिपत्, वेशाव करवाती थी—मूत्र कारयति स्म ।

(पाठ ९) अगरचे—यद्यपि, किवाड़—कपाटम् ।

(पाठ १०) (क) सड़क में—पथि, दो हजार पौरे की—चतुः शताधिकसह-स्रद्वयस्य, नालिश—अभिर्भागः, परखी—परख्यः, पता—स्थानपरिचयः, जांच—निरी-क्षणम्, अबाकल ने—व्याध्यालये, भीड़ लग जाती थी—जनसम्मर्दोऽभवत् । (ख) भेद खल जाने पर—भेदोद्घाटने, दिखलवा—छद्मवेषः, पालन कर सकता है—पालयितुं शक्यतः ।

(पाठ ११) (क) अकेला—एकाकी, सूँघकर—घ्रात्वा, तालीके बिना ही—तालिकां विनापि, फांसी मिलती हो—पाशमध्यारोपितः, शिर हिला देने से—शिरः



परिचालनेन, महल में—प्रासादे । (ख) कैदखाना—कारागारः, कोठरी में—प्रकोष्ठे, सिरहाने—शिरोभागे, हमदर्द—दयालुः, नैकबख्त—सरला, वाजबन्द—केयरम, ठंडी आह भर कर—निःश्वस्य, चौक पड़ा—सम्भ्रमोऽभवत्, निभाने की—पालनार्थम् ।

### पंजाब यूनिवर्सिटी की एन्ट्रेंस परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(१९२६) तालाब—तडागः, मछलियां—मत्स्याः, तन—शरीरम् ।

(१९२७) ब्रह्मा के—ब्रह्मणः, पाप दूर हो जाते हैं—पापानि नश्यन्ति, मुझे बहुत अच्छा लगता है—अतीव रोचते मयम्, हाथ पैर कांपने लगे—हस्तपदं कम्पितु-मारेभे ।

(१९२८) इतनी खुशी क्यों होती है—कथमेतावान् हर्षो भवति । मुझे दण्ड दें-मयि दण्डं पातयतु, चुप रहो—तूष्णीं भव, अकेली छोड़ कर—एकाकिनीं परित्यज्य, बन्धन पक्का है—बन्धनं दृढमस्ति ।

(१९२९) माता पिता की—पित्रोः, ८३ वर्ष—अष्टतीति वर्षाणि, क्या आप लाहौर जायेंगे—कि भवाल्लवपुरं गमिष्यसि, कल—ह्यः, जलसा—उत्सवः, कहा-जाता है—कथ्यते ।

(१९३०) लिखवाऊंगा—लेखयिष्यामि ।

(१९३१) एक अस्थान में पढ़ें—एकत्र पठेयुः, सुना जाता है—श्रूयते, विद्या भी बिना मूल्य दी जाती थी—विद्यापि शूलकं विनाऽप्राप्यत, उलटा—विपरीतम्, गली देते—गालीर्ददतः, यह समय का भेद है—एष समयस्य व्यत्ययः, देखें—पश्येयम् ।

(१९३२) पहले—पूरा, जन्म चुके हैं—उत्पन्ना अभूवन्, अनुकरण करें—अनुकुर्याम, प्रातःकाल हो गया है—प्रातःकालो जातः ।

(१९३३) झुकते हैं—नम्रा भवन्ति, सब की सेवा की थी—सर्वानिसेवतः, अभिमान से—दपति, अमीर लोगों के लड़कों में—धनिकपुत्रेषु, बराबर हैं—समाने स्तः ।

(१९३४-१९३९) मारा हुआ—घातितः, सुनने से—श्रवणात्, हंस पड़े—अहसन्, सबसे छोटी नदी—सर्वासां नदीनां लघुतमा (लघिष्ठा), देख-देखकर—दर्शदशम्, खरीद जो—कीणीहि, मैं इनमें बड़ा हूँ—अहं सर्वेषां ज्येष्ठः, ले जाने पर भी—गृहोते सत्यपि, हाथों से पकड़ लिया—हस्ताभ्यामग्रहात्, सब से छोटा—सर्वेषां कनिष्ठः, स्त्री रोती हुई—रुदती स्त्री, तू सुन याद रख—शृणु स्मर च, अधिक-लंबा—दीर्घतरम् (दिनम्) माता तथा मातृभूमि स्वर्ग से भी बड़कर हैं—जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी, परीक्षा करता हूँ—परीक्षे ।

### पंजाब यूनिवर्सिटी के प्राज्ञ परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(१९२६-२८) बहिनें—भगिन्यः, आज्ञा करने हो—आज्ञाम्मे, तरफ रहेंगे—पक्षे भविष्यति, हक—अधिकारः, पाले हैं—पुष्टाः सन्ति, खिलाफ—विरुद्धम्, सेल-करके—उन्धि कृत्वा, पढ़ाने लगे—अशिक्षयत, कहा जाता है—कथ्यते, बता देती-थी—दर्शयति स्म, व्यतीत किया—व्यतीयाय २५ दिन के बाद—पञ्चविंशतिदिनान-न्तरम्, चार बहिनें—चतस्रो भगिन्यः, बहुत गाई गई है—अतिवर्ण्यते, चार बज चुके हैं—

चतुर्होरापरिमितः कालः, निरीक्षण करेंगे—निरीक्षणं करिष्यति, अंगोछा—अङ्गप्रक्षा-  
लनवस्त्रम् ।

(१९२९) छिपाये—गोपनेन, छिपता—गोप्यते, खाँसी की तरह—कासवत्,  
होस्टल के—छात्रावासस्थ, विजली के लैपों से—विद्युद्दीपैः, चकमक हो रही हैं—  
देदीप्यते, मेज कुसिया—लेखनाधारा आसमानि च, दो बड़े बड़े पलग सफेद विस्तरों  
से कमे हैं—द्वौ महान्तौ पर्यङ्कौ धवलैः शय्योपकरणैः सज्जितौ, पलङ्क पर लेट कर—  
पर्यङ्कमाश्रित्य, कभी थोखा खाओगे—क्वचिद् दुष्परिणाममाप्स्यसि, पड़ोस में रहने  
वाली—प्रतिवेशिनी, प्रिन्सिपल के आगे—अध्यक्षस्य अग्रे, शिकायत की—कौली-  
नमकथयत्, तहकीकात करके—निरूपणं कृत्वा, संसार से विदा हो गया—मृतः,  
सच है पाप छिपाए नहीं छिपता—सत्यं यत्पापं कर्म कृतं गोपितुमशक्यम् ।

(१९३०) डेवढ़ी में—आलिन्दे, आसन जमा लें—आसनमाश्रयतु, थूकता है—  
छीवति, ऊपर चुबारा में—उपरि प्राङ्गणे, घंटी बजा दिया—घंटं वादयत्, भूख  
प्यास सताने लगी—क्षुत्पिपासितः, इधर उधर हाथ मारा—इतस्ततो हस्तचाल-  
नमकरोत्, यम-लोक को सिवार गया (सदा के लिए सो गया)—यमसदनमाससाद ।

(१९३१—१९३२) बालू के पुल का—बालुकासेतोः, पार जाने के लिए—  
पारमासादयितुम्, खरगोश के सींग और बिना भित्ति के चित्र के समान है—शशविधा-  
णवत् भित्ति बिना चित्रकर्मरचनावच्च वर्तते । एक इधर से दूसरा उधर से—एक  
इतः अन्यश्च उतः, बराबर सामने आये—समीभूतौ, मुड़कर—परावृत्य, रोकता था—  
प्रतिबन्धमकरोत्, पैर फिसला—पादस्खलनम्, मेलजोल—संहतिः, लेट गया—निपपात,  
पाँव रखकर—पादभ्यासं कृत्वा, रास्ता साफ हो गया—मार्गः निर्विघ्नो जातः,  
निकम्मे हो जाते हैं—निष्प्रयोजनानि भवन्ति, घोड़े की सवारी—अश्वारोहणम्,  
कूश्ती लड़ना—मल्लक्रीडायुद्धम्, गेंद बट्ठा—कन्दुकक्रीडा, मुद्गर हिलाना—  
मुद्गरचालनम्, भेड़िये के गले में—वृकस्य कण्ठे, हड्डी अटक गई—अस्थस्थितिरभूत्,  
पड़ोसी का धर्म निवाहो—प्रतिवेशिनो धर्म निर्वह्य ।

(१९३३—१९३६) प्रहार के बदले प्रहार करना—प्रहारस्य स्थाने प्रहारः  
कमा रहे हैं—अजंघति (भवान्), जो धर्म की रक्षा करता है उसकी रक्षा धर्म भी  
करता है—अर्धो रक्षति रक्षतः, आग लगा दा—दाहार्थमग्निमददात्, मशहूर कर  
दिया—प्रथितमकरोत्, आग में कूद कर—अग्नीं कृदिस्वा, सब वर्णों से विद्या में  
उत्कृष्ट है—सर्वेषां वर्णानां विद्यायामुत्कृष्टतमः, सुख देनेवाली—सुखदायिनी, काँ  
उठे—अकम्पत, खाल पहना कर—चर्माच्छाद्य, निकालने का—निष्कासनस्य, स  
रूपये में दस पुस्तकें—शतरूपकैः दश पुस्तकानि, ज्यादा—अधिकतर, ज्यादा  
पवित्र है—पवित्रतमा, दिन में दो बार—द्वौ दिवसम्, ज्यों ही मैं घर पहुँचा त्यों ही  
मूसलाधार वर्षा होने लगी—वर्षा महामागम तावत् वर्षा अतिमात्रमभूत्, यदि अच्छे  
वर्षा होने लगे तो दुर्भिक्ष न होता—(देखिए पृष्ठ ८०), बनाए हुए रास्ते से—प्रदक्षित  
मार्गेण, गहराई और वेग से—गाम्भीर्येणवेगेन च, मूखा वास—शुष्कवेणुः, घरनाई—  
नौका, नरम-नरम टहनियों से—कोमलशाखाभिः वनस्पितु, आगा पीछा सुझाते  
हैं—सुमार्गमादेशयति, मैले कपड़ों को—मलिनवस्त्राणि, लड्डू—मोदकान्, बारह व

में चारों वेद छः अंगों सहित पढ़े जाते हैं—द्वादश वर्षाणि षडङ्गाश्चतुर्वेदाः पठन्ते, सौ रूपये देने हैं—शतं रूपकाणि देयानि, यदि तुम खूब मेहनत करते तो परीक्षा में चरु पास हो जाते—(देखिए पृष्ठ १६८-१७८) ।

(१९३७-१९३९) द्रव्य हरण करके—द्रव्यमपहृत्य, मारने लगा—हन्तुमुद्यतः, पाप के साक्षी हैं—पापभाजः सन्ति, इतने में—अत्रान्तरे, धुन ने—चित्ततरङ्गेण, राजा से लेकर रंक तक—आराज्ञः रङ्गपर्यन्तम्, सन उन्नीस सौ पैंतीस ईस्वी में इस घर में एक पुरुष दो स्त्रियों तीन बालक और चार कन्याएं रहती थी—पञ्चत्रिंशदुत्तरं कोनविंशतिशतयां (१९३५) ईस्वियाम् अस्मिन्गृहे एकः पुरुषः द्वे स्त्रियौ त्रयः बालकाः चतस्रः कन्याश्च न्यवसन्, क्या आप स बंठा नहीं जाता—किं भवानुपवेश्युमशक्तः । कमे बदला लूँ—कथं प्रतीकारं करवाणि, मेरी दशा पर रोओ—मम दयनीयां दशां पश्य, तुम्हारे जीते जी—त्वयि जीवति, बिना बुलाये ही—अनाकारितापि, दाया—पैंतीस लाख सत्तर हजार नौ सौ रूपये—(देखिए पृष्ठ १७६-१७७) ।

(पृष्ठ १७७-१७८ तक) अनाज पक जाने पर—शस्य लवनसंचयसमये, अनाज काटना शुरू करेंगे—शस्यलवनमारप्स्यते, मेरे लीट आने के पहले—सत्प्रत्यागमनपूर्वकः, रसोइया की बनायी रसोई—सपकारनिमित्तं भोजनम्, छाता का धक्का—वक्षोऽभ्याघातः, शिकायतपर—मिथ्यारोपिते श्रुते, आप छुड़ाने की—शापविमोचनस्य, देख भाल करना—योगक्षेमं वह, तीन बार—त्रिवारम्, अब मैं चला—अयमहं गतः, कोरे—ज्ञानशून्यः, मिट्टी खोद रहे थे—भूमिं चखान, तैयारिया की—उपकरणद्रव्याणि सज्जीकृतानि ।

पटना यूनिवर्सिटी की मैट्रिकयूलेशन परीक्षा के प्रश्न-पत्र

(पृष्ठ १७८-१८६) दिन ठीक करो—मांगलिक दिनं स्थिरीकुरु, आज ही देखा जाय—अद्यैव पश्याव, पांच सौ आदमी—पंचशती मनुष्याः, हिमालय ऐसा ऊंचा—हिमालयसदृशः उच्चतमः, टहल कर—विहरणानन्तरम्, अगूर वन में छिप गया—व्राक्षायनान्तरितोऽभवत्, शिकारी—मृगयुः, सिंह, गवहा, भियार—सिंहः गर्दभः भृगालवधः, शिकार करने की—मृगयार्थम्, भाग करने की—विभागपरिकल्पनस्य, तुमने देर क्यों की—कथं विलम्बमकार्षीः, चार महीनों से—चतुरः मासान्, मोर के पर—बहः, अपने पंखों में लगा लूँ—स्वपिच्छेण निरूपयामि, बदसूरत—कुल्लवः, गोलमाल मत करो—नोपेक्षस्व, आंखों के तारे थे—अतीव प्रियः, कर्ज लिये—ऋणग्रकरोत्, बदनामी—निन्दा, यदि बचपन में जी लगाकर विद्या पड़ते तो सब जगह आदर होता है—(देखिए ४० पृष्ठ) काटेगा—वक्ष्यति, सदा रूपया—सपादरूपकम्, भिखारी—भिक्षुः, हजारों दास—सहस्रशः दासाः, गहरा—अगाधः, फल इकट्ठा करता है—फलानि सभाहर्ति, पांच वर्षों के बाद—पञ्च वर्षाणि काश्यामपठत्, जुलाहा—तन्तुवायः, कपड़ा फैलाया—वस्त्रं प्रासारयत्, पहिन कर—परिधाय, गदलापन—पंकिलता, थक गया—परिश्रान्तः, मुँह खालकर—मुखं ध्यादाय, निगले गया—निगर्णमकरोत्, हाथ जोड़कर—कराञ्जलिं बध्वा, हराये जाने पर—पराजिते सति, अकेली—एकाकिनौम्, बदमाशी को—धूर्तान् ।

## काशी प्रथमा परीक्षा के प्रश्न-पत्र

उभयवेतनः—दो मालिकों का नौकर, चिकीर्षित—ऐसा कार्य जिसे वह करना चाहता है, व्यापादयितुम्—भारने के लिए, सम्प्रधार्य—विचार कर । सो कहो—तत्कथ्यताम्, कवूतरो का राजा—कपोतराजः, बाहर निकल आया—बहिरागतः, मत्स्यजीविभः—मछुवों ने, आहार-वृत्तिः—खाने का गुजारा । आओ दौड़ो—आगच्छ धाव, नेउला—नकुलः, खाट पर सुला कर—खट्वायां शाययित्वा, काम में लग गया—कार्यव्याप्तः सञ्जातः, टुकड़े-टुकड़े कर दिये—खण्डशः कृतवान्, खून लगा हुआ—रक्तरंजितः, पछताई—अनुशूची, धाड़ मार कर रोने लगी—भृशं करोद, छलांग मारता हुआ—उत्पतन्, मन प्रसन्न रहता है—चेतः प्रफुलित भवति, खुल न जाय—यदि प्रकटं भवेत्, अब तक जगमगा रही है—अद्यावधि शोभते, निरीक्ष्य—देखकर, आपेदे—प्राप्त हुआ, विहाय—छोड़ कर, व्याहरत्—कहा, प्राहिणोत्—भेजा, जहार—हर ले गया, निधाय—रख कर, त्रिविवं जगाम—बैकुंठ चला गया । चार वजे—चतुर्वादिनसमये, धोता हूँ—प्रक्षालयामि, निपटकर समाप्य, मेने डांट कर कहा—निर्भर्त्सयन् कथयम् । वत्सराणाम्—वर्षों के । महनीयम्—पवित्र । सुवृत्तः—सच्चरित्र अद्रवत्—पिघला । डरावने—भयावहम् । मुसलाधार वर्षा हो रही थी—धारासारं महता वृष्टिर्भवत् । सेवा किया करते थे—असेवेताम् । प्रत्यागच्छन्नम्—लौटते हुए । वदान्यशिरोमणौ—विद्वद्भिरात्मैः । सच बोलने वाले—सत्यवादी । आसमुद्रम्—समुद्रपर्यन्त । मुझसे क्या अपराध हुआ—किमपराद्धं मया सेवा करने लगा—असेवत ।

## U. P. High School Board Exam. Papers.

(1916) (a) ईदृश्यामवस्थाया प्रत्यागमनं विना नान्य उपायः, (b) to seek—अन्वेषणाय, too far—अतिदूर, did not obey—नापालयन्, lost themselves—पन्थान विस्मृतवन्तः, much frightened—अतीव भीताः, in vain—निष्फलम्, exhausted with cold and hunger—शीतेन बुभुक्षया च श्रान्ताः ।

(1918) 1. the eldest—वृद्धतमा, 2. by the bees—मधुलिङ्भिः, 3. begged—अवृणीत्, 4. dost thou milk—योक्षि, 5. have alighted—अवतरन्ति, he said—अवाचत् ।

(1919) (a) immortal—अमरः, (b) prudent people—बुद्धि-मञ्जानाः, (d) none should rely on—न विश्वसनीयम् ।

(1920) (a) the naughtiest—बलिष्ठः, crowned—अभि-धितवन्तः, (b) smelt—घ्रातम्, very fragrant—अतिमुग्धयुक्तम्, (c) bowed—नमस्कृतवन्तः ।

(1921) pressed—अनुज्ञासितः to acquire knowledge—ज्ञानार्ज-नाय, youth—तारुण्ये to perform penance—तपश्चरणाय, in disg-



uise—परिवर्तितवेपे, sand—बालुका, a bridge पुलिनम्,—from aust-  
erities—तपसः ।

(1922) (a) boasting—अभिमानम्, (c) renounced अत्यजत्,  
disgusted—विरक्तः,—(b) my mind was diverted विचलि-  
तमना आसम् ।

(1923) (a) तस्य सर्वं यत्नाः सफलीभूताः (b) reduced—क्षीण-  
शरीरम्, (d) frogs jump—मण्डूका प्लवन्ते, (e) स बन्धुर्व्यसने यः स्यात् ।

(1924) (a) trustworthy—विश्वासयोग्यम्, praiseworthy—  
प्रशंसायोग्यम्, (b) is waiting—अपेक्षते (c) सर्वेषामुपालम्भवाक्यानि शान्त्या  
असहे, शासनस्योत्तरदायित्वं च निर्विघ्नमगृह्णाम् (d) अहं श्रमजनितनिद्रया आक्रान्तः  
(e) shall resume पुनर्ग्रहीष्यामि ।

(1925) (2) clever—बटुः, (3) in autumn-शिशिरकाले (4)  
words as sweet as honey—मधुबन्धुनि वाक्यानि, (5) in the her-  
mitage—आश्रमे ।

(1926) 1. Residence—वासस्थानम्, 2. meanwhile—अस्मिन्नेव  
काले, shall accomplish—साधयिष्यामि, 3. scorpion—वृश्चिकः, from  
cowdung—गोमयात्, 5. after misery—दुःखान्तरम् ।

(1927) 2. उपेक्षो हि मुखिणां प्रकोपाय न शान्तते । ३ enmity—  
शत्रुता, 4. all of a sudden—सहसा ।

(1928) 1. निवारय रथं यावदहमवतरामि । 2. to resort—प्रयाणम्,  
arrogant—अहङ्कारी । 5. has uprooted—उन्मूलयति स्म, in the  
park—उद्याने ।

(1929) 1. looked upon—सम्मानितवन्तः, 2. attentive to his  
duty—कर्तव्यपरायणः, 8. prostrated—दण्डवत्प्राणम् 4. incredible—  
अनविश्वासयोग्या, 5. branches of knowledge—ज्ञानस्य-शाखा ।

(1930) 1. on an auspicious day—शुभदिने, 2 afraid of—भीतः  
3. ring—अंगुलीकः, 4. ascetics—तपस्विनः, practising—तपश्चरन्तः ।

(1931) 1. faults—दोषान्, how to correct—संशोधनापायम्,  
2. healthy wealthy and wise—स्वास्थ्यवान्, धनवान् बुद्धिमान् च, 3.  
riding slowly—शरीरदण्डः सन्, 5. bear in mind—स्मृती संस्थापनम् ।

(1932) (c) mastered all the shastras—सर्वशास्त्राणि  
पठितानि, proposal—अकामयन्त (d) of preceptor—अध्यापकस्य  
(e) two travellers—पथिकां, by what way—केन पथा ।

(1933) (a) ten-headed—दशाननः wicked by nature—स्वभा-  
वेन दुष्टः, (b) used to annoy and torment—नानाविधसन्तापं ददौ,  
(c) in disguise of an ascetic—तपस्विवेषेण, approached Sita—  
रनिकवा सीतां, (d) surrounded by a beautiful garden—रम्योद्यानेन  
परिवेष्टिते (प्रासादे) ।



(1934) worshipper of Vishnu—विष्णुपासकः, (b) full of wild animals—वन्यजन्तुसङ्कुले (कानने), (c) went to heaven after death—मृत्योरनन्तर स्वर्गमवाप, (d) ornament of society—समाजभूषणम्, (e) वने रामः सीतया लक्ष्मणेन च सह मुनीनां समाजेन्यवसत् (1935) (a) obedient—आज्ञाकारी devoted—भक्तः renounced—परित्याज, throne—सिंहासनम्, as an exile—निर्वासित इव (b) accompanied—अनुयायी, (c) in disguise of a beggar—भिक्षुरूपे, forest abode—वन-वसतिम्, in consequence—परिणामरूपे. (1936) (c) unlucky omen—अपशकुनः on the dawn—प्रातरेव, (d) scattered—किरति स्म, (1937) (a) revered—पूज्यः, (d) two boons—द्वौ, (c) heir apparent—युवराजः, (1938) (a) blew gently—शनैरवहत्, (b) astonished—आश्चर्यचकिताः, virtuous—धर्मपराः। Near a tank—उपसरः। Messenger—दूतः। damage—क्षतिः। bite holes—छिद्राणि कुर्वन्ति। did not acquire knowledge—ज्ञानं नालभत। to perform penance—तपः कर्तुम्। अत्यन्त पीडित हुई—अतीव व्यथामान्नेत् four years—चत्वारि वर्षाणि। on the ground—भूमौ। blue water—नीलं जलम् Meels—संगच्छते। एक दूसरे की सहायता करेंगे—मित्रः साहाय्यं करिष्यावः। younger brother—लघुभ्रातरम्। ate roots and fruit—मूलानि फलानि चाभक्षन्त। निवास करते थे—न्यवसन्त। industrious persons—परिश्रमिणो जनाः। कर्तव्य समझा—कर्तव्यममन्यत। मार्ग बतलायेगा—मार्गं प्रदर्शयिष्यति।

### Admission Examination

(1924) the greatest—महत्तमा, most famous—प्रसिद्धतमा, regard—मन्यन्ते, with reverence—आदरेण, pilgrims—यात्रिणः। (1929) (a) with his sharp weapons—तीक्ष्णशस्त्रैः, matted hair of Shiva—शिवस्य जटाभ्यः, recluse संन्यासी, (d) immortal—अमर्त्याः, (e) attains prosperity—ऐश्वर्यं लभते। (1927) the lotus will bloom—पद्मं हसिष्यति, auspicious—संगलप्रदः। (1928) pavillion—मण्डपः, poverty दरिद्र्यम्, resembling—सदृशः। (1929) exertions—उद्यमः, subjects—प्रजाः। (1930) celebrated—गीयन्ते, eldest—ज्येष्ठा, in a fortnight—पक्षे। (1931) having experienced—अनुभूय, ascetic—संन्यासी, wicked deeds—दुश्चरितानि, make blush—लज्जामुत्पादयन्ति, straw—तृणम्। (1932) much more—किं पुनः, when did you return—कदा परावर्तस्व, set for—प्रारभत, inferior—अधमः। (1933) only through virtue—धर्मेणैव, greater—महत्तरम्, the teacher treats his students

as his own son--शिष्ये शिक्षकः स्वपुत्रवदाचरति । (1934) within  
 a month--मासाभ्यन्तरे, fuel--इन्धनम्, well versed in  
 Shastras--सर्वशास्त्रपारंगतः । (1935) nowhere--न क्वापि, jump-  
 ing--उत्पतन्, Sir--श्रीमन्, mournful numbers--सखेदम् but an  
 empty dream--केवलं निःसारः स्वप्नः, bonds--बन्धनानि । (1936)  
 for ever--सततम्, in prosperity or in adversity--सम्पत्तौ अथवा  
 विपत्तौ, coward--भीरुः, within your own heart--त्वदीयमानसाभ्यन्तर  
 एव, holy and merciful king--धार्मिकः दयालुश्च राजा ।

रचिता चन्द्रिका ह्येषा श्रीचक्रधरशास्त्रिणा ।

रोचनां सुकुमाराणां या विधास्यत्यसंशयम् ॥

इत्यनुवादचन्द्रिका समाप्ता





